अनुवादक – ओंकारनाथ पचालर

चित्रकार – फ० ग्लेबोव और व० नोस्कोव

# अध्याय १

"मै, ओलेग कोशेवोई, 'तरुण गार्ड' दल में भरती होने के समय अपने साथियों, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू। मै शपथ लेता हू कि मै बिना किसी आनाकानी के उन सभी कार्यो को सपन्न करूगा, जो संघटन मुझे सौपेगा; उन सभी बातो को गुप्त रखूगा जिनका सबध तरुण गार्ड में मेरे कार्यो से होगा। मैं शपथ लेता हू कि मै पूरी निर्ममता के साथ, अपने फूके और लूटे गये नगरो और गावो का, अपनी जनता के खून का और खानो मे शहीद हुए अपने बहादुरो की मौत का बदला लूगा। और यदि इस बदले के लिए मुझे अपने प्राणो की भी आहुति देनी पडे तो मैं एक क्षण के लिए भी संकोच किये बिना उसके लिए तैयार रहूगा। यदि जुल्म या बुजदिली के कारण मै इस पवित्र शपथ का अतिक्रमण करू तो सारे भविष्य के लिए मेरे और मेरे स्वजनो के नाम पर कलक लगे और मेरे साथी मुझे कठोर से कठोर दड दे। खून का बदला खून। मौत का बदला मौत!"

"मै, उल्याना ग्रोमोवा, 'तरुण गार्ड' दल मे भरती होने के समय अपने साथियो, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेती हू..."

"मै, इवान तुर्केनिच, 'तरुण गार्ड' दल मे भरती होने के समय अपने साथियो, चिरसतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू ."

"मै, इवान जेम्नुखोव, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू..."

"मै, सेर्गेई त्युलेनिन, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हू ."

"मै, ल्युबोव शेव्त्सोवा, पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेती हू "

. . . . . . . . . . . .

जिस समय पहली बार सेर्गेई लेवाशोव, ल्यूबा के पास आया और उसने खिडकी खटखटायी, और ल्यूबा दौड़ती हुई उसके पास बाहर आयी और दोनो रात भर बैठे हुए बाते करते रहे, तो सेर्गेई लेवाशोव कुछ भी न समझ सका। न जाने वह कैसी कैसी कल्पनाए करता रहा!

किन्तु इस यात्रा मे पहली कठिनाई यही स्वय सेर्गेई लेवाशोव की खडी की हुई थी। दोनो पुराने साथी थे और ल्यूबा पहले उसे बताये बिना कही जा नही सकती थी। वह हमेशा अपनी गली मे छोटे छोटे छोकरो के बीच बडी लोकप्रिय रही थी, क्योकि वह खुद लडको की तरह शरारती स्वभाव की थी। इसी लिए उसे शीघ्र ही एक ऐसा लडका मिल गया जिसने उसका सदेश सेर्गेई लेवाशोव के पास खुशी खुशी पहुचा दिया था। चाचा अन्द्रेई ने अपनी गिरफ्तारी के पहले सेर्गेई लेवाशोव को सलाह दी थी कि वह प्रशासन के गैरेज मे लारी ड्राइवर का काम कर ले।

सेर्गेई काम पर से शाम को देर से लौटा था। वह वही कपडे पहने था जो उसने स्तालिनो से आने के दिन पहने थे। जर्मन किसी को भी–खान-मजदूरो तक को–काम वाले कपड़े नही देते थे। वह बड़ा गन्दा, क्लात और उदास हो रहा था।

ल्यूबा से उसके सफ़र अथवा उसकी मजिल के सबध मे सवाल करना मुनासिब न था किन्तु यह जाहिर था कि उसके दिमाग मे और कोई बात नही घम रही थी। सारी शाम वह मुह लटकाये गुप-चुप बैठा रहा। इससे वह तग आ गयी। आखिर उससे अधिक सहन न हुआ और वह उसपर बरस पड़ी। आखिर वह उसे समझता क्या है—पत्नी या प्रेयसी? सेर्गेई को मनमानी बातो की कल्पना नही करनी चाहिए थी, इससे ल्यूबा को व्यथा ही होती थी। जीवन ल्यूबा के सामने तरह तरह की मागे प्रस्तुत कर रहा था, अतएव उसमे प्रेम विषयक विचारो के लिए कोई गुजाइश न रह गयी थी। वे सिर्फ साथी थे और वह उसे अपने बारे में सब कुछ बताने के लिए मजबूर न थी। वह वही जा रही थी जहा उसे जाना था—घरेलू काम से।

ल्यूबा ने यह भाप लिया था कि सेर्गेई ने उसका पूरा पूरा विश्वास न किया, कि वह ईर्ष्यालु था। ल्यूबा को इससे कुछ सतोष ही हुआ।

ल्यबा रात भर खूब आराम करना चाहती थी किन्तु वह था कि जमा बैठा था। हिलने का नाम भी न लेता था। वह अड़ियल किस्म का आदमी था और कौन जाने रात भर वहां बैठा ही रहता। आखिर ल्यूबा ने उसे धकेलकर बाहर निकाला। बेशक उसकी अनुपस्थिति मे सेर्गेई खोया-खोया-सा रहेगा, यह सोचकर ल्यूबा को उसपर दया भी आयी। वह उसे बगीचे से होती हुई फाटक तक पहुचा आयी और एक क्षण के लिए उसकी बाह पकडकर उससे सटकर भी खड़ी रही। फिर वह दौड़ी दौडी घर आयी, कपडे उतारे और अपनी मा की बगल मे पलंग पर पड रही।

बेशक, उसकी मा भी एक समस्या थी। ल्यूबा जानती थी कि अकेली रहना मा के लिए कितनी बडी मुसीबत है, इसलिए कि कष्टो

के आगे वह असहाय-सी वन जाती थी। परन्तु मा को धोखा देना बहुत आसान था। ल्यूवा मां के पास पड रही और उसे तरह तरह की मन गढन्त बाते सुनाती रही, पर मा को कोई सदेह नहीं हुआ। अन्ततः ल्यूवा मां के पलग पर सो गयी।

उस दिन वह भोर होते ही उठी और धीरे धीरे गुनगुनाती हुई अपनी यात्रा की तैयारिया करने लगी। अपनी सर्वोत्तम पोशाक बचाये रखने की दृष्टि से उसने साधारण कपडे पहनने का निश्चय किया जो भड़कीले तो थे ही, साथ ही लोगो का ध्यान भी अपनी ओर आकृष्ट करते थे। उसकी सबसे अच्छी पोशाक नीले रग की चीनी क्रेप की थी। उसने यह पोशाक, हल्के नीले रंग के जूते, लैस के भीतरी कपडे और लम्बे रेशमी मोजे एक छोटे-से बक्स मे रख लिये। फिर वह हल्के वस्त्र पहने, और धीमे धीमे गुनगुनाती हुई दो मामूली-से दर्पणों के बीच खड़ी होकर पूरे दो घण्टे तक बालो मे घुघर डालती रही। आइनो में अपना सिर चारो ओर से देखने के लिए उसे तरह तरह से सिर टेढा करना और घुमाना पड़ता था। सुस्ताने के लिए वह अपने शरीर का सारा बोझ कभी एक पैर पर डाल देती, कभी दूसरे पैर पर। फिर उसने पेटी बांधी, अपने गुलाबी तलवो पर हाथ फेरा, त्वचा के रग के सिल्क के मोजे पहने, हल्के पीले रंग के जूते पैरो मे डाले और अन्ततः बूटियो और चेरी की छाप वाली शीतल और सरसराती हुई फ्राक पहन ली। इसके अलावा उसपर और भी कई रगो के छीटे थे। वस्त्र पहनते समय वह बराबर कुछ न कुछ खाती और गुनगुनाती जा रही थी।

वह कुछ घबरायी-सी थी, लेकिन इससे हताश होने के बजाय उसकी हिम्मत और भी बढ़ रही थी। वह खुश थी क्योकि अन्ततः क्रियाशील होने का समय आ गया था। अब उसे व्यर्थ ही अपना श्रम विफल न करना होगा।

दो दिन पहले, सुबह के समय शेन्त्सोव परिवार के घर के वाहर एक छोटी-सी हरी लारी आकर खडी हुई थी। लारी में जर्मन उच्चाधिकारियो के लिए वोरोशीलोवग्राद से खाने का सामान आया था। लारी का ड्राइवर सशस्त्र पुलिस का एक जर्मन सिपाही था। उसने अपने पास वैठे हुए एक सैनिक से, जिसके घुटनो पर एक टामी-गन रखी थी, कुछ कहा और कूदकर घर मे घुस गया। ल्यूवा यह देखने भीतर आयी थी कि उस ड्राइवर को किस चीज की जरूरत है, पर उसने देखा कि वह खाने के कमरे मे पहले से ही इधर-उधर ताक रहा है। ड्राइवर घूमकर ल्यूवा के सामने खडा हुआ और इसके पहले कि वह अपना मुह खोले, ल्यूवा ने उसकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से ही समझ लिया कि वह रूसी है। और सचमुच उसने शुद्ध रूसी मे कहा भी—

"मुझे कार के लिए कुछ पानी मिल सकता है?"

जर्मन सशस्त्र पुलिस की वर्दी मे रूसी! इस घर में घुसने से अधिक बुरी हरकत वह कर भी क्या सकता था! "निकल जाओ यहा से! सुन रहे हो?" ल्यूवा ने उत्तर दिया। उसकी गोल गोल नीली आखें वडी स्थिरता से सीधे उसी की ओर लगी थी।

जर्मनो की सैनिक वर्दी पहने हुए इस रूसी से क्या कहना चाहिए, यह उसने विना क्षण भर सोचे-विचारे भी समझ लिया था। यदि इस आदमी ने उसे जरा भी नुक्सान पहुचाने का प्रयत्न किया तो वह चीखती-चिल्लाती वाहर सडक पर चली जायेगी और यह कहकर सारा मोहल्ला जगा देगी कि मैंने तो सिपाही से इतना भर कहा कि पानी सोतें से ले ले और उसने मुझे मारना-पीटना शुरू कर दिया। किन्तु यह विचित्र सैनिक-ड्राइवर चुपचाप खडा खडा मुस्कराता रहा और आखिर बोला—

"तुम अपना काम वहुत अच्छी तरह नही कर रही हो। इससे तुम मुसीवत मे फस सकती हो।" उसने यह देखने के लिए कि कोई उसके

पीछे लगा तो नही है, अपने इर्द-गिर्द एक निगाह डाली और फिर संक्षेप मे बोला, "वारवारा नौमोव्ना ने मुझसे कहलाया है कि वह तुम्हे वहुत याद करती है!"

ल्यूवा का चेहरा पीला पड़ गया और वह जैसे अन्त.प्रेरणा से उसकी ओर वढ गयी किन्तु ड्राइवर ने जैसे उसके प्रश्न की पूर्व कल्पना कर ली थी, अत उसने अपनी पतली-सी तर्जनी अपने होठो पर रख ली।

वह उसके पीछे पीछे गलियारे मे आया। वह वही, दोनो हाथो मे एक वाल्टी लिये, खडी खडी उसकी आखो मे कुछ पढने लगी। फिर ड्राइवर ने, उसकी ओर विना देखे वाल्टी उठायी और कार के पास चला आया।

ल्यूवा जान-वूझकर जहा की तहा खडी रह गयी थी। वह उसे दरवाजे की दरार मे से देखती रही। उसने आशा की थी कि बाल्टी लेकर लौट आने पर वह उससे कुछ पूछेगी, कुछ टोह लगायेगी। किन्तु रेडियेटर मे पानी डालने के वाद ड्राइवर ने वाल्टी सामने के वगीचे मे फेकी, जल्दी से अपनी जगह पर वैठा, फट्ट से दरवाजा वद किया और मोटर-कार चला दी।

इस प्रकार ल्यूवा को वोरोशीलोवग्राद जाना जरूरी हो गया। किन्तु अव वह 'तरुण गार्ड' दल के अनुशासन के अधीन थी और वह बिना ओलेग को वताये कही भी जा न सकती थी। वेशक, कुछ समय पूर्व उसने यह सकेत जरूर कर दिया था कि वह वोरोशीलोवग्राद मे लोगो को जानती है, जो किसी न किसी काम के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है। अव उसने ओलेग को यह भी वता दिया कि उनसे मिलने का यह वहुत अच्छा मौका है। पर ओलेग ने उसे तुरन्त जाने की अनुमति न देकर कुछ इन्तजार करने को कहा था।

हां, उस समय उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा जव ओलेग

से वातचीत करने के दो घटे बाद ही नीना इवान्त्सोवा ने उसके घर आकर उसे वताया कि उसे जाने की अनुमति मिल गयी है। हां, नीना ने यह जरूर कहा था—

"वहा पहुचकर हमारे लोगो की मौत के बारे में और उनके जिन्दा ही पार्क मे गाडे जाने के बारे मे पूरी पूरी रिपोर्ट दे देना। साथ ही उनके नाम भी बताना। फिर उनसे कहना कि इन सब अत्याचारो के होते हुए भी यहा काम कायदे से चल रहा है। ऐसा कहने का अनुरोध वे लोग तुमसे कर रहे है जिनके हाथ मे यहां के काम की बागडोर है। और उन्हे 'तरुण गार्ड' दल के बारे में भी बताना।"

ल्यूबा अपने पर नियत्रण न रख सकी और बोली—

"कशूक को यह कैसे मालूम है कि जहा मैं जा रही हू, वहां इन सबके बारे मे बातचीत करना ठीक होगा?"

स्तालिनो मे खुफिया कार्य करते समय नीना ने फूक फूककर कदम रखना अच्छी तरह सीख लिया था। इसलिये उसने केवल अपने कन्धे बिचका दिये। पर उसे यह ध्यान भी आया कि जिस प्रकार रिपोर्ट देने के लिए ल्यूबा से अनुरोध किया गया है, सभवत: रिपोर्ट देने में उसे कोई संकोच हो। इसी लिए नीना ने लापरवाही से यह भी जोड़ दिया—

"बुजुर्ग साथी शायद जानते है, तुम किसके पास जा रही हो।"

ल्यूबा को आश्चर्य हो रहा था कि यह छोटी-सी बात पहले उसकी समझ मे क्यो नही आयी।

वोलोद्या ओस्मूखिन को छोडकर 'तरुण गार्ड' दल के अन्य सदस्यों की भाति ल्यूबा शेव्त्सोवा को भी इस बात का कोई पता न था—और न उसने पता चलाने की कोई कोशिश ही की थी—कि क्रास्नोदोन के खुफिया संघटन के प्रौढ सदस्यो मे से ओलेग कोशेवोई का सम्पर्क किसके साथ था। किन्तु फिलीप्प पेत्रोविच को वह बात अच्छी तरह मालूम थी

कि ल्यूबा को किस उद्देश्य से क्रास्नोदोन मे रखा गया है और वोरोशीलोवग्राद मे ल्यूबा का सम्पर्क किनके साथ है।

उस दिन सर्दी थी और वादल स्तेपी पर वहुत नीचे उतरकर मडरा रहे थे। सर्द हवा के कारण ल्यूवा के गाल लाल हो उठे थे और उसकी चमचमाती हुई फ्राक उड रही थी। किन्तु वह इन सवसे वेखवर, वोरोशीलोवग्राद मार्ग पर खड़ी थी, जहा हवा से वचकर खडे होने की कोई जगह न थी। उसके एक हाथ मे उसका छोटा-सा सूटकेस और दूसरे हाथ मे एक हल्का ओवरकोट था।

उसके सामने से लारियो पर लारियां निकलती जा रही थी जिनमे से जर्मन सिपाही और कारपोरल चिल्ला चिल्लाकर उसे अपने पास आने का निमंत्रण देते, ठहाके मारकर हसते और वेहूदे इशारे करते। वह घृणा से अपनी आखे मिचकाती और उनकी ओर कोई ध्यान न देती। पर जव उसने एक लम्वी, नीची हल्के रंग की कार अपनी ओर आते देखी तो उसने चुपचाप अपना हाथ उठा दिया। कार मे अगली सीट पर, ड्राइवर के पास ही एक जर्मन अफसर वैठा था।

फीके रंग की सैनिक जैकेट पहने हुए अफसर तुरत घूमकर पिछली सीट की ओर देखने लगा, जिसपर शायद कोई उससे भी वड़ा अफसर वैठा था। तभी, चर्र से कार का ब्रेक लगा और कार रुक गयी।

"Setzen Sie sich! Schneller!"* अफसर ने थोड़ा दरवाजा खोलते हुए कहा और उसके मुह के कोने एक मुस्कराहट के रूप मे मुड़ गये। फिर उसने तुरन्त दरवाजा वद किया और कुछ पीछे झुककर पिछला दरवाज़ा खोल दिया।

ल्यूवा ने अपना छोटा-सा सूटकेस और कोट सामने किया और सिर

---

*वठिये! जल्दी कीजिये!

अंदर कर तत्काल कार मे घुस गयी। दरवाजा वद हो गया और कार हवा से वाते करने लगी।

ल्यूवा एक दुवले-पतले, सूखे से कर्नल की वगल मे वैठी थी। उसका चेहरा पीला पड़ा था, दाढी सफाचट थी, गाल लटक रहे थे। उसके सिर पर एक ऊची और घूसर-सी सैनिक टोपी लगी थी। दोनो ने एक दूसरे की आखो में आखे डालकर देखा। दोनो की आखो से झलकनेवाली धृष्ठता एक जैसी न थी। कर्नल मे धृष्ठता थी इसलिए कि उसके पास शक्ति थी, और ल्यूवा में इसलिए कि उसे अपने पर विश्वास न जम रहा था। अगली सीट पर वैठा हुआ युवक अफसर घूमा और उसकी ओर देखने लगा।

"Wohin befehlen Sie zu fahren?"* कर्नल ने पूछा और उसके होठों पर आदिवासी वहशियो की मुस्कान विखर गयी।

"तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ मे नही आता," वनावटी रूप से मुस्कराते हुए ल्यूवा ने कहा। "या तो रूसी वोलो, या अच्छा हो कि वात ही न करो।"

"कहां... कहा. !" कर्नल ने रूसी मे पूछा और हाथ आगे कर, जैसे दूरी का सकेत करने लगा।

"भगवान का शुक्र है अव वह तुक की वात तो कर रहा है!" ल्यूवा वोली; "वोरोशीलोवग्राद .. लुगास्क, मेरा मतलव है, वेशक. . ferstehte?** हां, हा!"

जैसे ही ल्यूवा ने वोलना शुरू किया कि उसका डर दूर हो गया और तुरंत अपनी स्वाभाविक स्थिति मे आ गयी जिससे सभी को, जर्मन

---

*आपको कहां जाना है?

**समझे न?

कर्नल तक को, मन ही मन यह स्वीकार करना पड़ा कि वह जो कुछ कह या कर रही है वह बिलकुल स्वाभाविक है।

"जरा वक़्त तो बताना? वक़्त, वक्त! उल्लू के पट्ठे!" ल्यूबा वोली और अपनी कलाई पटपटाने लगी।

कर्नल ने अपनी बांह आगे की ओर की और यंत्रवत् केहुनी झुका दी। उसकी पतली-सी कलाई पर राख के से रंग के रोओ के बीच एक चौकोर घड़ी बधी थी। ल्यूबा ने समय देख लिया।

वेशक विना भापा जाने हुए भी आदमी अपनी वात दूसरो को समझा सकता है, अगर वैसा करने की उसकी इच्छा हो तो!

और वह कौन है? अभिनेत्री। नही, किसी थियेटर से उसका कोई संवध नही। वह नाच सकती है, गा सकती है! वेशक, वोरोगीलोवग्राद मे उसके ठहरने की वहुत-सी जगहे है। एक प्रसिद्ध उद्योगपति, गोर्लोव्का खान-मालिक की वेटी होने के कारण, वहा के कई सभ्रान्त लोगो से उसकी जान-पहचान है। सोवियत शासन ने उसके वदकिस्मत वाप का सव कुछ छीन लिया। उसके पिता की साइवेरिया मे मृत्यु हुई। वे अपने पीछे अपनी पत्नी और चार वच्चे छोड़ गये है—सभी लड़कियां है और वड़ी सुन्दर। हा, वही सवसे छोटी है। नहीं, वह उसका आतिथ्य स्वीकार न करेगी, इससे उसके नाम पर कलक लग जायेगा। वह उस किस्म की लडकी नही है। उसका पता? निश्चय ही वह उसे ज़रूर वता देगी, पर इस समय वह कहा ठहरेगी; यह वह ख़ुद ही निश्चयपूर्वक नही जानती। कर्नल की अनुमति से वह उसके लेफ्टिनेट से तय कर लेगी कि वे दुवारा कैसे मिल सकेगे।

"तुम्हारी किस्मत मुझसे ज्यादा अच्छी जान पडती है, रुडोल्फ!"

"तव तो, हर ओवेर्स्ट, मै उससे आपकी भी सिफारिश कर दूगा!"

क्या मोर्चा वहुत दूर है? मोर्चे पर सारी वाते उस स्थिति तक

पहुंच गयी थी कि उनमे किसी सुन्दरी को दिलचस्पी नही हो सकती थी। कुछ भी हो, वह वडे आराम से सो सकती है! हम जल्द ही स्तालिनग्राद पर कब्जा कर लेगे। हम लोग काकेशिया मे घुस ही गये है–क्या इस खवर से उसे प्रसन्नता नही हुई? यह उससे किसने वताया था कि ऊपरी दोन अव मोर्चे से बहुत दूर नही है? ओह उन जर्मन अफसरो ने! तो इसके माने यह है कि उनमे अकेला वही बडवडिया नही है . वे कहते थे कि सारी रूसी सुन्दर लडकिया जासूस होती है .. यह ठीक है क्या? अच्छी वात है, पर इसका कारण यह था कि मोर्चे के उस भाग मे हगेरियन होते थे। वेशक वे उन नीच रूमानियनो और 'मकारोनियो' (मकारोनी खानेवाले इतालवियो) से अच्छे थे किन्तु आप उनमे से किसी का भी विश्वास नही कर सकते। मोर्चा असह्य रूप से विस्तृत किया जा चुका है और स्तालिनग्राद ढेरो लोगो को निगल रहा है। "और इन सव लोगो की जरूरते पूरी करना कितनी मुसीवत है–जरा खुद अनुभव करके देखो! मुझे अपना यह नन्हा हाथ दिखाओ और यह सव मै तुम्हे तुम्हारी हथेली की रेखाओ मे दिखा दूगा। यह लम्वी रेखा स्तालिनग्राद जाती है और यह टूटी हुई रेखा मोज्दोक–तुम्हारा आचरण वडा ही अस्थिर है! अव इस सवका दस लाख गुना वढाकर सोचो और तव कही तुम्हारी समझ मे आयेगा कि जर्मन फौज के क्वार्टरमास्टर की नसे फौलाद की होनी चाहिए, फौलाद की. ." लेकिन उसे यह नही समझना चाहिए कि उसकी पहुच सैनिको के कपडे-लत्ते तक ही है! वेशक, खूवसूरत लड़की के लिए भी वह किसी खूवसूरत चीज का इन्तजाम कर सकता है, मसलन् उन टागो के लिए या उस .. उसका मतलव वह जरूर समझ गयी होगी। समझ गयी न? वह थोडी चाकलेट लेने से भी इन्कार न करेगी। नही करेगी न? फिर वह उसके लिए शराव की कुछ चुस्कियो का इन्तजाम

भी कर सकता है। कितनी मिट्टी उड रही है। ओह एक नौजवान लडकी पियेगी नही, यह स्वाभाविक है। पर यह तो फ्रेंच शराब है! "रुडोल्फ कार रोको।"

कार एक बडे से कज्जाक गाव के कोई दो सौ गज दूर ही रुक गयी। यह गांव सडक के दोनो ओर फैला था। सभी लोग कार से बाहर निकल आये। यहा से एक धूलभरी सडक, एक सकरी खड्ड के किनारे किनारे जाती थी। खड्ड के ढलान के तल मे बेदवृक्षो की भरमार थी। खुद ढलान पर धूप से झुलसी हुई गझिन घास उग रही थी। लेफ्टिनेंट ने कार को खड्ड मे लगी हुई सडक पर लाने को कहा और ल्यूबा अफसरो से आगे आगे दौडती हुई कार के पीछे चलती रही। हवा उसकी फ्राक से खेल रही थी और वह फ्राक दोनो हाथो से कसकर पकडे थी। उसके जूते सूखी मिट्टी मे धस धस जाते थे। शीघ्र ही उनमे ढेरो मिट्टी भर गयी।

ल्यूबा ने लेफ्टिनेंट का चेहरा नही देखा था क्योकि वह कार मे अगली सीट पर इस ढग से बैठा था कि ल्यूबा के सामने उसकी वर्दी की धूमिल पिछाडी ही दिखाई पडती थी। लेफ्टिनेंट ने, ड्राइवर के साथ मिलकर, कार मे से एक मुलायम चमड़े का सूटकेस और बढिया बुनी हुई भारी-सी टोकरी निकाली।

सभी लोग ढलान पर एक छायादार जगह मे सूखी, घनी घास पर बैठ गये। हालाकि इन अफसरो ने शराब पीने के लिए ल्यूबा पर काफी जोर दिया, फिर भी उसने न पी। उसके सामने बिछे हुए मेजपोश पर इतनी बढिया बढिया चीजे लगी थी कि यदि वह उनकी ओर से आखे मुद लेती तो अभिनेत्री, और उद्योगपति की बेटी होने के नाते यह उसकी निरी मूर्खता ही सिद्ध होती। अतएव उसने वहा भरपेट खाया।

जूतो मे मिट्टी भर जाने से उसे बड़ी परेशानी हो रही थी। वह

यह सोच रही थी कि किसी उद्योगपति की बेटी अपने जूते उतारकर उनमे से धूल झाडेगी या नही या लम्बे मोजे पहने हुए अपने पैरो के तलवे पोंछेगी या नही। आखिर उसने यह सब किया और पैरो को आराम देने के लिए मोजे पहने बैठी रही। यह बिलकुल ठीक था—लग रहा था कि जर्मन अफसर ऐसा ही समझ रहे है।

वह यह जानने के लिए बड़ी उत्सुक थी कि क्रास्नोदोन से बिलकुल समीप और रोस्तोव क्षेत्र के उत्तरी भाग से लगे लगे जो मोर्चा चल रहा था, वहा वास्तव मे काफी डिवीजन थे या नही। उसके घर मे जो जर्मन अफसर रह रहे थे उनसे पता चला था कि रोस्तोव क्षेत्र का एक भाग अभी तक सोवियत अधिकार मे था। इस समय कर्नल को व्यावहारिक बातो की अपेक्षा अपने मनोरजन की अधिक चिन्ता थी। फिर भी वह कहे जा रही थी कि यदि उस स्थान का मोर्चा टूट गया तो वह एक बार फिर बोल्शेविको की गुलाम बन जायेगी। कर्नल को यह बुरा लगा।

अन्तत. जर्मन शक्ति मे उसके विश्वास की इतनी कमी देखकर वह जैसे बौखला गया—

Verdammt noch mal! * और उसने उसकी उत्सुकता का समाधान कर दिया।

जिस समय वे इस प्रकार बातो मे उलझे थे, उसी समय उन्हे पैरो की कुछ छिट-पुट आहटे सुनाई दी। ये आहटे कज्जाक गाव की दिशा से आती हुई बराबर निकट आती जा रही थी। पहले जब उन्होने यह पदचाप कुछ दूर से सुनी तो उधर कोई ध्यान न दिया किन्तु उसकी गमक बराबर बढती ही गयी। अब ऐसा लग रहा था मानो ये आवाजे लोगो की लम्बी कतार से सुनाई पड़ रही है। शीघ्र ही ये आवाजे सारे पास-

---

* लानत है!

पड़ोस मे गूजने लगी। सड़क पर धूल के घने वादल दिखाई देने लगे थे। हवा इन वादलो को इस गति से वहा रही थी कि खड्ड के ढलान पर वैठे हुए ये लोग तक उन्हे ग्रासानी से देख सकते थे। फिर छिट-पुट ग्रावाज़े भी शीघ्र ही समझ मे ग्राने लगी—मरदो की रूखी ग्रावाजे, ग्रौरतो के करुण स्वर जिनसे लग रहा था कि वे मृतको के लिए शोक प्रगट कर रही थी।

कर्नल, लेफ्टिनेट ग्रौर ल्यूवा खडे होकर ढाल के किनारे देखने लगे। रूमानियन सैनिको ग्रौर ग्रफसरो के पहरे मे सोवियत युद्ध-वन्दी ग्रनत कतार मे उक्त कज्जाक गांव की दिशा से चौडी सडक पर मार्च करते हुए चले ग्रा रहे थे। सभी ग्रवस्थाग्रो की कज्जाक लडकिया ग्रौर ग्रौरते चीखती-चिल्लाती उस कतार के वगल मे दौड रही थीं। कभी कभी वे, रूमानियन सैनिको का पहरा तोडकर, ग्रपने सामने फैले हुए वन्दियो के दुवले-पतले हाथो मे रोटी का टुकडा, कुछ टमाटर, ग्रडे या पूरी की पूरी डवल रोटी ग्रथवा कोई पोटली पकडा देती थी।

वदियो के शरीर पर पतलून या फौजी कोट सावूत न थे ग्रौर उन पर कीचड ग्रौर धूल की मोटी तह जम गयी थी। ग्रधिकाश लोग नगे पैर थे या छाल के जूतो मे, जो इतने पुराने पड गये थे कि जूते, जैसे लगते ही न थे। उनकी दाढ़ी वढ गयी थी। वे लोग इतने दुर्वल हो गये थे कि उनके शरीर के कपडे ऐसे लगते थे मानो जीवित ककालो पर लटके हुए हो। वदियो के पास दौडती ग्रौर सैनिको के मुक्को ग्रौर वदूको के कुन्दो से खदेडी जाती हुई चीखती-चिल्लाती ग्रौरतो की ग्रोर घूमे हुए चेहरो पर ग्राशापूर्ण मुस्कान भी वडी भयानक दीखती थी।

ल्यूवा को ढलान पर ग्राये हुए केवल एक ही क्षण वीता होगा, फिर भी पलक मारते, उसने जैसे ग्रनजाने किन्तु स्वत, मेजपोश पर से जल्दी जल्दी सफेद रोटिया ग्रौर खाने की चीजे उठायी ग्रौर फिर जैसे

सभी ओर से वेखबर, जैसी खडी थी वैसी ही, ऊचे ऊंचे मोजे पहने, धूलभरी सडक पर, घेरा तोडती हुई, वदियो के निकट जा पहुची। उसने अपने सामने फैले हुए गदे हाथो मे खाने की चीजे थमा दी। एक रूमानियन सर्जेंट-मेजर ने उसे पकडने की भी कोशिश की किन्तु वह उसकी पकड से वाहर हो गयी। फिर उसपर भारी भारी मुक्को की वौछार पडने लगी किन्तु वह झुककर पहले एक केहुनी से, फिर दूसरी से, अपना सिर वचाने लगी।

"कोई वात नही, मारे जाओ, मारे जाओ, बदमाशो," वह चीखी, "जहा चाहो, सिर को छोडकर!"

शक्तिशाली हाथो ने शीघ्र ही उसे कैदियो के समूह से ठेलकर वाहर कर दिया। सहसा वह सडक के किनारे आकर खडी हो गयी और उसने देखा कि जर्मन लेफ्टिनेट उल्टे हाथो रूमानियन सर्जेंट-मेजर के मुह पर तमाचे जड रहा है और क्रोध से लाल कर्नल के आगे, जो गुर्राते हुए सीकिया कुत्ते की तरह लग रहा था, रूमानियन अधिकरण सेना की हल्के हरे रग की वर्दी पहने एक फौजी अफसर एटेशन की मुद्रा मे खडा खडा आदिम रोमनो की भाषा मे कुछ वडवडा रहा है।

जव ल्यूवा अपने हल्के पीले रग के जूते पहनकर तैयार हुई उस समय तक वह पूरी तरह स्वस्थ हो चुकी थी। अव जर्मन अफसरो की कार उसे वोरोगीलोवग्राद की ओर लिये जा रही थी। सबसे आश्चर्यजनक वात यह थी कि जर्मनो ने ल्यूबा की इस हरकत को भी दुनिया मे सबसे कुदरती चीज समझ रखा था।

वे विना किसी वाधा के जर्मन कट्रोल पोस्ट पार करके नगर मे आ गये।

लेफ्टिनेट ने घूमकर ल्यूवा से पूछा कि वह कहा उतरना चाहेगी। और अपने को पूरी तरह सभालते हुए उसने सीधे सड़क की ओर इशारा

कर दिया। फिर उसने उन मकानो के एक ब्लॉक के पास कार खडी करने को कहा जो उसे खान-मालिक की पुत्री के लिए उपयुक्त लग रहा था।

वह वाह पर कोट रखे एक बिलकुल ही अपरिचित इमारत के प्रवेश द्वार पर आ गयी। उसके साथ उसका छोटा-सा सूटकेस लिये जर्मन लेफ्टिनेंट भी था। क्षण भर के लिए उसने मन ही मन तर्क किया कि वह पहले लेफ्टिनेंट से पीछा छुडाये या उसी की मौजूदगी मे उस फ़्लैट का दरवाज़ा खटखटाये जो सब से पहले उसके सामने आये। उसने कुछ सकुचाते हुए लेफ्टिनेंट की ओर देखा किन्तु लेफ्टिनेंट ने उसका गलत अर्थ समझा और अपना खाली हाथ उसकी कमर मे डालकर उसे अपनी ओर खींच लिया। तब वाह्यत. बिना किसी प्रकार का क्रोध प्रगट किये हुए उसने उसके गुलाबी गाल पर कसकर एक तमाचा जडा और मकान की सीढिया चढ गयी। लेफ्टिनेंट ने इस तमाचे को भी नियामत समझा और खिसियाकर मुस्कराते हुए ल्यूबा का छोटा-सा सूटकेस ऊपर ले आया।

दूसरी मजिल पर पहुचकर उसने अपनी छोटी-सी मुट्ठी सबसे निकट के द्वार पर कुछ इस ढग से बजानी शुरू की मानो वह दीर्घकालीन अनुपस्थिति के पश्चात् घर लौटी हो। एक लम्बी और दुबली-पतली औरत ने दरवाजा खोल दिया। उसके चेहरे पर गर्व तथा वेदना का भाव झलक रहा था और यदि भूतपूर्व सौन्दर्य के नही तो इस बात के चिह्न ज़रूर दिखाई पड रहे थे कि वह अपनी सूरत-शक्ल का ख़ास ध्यान रखती है। ल्यूबा की किस्मत निश्चय ही अच्छी थी।

"Danke schohn, Herr Leutnant,"* उसने बडे साहस से कहा और भयानक उच्चारण के साथ अपनी सारी जर्मन शब्दावली का भडार

---

*"आपको हार्दिक धन्यवाद हेर लेफ्टिनेंट,"

खाली कर दिया। और सूटकेस लेने के लिए अपना हाथ आगे बढा दिया।

जिस औरत ने दरवाजा खोला था उसने जर्मन लेफ्टिनेंट और रंगीन फ्राक पहने हुए जर्मन लडकी को भयभीत दृष्टि से देखा।

"एक मिनट।" लेफ्टिनेंट ने सूटकेस जमीन पर रखा, अपने कधे से लटकते हुए एक थले से एक कॉपी निकाली, उसपर पेसिल से कुछ लिखा और कागज ल्यूवा को थमा दिया।

उसपर पता लिखा था किन्तु वह पता पढने और यह समझने का उसके पास अवकाश न था कि उसके स्थान पर खान-मालिक की पुत्री किस प्रकार व्यवहार करती। उसने जल्दी जल्दी कागज अपनी ब्लाउज के नीचे रखा, लेफ्टिनेंट को देखकर सिर हिलाया, लेफ्टिनेट ने फौजी सलाम दागी, और ल्यूवा फ्लैट की ड्योढी मे घुस गयी। फिर ल्यूवा ने सुना—गृहस्वामिनी कई तालो वोल्टो और जजीरो से मकान का दरवाजा बद कर रही थी।

"मा कौन था?" दूसरे कमरे से एक लडकी की आवाज़ सुनाई दी।

"चुप रहो! एक मिनट ठहरो," औरत बोली।

तब एक हाथ मे सूटकेस और दूसरे मे कोट लिये ल्यूवा कमरे मे चली आयी।

"मुझे यहा रहने के लिए भेजा गया है। तुम्हे कोई आपत्ति तो नही?" वह उस लडकी पर मैत्रीपूर्ण दृष्टि डालती हुई बोली और कमरे मे चारो ओर देखने लगी। कमरा बडा और सुसज्जित था किन्तु था कुछ कुछ उपेक्षित-सा। शायद यह किसी डाक्टर, इजीनियर या प्रोफेसर का मकान था किन्तु प्रत्यक्षत यही लग रहा था कि जिसके लिए मकान मे इतनी साज-सज्जा जुटायी गयी है वह अब वहा नही रह रहा है।

"यह जानना रुचिकर होगा कि तुम्हे भेजा किसने," साश्चर्य लडकी ने पूछा, "जर्मनो ने या किसने?"

प्रत्यक्षत लडकी स्वय अभी अभी आयी थी। वह अभी तक अपनी भूरे रंग की ऊनी टोपी पहने थी और सर्द हवा से उसके गाल लाल हो रहे थे। लडकी गोल और मोटी थी। उम्र कोई चौदह साल। गला और गाल मोटे, वदन मज़वूत और कुकुरमुत्ते जैसा जिसमे मानो किसी ने दो सजीव और भूरे रंग की आखे जड दी थी।

"प्यारी तमारा!" औरत ने सख्ती से कहा, "इससे हमारा कोई मतलव नही।"

"लेकिन क्यो नही, मा, अगर उसे हमारे साथ रहने के लिए ही भेजा गया है। तो मै तो यू ही पूछ रही थी।"

"माफ करना तुम जर्मन हो?" उस औरत ने कुछ घवराकर पूछा।

"नही। मैं रूसी हू . अभिनेत्री," ल्यूवा ने उत्तर दिया। उसे स्वयं अपने पर पूरा पूरा विश्वास न था।

फिर कुछ क्षणो तक सभी चुप रहे। इस वीच उस लड़की ने ल्यूवा के वारे मे अपना निश्चय कर लिया था।

"सारी रूसी अभिनेत्रिया वहुत पहले ही जा चुकी है," वह वोली और क्रोध दिखाती हुई कमरे से वाहर हो गयी।

ल्यूवा को लगा कि उसे आदि से अन्त तक वह कडवा घूट पीना पडेगा जो अधिकृत प्रदेश में विजेता के रहने-वसने के आनंद को विपाक्त कर देता है। फिर भी ल्यूवा ने इस मकान मे उसी रूप मे कदम जमाने मे अपना लाभ समझा जिस रूप मे मकान मे रहनेवालो ने उसे स्वीकार किया था।

"मैं यहा ज्यादा नही ठहरुगी। मै अपने लिए कोई स्थायी जगह ढूंढ लूगी," वह वोली। फिर भी वह चाहती थी कि घर के लोग उसके

साथ मित्रता का व्यवहार करे। "सच कहती हूं, मै जल्द ही अपना कोई इन्तजाम कर लूगी। मै कपडे कहा वदलू?"

कोई आध घटे वाद रुसी अभिनेत्री ने नीली चीनी क्रेप की पोशाक और हल्के नीले रग के जूते पहने, वाह पर हल्का ओवरकोट डाला और नगर को दो भागो मे विभाजित करनेवाले एक निचले स्थल में वनी हुई रेलवे क्रासिंग तक जाकर कच्ची पथरीली सडक पर, कामेन्नी ब्रोद की दिशा में पहाडी के सिरे की ओर चल दी। वह नगर मे, दौरे पर, आयी थी और अव स्थायी निवास की तलाश में थी।

## अध्याय २

इवान फ्योदोरोविच एक सतर्क व्यक्ति था और जहा तक सम्भव होता अपने पास के सम्पर्क पतो का इस्तेमाल न करता। इन पतो मे वोरोशीलोवग्राद के पते भी शामिल थे। पर अव, जव प्रादेशिक सेक्रेटरियो मे से एक, प्रथम सेक्रेटरी याकोवेको, को मौत की नीद सुलाया जा चुका था, तो इवान फ्योदोरोविच के लिए वोरोशीलोवग्राद जाना अनिवार्य हो चुका था। वह हिम्मती आदमी था अतएव उसने अपनी पुरानी जान-पहचान की एक औरत से काम लेने का जोखम उठाया। इस औरत का नाम था माशा शूविना। वह उसकी पत्नी की सहेली थी और व्यक्तिगत जीवन मे वडी वदनसीव रही थी और अव अकेली चुपचाप जिन्दगी के दिन काट रही थी। वह इजन-निर्माण वाले कारखाने के ड्राइग-आफिस मे काम करती थी। इस औरत को वोरोशीलोवग्राद से इतना मोह था कि जव दो अवसरो पर लोग नगर को खाली कर वहा से जाने लगे तो भी उसने जाने से इनकार कर दिया। हर व्यक्ति और

हर चीज के बावजूद उसे यह विश्वास था कि नगर कभी जर्मनो के हाथो मे न पडेगा और वह किसी काम आ सकेगी।

इवान फ्योदोरोविच ने अपनी पत्नी की सलाह से मागा शूविना के पास जाने का निश्चय किया। वह इस निश्चय पर उस रात को पहुंचा था जब वह और उसकी पत्नी मार्फा कोर्नियेको के तहखाने में छिपे थे। पत्नी उसके साथ इसलिए नही जा सकती थी कि दोनो ने वोरोशीलोवग्राद मे इतने वर्षो तक काम किया था कि अब यदि उन्हे लोग साथ साथ देख लेते तो पति-पत्नी उनकी आंखो मे चढ जाते। सभी बातो पर सोच-विचार करने के बाद यही उचित समझा गया कि येकतेरीना पाव्लोव्ना वही रह जाये तथा छापेमार दलो और उस इलाके के ख़ुफ़िया सघटन से सपर्क बनाये रखे। तहख़ाने मे रहते समय ही दोनो ने निश्चय कर लिया था कि येकतेरीना पाव्लोव्ना एक सबधी के रूप मे मार्फा के ही घर रहेगी और यदि संभव हुआ तो पास-पडोस के किसी गाव मे अध्यापिका का काम करने लगेगी।

अब जब उन्होने पक्का निश्चय कर लिया था तो उन्हे महसूस हुआ कि वे जीवन मे पहली बार एक दूसरे से बिछुडने के लिए विवश हो रहे है और ऐसे समय, जब कौन जाने, वे फिर कभी एक दूसरे से मिल सकेगे या नही।

बहुत समय तक दोनो एक दूसरे की कमर मे हाथ डाले चुपचाप बैठे रहे। सहसा उन्हे लगा कि इस अधेरे और सीलभरे तहखाने में एक दूसरे के इतनी समीप बैठे रहना उनके लिए कितना सुखद है। उनका पारस्परिक सबध अब ऐसा न रह गया था जिसके लिए अनुभूतियो के बाह्य प्रदर्शन की आवश्यकता होती। उनका सबध तो उन अनगिनत सबधो जैसा था जिनका आधार इसलिए ठोस और स्थायी होता है कि पति-पत्नी की एक जैसी रुचिया होती है, उन्हे अपना अपना काम पसन्द

होता है, तथा वे मिलकर वच्चो की देख भाल करते है। उनकी अनुभूतिया, राख में छिपी हुई गर्मी की ही तरह, उनके अन्तस् मे छिपी हुई थी। हा, संकट के क्षणों में, जब उन्होने साथ साथ दुख, सदमे और सुख का अनुभव किया था, उस समय उनकी अनुभूतिया जरूर सतह पर आती थी। उन्हे उन दिनो की याद अव भी बनी हुई थी जव वे लुगास्क के वगीचो मे पहली वार मिले थे; जव नगर भर मे ववूल की मादक गंध फैली हुई थी, जव उनके यौवन मे गुदगुदी पैदा करनेवाला तारो जडा आकाश उनका स्वागत करता था; जव वे जवानी के मोहक सपने देखते थे, जब उन्होने प्रथम ससर्ग के सुख का अनुभव किया था, जव पहला बच्चा होने पर वे खुशी से नाच उठे थे। वेशक उनको अपने स्वभाव की असगति के पहले खट्टे फलो का स्वाद लेना पडा था। किन्तु ये फल कितने आश्चर्यजनक थे! सिर्फ अस्थिर प्रकृति के लोग ये फल खाने के कारण विचलित हो सकते है जिनकी प्रकृति दृढ होती है उनके दिल हमेशा के लिए जुड जाते है।

प्रेम के लिए जीवन की सकटकालीन परीक्षाओ की, और साथ ही प्रेम के उद्भव की स्मृतियो की अपेक्षा होती है। परीक्षाए दम्पति को परस्पर आवद्ध करती हैं और स्मृतिया उन्हे सदा जवान रखती हैं। जव पति या पत्नी इस प्रश्न के उत्तर मे कि "याद है तुम्हे?" हामी भरते हुए सिर हिलाते है तो जैसे वे एक लक्ष्य की शक्ति से वध जाते है। जिस लक्ष्य को दोनो ने अपने जीवन का ध्येय वनाया हुआ है। वस्तुत यह प्रश्न स्मृति का नही। यह तो यौवन का शाश्वत प्रकाश है और जीवन मार्ग पर चलकर भविष्य मे प्रवेश करने का आह्वान। वह व्यक्ति भाग्यशाली है जिसने इस प्रकाश को अपने हृदय मे जीवित रखा है।

मार्फा कोर्नियेको के तहखाने के अधेरे मे वैठे वैठे इवान फ्योदोरोविच

और कात्या के हृदय में इसी प्रकार की सुखद अनुभूतियां उठ रही थीं। वे चुप थे किन्तु उनके अन्तर में ये शब्द गूंज रहे थे–

"याद है? . तुम्हें याद है? .."

एक दिन की बात तो उन्हें विशेष रूप से याद थी। उस दिन उन्होंने अन्तिम निश्चय किया था। वे पिछले कई महीनों से एक-दूसरे से मिल रहे थे। मामला कहां तक पहुंच गया था यह कात्या अच्छी तरह जानती थी। उसने यह सब जाना था उसके साहसी कार्यों और शब्दों से, किन्तु उसने उसे अपने प्रेम की घोषणा न करने दी और न स्वयं ही कोई वादा किया।

एक दिन शाम को प्रोत्सेको ने उससे आग्रह किया कि वह अगले दिन उससे होस्टल के अहाते में मिले। वह प्रादेशिक पार्टी स्कूल में किसी कोर्स में पढ़ रहा था। अकेली यही बात कि कात्या उससे अहाते में मिलने को राजी हो गयी थी, उसकी महान विजय थी। इसका मतलब था कि अब वह उसके मित्रों की उपस्थिति में भी नहीं घबराती थी, क्योंकि उस समय अर्थात् लेक्चर के तुरन्त बाद, अहाता हमेशा विद्यार्थियों से भरा रहता था।

जब वह अहाते में पहुंची, उस समय वहां 'गोरोद्की'* खेल चल रहा था। अहाते में बड़ी भीड़ थी प्रोत्सेको भी खेल में हिस्सा ले रहा था। वह बहुत खुश था। उस समय वह एक उक्रइनी कमीज पहने था, कॉलर का बटन खुला था, और कमर पर पेटी नहीं थी, जिस कारण कमीज खुली लटक सी रही थी। वह उससे मिलने के लिए उसके पास दौड़ता हुआ आया था और उसने कहा था, "कुछ इन्तजार करोगी–

---

*नौ पिनोंवाले खेल की तरह का एक खेल, जो उससे अधिक जटिल होता है। यह खेल गेंद की जगह एक लम्बी और भारी छड़ी से खेला जाता है।

खेल ज्यादा देर तक न चलेगा"। सभी विद्यार्थी उन्ही की ओर देखने लगे थे। कुछ लोगो ने तो कात्या को आगे आकर खेल देखने की भी जगह दे दी थी। परन्तु उसकी आखे बराबर प्रोत्सेको पर ही लगी रही।

प्रोत्सेको नाटा था, इसलिए उसे हमेशा ही कुछ न कुछ निराशा हुई थी। किन्तु अब, पहली बार, कात्या को उसका सर्वांगीण परिचय मिला था और पहली बार कात्या ने देखा था कि वह कितना बहादुर और कितनी होशियारी और सूझ-बूझ से खेल रहा था। वह छडी के एक ही प्रहार मे पेचीदा से पेचीदा आकार ढाह सकता था। कात्या को लगा कि यह काम वह उसकी उपस्थिति से प्रेरित होकर ही कर रहा है। सारा वक्त वह हसता चहकता रहा और अपने विरोधियो का मजाक उडाता रहा, लेकिन किसी बुरी भावना से नही।

लेकिन मार्ग को पहली बार अस्फाल्ट से पक्का किया गया था। उस दिन बडी गर्मी थी और वे बडी देर तक नरम नरम अस्फाल्ट पर चलते रहे थे। वे बहुत सुखी थे वह अभी तक अपनी उन्नइनी कमीज पहने था किन्तु अब उसका डोरा उसकी कमर पर बधा था और उसके सुनहरे बाल उसके सिर पर लहरा रहे थे। वह बराबर बाते करता रहा। उसने एक खोंचे वाले से कुछ सूखे खजूर खरीदे और अखबार के एक टुकडे पर रख लिये। खजूर गर्म गर्म और मीठे थे। उन्हे सिर्फ कात्या ने खाया इसलिए कि वह तो बातो मे उलझा था। इस समय उसे यह बात साफ साफ याद आ रही थी कि उन दिनो उस पक्की सडक पर कही भी कूडे की एक भी बाल्टी न थी ताकि वह खजूर की गुठलिया उनमें डालती। वह इन गुठलियो को बराबर अपने मुह मे ही रखे रही इस आशा मे कि यदि वे किसी एकान्त गली मे मुड़ेगे तो वह गुठलिया कही थूक देगी।

सहसा उसने वाते करना वन्द कर दिया था और उसपर आखे गडा दी थी, इतनी कि वह शर्म से लाल पड गयी थी, और कहने लगा था—

"मै अभी अभी तुम्हे अपनी वाहो मे भरकर यही सडक पर सवके सामने चूमूगा।"

और वह सहसा रूखी हो गयी थी और उसपर अपनी वरौनियो के नीचे से सलज्ज दृष्टि डालती हुई बोल उठी थी—

"कोशिश कर देखो न! सारी गुठलिया तुम्हारे मुह पर न थूक दू तो कहना।"

"वहुत-सी गुठलिया है मुह मे?" उसने वडी गभीरता से पूछा था।

"कोई एक दर्जन होगी।"

"तो चलो वगीचे मे चले। चलो दौड चले," इसके पहले कि वह सोचने के लिए कुछ रुके, प्रोत्सेको चिल्ला पडा था और उसका हाथ पकड कर और राह चलतो की चिन्ता न करता हुआ उसे वगीचे मे खीच ले गया था।

"याद है! वगीचे की वह रात याद है तुम्हे? तारो की छाव मे लुगास्क के वगीचे मे कात्या ने पूरे विश्वास के साथ अपना गर्म गर्म चेहरा उसके मजवूत कधे और गरदन के वीच डाल दिया था। अव अधेरे तहखाने मे भी उसने वैसा ही किया। उसके गाल अपने पति की मुलायम दाढी का स्पर्श करते रहे। प्रभात हो गयी फिर भी दोनो उसी तरह वैठे रहे। क्षण भर के लिए भी उन्हे नीद नही आयी थी। कुछ देर के लिए प्रोत्सेको ने कात्या को और भी जोर से अपने साथ चिपटाये रखा, फिर धीरे-से सिर उठाकर वोला

"समय हो गया है, प्रिये. . उठो मेरी प्यारी!"

किन्तु उसने फिर भी उसके कधे पर से अपना सिर नही उठाया। दोनो वही वैठे रहे यहा तक कि वाहर दिन का प्रकाश फैल गया।

इवान फ्योदोरोविच ने कोर्नेई तीख़ोनोविच और उसके पोते को यह देखने के लिए मित्याकिन्स्काया के अड्डे पर भेज दिया कि दस्ते का क्या हुआ। वह वहुत समय तक बूढे कोर्नेई तीख़ोनोविच को यह निर्देश भी देता रहा कि छोटे छोटे समूहो मे किस प्रकार सघर्ष की कार्यवाहिया करनी चाहिए और किसानो, कज्जाको और गांवो मे वस गये भूतपूर्व सैनिको को किस प्रकार नये नये छापेमार दलो मे सगठित करना चाहिए।

जिस समय मार्फा उन्हे खाना दे रही थी, उसी समय उसका एक दूर का वूढा रिश्तेदार किसी प्रकार बच्चो का मोर्चा तोड़कर खाने के साथ ही साथ मेज़ पर आ धमका। हमेशा ही उत्सुक रहनेवाला इवान फ्योदोरोविच यह जानने के लिए तत्काल ही उसपर झपटा कि सीधा-सादा बूढ़ा देहाती वस्तुस्थिति को किस दृष्टि से देखता है। यह वही व्यवहार-कुशल वूढा था जिसने कोगेवोई और उसके सवधियो के लिए गाड़ीवान का काम किया था। आख़िर, उधर से गुजरते हुए जर्मन क्वार्टरमास्टरो ने उससे उसका हल्के पीले रग का घोडा छीन लिया था और दादा गाव मे अपने लोगो के पास लौट आया था। उसने एक ही दृष्टि मे देख लिया था कि प्रोत्सेको साधारण आदमी से कही वढ-चढकर है और उसने टेढे-मेढे रास्ते से जाना शुरु कर दिया था।

"अच्छी वात है, देखो यह इस प्रकार है . उनकी पलटने तीन हफ्ते से अधिक से मार्च कर रही थी। यहा मार्च करनेवाली ये सचमुच वहुत वड़ी पलटने थी। अब लाल सैनिक नही लौटेगे नही। वात यह है कि वोल्गा के उस ओर, कूइविशेव मे लडाई शुरू हो गयी है। मास्को के इर्द-गिर्द घेरा डाल दिया गया है और लेनिनग्राद पर कब्जा हो गया है। हिटलर का कहना है कि वह मास्कोवासियो को भूखा मारकर मास्को पर कब्जा करेगा।"

"तुम मुझे इस वात का विश्वास कभी नही दिला सकते कि तुम

इन वाहियात खबरो के शिकार हो चुके हो।" इवान फ्योदोरोविच ने कहा और उसकी आखो मे शरारत झलक उठी। "मेरे दोस्त इधर देखो। मै और तुम एक ही कद के है—तुम मुझे कुछ कपडे और जूते दोगे? जो कुछ मै पहने हू वह तुम्हे दे दूगा।"

"अच्छा तो यह बात है?" दादा तुरत बात समझकर बोला; "मै तुरन्त कपडे ले आऊगा।"

तो इस प्रकार इवान फ्योदोरोविच ने वोरोशीलोवग्राद मे कामेन्नी ब्रोद मे, बूढे के कपडे पहनकर माशा शूबिना के कमरे मे प्रवेश किया। उसकी बढी हुई दाढी के कारण उसकी शक्ल-सूरत, जिसपर बुढापे का साया न पडा था, छिप गयी थी। उसकी पीठ पर एक थैला लटक रहा था।

जब वह इस प्रकार वेश बदले अपने ही जन्मस्थान की सडको से होकर गुजर रहा था तो उसे एक विचित्र अनुभूति का आभास हुआ। वह वोरोशीलोवग्राद मे सिर्फ पैदा ही न हुआ था, बल्कि वहां बरसो काम भी कर चुका था। उसके जमाने मे दफ्तरो की ढेरो इमारते, सस्थाए, क्लब और आवासगृह बने थे। कुछ भवन तो एकमात्र उसी के प्रयासो के फलस्वरूप बने थे। उसे याद आ रहा था—जिस चौक से होकर वह इस समय गुजर रहा था, उसकी योजना नगर सोवियत के अध्यक्षमडल की बैठको मे बनायी गयी थी और स्वय उसी ने उसका नक्शा तैयार कराया था और वहा पेड-पौधे लगाने के कार्यो की देख-रेख की थी। अपने इस नगर की सार्वजनिक सेवाओ का सघटन करने से सबद्ध उसके समस्त व्यक्तिगत प्रयासो के होते हुए भी नगर पार्टी कमिटी मे बराबर इस बात की आलोचना होती रही कि सडको और अहातो मे काफी सफाई की व्यवस्था नही है। और यह आलोचना उचित भी थी।

अब बमो ने कई इमारते नष्ट कर दी थी, पर प्रतिरक्षा के लिए लडी जानेवाली लडाइयो की सरगर्मी के बीच, नगर का विध्वस अधिक

प्रत्यक्ष न दिखता था। पर बात तो यह भी न थी। पिछले कुछ हफ्तो मे नगर की इतनी उपेक्षा की गयी थी कि लगता था जैसे नये मालिको को स्वय यह विश्वास न था कि वे वहां हमेशा के लिए बस पायेगे। सडको की न तो सफाई ही की गयी थी, न उनपर पानी का छिडकाव ही। चौको मे लगे हुए फूल मुरझा गये थे, क्यारी मे घास-पात उग आयी थी और सिगरेटो के अधजले टुकडे और कागज लाल लाल धूल मे जहा तहां पडे थे।

नगर एक प्रमुख कोयला क्षेत्र समझा जाता था। पुराने दिनो मे, देश के अन्य बहुत-से जिलो की तुलना में इस नगर मे तरह तरह के सामान आया करते थे। सड़को पर अच्छे अच्छे कपडे पहने हुए खुशहाल लोगो की चहल पहल रहती थी। आदमी देखते ही समझ लेता था कि यह दक्षिणी नगर है। यहा हमेशा ढेरो फल-फूल मिल सकते थे। कबूतरो के तो झुण्ड के झुण्ड रहा करते थे यहा। अब भीड कम हो गयी थी और उनमे सादगी और बुढापे के आसार झलकने लगे थे। अब यहा लोग अपने कपडे-लत्तो की ओर से लापरवाह हो गये थे। उनके वस्त्रो को देखकर लगता था कि लोग उनकी जान-बूझकर उपेक्षा करने लगे है। उन्हे देखकर लगता था कि उन्होने नहाना-धोना तक छोड दिया है। बेशक, जर्मनो, इतालवियो तथा कही कही रूमानियनो और हगेरियनो, अर्थात् दुश्मनो की वर्दियो, कन्धे की पट्टियो और बिल्लो ने वहा जरूर कृत्रिम रगीनी बिखेर दी थी। बस सडको पर उन्ही की आवाजे सुनाई देती और धूल के अम्बार उडाती और भोपू बजाती हुई उन्ही की कारे दौड लगाया करती। आज से पहले इवान फ्योदोरोविच के मन मे नगर और उसके निवासियो के प्रति इतनी सहानुभूति, इतने प्रेम की अनुभूति कभी न जगी थी। उसे लगा जैसे वह अपने घर से निकाल दिया गया था और अब वह फिर छिप-लुक कर वहा लौट आया है, किन्तु जैसे वह देख रहा था

कि नये नये किरायेदारों ने उसकी सम्पत्ति का अपहरण किया है, इन उस चीज पर हाथ साफ किया है जो उसे जान से ज्यादा प्यारी रही है, और उसके नाती-रिश्तेदारों को बरबाद किया है। परन्तु वह उन्हें रोकने मे अशक्त था, वह तो टुकुर टुकुर देख भर सकता था, बस!

उसकी पत्नी की सहेली के चेहरे पर वैसी ही निराशा, वैसी ही उपेक्षा के भाव झलकते थे। वह एक पुरानी-सी काली फ्राक पहने थी। उसके सुनहरे बाल जैसे लापरवाही से उसके सिर पर बाधे हुए थे। उसके पैरो मे फटे-पुराने घरेलू जूते थे और यह प्रत्यक्ष लग रहा था कि वह बहुत समय से, पैर धोये बिना ही, पलग पर सोने जाती रही है।

"माशा तुममे ऐसी शिथिलता कैसे आ गयी?" इवान फ्योदोरोविच सहसा बोल उठा।

माशा ने जैसे बडी विरुचि से अपने ऊपर एक निगाह डाली।

"मै! सचमुच! मैने कभी इसपर ध्यान नही दिया। सभी इसी तरह रहते है। यही बेहतर है—जर्मनो की नजर मे भी आदमी नही चढता। और नगर मे पानी भी तो नही है।"

वह चुप हो गयी, और तब कही इवान फ्योदोरोविच ने इस बात पर ध्यान दिया कि वह कितनी दुबली हो गयी है और कमरा कितना खाली खाली और भयानक लगता है! उसने सोचा शायद वह भुखमरी का शिकार हो रही है और उसके पास जो कुछ भी था उसे कब का बेच चुकी है।

"अच्छा, आओ, कुछ पेट मे डाल ले . एक छोटी-सी औरत ने मेरे लिए सभी तरह की अच्छी अच्छी चीजे तैयार करके दी थी, वह छोटी-सी औरत सचमुच बडी होशियार थी," वह बोला और अपना थैला टटोलने लगा।

"हे भगवान, लेकिन यह बात नही है!" माशा ने अपना चेहरा

अपने हाथों से ढाप लिया। "मुझे अपने साथ कात्या के पास ले चलो," जोश मे आकर उसने कहा। "मै पूरी शक्ति, पूरी लगन से तुम्हारे लिए काम करूगी। मैं तुम्हारी चाकरी करने को तैयार हू। मैं कुछ भी करने को तैयार हूं, कम से कम रोज रोज यह अपमान के घूट तो न पीना पडे, विना काम के घुट घुटकर मरना तो न पडे, बिना किसी उद्देश्य के जिन्दगी का वोझ तो न ढोना पडे।"

माशा, कात्या की बचपन की सहेली थी। वह प्रोत्सेको को तब से जानती थी जब से कात्या के साथ उसका विवाह हुआ था। फिर भी वह उससे औपचारिक ढग से ही बातचीत करती। उन पुराने दिनो मे भी प्रोत्सेको को यह शका हुई थी कि वह मुझसे परिचितो की तरह बातचीत नही करती, इसलिए कि उसे यह ध्यान बराबर बना रहता है कि प्रमुख पद पर होने के कारण मैं उससे अर्थात् एक साधारण ड्राफ्ट्सवोमन से, कोसो दूर हू।'

इवान फ्योदोरोविच के चौडे माथे पर एक गहरी-सी रेखा खिच गयी और उसकी जीवित नीली आखो मे चिन्ता तथा कठोरता का भाव झलक उठा।

"मै तुमसे साफ साफ बाते करूगा, वे शायद कडवी भी लगेगी," उसकी ओर देखे बिना प्रोत्सेको ने कहना शुरु किया, "माशा, अगर मामला हमारा और तुम्हारा होता तो मैं तुम्हे कात्या के पास ले चलता और तुम दोनो को छिपाकर मै खुद भी छिपकर ही रहता," वह बोला और उसके मुह पर कठोर-सी कटु मुस्कान छिटक गयी। "मै अपने राज्य का सेवक हूं और अब यह चाहता हू कि खुद तुम भी अपनी पूरी योग्यता से हमारे देश की सेवा करो। इसी लिए मैं तुम्हे यहा से नही ले जाऊंगा। इतना ही नही, मैं चाहता हू कि सीधा तुमसे काम करवाना शुरू कर दू। मुझे साफ साफ बताओ—तुम सहमत हो? तुममे ताकत है?"

"इस तरह की जिन्दगी बसर करने के बजाय मैं कुछ भी करने को तैयार हू।"

"यह कोई जवाब नही।" इवान फ्योदोरोविच ने सख्ती से कहा, "मैं तुम्हे अपनी आत्मा के उद्धार का रास्ता नही सुझा रहा हू। मै सिर्फ एक बात पूछता हू—तुम अपनी जनता, अपने राज्य की सेवा करने को तैयार हो?"

"तैयार हू," वह धीरे-से बोली। प्रोत्सेको जल्दी से मेज पर झुका और उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

"यहा के लोगो के साथ सम्पर्क रखना मेरे लिए बहुत जरूरी है, किन्तु यहा तो गिरफ्तारियां हुई है और इस समय मुझे यकीन नही कि मै किन सम्पर्को पर भरोसा करू। तुम्हे अपने मे साहस और शैतान की सी चालाकी पैदा करनी होगी। मै तुम्हे कुछ सम्पर्क-पते दूगा और तुम्हे इन लोगो के बारे मे पता लगाना होगा। करोगी?"

"करूगी," वह बोली।

"अगर तुमपर कोई मुसीबत आये और दुश्मन तुम्हे धीमी आंच पर जलाये, तुमपर अत्याचार करे तो क्या तुम हम लोगो का भेद खोल दोगी?"

उत्तर देने के पहले वह कुछ रुकी मानो अपनी अन्तरात्मा से राय ले रही हो।

"नही," वह बोली।

'तो सुनो . ."

और प्रोत्सेको दिये के मद्धिम प्रकाश मे उसके और भी निकट झुक आया। अब माशा को उसकी कनपटी पर एक नये घाव का निशान नजर आया। उसने माशा को कामेन्नी ब्रोद का एक सम्पंक-पता दिया जिसे वह दूसरों से अधिक विश्वस्त समझता था। उसे इस सम्पर्क की विशेष आवश्यकता

थी क्योकि उसके जरिये वह उक्रइनी छापेमार हेडक्वार्टर से सम्पर्क रख सकता था और यह जान सकता था कि न सिर्फ उसी प्रदेश मे, बल्कि मोर्चे के सोवियत क्षेत्र मे और अन्य सभी जगहो पर, क्या हो रहा है।

माशा ने तुरन्त ही वहा जाने की इच्छा प्रगट की। पर, उसके इस भोले आत्मत्याग और अनुभवहीनता का इवान फ्योदोरोविच पर बडा असर पडा। उसकी दोनो आखे चमक उठी थी।

"पर यह काम किया कैसे जा सकता है?" उसने उसे वाणी मे मिठास भरकर फटकारा, "यह काम बड़ी सफाई से होना चाहिए, जैसे फैशन स्टोर मे होता है। तुम जहा जाओगी दिन मे जाओगी, खुलेआम। मै तुम्हें सब कुछ समझा दूगा .. एक बात और, मुझे अपने पीछे के बचाव का भी ध्यान रखना है। यह मकान किसका है?"

माशा ने एक छोटे-से मकान का एक कमरा किराये पर ले रखा था। मकान लोकोमोटिव कारखाने के एक पुराने कामगार का था और पत्थर का बना था। मकान के बीचोबीच से एक गलियारा जाता था जो एक ओर से एक अहाते मे निकलता था और दूसरी ओर से सडक पर। अहाते के चारो ओर पत्थर की नीची दीवाल थी। गलियारे के एक तरफ एक कमरा और रसोईघर पडता था, दूसरी तरफ दो छोटे कमरे थे जिनमे से एक मे माशा रहती थी। बूढे कामगार के बहुत-से बच्चे थे किन्तु अब कोई भी उसके साथ न रहता था। उसके बेटे या लाल सेना मे थे या नगर से बाहर चले गये थे। विवाहित बेटिया दूसरे नगरो मे रहती थी। माशा के कथनानुसार उसका मकान-मालिक गम्भीर क़िस्म का आदमी था, किताब का कीडा, कम मिलनसार, किन्तु बहुत ईमानदार।

"मै मकान-मालिक से कह दूगी कि तुम मेरे मामा हो और देहात से आये हो। मेरी मा भी उक्रइनी थी। मै उससे कहूगी कि मैने ही तुम्हे आने के लिए लिखा था क्योकि अकेले मे रहना मेरे लिये मुश्किल था।"

"अच्छा तो अपने मामा को अपने मकान-मालिक से तो मिलाओ। जरा देखें तो वह कैसा गैर-मिलनसार है," इवान फ्योदोरोविच ने बात निकालते हुए कहा।

"पर जिक्र करने के काविल यहा पर काम ही कौन-सा है, और काम भी क्या किया जाय?" वह 'गैर-मिलनसार' आदमी उदास होकर वडवडाया। उसकी आगे निकली हुई सी वडी वडी आखे किसी किसी वक्त इवान फ्योदोरोविच की दाढी और दाहिनी कनपटी के ऊपर घाव के निशान पर टिक जाती थी। "हम दो वार फैक्ट्री का साज-सामान यहा से भेज चुके है। जर्मनो ने कई वार हमपर वम वरसाये। हमारे यहा इजन और वाद मे टैंक और तोपे वनती थी। अव हम प्राइमस-चूल्हो और सिगरेट लाइटरो की मरम्मत करते है। सच तो यह है कि कारखाने के कई विभागो के ढाचे वाकी पडे है और यहा से या वहा से वहुत-से साज-सामान की तलाश की जा सकती है। किन्तु ऐसा करने के लिए योग्य कारखाना मैनेजर की जरूरत है। इस समय वहा जो मैनेजर है " उसने अपनी दुवली-पतली वाह हिलाते हुए कहा। "ये सवके सव वडे मामूली अफसर है। इसपर चोर है चोर, उचक्के। तुम्हे यकीन न होगा लेकिन इस अकेली फैक्ट्री के लिए तीन फैक्ट्री मालिक चक्कर लगा चुके है। क्रुप्प का प्रतिनिधि आया था क्योकि पहले कारखाने पर हार्टमनो का स्वामित्व हो गया था और क्रुप्प ने उनके हिस्से खरीद लिये थे। फिर रेल-प्रशासन यहा नमूदार हुआ और अन्त मे एक विजली कम्पनी। वेशक इस कम्पनी ने विजलीघर पर कब्जा कर लिया होता किन्तु हमारे लोगो ने नगर खाली करने के पहले ही उसे उडा दिया। इन तीनो मालिको ने सारे कारखाने का चक्कर लगाया और यह निश्चय किया कि वे उसे तीन भागो मे बांट लेगे। इसे देखकर हसी भी आती थी और रोना भी। सारी फैक्ट्री नष्ट हो चुकी थी और वे थे कि खूटे गाड गाडकर उसे वैसे ही अलग कर रहे थे जैसे कि जार-

वादशाहो के जमाने में किसान अपनी अपनी जमीनो को अलग कर लेते थे। वे तो वहा सुअरो की तरह जम गये थे और फैक्ट्री के भीतर के सवहन-मार्गो मे गड्ढे तक खोद लिये थे ... उन्होने सारी जगह वाट ली, उसपर विभाजन रेखाए खीच ली और सारी वची खुची साज-सज्जा जर्मनी मे अपने अपने कारखानो मे भेज दी। उन्होने छोटी मोटी चीजे ऐसे औने-पौने वेची मानो कवाड खाने के व्यापारी हो। हमारे श्रमिक वस हसते रहते है· "अफसरो के वारे मे क्या कहे! पिछले कुछ वर्षो मे हमारे कर्मचारी तेज रफ्तार से काम करने के आदी हो गये है और जहा तक इन मालिको के लिए काम करने का सवाल है, तो इन्हे देख लेने भर से ही आदमी को उवकाई आने लगती है। वेशक हम हस लेते है किन्तु सिर्फ इसलिए कि हम अपने आसू छिपाना चाहते है "

धुधाती हुई मोमवत्ती के प्रकाश मे चारो जने—लम्वी दाढी वाला इवान फ्योदोरोविच, माशा, जो वहुत शात हो गयी थी, 'गैर-मिलनसार' आदमी और एक वूढी, जिसकी पीठ झुक गयी थी—कदरावासियो की तरह लग रहे थे। उनकी भयानक परछाइया एक दूसरे से मिलती, विछुडती और प्राय दीवालो और छत पर चढ जाती। 'गैर-मिलनसार' आदमी की उम्र सत्तर के आसपास थी। दुवला-पतला वदन, नाटा-सा कद, सिर वडा, सीधे तनकर वैठना भी उसे मुश्किल लग रहा था। वह नीरस लहजे मे उदासी के साथ वोलता और प्राय लडखडाते हुए शव्दो को चवा जाता था। इवान फ्योदोरोविच को उससे वातचीत करने मे मजा आ रहा था, इसलिए नही कि वूढा तुक की वात करता था या सच वोलता था वल्कि इसलिए कि नगर का एक कामगार, इत्तिफाक से मिले एक किसान को, जर्मनो के अधीनस्थ एक औद्योगिक कारखाने के व्योरे सुना रहा था। इवान फ्योदोरोविच उसके सामने अपने विचार भी प्रकट करने का लोभ सवरण न कर सका।

"मै जिस गाव से आया हू वहा लोग इस प्रकार सोचते है—दुश्मन को उक्रइन मे हमारे उद्योग का विकास करने मे कोई रुचि नही। उसके सारे उद्योग तो जर्मनी मे है। पर उसे तो हमारा अनाज और कोयला चाहिए, बस। वह उक्रइन को अपना उपनिवेश समझता है और हम सबको अपना गुलाम"।" इवान फ्योदोरोविच को लगा जैसे इस 'गैर-मिलनसार' आदमी की दृष्टि मे आश्चर्य का भाव झलक उठा है। वह हसते हुए बोला "इसमे कोई आश्चर्य नही कि हमारे किसान इस प्रकार तर्क करते है। आखिर वे बच्चे नही है। अब वे सभी कुछ समझते है।" उसकी आखे फिर चमक उठी।

"हा, यह तो ठीक है,!" 'गैर-मिलनसार' आदमी ने कहा। उसे इवान फ्योदोरोविच का तर्क सुनकर कोई आश्चर्य न हुआ था। "अच्छी बात है—उपनिवेश ही सही। तो इससे नतीजा यह निकलता है कि वे गाव मे खेतीबारी के काम को आगे बढा रहे है, है न?"

इवान फ्योदोरोविच मृदुता से हस दिया।

"हम जाडे का गेहू जाडे और बसत के गेहू की खूटी लगे खेत मे बोते है और मिट्टी खोदते है कुल्हाडी से। अब तुम खुद ही समझ लो।"

"बिलकुल ठीक," 'गैर-मिलनसार' आदमी ने कहा। उसे फिर भी कोई आश्चर्य न हो रहा था। "किसी चीज का इन्तजाम कैसे किया जाता है इसका उन्हे कोई इल्म नही उन्हे तो लूट का पेशा इख्तियार करके जिन्दा रहने की आदत-सी पड गयी है। और—भगवान मुझे क्षमा करे—इस 'सस्कृति' को लेकर ये वहशी दुनिया को जीतना चाहते है," वह बोला किन्तु उसकी आवाज मे द्वेष का पुट न था।

"ओहो, दादा, तुम मुझ जैसे किसान को सौ सौ तर्कों की छूट देकर भी मुझसे बाजी ले जा सकते हो, इवान फ्योदोरोविच ने सोचा और इस विचार से वह प्रसन्न हो उठा।

"क्या किसी ने तुम्हे अपनी भतीजी के यहा आते देखा था?" 'गैर-मिलनसार' आदमी बोला। उसके लहजे मे कोई परिवर्त्तन न आया था।

"यह तो मै नही जानता। लेकिन मै चिन्ता क्यो करू? मेरे पास अपने सब परिचय-पत्र मौजूद है।"

"यह ठीक है," उसने जैसे बात टालने के ढग से कहा, "लेकिन यहा का कानून यह है कि मुझे तुम्हारे आने की खबर पुलिस मे करनी है। अगर तुम यहा बहुत समय तक न रहो तो हम इस मामले को नजरअन्दाज भी कर सकते है। मै तुमसे सीधी सीधी बात कर रहा हू, इवान फ्योदोरोविच। मैने तुम्हे तुरत ही पहचान लिया था क्योकि, तुम्ही देखो न, तुम अक्सर कारखाने मे आया करते थे कौन जाने कोई बेतुके किस्म का आदमी तुम्हे किस बेतुके मौके पर पहचान बैठे।"

बेशक इवान फ्योदोरोविच की पत्नी ठीक ही कहा करती थी कि वह शुभ मुहूर्त मे पैदा हुआ है।

दूसरे दिन सुबह माशा एक सम्पर्क-पते पर गयी और एक अजनबी को साथ लिये वापस आ गयी। इवान फ्योदोरोविच और माशा को यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि इस अजनबी ने 'गैर-मिलनसार' आदमी का इस ढग से अभिवादन किया मानो वे अभी एक ही दिन पहले बिछुडे हो। उसी आदमी से इवान फ्योदोरोविच को मालूम हुआ कि इस 'गैर-मिलनसार' आदमी को यहा पर खुफिया काम करने के लिए रोक लिया गया है। इवान फ्योदोरोविच को यह भी मालूम हुआ कि जर्मन सैनिक देश मे कहा तक घुस आये है। यह बात उस समय की है जब स्तालिनग्राद का महायुद्ध आरभ हुआ था।

अगले कुछ दिनो मे इवान फ्योदोरोविच ने नगर की और कुल मिलाकर प्रदेश की स्थिति जानी-समझी। उसका कुछ समय सम्पर्क स्थापित

करने मे व्यतीत होता। फिर एक दिन, उसके क्रिया-कलाप के दौरान में वही आदमी, जिसने नगर के खुफिया संघटन के साथ उसका सम्पर्क स्थापित किया था अपने साथ अभिनेत्री ल्यूबा को लाया।

ल्यूबा ने इवान फ़्योदोरोविच को उन परिस्थितियो के बारे मे सभी कुछ बताया जिनमे क्रास्नोदोन जेल मे बद लोगो ने मौत का सामना किया था। वह खिन्न चित्त सारी कहानी सुनता रहा और कुछ समय तक तो उसके मुह से एक शब्द भी न निकला। उसे मत्वेई कोस्तियेविच और वाल्को के लिए बडा ही दुख था। "कितने महान कज्जाक थे वे दोनो।" उसने मन ही मन सोचा। और सहसा उसकी कल्पना के सामने उसकी पत्नी का चित्र घूम गया—वह अकेली बैठी बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, बिलकुल अकेली

"हा," उसने कहा, "हमारी यह खुफिया जिन्दगी भी कितनी कठोर है! इससे कठोर जिन्दगी का अस्तित्व ही नही रहा कभी " वह ल्यूबा से बातचीत करता हुआ वही कमरे मे चहलकदमी करता रहा किन्तु जो कुछ उसने कहा वह कुछ ऐसा लग रहा था मानो स्वय अपने से बाते कर रहा हो। "लोग हमारे खुफिया सघटन की तुलना, श्वेतरक्षको के अधीनस्थ, हस्तक्षेपकाल के खुफिया सघटन से करते है। परन्तु दोनो का मुकाबला ही क्या? इन कसाइयो ने जो आतक फैला रखा है उसकी तुलना मे श्वेतरक्षक स्कूली बच्चे थे। आजकल वे लाखो लोगो का सफाया कर रहे हैं। किन्तु आज हमे एक लाभ भी प्राप्त है जो उस काल मे न था—हमारे खुफिया लडाको और छापेमारो के साथ हमारी पार्टी, हमारी सरकार और हमारी लाल सेना की पूरी पूरी शक्ति है। हमारे छापेमार कही अधिक जागरुक है। उनका सघटन भी पहले से अच्छा है, उनकी प्राविधिक सज्जा, अर्थात् शस्त्रास्त्र और सवहन आदि भी उच्च कोटि के है। यह बात लोगो को साफ साफ बता देनी चाहिए . दुश्मन की

कमजोरी यह है कि वह कुन्दजेहन है, वह हर काम कार्यक्रम के अनुसार हुक्म मिलने पर करता है। वह हमारे लोगो के बीच, अज्ञान के पूर्ण अन्धकार मे रहता है और कुछ भी नही समझता   उसकी इस कमजोरी से फायदा उठाना चाहिए!" उसने ल्यूबा के सामने आकर रुकते हुए कहा और फिर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चहलकदमी करने लगा—"ये सारी बाते लोगो को समझायी जानी चाहिए ताकि वे दुश्मन से डरना छोडे और उसे धोखा देना सीख ले। लोगो को सगठित किया जाना चाहिए। फिर उनमे से स्वय लडनेवाले लोग निकलेगे। हर जगह ऐसे छोटे छोटे खुफिया दल बनने चाहिए जो खानो और गावो मे, अर्थात् सभी जगह काम कर सके। लोगो को जगलो मे छिपने नही जाना चाहिए। हुंह! अरे हम रहते है दोनबास मे। हमे खानो, गावो और जर्मन सस्थाओ तक मे घुसना चाहिए, मसलन् श्रम केन्द्र, नगर परिषद, प्रशासन, गाव कमाडांटुर दफ्तरो, पुलिस और गेस्टापो तक मे। हमे अन्दर ही अन्दर तोड-फोड, अराजकता और आतक फैलाकर दुश्मन की सारी व्यवस्था पलट देनी चाहिए। स्थानीय श्रमिको, ग्रामीणो और युवको तक के, पाच पाच लोगो के छोटे छोटे दल बनाने चाहिए ताकि जर्मनो के दात हमारे भय से कटकटा उठे।" उसने ये सारी बाते जैसे बदले की भावना से कही और यह भावना इतनी सक्रामक सिद्ध हुई कि स्वय ल्यूबा तक की सास भारी हो गयी। फिर इवान फ्योदोरोविच को वह बात भी याद आयी जो ल्यूबा ने 'पुराने साथियो के निर्देशो के सबध मे' उसे बतायी थी।

"तो इसके माने है कि तुम लोगो का काम ठीक चल रहा है। यही बात दूसरी जगहो पर भी है। फिर ऐसे मामलो मे तो लोग हताहत होते ही है . तुम्हारा नाम क्या है?" उसने पूछा और एक बार फिर उसके सामने आकर रुक गया। "ल्यूबा?   हा, तुम्हारी जैसी भली लडकी का ऐसा ही नाम होना चाहिए! तो ल्यूबा है तुम्हारा नाम!" उसकी

आखे चमक उठी, "अच्छा तो वोलो, तुम्हे और किस चीज की जरूरत है?"

और तुरन्त ल्यूवा की कल्पना की आखो के सामने उस कमरे का दृश्य घूम गया जहा वे सातो एक पक्ति मे खड़े थे। खिडकी के वाहर नीचे नीचे गहरे वादल आकाश मे दौडे जा रहे थे। जैसे जैसे प्रत्येक आगे वढता था उसके गालो का रग उड़ने लगता था और शपथ लेती हुई आवाज इतनी ऊंची हो जाती थी कि उसकी थरथराहट तक उसी मे छिप जाती थी। शपथ का मसविदा ओलेग और वान्या ज़ेम्नुखोव ने तैयार किया था और सभी ने उसका अनुमोदन किया था, किन्तु जव उन्होंने शपथ ली थी तो वह शपथ उन्हे जैसे अपने से वाहर की और अपने से ऊपर की चीज लगी थी तथा अधिक अटल और कानून से भी अधिक अनुल्लघनीय जान पडी थी। ल्यूवा को ये सारी वाते याद आने लगी और वह फिर उत्तेजित हो उठी, उसका चेहरा फिर पीला पड गया। और सामान्यत उसकी वाल-सुलभ नीली आखो मे इस्पात जैसी कठोर चमक दिखाई देने लगी थी।

"हमे सलाह-मशविरे और मदद की जरूरत है," वह वोली।

"'हमे' से क्या मतलव? किसे?"

"'तरुण गार्ड' दल को। हमारा कमाडर लाल सेना तक एक लेफ्टिनेंट इवान तुर्केनिच है जो अपनी यूनिट से उस समय कट गया था जव वह घायल हुआ था। हमारा कमीसार गोर्की स्कूल का विद्यार्थी ओलेग कोशेवोई है। हममे से तीस लोगो ने निष्ठा और देशभक्ति की शपथ ली है। जैसा तुमने कहा है, हम पाच पाच के दलो मे ही सघटित हुए है। यह सुझाव था ओलेग का।"

"ऐसा करने की सलाह उसे शायद प्रौढ साथियो ने ही दी होगी," इवान फ्योदोरोविच ने कहा। वह पलक मारते ही सव कुछ समझ गया था, "जो भी हो तुम्हारा ओलेग है वडा फुर्तीला"।

इस समय इवान फ्योदोरोविच मे असाधारण उत्साह आ गया था। वह तड से मेज पर जम गया और अपने ठीक सामने ल्यूवा को विठाते हुए उससे 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर के सारे सदस्यो के नाम और प्रत्येक की कुछ न कुछ विशेषताए वताने का अनुरोध करने लगा।

जव ल्यूवा ने स्तखोविच की चर्चा शुरू की तो उसकी भौहे रोप मे चढ गयी।

"एक मिनट ठहरो," उसने ल्यूवा का हाथ छूते हुए पूछा, "उसका पहला नाम क्या है?"

"येव्गेनी।"

"वह वरावर तुम्ही लोगो के साथ रहा है या कही वाहर से आया है?"

वह क्रास्नोदोन मे किस प्रकार आया था और उसने अपने वारे मे क्या क्या वाते कही थी, यह सब कुछ ल्यूवा ने उसे वताया।

"जव तुम इस छोकरे से कोई काम लेना तो होशियारी वरतना। उसके पिछले कामो की थोडी वहुत जाच भी कर लेना।" इवान फ्योदोरोविच ने ल्यूवा को वताया कि स्तखोविच किन विचित्र परिस्थितियो मे दस्ते से गायव हुआ था? "अगर वह जर्मनो के हाथ मे नही पडा है. ." प्रोत्सेको ने धीरे-से इतना और कह दिया।

ल्यूवा का चेहरा उतर गया। उसकी चिन्ता वढ गयी क्योकि वह स्तखोविच को अधिक पसद नही करती थी। कुछ क्षणो तक वह चुप रहकर इवान फ्योदोरोविच को ताकती रही फिर उसकी आखे चमकी और वह शात स्वर मे वोली—

"नही, ऐसा नही हो सकता। शायद वह कुछ डर गया था और भाग आया, वस!"

"तुम ऐसा क्यो सोचती हो?"

"हमारे साथी उसे बहुत दिनो से जानते है। वह कोमसोमोल-सदस्य है। बेशक वह अपने को बहुत कुछ समझता है, किन्तु वह ऐसा कोई काम न करेगा। उसके परिवार के सब लोग भले है–पिता एक पुराना खान-मजदूर है, भाई लोग पार्टी के सदस्य है और अब सेना मे हैं... नही, ऐसा नही हो सकता।"

इवान फ्योदोरोविच को उसके इस असाधारण और स्पष्ट तर्क पर आश्चर्य हुआ।

"तुम बडी चतुर हो," वह बोला किन्तु उसकी आंखो मे उदासी का भाव देखकर वह घबरा-सी गयी, "एक जमाना था जब हम भी उसी दिशा मे सोचते थे। देखो न, बात यह है," उसने वैसे ही सीधे-सरल ढग से अपनी बात शुरू की जैसे कोई बच्चे से कहता है, "दुनिया मे अब भी ढेरो ऐसे लोग पडे है जो अपने विचार ठीक उसी तरह बदल डालते है, जिस तरह वे कपडे बदलते है। कभी कभी तो वे इन विचारो से आवरण का काम लेते है। फासिस्ट लोग दुनिया भर मे ऐसे लाखो लोगो को ट्रेनिग दे रहे है। फिर ऐसे बहुत-से लोग है जो दिल के कमजोर है और जिन्हे आसानी से तोडा जा सकता है ."

"नही, ऐसा कभी नही हो सकता," ल्यूबा बोली। उसके दिमाग मे स्तखोविच घूम रहा था।

"भगवान करे तुम्हारी बात सच हो! पर जब एक बार उसने बुजदिली दिखायी है तो फिर वैसा कर सकता है!"

"मै इसके बारे मे ओलेग से बात करूगी," उसने सक्षेप मे कहा।

"तो मैने जो कुछ तुमसे कहा है, वह सब तुम समझ गयी न?"

ल्यूबा ने हामी भरी।

"तब इसी के अनुसार काम करो . क्या तुम उस आदमी से सम्पर्क बनाये हुए हो जो तुम्हे यहा लाया था? उसे हाथ से निकलने न देना।"

"धन्यवाद," ल्यूबा बोली। उसकी आखो मे फिर पहले जैसी चमक आ चुकी थी।

दोनो उठ खडे हुए।

"हमारी बोल्शेविक शुभकामनाए 'तरुण गार्ड' दल के साथियो के पास पहुचा देना," उसने बडे स्नेह से ल्यूबा का सिर अपने दोनो हाथो मे पकडा और पहले एक आख, फिर दूसरी आख चूम ली। तब धीरे-से उसे छोडते हुए बोला, "अब जाओ!"

## अध्याय ३

ल्यूबा थोडे ही दिनो तक वोरोशीलोवग्राद में रही, किन्तु इन दिनो वह उसी व्यक्ति के आदेशो के अनुसार चलती रही जो उसे इवान फ़्योदोरोविच से मिलाने ले आया था। इस व्यक्ति को यह बात बडे काम की लगी कि ल्यूबा की दोस्ती एक जर्मन क्वार्टरमास्टर कर्नल और उसके ऐडजुटेंट से हो गयी है और उसके रहने का ठिकाना एक ऐसे घर मे हो गया है जहा लोग उसे वह व्यक्ति समझ रहे थे जो वस्तुत वह थी नही।

उसके लिए नया कोड सीखने की कोई आवश्यकता नही थी क्योकि उसने वायरलेस स्कूल छोडने से पहले जो कोड सीखा था वही इस्तेमाल किया जा रहा था। किन्तु उसे अपने साथ एक ट्रान्समिटर रखना होगा, क्योकि वोरोशीलोवग्राद मे उसका इस्तेमाल किया जाना बडा कठिन हो गया था।

उसी व्यक्ति ने ल्यूबा को यह भी सिखाया था कि वह समय समय पर अपना आवास बदलती रहे ताकि 'राडर' की सहायता से भी उसका पता न चल सके। मतलब यह कि उसे हर समय क्रास्नोदोन मे ही नही

रहना चाहिए बल्कि यदा-कदा वोरोशीलोवग्राद तथा दूसरी जगहो में भी जाना चाहिए। अभी तक उसका सम्पर्क जिन लोगों से हो चुका था उनसे बनाये रखने के अलावा, उसे जर्मनी, रूमानिया, इटली और हंगरी के शत्रु अफसरो से भी नया संबंध पैदा करना चाहिए।

ल्यूबा जिस घर मे रह रही थी, उसके निवासियो से भी उसने यह समझौता कर लिया था कि जब कभी वह वोरोशीलोवग्राद आयेगी, उन्ही के साथ रहेगी क्योकि उसे जिन दूसरी जगहो मे रहने का सुझाव दिया गया था, वे उसे पसंद न थी। बेशक कुकुरमुत्ते की शक्ल वाली लड़की ल्यूबा के साथ बड़ी ही घृणा का व्यवहार करती रही किन्तु मां ने समझ लिया था कि घर मे जर्मनो को रखने की अपेक्षा ल्यूबा कम कष्टकर है।

अब ल्यूबा को एक बार फिर गुजरती हुई किसी जर्मन कार का सहारा लेना अनिवार्य हो गया था। किन्तु इस बार उसने पास आती हुई कारो को इशारा नही किया। उसे अब दिलचस्पी थी सैनिकोवाली लारियो मे। सैनिक अधिक आमोदप्रिय और कम उत्सुक होते है। इस बार उसके सूटकेस मे निजी चीजो के अलावा एक छोटा-सा यंत्र भी था।

आखिर उसे अस्पताल की एक सर्विस गाडी पर चढा लिया गया। उसने देखा कि उसपर मेडिकल दस्ते के पाच-छ व्यक्तियो के अलावा एक सीनियर और कुछ जूनियर मेडिकल अफसर भी थे किन्तु वे सभी पिये हुए थे और ल्यूबा को बहुत पहले ही पता चल गया था कि शराब मे मस्त अफसरों को बेवकूफ बनाना अधिक आसान होता है।

उसे पता चला कि वे लोग मोर्चे के एक अस्पताल के लिए बडे बड़े चपटे डब्बो में स्पिरिट लिये जा रहे है और बहुत अधिक मात्रा मे। सहसा ल्यूबा के मस्तिष्क मे यह विचार कौंध गया कि थोडी-सी स्पिरिट भी उसके लिए बडे काम की सिद्ध होगी क्योकि उससे सभी ताले और सभी दरवाजे खुल सकते है और उसके बदले कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है।

आखिर ल्यूबा ने सीनियर मेडीकल अफसर को समझा-बुझा कर इस बात के लिए राजी कर लिया था कि वह इतनी बडी और भारी गाडी रात के घने अधकार मे न ले जाये बल्कि रात भर के लिए उसे क्रास्नोदोन में उसकी एक सहेली के घर के सामने खडी कर दे, जहा वह किसी दौरे पर जा रही है। और जब वह, रात मे, नशे मैं धुत्त जर्मन अफसरो और सिपाहियो के साथ अपने मकान मे घुसी तो उसकी मा सहमकर रह गयी। उसे आज जैसा भय जिन्दगी मे कभी न हुआ था।

जर्मन रात भर पीते रहे और चूकि ल्यूबा ने अपने को अभिनेत्री कहा था इसलिए उसे उनके लिए नाचना भी पड़ा। वह जैसे तलवार की धार पर नाचती रही और अफसरो तथा दूसरो सैनिको के साथ, बिना किसी प्रकार का भेदभाव रखे, हसी-मजाक किया और सभी को बेवकूफ बनाया। अफसर ल्यूबा के आगे प्रेम की घोषणा करने लगे, ईर्ष्यालु सैनिको ने हस्तक्षेप किया और अन्ततः सीनियर मेडिकल अफसर ने अस्पताल के एक अर्दली के पेट मे एक लात जमायी।

इधर वे इस प्रकार नाच-रग मे मस्त थे उधर ल्यूबा को सहसा सडक पर पुलिस की सीटी सुनाई दी। सीटी बराबर बजती जा रही थी। कोई पुलिस का सिपाही गोर्की क्लब के आस-पास कही सीटी बजा रहा था। वह पूरी शक्ति से सीटी बजा रहा था और एक क्षण के लिए भी उसे ओठो से अलग नही कर रहा था।

ल्यूबा को तुरत तो यह न मालूम हो सका कि यह खतरे की सीटी है किन्तु सीटी बराबर तेज होती गयी और उसके मकान के पास आती गयी। फिर सहसा खिडकी की ओर किसी के भागकर आते हुए बोझल कदमो की आहट सुनाई दी जो तुरत ही बन्द हो गयी। कोई सडक से होता हुआ 'लघु शाघाई' की ओर दौड रहा था जिसके मकान खड्ड के किनारे किनारे बने हुए थे। उसी के कुछ बाद, सारी ताकत लगाकर

सीटी बजानेवाले सिपाही के भारी बूटो की आवाज भी खिडकी के पास से गुजर गयी।

ल्यूबा और वे जर्मन जो अब भी अपने पैरो पर सीधे खडे हो सकते थे ड्योढी पर निकल आये। रात अंधेरी, शात और गर्म थी। सीटी की भेदती हुई आवाज कही दूर जाकर मद्धिम पड गयी थी। सामने जलते हुए टार्च के अस्थिर प्रकाश से ही यह पता चलता था कि पुलिस वाला सडक पर दौडता चला जा रहा है। और जैसे जवाब मे कई स्थानो से सीटी की आवाजे सुनाई दे रही थी—बाजार से, खड्ड के उस पार के खुले मैदान से, सशस्त्र पुलिस के कार्यालय से, और उनसे बहुत ही दूर दूसरे लेवल-क्रॉसिग पर से।

जर्मन फौज के मेडिकल कर्मचारी इतनी अधिक पी गये थे कि उनके लिए सीधा खडा रहना एक प्रकार से असभव हो रहा था, फिर भी वे चुपचाप और कुछ समय तक, लडखडाते हुए, ड्योढ़ी पर बने रहे। फिर सीनियर अफसर ने अपने एक अर्दली से टार्च मगायी और उसकी रोशनी सामने के बगीचे पर फेकने लगा, जहा फूलो की क्यारिया उपेक्षित दशा मे पडी थी, बाडे के टूटे-फूटे अवशेष जमीन चाट रहे थे और बकाईन की विकृत झाड़िया धराशायी हो गयी थी। तब उसने अहाते मे खडी लारी पर रोशनी फेकी और सभी लोग अन्दर चले गये।

ठीक इसी समय पर ओलेग ने, जिसने अपना पीछा करनेवाले को बहुत ही पीछे छोड दिया था, जर्मन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय से निकलकर खड्ड के उस पार के खुले मैदान से होते हुए भागकर आनेवाले कुछ पुलिस वालो की जलती हुई टार्चे देखी। वे उसका रास्ता रोकने के लिए सशस्त्र पुलिस के कार्यालय की ओर से आ रहे थे। उसने तुरन्त यह बात समझ ली थी कि वह 'लघु शाघाई' मे छिपकर अपने को न बचा सकेगा क्योकि वहा के स्थानीय कुत्ते गद्दारी करेगे और भौक भौककर

उसे पुलिस के हाथो में सौप देगे। ये कुत्ते इस क्षेत्र मे इसी लिए जिन्दा थे कि कोई भी जर्मन कच्चे घरो मे न रहना चाहता था। जैसे ही यह विचार उसके दिमाग में आया कि वह दाहिनी ओर घूमकर वोस्मीदोमिकी जिले मे घुस गया और जो भी मकान पहले मिला उसी की दीवाल से सटकर खडा हो गया। कोई एक ही मिनट वाद उसका पीछा करनेवाला पुलिस का सिपाही उसके इतना पास आ गया कि उसकी सीटी ने जैसे ओलेग के कानो के परदे ही फाड़ दिये।

ओलेग कुछ देर तक खडा रहा और इस वात का ध्यान रखे रहा कि उसकी उपस्थिति का पता दूसरो को न चलने पाये। आखिर वह उसी सडक पर, जिससे होकर आया था, मकानो के पिछवाड़े से घूमकर नगर के उस ऊचे भाग की ओर लौटा जिसकी ओर वह सबसे पहले रवाना हुआ था।

बेशक जब उसने क्लब की ड्योढी पर एक पुलिस वाले को देखा था उस समय वह वहुत उत्तेजित हो उठा था। और जब वह उससे वचने के लिए सड़क पर भागने लगा था तो उसकी यह उत्तेजना एक प्रकार से प्रसन्नता मे वदल गयी थी। परन्तु अव उसे खतरे का अनुभव होने लगा था। ओलेग ने वाज़ार के आस-पास, जर्मन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय मे और दूसरे लेवल-क्रॉसिंग पर भी सीटियो की आवाजे सुनी और यह जान लिया कि उसकी लापरवाही ने न सिर्फ अपने आपको वल्कि सेर्गेई को, जो वाल्या के साथ था और स्त्योपा सफोनोव को भी जो तोस्या माश्चेंको के साथ था, वडी कठिन और खतरनाक स्थिति मे डाल दिया है।

ओलेग और वान्या ने जो परचे लिखे थे उन्हे वाटने का यह उनका पहला प्रयास था और जनता को 'तरुण गार्ड' दल के अस्तित्व की सूचना देने के लिए उठाया गया यह उनका पहला कदम था।

स्तखोविच ने ही यह प्रस्ताव रखा था कि एक ही रात मे नगर

भर मे इन परचो को चिपकाना पूरी तरह संभव था। इससे लोगों पर एक ही बार मे बडा जबरदस्त असर पड़ सकता था। उसके साथियो को इस प्रस्ताव को रद्द करने के लिए बहुत जोर लगाना पडा था। ओलेग अब उसे ज्यादा अच्छी तरह जानता था। उसे उसके ध्येयो की निष्ठा के प्रति कोई सन्देह न रह गया था, किन्तु आखिर स्तखोविच यह क्यों नही समझता कि एक काम को करने के लिए जितने ही अधिक आदमी आयेगे, विफलता का खतरा उतना ही बढेगा। और बेशक यह बात क्रोध भड़कानेवाली भी थी कि हमेशा की भाति, सेर्गेई त्युलेनिन चरम कार्यवाहिया ही पसद करता था। तुर्केनिच और वान्या जेम्नुखोव, ओलेग के इस प्रस्ताव से सहमत हो गये थे कि परचे पहले एक जिले मे, फिर कुछ दिनो बाद दूसरे मे और उसके और भी बाद तीसरे जिले मे चिपकाये जाये और इस प्रकार हर बार पुलिस को चकमा दिया जाये।

ओलेग का सुझाव था कि उनके लिए जोडो के रूप मे काम करना बहुत जरूरी था। एक आदमी परचो की गड्डी पकडे रहे और उन्हे अलग करता जाये और दूसरा उसपर लेई लगाये, एक परचा चिपकाये और दूसरा परचो और लेई का बरतन छिपाये रहे। फिर एक लडका और एक लडकी साथ साथ जाये ताकि कर्फ्यू के बाद कोई पुलिस वाला उन्हे पकड़े तो वे यह बहाना रख सके कि उनके इस बेवक्त घूमने का कारण और कुछ नही, आपसी मुहब्बत है।

परचे चिपकाने के लिए मैदे की लेई इस्तेमाल करने के बजाय उन्होने शहद से काम लेने का निश्चय किया। मैदे की लेई कही न कही पकानी पड़ती जिससे पुलिस को कुछ न कुछ सुराग मिल सकता था, फिर मैदे की लेई का निशान कपडो पर भी पड सकता था। इसके अलावा मैदे की लेई के लिए ब्रशो और बरतनो की जरूरत पडती जिनका उठाये फिरना बड़ा बेतुका लगता। शहद, काग लगी बोतल मे ले जाया जा

सकता था और उसे बोतल मे से थोडा थोडा उडेलकर परचे की पुश्त पर डाला और परचे को चिपकाया जा सकता था।

ओलेग ने दिन मे, भीड-भाड की जगहो पर—जैसे सिनेमाघर, बाजार या श्रम-केन्द्र मे—परचे बाटने की एक और बहुत आसान योजना बना ली थी।

रात की अपनी पहली कार्रवाइयो के लिए उन्होने, खान १-बीस के आस-पास का जिला, उसके पडोस का वोस्मीदोमिकी जिला और बाजार-स्थल चुना था। सेर्गेई और वाल्या को बाजार मे काम करना था, स्त्योपा और तोस्या को वोस्मीदोमिकी जिले मे और ओलेग को खान १-बीस वाले ज़िले मे।

बेशक ओलेग नीना के साथ जाना चाहता था, किन्तु फिर उसने तय किया कि वह अपनी सुन्दर मामी मरीना को ही अपने साथ रखेगा।

तय यह किया गया था कि तुर्केनिच घर पर रहेगा ताकि अपनी अनुभवहीनता के ख्याल से, हर जोडा, अपने इस प्रथम प्रयास मे अपना अपना काम पूरा कर लेने के बाद, सारी सूचना कमाडर को दे दे।

पर लोगो के चले जाने के बाद ओलेग ने फिर विचार किया—मुझे क्या अधिकार है कि मैं एक तीन साल के बच्चे की मा को, उस बच्चे के पिता मामा कोल्या की सलाह लिये बिना, खतरे मे डाल दू? बेशक उसने स्वय जो व्यवस्था की थी उसे उलट-पुलट करना ठीक न था, किन्तु उस समय तक उसपर बाल-सुलभ उत्साह सवार हो चुका था और उसने अकेले ही काम करने का निश्चय कर लिया था।

शाम के समय, जब नगर मे लोगो के आने-जाने पर कोई प्रतिबन्ध न था, ओलेग ने अपनी जैकेट की भीतरी जेब मे कुछ परचे और पतलून की जेब मे एक बोतल शहद रखा और घर से निकल गया। वह उस सड़क पर चलता रहा जहा ओस्मूख़िन और जेम्नुख़ोव रहते थे

और उस खड्ड तक पहुच गया जो ५ नंबर की खान तक जानेवाली सडक के उस पार पडता था। यह वही खड्ड था जो दक्षिण की ओर वोस्मीदोमिकी जिले को जर्मन सगस्त्र पुलिस के कार्यलय के मैदान से अलग करता था और दोनो के बीच एक खुला मैदान पड़ता था। इस जगह खड्ड मे कोई रहता-बसता न था। ओलेग दाहिनी ओर उसके किनारे किनारे चलता रहा और 'लघु शाघाई' तक पहुचने से कुछ ही पूर्व, घूमकर खड्ड तक जानेवाले एक कछार से होकर गुज़रा और नगर के इस भाग मे फैली हुई पहाडियो की उस श्रेणी की ओर वढने लगा जिससे लगे लगे वोरोशीलोवग्राद मार्ग जाता था।

उसके वाद पहाडियो मे लुकते-छिपते वह उस जगह पहुचा जहा वोरोशीलोवग्राद मार्ग उस सडक से मिलता था जो नगर के केन्द्र से 'पेर्वोमाइका' तक जाती थी। यहा वह लेट रहा और अंधेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा। यही से उसे ऊची ऊची और धूप से झुलसी हुई घास मे से सड़को के चौराहो, बडी सडक के उस पार 'पेर्वोमाइका' की वाहरी सरहद, विनष्ट खान १-बीस के सिरे पर मिट्टी का वडा-सा ढेर जिस सडक पर ल्यूवा शेव्त्सोवा रहती थी उसपर काफी दूर पर बना गोर्की क्लब, वोस्मीदोमिकी जिला, खुला मैदान, वोरोशीलोव स्कूल और जर्मन सगस्त्र पुलिस का कार्यालय दिखाई पड रहे थे।

पुलिस की गश्ती चौकी, जिसका ओलेग को सवसे अधिक डर था, चौराहे पर थी और वहा दो सिपाही तैनात रहते थे। उनमे से एक हमेशा चौराहे पर रहता और यदि वह वक्त काटने के लिए थोडे समय के लिए चहलकदमी भी करता तो वडी सड़क पर ही टहल लेता। दूसरा, चौराहे से अपनी गश्त शुरू करता और खान १-वीस से होकर गोर्की क्लब की ओर और जिस सड़क पर ल्यूवा शेव्त्सोवा रहती थी, उसपर होता हुआ, 'लघु शाघाई' तक पहरा देता था।

उक्त गश्ती चौकी की सबसे पास की दूसरी वैसी ही चौकी बाजार क्षेत्र मे थी। वहा भी दो पुलिस वाले तैनात रहते थे। एक हर समय बाज़ार मे बना रहता और दूसरा बाजार से अपनी गश्त शुरू कर उस स्थान तक आया करता जहा 'लघु शाघाई', 'शाघाई' से मिल गया था।

रात उतर आयी थी। वह काली और इतनी नीरव थी कि हल्की-सी सरसराहट तक आसानी से सुनाई दे जाती। अब ओलेग, सिवा सुनाई पड़नेवाली बातो के और किसी का भी भरोसा करने को तैयार न था।

उसका काम खान १-बीस के प्रवेश मार्ग पर और गोर्की क्लब की इमारत मे कुछ परचे चिपकाना था। (उन्होने उन मकानो पर, जिनमें लोग रहते थे, परचे न लगाने का निश्चय किया था क्योकि इससे उनमे रहनेवालो पर विपत्ति आ सकती थी।) ओलेग चुपके से, पहाडियो से होता हुआ सबसे पहले पडनेवाले प्रीफैब्रिकेटेड मकान तक आया। यह मकान उस मार्ग के सिरे पर पडता था, जहा ल्यूबा शेव्त्सोवा रहती थी। खुले मैदान के उस पार, और ओलेग के ठीक सामने खान १-बीस का प्रवेशमार्ग था।

उसने गश्त लगानेवाले सिपाही और ड्यूटी पर तैनात दूसरे सिपाही को परस्पर बाते करते सुना। एक क्षण के लिए उसे उनके चेहरे भी दिखाई दे गये जब कि वे एक सिगरेट लाइटर की लौ पर झुके हुए थे। उसे मजबूरन सिपाहियो के गुजर जाने तक प्रतीक्षा करनी थी अन्यथा वह खुले मैदान में ही धर लिया जाता। किन्तु दोनो पुलिस वाले धीरे धीरे बहुत देर तक बातें करते रहे।

आखिर गश्त लगानेवाला सिपाही चल पडा। उसकी टार्च समय समय पर जल उठती और सड़क पर रोशनी फेकने लगती। ओलेग मकान के पीछे खडा खडा उसके पैरो की आहट सुनता रहा। किन्तु जैसे ही आहट काफी दूरी पर पहुची कि वह निकलकर सडक पर आ गया। भारी क़दमो

की आवाज अब भी हल्की हल्की सुनाई पड रही थी। गश्त लगानेवाला सिपाही प्राय सडक पर टार्च की रोशनी फेंकता था। ओलेग ने उसे गोर्की क्लब से गुजर जाते हुए देखा। आखिर वह आंखो से ओझल हो गया क्योकि शेव्त्सोव के घर के उस पार सडक घूमती हुई खड्ड तक चली जाती थी। काफी दूरी पर दिखाई पडनेवाली प्रकाश की कौंध से पता चलता था कि सिपाही समय समय पर रोशनी जलाकर रास्ता नाप लेता था।

सेना के पलायन के समय बडी बडी खानें उडा दी गयी थी। यही दुर्गति खान १-बीस की भी हुई थी। अब वहा किसी चीज का निर्माण या उत्पादन नही हो रहा था। हा, लेफ्टिनेट श्वैदे के आदेशानुसार वहा एक प्रशासन-कार्यालय काम करने लगा था, जिसके कर्मचारी जर्मन खान दस्ते के सदस्य थे। प्रति दिन सुबह ऐसे बहुत-से लोग उसके 'जीर्णोद्धार' के लिए आया करते थे जो नगर से या तो भाग न सके थे, या भागने मे असमर्थ रहे थे। औपचारिक कागजात मे 'जीर्णोद्धार' शब्द अहाते मे कूडा-कबाड साफ करने की क्रिया के लिए प्रयुक्त होता था। वस्तुत दर्जनो लोग लकडी की एक बडी-सी ठेलागाडी को ढकेलते हुए ले जाते और एक स्थान का कूडा एकत्र करके दूसरे स्थान पर डाल देते।

उस दिन रात को सर्वत्र सन्नाटा था और खान की हर चीज अंधेरे की गोद मे छिप गयी थी।

ओलेग ने एक परचा खान के अहाते की पत्थर की दीवाल पर चिपकाया, दूसरा द्वार पर बनी कोठरी पर और तीसरा परचा बोर्ड पर—सभी तरह की घोषणाओ और आदेशो के ऊपर। उसे वहा ज्यादा समय न लगा था। उसे यह खतरा न था कि बूढा चौकीदार उसे पकड लेगा—चौकीदार रात मे खर्राटे की नीद सोता था। उसे तो यह डर था कि कही लौटता हुआ गश्त लगानेवाला सिपाही खान की तरफ से सड़क पर न गुजरे और टार्च की रोशनी कोठरी की ओर न फेंके अभी

तक उसके पैरो की आहट नही सुनाई पडी थी और उसकी टार्च की रोशनी का भी कोई चिह्न न दीख रहा था। सभवतः वह 'लघु शाघाई' मे कही अटक गया था।

ओलेग खुले मैदान को पार कर क्लब तक पहुच चुका था। क्लब की इमारत लम्वी चौड़ी तो थी, पर साथ ही नगर भर मे सबसे ठडी और सबसे कम आरामदेह भी। वह रहने-वसने के उपयुक्त न थी, इसी लिये खाली पडी रहती थी। वह उस सडक के सामने पडती थी जिसपर लोग सारा वक्त वोस्मीदोमिकी जिले, 'पेर्वोमाइका' जिले तथा पास-पड़ोस के फार्मो से बाजार तक आते-जाते रहते थे। वोरोशीलोवग्राद और कामेंस्क की ओर जानेवाली मोटरे, लारिया इत्यादि भी इसी सडक से जाया करती थी।

ओलेग ने इमारत के सामने वाले भाग पर परचा चिपकाना शुरू ही किया था कि उसे खड्ड से सडक पर आते हुए पुलिस वाले के पैरो की आहट सुनाई दी। वह घूमकर इमारत की आड मे हो गया और पिछली दीवाल के सहारे छिप गया। पुलिस वाले के कदमो की आहट बराबर तेज होती गयी, फिर इमारत तक पहुची और सहसा वद हो गयी। ओलेग मूर्तिवत् खडा रहा—एक मिनट गुजरा, फिर दूसरा, और पाचवा, किन्तु पैरो की आहट न सुनाई पडी।

हा, अगर पुलिस वाले ने अपनी टार्च की रोशनी इमारत के सामने वाले भाग पर फेकी हो और उसकी निगाह परचो पर पड गयी हो और वह खड़ा खडा अभी तक उन्हे पढ रहा हो, तो? फिर वह उन्हे फाडने की कोशिश करेगा और निश्चय ही उसे यह पता चल जायेगा कि वे अभी अभी चिपकाये गये है, फिर वह टार्च जलाकर उस इमारत का चक्कर लगायेगा, इस ख्याल से कि परचे चिपकानेवाला, सिवा इसी इमारत के पीछे के, अन्य कही नही छिप सकता।

ओलेग सास रोके सुनता रहा, पर उसे सिवा अपने हृदय की धडकन के और कुछ न सुनाई दिया। उसका मन हुआ कि दीवाल छोडकर भागना शुरु कर दे किन्तु तभी उसे लगा कि इससे तो और भी मुसीबत खडी होगी। नही, पता यह लगाना चाहिए कि वह पुलिस वाला कर क्या रहा है।

ओलेग जहां खड़ा था वही से उसने अपनी गर्दन निकाली। उसे ऐसी कोई आवाज़ न सुनाई दी जिससे उसका सन्देह बढता। फिर दीवाल से सटे सटे वह, हर कदम पर पैर काफी ऊंचा उठाकर फिर बड़ी सतर्कता के साथ रखता हुआ, धीरे धीरे सडक की ओर बढता रहा। वह कई बार कुछ सुनने के लिए रुका किन्तु वहा तो सर्वत्र शान्ति थी। वह इमारत के दूसरे कोने तक पहुंच गया था। फिर उसने एक हाथ दीवाल पर रखा और दूसरे से दीवाल का कोना पकडकर गर्दन घुमाकर सामने देखने लगा। सहसा वर्षा से कमजोर पडा हुआ पलस्तर उसके हाथ के नीचे से टूटा और जमीन पर गिर पडा। ओलेग को उसके गिरने की आवाज जैसे एक जबरदस्त धमाके की तरह लगी। हां, उसने ड्योढी की सीढियो पर जलती हुई सिगरेट की चमक जरूर देख ली थी और यह समझ लिया था कि पुलिस वाला बैठकर कुछ आराम कर रहा है और सिगरेट के कश लगा रहा है। जलती हुई सिगरेट का सिरा तुरन्त ऊपर को उठा, ड्योढी की सीढियो पर से कुछ आवाज हुई और ओलेग इमारत के कोने से हटकर सडक पर, खड्ड की ओर भागने लगा। तभी सीटी की सनसनाती हुई आवाज हवा मे गूज गयी। फिर तेज सीटी बजने लगी और पल ही भर मे उसपर टार्च की रोशनी पडने लगी। पर तभी वह उछला और प्रकाश के दायरे से बाहर हो गया।

सच बात तो यह है कि इस विकट स्थिति मे उसने कोई काम उतावली मे नही किया। उसने वोस्मीदोमिकी जिले मे ही पुलिस वाले को एक ही मिनट मे चक्कर मे डाल दिया होता और खुद ल्यूबा या इवान्त्सोवा

के घर छिप गया होता, किन्तु उसने ऐसा नही किया। उसे उन्हे खतरे में डालने का कोई अधिकार न था। वह बाह्यत यह भी भ्रम पैदा कर सकता था कि बाज़ार की तरफ भाग रहा है और सचमुच 'शाघाई' मे घुस जाता जहां ख़ुद शैतान भी उसका सुराग न लगा पाता। किन्तु इससे सेर्गेई और वाल्या खतरे मे पड सकते थे। फलत· ओलेग 'लघु शाघाई' की ओर भागा किन्तु चूकि परिस्थितियो ने उसे वोस्मीदोमिकी जिले मे प्रवेश करने को मजबूर कर दिया था, फिर भी वह उस जिले के अन्दर बहुत दूर तक नही गया कि कही स्त्योपा सफोनोव और तोस्या पर कोई आच न आ ज़ाये। फिर वह पहाड़ियो की ओर लौटा, और चौराहे पर आ गया जहा उसने ड्यूटी पर तैनात सिपाही द्वारा पकडे जाने का खतरा भी उठाया।

उसे अपने मित्रो की चिन्ता थी और वह यह सोच सोचकर आतंकित हो रहा था कि कही सारी कार्रवाई विफल न हो जाय। फिर भी जब उसने 'लघु शाघाई' मे कुत्तो की भो भो सुनी तो जैसे उसे बाल-सुलभ शैतानी सूझने लगी। वह बराबर यह कल्पना करता रहा कि गश्त लगानेवाला सिपाही उसका पीछा कर रहा है, वह जर्मन सशस्त्र पुलिस के कार्यालय से भागकर आते हुए सिपाहियो से मिल रहा है, और वे अजनबी के निकल भागने के संबंध मे बहस कर रहे है और टार्चो की रोशनी से पास-पडोस के सभी क्षेत्रो की छानमारी हो रही है।

बाज़ार मे सीटी की आवाज बन्द हो चुकी थी। ओलेग एक बार फिर पहाडी के शिखर पर पहुच गया था और वहा से टार्चो की रोशनी देखकर ही बता सकता था कि जिन पुलिस वालो ने उसे रोकने की कोशिश की थी वे अब खुले मैदान को पार करते हुए सशस्त्र पुलिस के कार्यालय की ओर जा रहे थे और गश्त लगानेवाला सिपाही जो उसका पीछा करता रहा था, सडक के दूरस्थ सिरे पर खडा हुआ वहा के एक मकान पर रोशनी फेंक रहा था।

तो क्या पुलिस वाले ने क्लब की इमारत पर चिपके परचो को देख लिया था? नही, नही देखा था। अगर देखा होता तो सिगरेट पीने के लिए सीढियो पर न बैठता। अब वे बेशक उसकी तलाश मे वोरोशीलोग्राद ज़िले का कोना कोना छान मारे। ढूढे, कैसे ढूढते है ओलेग को!

इस समय उसे कुछ मानसिक शान्ति मिल रही थी।

अभी भोर भी न हुई थी कि ओलेग ने तीन बार तुर्केनिच की खिडकी खटखटायी। यह सकेत पहले से ही निश्चित कर लिया गया था। धीरे-से दरवाजा खोल दिया गया। तुर्केनिच और वह पहले रसोईघर से और तब एक ऐसे कमरे से होकर गुजरे, जहा कुछ लोग सो रहे थे। आखिर वे वान्या के कमरे मे पहुचा। इस कमरे मे केवल वान्या ही रहता था। अलमारी के ऊपर, ऊचाई पर, एक दिया टिमटिमा रहा था और यह बात स्पष्ट थी कि वान्या अभी तक सोया नही था। जब उसने ओलेग को देखा तो कोई खुशी नही प्रगट की। उसका चेहरा कठोर और पीला पड रहा था।

"क-कोई पकडा तो नही गया?" ओलेग ने पूछा। उसकी जबान बुरी तरह लडखडा रही थी और चेहरा पीला पड रहा था।

"नही, सब ठीक है," उससे दृष्टि बचाते हुए तुर्केनिच ने उत्तर दिया। "बैठ जाओ!" उसने एक स्टूल की ओर इशारा किया और खुद पलग पर बैठ गया—लग रहा था कि रात भर उसने कमरे मे टहलकर या बिस्तर पर बैठकर ही बितायी थी।

"तो? हमे सफलता मिली?" ओलेग ने पूछा।

"हां," तुर्केनिच बोला। उसकी आंखे अभी भी ओलेग पर न लगी थी, "वे सब यही थे—सेर्गेई और वाल्या, स्त्योपा और तोस्या . तो तुम अकेले ही गये थे?" तुर्केनिच ने आंखे ओलेग की ओर उठायी और नीची कर ली।

"तुम्हे कैसे मालूम हुआ ?" ओलेग ने पूछा। उसके चेहरे पर अपराधी स्कूली बालक जैसा भाव झलक उठा था।

"हम सब को तुम्हारी चिन्ता हो रही थी," वान्या ने, जैसे बात टालने के ढग मे उत्तर दिया, "आखिर मुझसे न रहा गया और निकोलाई निकोलायेविच के यहां जाकर देखा तो मरीना घर ही पर थी   सभी छोकरे तुम्हारी प्रतीक्षा करना चाहते थे लेकिन मैने उन्हे समझा-बुझाकर यहा से हटा दिया। मैने उनसे कहा कि अगर तुम कही पकड लिये गये और यहा हमारे यहा छापा मारा गया, और हम सब आधी रात के समय एक ही जगह इकट्ठे मिले तो बात ही बिगड जायेगी। और तुम खुद जानते हो कि कल उन्हे कितना काम करना है—बाजार है, श्रम-केन्द्र है. ."

ओलेग ने, जैसे अपने को अपराधी समझते हुए, सक्षेप मे इस बात की चर्चा की कि वह खान से किस प्रकार जल्दी जल्दी क्लब की इमारत तक गया और वहा क्या घटना घटी। उस घटना की परिस्थितियो का उल्लेख करते समय वह काफी उत्तेजित भी हो उठा था।

"और आखिर जब सब कुछ ठीक हो गया, तो मुझे शरारत सूझी। मैने फिर वोरोशीलोव स्कूल मे दो परचे और चिपका दिये "

उसने तुर्केनिच की ओर देखा और दात निकाल दिये।

तुर्केनिच चुपचाप उसकी बात सुनता रहा। तब उठा, जेबो मे दोनो हाथ डाले और कुछ क्षणो तक स्टूल पर बैठे ओलेग को देखता रहा।

"अब मै भी तुमसे कुछ कहूगा, बस इस बात पर क्रोध न करना," तुर्केनिच की आवाज शान्त बनी रही, "इस तरह का काम करने का यह तुम्हारा पहला मौका है—और यही आखिरी भी होगा। समझे ?"

"न-नहीं, मै नही मानता," ओलेग बोला, "मुझे इस काम मे सफलता मिली है। ऐसे काम आसान नही होते। यह सिर्फ चहलकदमी भर नही है। यह एक लड़ाई है, जिसमे एक प्रतिद्वन्द्वी भी होता है।"

"यह प्रतिद्वन्द्वी की बात नही," तुर्केनिच ने कहा, "बात यह है कि यह मौका बच्चो जैसी शरारत करने का नही है। हमे या तुम्हे इस तरह की हरकते किसी दशा मे नही करनी चाहिए। हा, अगरचे मै तुमसे बडा हू फिर भी मैं अपने को तुम्हारी ही कोटि मे रखता हू। तुम जानते हो, मै तुम्हारी इज्जत करता हू इसी लिए मै तुमसे इस तरह की बातचीत कर रहा हू। तुम अच्छे छोकरे हो और मजबूत भी, और शायद तुम मुझसे ज्यादा जानते-बूझते हो पर तुम बच्चे जैसा व्यवहार करते हो. वे लोग तुम्हारी मदद के लिए जाने को तैयार थे। मैंने समझा-बुझाकर उन्हे रोका, लेकिन जान मेरी भी खुश्क हो रही थी," सूखी सी हसी हसते हुए तुर्केनिच ने कहा, "शायद तुम यह सोचते हो कि सिर्फ तुम्हारे लिए हम पाच आदमियो की जान सूली पर अटकी थी। नही, नही, हमे चिन्ता हो रही थी कि हमारा सारा किया धरा मिट्टी मे न मिल जाये। मेरे दोस्त, अब वक्त आ गया है जब हम यह समझ ले कि तुम तुम नही हो और मै मै नही। मैंने तुम्हे जाने दिया इसके लिए मैं रात भर हाथ मलता रहा। क्या हम सचमुच छोटी छोटी बातो के लिए, और अकारण, अपनी जान खतरे मे डाल सकते है? नही मेरे दोस्त, नही, ऐसा करने का हमे कोई अधिकार नही। और भाई तुम मुझे क्षमा करना—मैं अपना निश्चय हेडक्वार्टर से स्वीकृत कराऊगा। संक्षेप में निश्चय यह किया जायेगा कि मुझे और तुम्हे कार्रवाइयो में भाग लेने की मनाही की जाये, जब तक कि इसके प्रतिकूल कोई खास निर्देश न हो।"

ओलेग ने तुर्केनिच को बच्चो जैसी सरल किन्तु गभीर दृष्टि से देखा और चुप रहा। तुर्केनिच कुछ नरम पडकर बोला

"देखो दोस्त, जब मैंने यह कहा था कि तुम मुझसे ज्यादा जानते हो तो यह महज मेरी जबान नही फिसली थी," वह बोला और उसकी आवाज में अपराधी जैसी ध्वनि सुनाई दी, "यह बात पालन-पोषण पर निर्भर है। बचपन मे मै, सेर्गेई की तरह, नंगे पैर सडको पर मारा मारा फिरता था और अगरचे मैंने कुछ अध्ययन किया है, फिर भी असली ज्ञान मुझे तब प्राप्त हुआ जब मै प्रौढ़ हो चुका था। तुम्ही देखो न, तुम्हारी मा अध्यापिका है और सोतेले बाप को राजनीतिक शिक्षा मिली है, जब कि मेरे बूढे माता-पिता—खैर, तुम तो जानते ही हो .. " तुर्केनिच के चेहरे पर दया का भाव झलका और उसने दूसरे कमरे मे खुलनेवाले दरवाजे की ओर देखकर सिर हिला दिया, "अब वक्त आ गया है जब तुम्हे अपने सारे ज्ञान से लाभ उठाना चाहिए। समझे? पुलिस वालो को तंग करना ऐसी बात नही जिसपर फख्र किया जाये। हमारे तरुण तुमसे इन बातो की आशा नही करते। और अगर गभीरतापूर्वक पूछा जाये," तुर्केनिच ने कधे के पीछे अगूठे से इशारा करते हुए कहा, "वे तरुण सचमुच तुमपर पूरा भरोसा करते है।"

"ओह, तुम बडे चतुर हो, वान्या," ओलेग ने साश्चर्य कहा और प्रसन्नतापूर्वक तुर्केनिच की ओर देखने लगा, "और तुम ठीक कहते हो, बिलकुल ठीक।" उसने सिर हिलाया, "बेशक तुम हेडक्वार्टर का निश्चय प्राप्त कर लो"।

दोनो हस दिये।

"फिर भी तुम्हारी सफलता पर मै तुम्हे बधाई देता हू—मै तो भूल ही गया था," तुर्केनिच बोला और ओलेग से हाथ मिलाने लगा।

ओलेग दिन निकलते ही अपने घर पहुच गया। पर, इस समय ल्यूबा, जो उससे खुद मिलने आना चाहती थी, अपने जर्मनो को विदा कर रही थी। वह रात भर नही सोयी थी, फिर भी जब लारी में नशे मे धुत्त जर्मनो को बैठे देखा और लारी सडक पर दायें-बायें पैंतरे बदलती हुई जाने लगी, क्योकि ड्राइवर भी नशे मे धुत्त हो रहा था, तो वह अपनी हसी न रोक सकी।

ल्यूबा की मा उसपर बरस पडी, किन्तु जब उसने उसे स्पिरिट के चार बडे बडे टीन दिखाये तो सीधी-सादी मा ने समझ लिया कि उसकी बेटी ने किसी उद्देश्य से ही यह सारा काम किया है। उसने यह स्पिरिट रात ही मे लारी से निकाल लिया था।

## अध्याय ४

"साथी देशवासियो! क्रास्नोदोन के निवासियो! खान-मजदूरो! सामूहिक किसानो!

"जर्मन झूठे है। मास्को हमारा था, हमारा है और हमारा रहेगा। हिटलर झूठ बोलता है कि लडाई खत्म हो रही है। लडाई तो अब भड़क रही है। लाल सेना दोनबास मे लौटेगी।

"हिटलर हमें जर्मनी खदेड रहा है ताकि उसके कारखानो मे काम कर करके हम अपने पिता, पति, बेटो और बेटियो के हत्यारे बने।

"अगर तुम यही, अपने वतन में, अपने घर मे, अपने पति, बेटे या भाई को गले लगाना चाहते हो तो जर्मनी मत जाना।

"जर्मन हमपर जुल्म करते है, हमारे अच्छे से अच्छे लोगो को मौत के घाट उतारते है ताकि हम डरकर घुटने टेक दे।

"इन दुष्ट हमलावरो का सफाया करो। गुलामी की जिन्दगी से लडकर मरना भला!

"हमारी मातृभूमि पर सकट के वादल छाये हुए है। परन्तु उसमे अव भी दुश्मन को खदेडने की ताकत मौजूद है। 'तरुण गार्ड,' अपने परचो में आपको सच्चाई से अवगत करायेगा, भले ही वह सच्चाई रूस के लिए कितनी ही कटु क्यो न हो। सत्य की विजय होगी!

"हमारे परचे पढिये, उन्हे छिपाकर रखिये, उनमे लिखी वाते घर घर और गाव गाव पहुचाइये।

"जर्मन हमलावरो का नाश हो!

'तरुण गार्ड'।"

यह छोटा-सा परचा, स्कूली कापी के पन्ने पर लिखा गया परचा आखिर आया कहा से? और वह भी भीड-भाड से भरे हुए वाजार के चौक के एक सिरे पर, उस नोटिस वोर्ड पर चिपका था जिसके दोनो ओर पहले कभी जिला समाचारपत्र, 'सोत्सिआलिस्तीचेस्काया रोदिना', चिपकाया जाता था, किन्तु जहा अव जर्मनो के पीले और काले पोस्टर लटक रहे थे।

रविवार का दिन था। दिन निकलते ही गावो और कज्जाक गावो से ढेर लोग वाज़ार मे आने लगे थे। कुछ लोग वटुये लिये थे, कुछ के पास घर के वने सफरी-थैले थे, कभी किसी औरत के पास किसी कपड़े में लिपटी हुई कोई मुर्गी दीख रही थी तो कुछ, जिनकी तरकारियो की फस्ल अच्छी हुई थी अथवा जिनके पास पिछले साल की फस्ल का आटा वच रहा था, अपना अपना सामान ठेलागाडी पर लादे गाडी खीचते चले आ रहे थे। घोडो की तो वात ही क्या, खुद वैल तक कही नजर नही आते थे। जर्मनो ने घोडे और वैल सभी हर लिये थे।

और वे ठेलागाडिया – उन्हे तो हमारे लोग वर्षो याद रखेगे। वे एक पहिये वाली वैसी गाड़िया न थी जिन्हे मिट्टी लादने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। ये गाड़िया दो पहियो की होती थीं जिनपर सभी तरह का सामान लादा जाता था। वे दोनो हाथो से ढकेल ढकेलकर खीची और चलायी जाती थी। खीचने के लिए दोनो बमो के बीच एक डडा लगा रहता था। जाडे, गर्मी, बरसात अथवा धूल, कीचड या पाले मे, हर समय हजारो लोग एक छोर से दूसरे छोर तक दोनबास पार करते समय उन्ही को काम मे लाते थे। कभी कभी वे उनपर सामान ढोते किन्तु अधिकतर तो वह आश्रय की खोज मे अथवा अपनी कब्र की ओर ही जाते समय काम मे लाया करते थे।

प्रात काल से ही पास-पडोस के गावो से लोग अपनी अपनी साग-सब्जी, अनाज, मुर्गिया, फल और शहद बाजार मे लाने लगे थे। और नगर के लोग भी सुबह से ही आ गये थे – किसी के हाथ मे शाल होता था, तो किसी के हाथ मे हैट, अथवा घाघरा, अथवा जूतो का जोडा, कीले, कुल्हाडी, नमक, कपडे का कोई टुकडा, या फीता लगी हुई कोई पुराने फैशन की पोशक या बाप-दादा की कोई पुरानी चीज़।

ऐसे जमाने मे मुनाफा कमाने की गरज़ से जानेवाला या तो महामूर्ख ही हो सकता था, या जुआरी या बदमाश। वहा तो मुसीबते और जरूरते ही लोगो को खीचकर लाती थी। उक्रइनी भूमि पर जर्मन सिक्का ही चल रहा था लेकिन यह कौन जानता था कि वे असली सिक्के है और उनका मूल्य बना ही रहेगा, और सच बात तो यह थी कि ये सिक्के भी कितनो के पास थे। नही, हमारे बाप-दादा का ख़रीद-फरोख़्त का ढग इससे अच्छा था। सकट के समय इसी तरीके ने लोगो की सहायता की थी – मै तुम्हे यह दे दू तो बदले मे तुम मुझे वह दे दो तो,

सुवह से ही वाजार मे हज़ारो की भीड जमा हो गयी थी जो हजारो वार एक दूसरे के पास से होकर गुजरते, और फिर गुजरते।

और वाजार के छोर पर पिछले कई वर्षो से लगे हुए नोटिस वोर्ड पर सभी को निगाहे लगी थी। उसपर जर्मन पोस्टर पिनो से वैसे ही चिपके थे जैसे वे पिछले कई हफ्तो से चिपके थे। एक पोस्टर मे पखें के आकार मे कई फोटो एक साथ लगे थे—मास्को में जर्मन सेनाओ की परेड, पीटर और पाल के किले के पास नेवा मे तैरते हुए जर्मन अफसर, स्तालिनग्राद मे वोल्गा के किनारे किनारे हमारी लडकियो के हाथो मे हाथ डाले जर्मन अफसर। और ठीक इसी पोस्टर के ऊपर लोगो ने एक सफेद रंग का परचा देखा जो स्याही से साफ साफ लिखा था। स्याही भी ऐसी थी जिसे मिटाया नही जा सकता था।

पहले-पहल उसमे सिर्फ एक ही व्यक्ति ने उत्सुकता प्रदर्शित की, फिर उसे दो साथी और मिल गये, और फिर उसके इर्द-गिर्द एक छोटा-सा समूह जमा हो गया; जिसमे अधिकाश स्त्रिया, वूढे लोग और तरुण व्यक्ति थे। वे गर्दने आगे निकाले परचा पढ रहे थे। लोगो की भीड सफेद कागज पर हाथ से लिखा हुआ परचा पढ रही थी। ऐसे मे उनकी ओर ध्यान न देकर कौन निकल सकता था, और वह भी वाजार के दिन।

अव वोर्ड के इर्द-गिर्द काफी वडी भीड लग गयी। सवसे आगे के लोग चुपचाप खडे थे और वढने का नाम न लेते थे, क्योकि कोई अदम्य शक्ति उन्हे वह परचा वार वार पढने को वाध्य कर रही थी। और जो लोग पीछे थे वे पास पहुचने के लिए एक दूसरे को धकियाने का प्रयत्न कर रहे थे। वे शोर मचाने लगे थे और क्रोध मे आकर लोगो से यह वताने की माग कर रहे थे कि परचे पर लिखा क्या है। किन्तु कोई जवाव न देता था, और कोई पास भी नही पहुच पाता था, फिर भी

उत्तरोत्तर वढता हुआ यह जनसमूह जानता था कि स्कूली कापी के एक पन्ने पर लिखा हुआ यह परचा उन्हे कौन-सा सन्देश दे रहा है—"यह गलत है कि जर्मन सेनाए लाल मैदान मे परेड कर रही है! यह गलत है कि पीटर और पाल के किले के पास जर्मन अफसर स्नान करते है। यह गलत है कि वे हमारी लडकियो के साथ स्तालिनग्राद की सडको पर मटरगश्त करते है। यह गलत है कि लाल सेना का अस्तित्व नही रहा, कि सभी अगले मोर्चो पर—अग्रेजो के भाड़े के सैनिक, मगोल लड रहे हैं। यह सब सफेद झूठ है। सच यह है कि हमारे कुछ लोग अब भी शहर मे हैं, वे सच्ची वाते जानते है और निर्भीक रहकर जनता को वही सारी वाते वताते है जो सच है।"

वाजू पर पुलिस वालो की पट्टी लगाये और चारखाने का पतलून पहने एक वेहद लवा आदमी भी भीड़ मे शामिल हो गया। उसके पैरो मे गाय के चमड़े के ऊचे ऊचे वूट थे जिनमे उसने अपना पतलून खोस रखा था, और शरीर पर चारखाने की एक जैकेट थी, जिसके नीचे एक मोटे पीले डोरे से पिस्तौल सहित एक भारी-सा चमडे का खोल लटक रहा था। उसके छोटे-से सिर पर एक चोचदार पुरानी टोपी थी। लोगो ने अपने अपने कधो के पीछे देखा और उसे पहचान लिया। यह व्यक्ति इग्नात फोमीन था। उन्होने उसके लिए रास्ता कर दिया और एक क्षण के लिए उनके चेहरे पर भय अथवा चाटुकारिता का भाव झलक गया।

सेर्गेई त्युलेनिन ने अपनी टोपी इतनी नीची की कि वह आखो पर आ गयी और लोगो के पीछे होता हुआ, ताकि फोमीन उसे पहचान न ले, भीड़ मे वास्या पिरोज्होक को खोजने लगा और जब उसकी निगाह वास्या पर पडी तो उसने आखो से फोमीन की ओर इशारा किया। पिरोज्होक अपना काम अच्छी तरह जानता था। वह फोमीन के पीछे पीछे खुद भी नोटिस वोर्ड की ओर वढ़ रहा था।

यद्यपि पिरोज्होक और कोवल्योव जर्मन पुलिस दल से निकाल दिये गये थे फिर भी सभी पुलिस वालो के साथ उनकी अच्छी दोस्ती थी। जहां तक पुलिस वालो का अपना सवाल था उन्होने स्वय पिरोज्होक और कोवल्योव की हरकत को गभीर नही समझा था। फोमीन ने अपने इर्द-गिर्द एक निगाह डाली, पिरोज्होक को पहचाना, लेकिन उसके साथ बात नही की। दोनो नोटिस की ओर बढने लगे। फोमीन ने परचा नाखून से खरोच कर उतारने की कोशिश की पर वह तो जर्मन पोस्टर के साथ इतनी बुरी तरह चिपका था कि निकलने का नाम ही न ले रहा था। उसने पोस्टर में एक सूराख किया और जर्मन पोस्टर के एक टुकडे के साथ परचे को निकालने मे कामयाब हो गया और उसे मोड-माडकर अपनी जैकेट की जेब मे रख लिया।

"यहां क्यो भीड़ लगाये हो तुम सब? क्या घूर रहे हो? भाग जाओ!" वह भुनभुनाया और हिजडो जैसा अपना पीला चेहरा भीड की ओर घुमा दिया। उसकी छोटी, मैली आखे झुर्रियों मे से झाकती सी लग रही थी।

और स्वय पिरोज्होक भी फोमीन की बगल मे घूमकर, काले साप की तरह चिल्ला उठा। उसकी आवाज बच्चो जैसी, पर ऊची थी।

"सुन रहे हो? देवियो और सज्जनो, अजी चलते फिरते नजर आओ! तभी ठीक रहेगा।"

फोमीन ने अपने लम्बे लम्बे हाथ फैलाये और भीड के बीचोबीच खभे की तरह जम गया। पिरोज्होक तुरन्त उसकी बगल मे आ गया। भीड़ छट गयी और सभी दिशाओ मे भागने लगी। पिरोज्होक भी आगे आगे भागा।

फोमीन, उदास मन, चमडे के भारी भारी बूट पहने बाजार मे घूमता रहा। लोगो ने अपनी अपनी सौदेबाजी बन्द की और भय,

आश्चर्य तथा विनोद से उसकी पीठ की ओर घूरते रहे। फोमीन की पीठ पर, चारखानेदार जैकेट के ऊपर, मोटे मोटे अक्षरो मे छपी एक नोटिस चिपकी थी—"तुम मास के एक टुकडे के लिए, एक घूट वोद्का के लिए, सस्ते तवाकू के एक पैकेट के लिए हमारे लोगो को जर्मनो के हाथ वेच रहे हो। लेकिन तुम्हे इसकी कीमत चुकानी पडेगी अपनी इस दुष्ट ज़िन्दगी से! होशियार हो जाओ!"

किसी ने भी उसे नही रोका और वह बाजार पार करता हुआ थाने की ओर चलता रहा। गभीर चेतावनी बराबर उसकी पीठ से चिपकी रही।

सेर्गेई का हल्का घुघराला और पिरोज्होक का काला सिर एक बार ऊपर उठे और फिर दोनो बाज़ार की भीड मे इधर-उधर गायब होकर, अपने अपने रहस्यपूर्ण मार्गो पर घूमनेवाले पुच्छल तारो की भाति, वही घूमने लगे। वे अकेले नही थे—कभी कभी लोगों की चलती फिरती भीड मे से तोस्या माश्चेको का भी साफ सुन्दर चेहरा दिखने लगता। वह एक शान्त लड़की थी। साफ-सुथरी पोशाक, चतुर आखे। और यदि वहा तोस्या माश्चेको होती तो वही पास ही कही सुनहरे बालोवाला उसका साथी स्त्योपा सफोनोव भी मडराता होता। फिर वही कही सेर्गेई की चमकती हुई और पैनी आखे भीड मे वीत्या लुक्याचेंको की गहरी, स्निग्ध आखो से चार होती और तुरन्त हट जाती। सुनहरी चोटियोवाली वाल्या वोर्त्स भी दूकानो और सामान से लदी मेजो का देर से चक्कर लगा रही थी। उसके हाथ मे एक टोकरी थी जिसपर मोटा-सा तौलिया रखा था किन्तु किसी ने भी यह नही देखा कि वह क्या वेचती थी या क्या ख़रीदती थी।

लोगो को अपने अपने थैलो या ख़ाली वोरो मे, किसी वेच पर, अथवा पातगोभी या पीले या हरी धारी वाले तरबूजो के नीचे पडे कोई

न कोई परचे मिल जाते। कभी कभी वह परचा न होकर कागज की एक पतली-सी पट्टी होती जिसपर लिखा होता—

"हिटलर के २०० ग्राम मुर्दाबाद! सोवियत किलोग्राम जिन्दाबाद!" —और लोगो के दिल और भी तेजी से धडकने लगते।

सेर्गेई ने कई बार दूकानो के चक्कर लगाये और पुराने कपडे वेचनेवालो की उस भीड मे भी गया जहा चीजो की हाथो हाथ अदला-वदली हो रही थी। सहसा नगर अस्पताल की डाक्टर, नताल्या अलेक्सेयेव्ना से उसकी आखे चार हो गयी। वह स्वय गन्दे स्लीपर पहने, तथा अपने वच्चो जैसे गुदगुदे हाथो मे औरतो के जूतो का एक पुराना जोड़ा लिये वेचनेवालियो की कतार मे खडी थी। सेर्गेई को पहचानते ही वह घवरा सी गयी।

"नमस्ते!" वह बोला और जैसे परेशानी की मुद्रा मे अपनी टोपी उतार ली।

एक क्षण के लिए नताल्या अलेक्सेयेव्ना की आखो मे वह प्रत्यक्ष, निर्मम और व्यावहारिक भाव दिखाई पडने लगा जिससे वह बहुत अच्छी तरह परिचित था। फिर अपने गुदगुदे हाथ हिलाते हुए उसने झटपट कागज मे जूते लपेटे और वोली—

"वहुत खूब! मुझे इस वक्त तुम्हारी ही जरूरत है।"

सेर्गेई और वाल्या को साथ साथ वाजार से निकलकर श्रम-केन्द्र मे जाना चाहिये था। वहा से युवक-युवतियो के उस पहले जत्थे को, जो जर्मनी भेजा जा रहा था, पैदल वेर्ख्नेदुवान्नाया स्टेशन तक जाना था। सहसा वाल्या ने सेर्गेई को एक गोल-मटोल और नाटे कद्द की लडकी के साथ, वाजार की भीड से निकलते देखा। वे ली-फान-ची के झोपडो की ओर वढकर उनके पीछे गायव हो गये। दूर से वह ऐसी लग रही थी मानो किसी लडकी ने वडी उम्र की स्त्रियो जैसे वाल वना रखे हो।

वाल्या एक गर्वीली युवती थी, अत' उसने उनके पीछे लगना ठीक न समझा। उसका गदराया ऊपरी ओठ कुछ कुछ हिला और उसकी आखो मे रुक्षता का भाव झलक उठा। उसकी टोकरी मे आलुओ के नीचे कुछ परचे रखे थे। ये उस जगह के लिए थे, जहां उसे अभी जाना था। अतएव वह टोकरी लेकर वडे गर्व के साथ श्रम-केन्द्र की ओर चल दी।

पहाडी पर, श्रम-केन्द्र की सफेद इकमजिली इमारत के सामने के छोटे-से खुले मैदान मे जर्मन सैनिको ने घेरा डाल रखा था। उस दिन जिन युवक-युवतियो को अपने वतन से दूर जाना था उनके माता-पिता और अन्य संवधी सन्दूक और गठरिया लिये पहाडी की ओर, घेरे के बाहर खडे थे। उन्ही के साथ और भी ऐसे बहुत-से लोग खडे थे जो वहा केवल कुतूहल वश आ गये थे।

अन्तिम कुछ दिन वडे ही मनहूस से रहे थे। प्रातःकाल जो हवा चली थी, वह अव अंधड वनकर वर्षा के बादल वहाये लिये जा रही थी। हवा इतनी तेज थी कि बादल उडे जा रहे थे और वर्षा की सम्भावना न थी। हवा पहाड की ढाल पर खडी हुई औरतो और लडकियो के रग-विरगे स्कर्टो से खेलती और जिला कार्यकारिणी कमिटी और 'पगले रईस' के घर की दिशा मे गुजरती हुई सड़क पर धूल के ववण्डर उडा रही थी।

स्त्रियो, लडकियो और युवकों का यह समूह, निश्चेष्ट और दुखी था। यह एक करुण दृश्य था। वे लोग वाते भी या तो वहुत धीरे धीरे करते या फुसफुसाते हुए। उन्हे जोर से रोने मे भी भय लगता। मा अपने आसू हाथ से पोछ लेती और वेटी रूमाल आखो पर दवा लेती।

वाल्या भीड के एक छोर पर पहाडी की ढाल पर खडी हो गयी। वहा से वह खान १-वीस के पास पडोस का भाग और रेलवे व्राच लाइन का एक भाग देख सकती थी।

नगर के भिन्न भिन्न भागो से अधिकाधिक लोग चलते चले आ रहे थे। प्राय वे सव नौजवान भी वहा आ चुके थे जिन्होने वाजार मे परचे वाटे थे। सहसा वाल्या की नजर सेर्गेई पर पडी—वह उस वाध से लगे लगे चल रहा था जिसके ऊपर रेलवे-लाइन थी। वह सिर नीचा किये था ताकि हवा मे उसकी टोपी न उड जाय। एक क्षण के लिए वह आखो से ओझल हुआ और फिर पहाडी के मोड पर दिखाई दिया। वह अव पहाडी के खुले हुए भाग के पास आया, उसने भीड पर एक पैनी-सी दृष्टि डाली और दूर से ही वाल्या को पहचान लिया। वाल्या का गदराया ऊपरी ओठ गर्व से काप रहा था। वाल्या ने उसकी ओर देखने से भी इनकार कर दिया और उससे एक भी सवाल न पूछा।

"वह नताल्या अलेक्सेयेव्ना थी," उसने धीरे-से कहा। वह जानता था कि वाल्या क्यो क्रुद्ध होगी। वह उसके कान के पास झुका और फुसफुसाकर वोला—

"क्रास्नोदोन की खनिक वस्ती मे छोकरो का पूरा जत्था है . . वह अपने आप ही काम कर रहा है ओलेग से कह देना . "

वाल्या 'तरुण गार्ड' के हेडक्वर्टर की एक सदेशवाहिका थी। उसने हामी भरते हुए सिर हिलाया। तभी उनकी नजर, वोस्मीदोमिकी से सडक पर आती हुई, ऊल्या ग्रोमोवा पर पड़ी। उसके साथ कोई अजनवी लड़की थी जो मुलायम ऊनी टोपी और कोट पहने थी। ऊल्या और वह लडकी एक सूट-केस उठाये हुए थी। दोनो जैसे हवा से लड रही थी और धूल से वचने के लिए अपने चेहरे एक ओर हटाये हुए थी।

"अगर मुझे उधर जाना पडा तो तुम मेरे साथ चलोगी?" सेर्गेई फुसफुसाया। वाल्या ने हामी भरते हुए सिर हिला दिया।

आखिर श्रम-केन्द्र के डाइरेक्टर ओवर-लेफ्टिनेट श्प्रीक को सहसा ख्याल आया कि युवक-युवतिया घेरे से वाहर ही अपने सवधियो के साथ

खडे रहेग यदि उन्हे वहा से बुलाया नही गया। डाइरेक्टर की दाढी गफाचट थी। वह गर्मी के मौसम मे दफ्तर मे और सडको पर टहलते समय चमडे का जाँघिया पहनता था। किन्तु इस समय उसने जाँघिया नही पूरी वर्दी पहन रखी थी। वह अपने क्लर्क को साथ लिये सायवान मे आ गया और चिल्लाकर कहा कि जिन लोगो को जाना है वे अपने कागजात ले ले। क्लर्क ने ये निर्देश उक्रइनी भाषा मे दुहरा दिये।

जर्मन सैनिको ने माता-पिताओ, सबधियो तथा मित्रो को घेरे के अन्दर नही आने दिया। विदाई शुरु हो चुकी थी। मा और बेटिया अब अपने पर जब्र न रख सकी और जोर जोर से रोने लगी। युवक अपने पर नियत्रण रखे थे, किन्तु जिस समय उनकी माताए, दादिया या बहनें उनसे चिपटी हुई थी उस समय युवको के चेहरे देखे तक न जाते थे। इतनी करुणा थी उनपर। उनके बूढे पिता जिन्होने बरसो खानो मे काम किया था और कई बार मौत का सामना किया था, हताश दिखाई पड रहे थे। उनके आसू बह बहकर उनकी मूछो से टपकने लगे थे जिन्हे वे बार बार हाथ की हथेली से पोछ डालते।

"यही समय है," सेर्गेई ने कठोरता से कहा। वह वाल्या से अपनी उत्तेजना छिपाने का प्रयास कर रहा था।

वाल्या मुश्किल-से ही अपने आसू सभाल पा रही थी। सेर्गेई ने क्या कहा था यह भी वह ठीक से न सुन सकी थी। आखिर वह यत्रवत् भीड़ मे घुसी, यत्रवत् उसने आलुओ के नीचे टटोला, मुडी हुई एक नोटिस निकाला और उसे किसी की जैकेट की जेब मे, तो किसी के कोट की जेब मे या किसी सूट-केस के हैडिल के नीचे अथवा किसी टोकरी मे डाल दिया।

घेरे के पास ही, सहसा श्रम-केन्द्र की दिशा से आता हुआ, भीड का एक रेला वाल्या को पीछे खदेड ले गया। उस भीड मे उन युवको, लडकियो अथवा युवतियो की सख्या कम न थी जो किसी न किसी को

विदा करने आयी थी। इनमे से एक अपनी बहन या भाई को विदा करते समय इत्तिफाक से घेरे मे चली गयी थी और अब वहा से निकल न पा रही थी। इस घटना से जर्मन सिपाहियो का इतना मनवहलाव हुआ कि वे, अपने पास खडे हुए लडके-लड़कियो को पकड पकडकर घेरे के भीतर घसीटने लगे। वहा चीख़-चिल्लाहट, रोना-धोना और घिघियाना ही सुनाई पड रहा था। एक औरत का तो रोना थमता ही न था। भयभीत युवक-युवतियो घेरे से दूर भाग रहे थे।

इसी बीच कही से सेर्गेई आ टपका। उसके चेहरे पर क्रोध और व्यथा के भाव स्पष्ट दीख पड रहे थे। उसने वाल्या का हाथ पकडा और उसे भीड से बाहर खीच लाया। सहसा उनका सामना नीना इवान्त्सोवा से हो गया।

"भगवान का शुक्र है। वरना इन दैत्यो ने तो " उसने दोनो के हाथ अपने वडे वडे जनाने और सावले हाथो मे ले लिये। "कशूक के घर। आज शाम को पाच बजे। ज़ेम्नुख़ोव और स्तख़ोविच को भी सूचित कर देना," वह वाल्या के कान के पास फुसफुसायी। "तुमने ऊल्या को तो नही देखा?" और वह ऊल्या की तलाश मे निकल गयी। वाल्या की ही भाति नीना इवान्त्सोवा भी हेडक्वार्टर की एक सदेशवाहिका थी।

कुछ क्षणो तक वाल्या और सेर्गेई एक दूसरे के पास पास खडे रहे। एक, दूसरे को छोडना नही चाहते थे। सेर्गेई को देखकर लग रहा था जैसे वह कोई बडी ही आवश्यक बात कहना चाहता है, फिर भी उसने कुछ नही कहा।

"अब मै भी भागूगी," वाल्या ने धीरे-से कहा।

किन्तु कुछ क्षणो तक जहा की तहा खडी रही, फिर सेर्गेई की ओर देखकर मुस्करायी, इधर-उधर एक निगाह डाली, शर्मायी-लजायी और टोकरी हाथ मे लेती हुई पहाडी के नीचे दौड चली।

ऊल्या घेरे के विलकुल पास खड़ी, श्रम-केन्द्र की इमारत से वाल्या फिलातोवा के पुन वाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रही थी। जिस जर्मन सिपाही ने वाल्या को, मय उसके सूट-केस के, घेरे मे जाने दिया था वही ऊल्या का हाथ भी पकडने के लिए आगे वढा था। पर ऊल्या ने सिपाही की ओर वडी रुखाई और घृणा से देखा। एक क्षण के लिए दोनो की निगाहे चार हुई। ऊल्या को सैनिक की दृष्टि मे मानो मानव संवेदना का भाव दिखाई दिया। सैनिक ने उसे छोड दिया था और सहसा, क्रोध से एक सुनहरे वालोवाली जवान औरत पर भौकने लगा था जिसका सिर नगा था और जो किसी भी दशा मे अपने सोलह साल के वेटे को अपने से अलग न कर पा रही थी। आखिर उसने किसी प्रकार वेटे को छोडा और तव कही पता चला कि वस्तुत जर्मन उस औरत को लिये जा रहे थे, न कि उसके वेटे को। जब युवक ने मा को, हाथ मे बंडल लिये इमारत मे घुसते और दहलीज से अन्तिम बार मुस्कराते हुए देखा तो वह वच्चे की तरह फूट फूटकर रो पडा।

ऊल्या और वाल्या फिलातोव परिवार के सामने वाले छोटे कमरे मे एक दूसरे की कमर मे हाथ डाले रात भर वैठी रही थी। कमरे मे शरद के फूलो की प्रचुरता थी। प्राय वहा वाल्या की वूढी मा आ जाती और या तो उनके वाल सहलाती, या उन्हे चूमती अथवा वेटी के सन्दूक की चीजे छाट छाटकर रखती अथवा कोने मे पडी एक आराम-कुर्सी पर चुपचाप वैठ जाती। अव चूकि वाल्या भी उसे छोड़कर जा रही थी अतएव सिवा अकेलेपन के उसका और कोई सहारा न रह गया था।

वाल्या रो रोकर कमजोर हो गयी थी और ऊल्या के आलिंगन तक मे काप उठती थी। परन्तु अव पहले से शान्त थी। आगे क्या होना था इसका ऊल्या को ज्ञान था और वह भयभीत हो उठी थी। वह अधिक

समझदार और प्रौढ थी, और जैसे वच्चो की तरह और समत्व की भावना से, धीरे धीरे वाल्या का सिर थपथपा रही थी।

दिये से निकलनेवाले प्रकाश मे अधेरे कमरे मे वैठी हुई दोनो लडकियो और मा का चेहरा और हाथ मुश्किल से ही दिखाई पड रहे थे।

काश, यह सव कुछ वह अपनी आखो न देखती – किस प्रकार वाल्या मा से विदा हुई थी, किस प्रकार सरसराती हुई हवा मे उसने सूट-केस लेकर, अनन्त दूरी पैदल पार की थी और किस प्रकार जर्मन सिपाहियो के घेरे के पास वे अन्तिम वार एक दूसरे से गले मिली थी।

वेशक यह सभी कुछ हुआ था। और अव तो ऐसी ऐसी वाते होती ही रहेगी . ऊल्या के चेहरे पर गभीरता और शक्ति का भाव था। वह जर्मन सैनिको के घेरे के पास ही खडी थी और उसकी आखे श्रम-केन्द्र के द्वार पर लगी थी।

सिपाहियो की कतारो से होकर जो लडके, लडकियां और जवान औरते निकलकर आयी उन्हे एक मोटे से कारपोरल ने यह आज्ञा सुनायी कि वे अपने अपने वडल और वक्से अहाते मे दीवाल के सहारे रख दे। उन्हे यह भी वताया गया कि उनकी ये सारी चीजे एक लारी पर रख दी जायेगी। फिर वे सव अन्दर गये जहा ग्रोवर-लेफ्टिनेट के निरीक्षण मे नेम्चीनोवा ने प्रत्येक यात्री को एक एक कार्ड दिया। यह कार्ड उन्हे, जर्मन अधिकारियो के प्रतिनिधियो को दिखाकर अपना परिचय देने के लिए दिया गया था। इस कार्ड पर न तो व्यक्ति का नाम ही था, न उसका कुलनाम। उसपर सिवा एक सख्या और एक नगर के नाम के और कुछ न लिखा था। इसके अतिरिक्त उन्हे किसी प्रकार का भी कोई परिचय-पत्र नही दिया गया। कार्ड प्राप्त कर चुकने के वाद वे भवन से निकल आते थे और कारपोरल उन्हे खुले मैदान मे वनती हुई पक्तियो मे उनके स्थान पर खडा कर देता था।

आखिर वाल्या फिलातोवा दरवाजे पर दिखाई दी। उसने अपनी सहेली को देखने के लिए अपने इर्द-गिर्द एक दृष्टि डाली और उसकी ओर वढ गयी। पर कारपोरल ने उसकी वाह पकडी और उसे पक्तियो की ओर ढकेल दिया। उसे तीसरी या चौथी पक्ति मे वहुत दूर एक सिरे पर खडा किया गया। अव दोनो सहेलिया एक दूसरे को देख भी न पा रही थी।

इस निरर्थक विछोह की कटुता से लोगो को मानो स्नेह प्रदर्शन का अधिकार सा मिल गया था। भीड मे खडी हुई औरतो ने, चिल्ला चिल्लाकर अपने अपने वच्चो को विदा अथवा सीख के अन्तिम शब्द सुनाते हुए घेरा तोड़ने की कोशिश की। किन्तु लग रहा था जैसे उन पक्तियों मे खडे हुए युवक-युवतिया – जिनमे अधिकाश युवतिया थीं – पहले से ही किसी दूसरी दुनिया के निवासी हो चुके है – वे धीरे धीरे जवाव देते, या चुप रह जाते या अपना रूमाल भर हिला देते। आसू उनके चेहरे पर वहा करते और आखे अपने प्रिय चेहरो पर जमी रहती।

अन्तत ओवर-लेफ़्टिनेट श्प्रीक, हाथ मे एक वडा-सा पीला पैकेट लिये भवन से वाहर निकला। भीड़ शान्त हो गयी। सारी आखे उसी की ओर घूम गयी। "Still gestanden!"* ओवर-लेफ्टिनेट ने हुक्म दिया। "Still gestanden!"* भयानक आवाज में कारपोरल ने वही हुक्म दुहराया।

सारा जत्था मूर्तिवत् खडा हो गया। ओवर-लेफ्टिनेट श्प्रीक अपने सामने खड़ी हुई पक्तियो से होकर गुजरने लगा। जत्थे के लोग चार-चार की लाइन मे खड किये गये थे। वह चलता हुआ और अपने निकटतम व्यक्ति के शरीर मे अपनी मोटी और गठीली उगलिया गडाता हुआ आगे वढने लगा। जत्थे में दो सौ से अधिक व्यक्ति थे।

---

* अटेंशन।

ओवर-लेफ्टिनेट ने अपना पैकेट मोटे कारपोरल को थमाया और स्वय हाथ हिलाने लगा। सैनिको का एक दस्ता भीड हटाने के लिए आगे बढा—भीड के कारण सारी सडक बन्द-सी हो गयी थी। कारपोरल की आज्ञा होते ही सारा जत्था धीरे धीरे और रुक रुककर, मानो अनिच्छापूर्वक बढा और पहरे मे सडक पर चलने लगा। मोटा कारपोरल आगे आगे चल रहा था।

सैनिक जनसमूह को पीछे दबा रहे थे, फिर भी वह जत्थे के दोनो ओर बढता चला जा रहा था। लोग रो रहे थे, सिसक रहे थे, चिल्ला रहे थे और उनका विलाप हवा मे गूज रहा था।

ऊल्या प्राय पजो पर चलती रही। उसकी आखे जत्थे मे वाल्या को ढूढती रही। आखिर उसे वाल्या दिख गयी। स्वय वाल्या की आखे भी सडक के दोनो ओर अपनी सहेली को ढूढ रही थी और इस अन्तिम क्षण मे उसे न देख सकने के कारण वह व्यथित-सी दिखाई पड रही थी।

"मै यह रही, यहा, प्यारी वाल्या," ऊल्या चिल्लायी, किन्तु भीड़ ने उसे पीछे ढकेल दिया। पर वाल्या ने न तो उसे देखा ही न उसकी आवाज ही सुनी। वह आखो मे व्यथा लिये इधर-उधर देखती रही। ऊल्या, जानेवाले जत्थे से बराबर दूर पडती जा रही थी, फिर भी उसे कई बार वाल्या का चेहरा दिख गया था। अब जत्था 'पगले रईस' के घर के उस पार दूसरे लेवल-क्रासिग की ओर बढ रहा था। वाल्या अब ऊल्या को न दिखाई दे रही थी।

"ऊल्या!" नीना इवान्त्सोवा चिल्लायी। सहसा वह ऊल्या की बगल में आकर खडी हो गयी थी। "मै जाने कहा कहा तुम्हारी तलाश करती रही। आज शाम को पाच बजे कशूक के घर ल्यूबा यही है।"

लग रहा था जैसे वह कुछ भी न सुन रही हो। उसकी भयग्रस्त आखे नीना को घूर रही थी।

# अध्याय ५

जव ओलेग ने अपनी जैकेट की भीतरी जेव से अपनी नोटवुक निकाली और ध्यान से उसके पन्ने देखे तो उसका चेहरा उतर गया। वह मेज के पास पड़ी एक कुर्सी मे धस गया। मेज पर वोद्का की बोतले, कुछ मग और कुछ तश्तरियां रखी थी, पर खाने के लिए वहां कुछ न था। दूसरे लोग भी चुप हो गये और मुह पर गभीरता लिये कुछ मेज़ के पास और कुछ सोफे पर वैठे गये। सभी चुपचाप ओलेग को देख रहे थे।

अभी कल तक वे स्कूली साथी थे—निश्चिन्त और चहकते हुए। किन्तु जिस दिन से उन्होने शपथ ली थी उस दिन से उन्होने अपना पूर्वअस्तित्व खो दिया था। लग रहा था जैसे उन्होने अपना पहले का अनुत्तरदायित्वपूर्ण मित्रता-बन्धन तोड़ डाला था, क्योकि उन्हे उसके स्थान पर एक नया और अधिक उच्च सबध जोड़ना था, समान विचारो और सघटन पर आधारित मैत्री को जन्म देना था। इस मैत्री पर उस ख़ून की मुहर थी जिसे अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए बहा देने का उन्होने सकल्प कर लिया था।

कोशेवोई के घर का वड़ा कमरा प्रीफैब्रिकेटेड मकानो के ही कमरो जैसा था। विना रगी खिड़कियो के दासे, उनपर पकते हुए टमाटर, अखरोट की लकड़ी का सोफा जिसपर ओलेग सोता था, पलग जिसपर येलेना निकोलायेव्ना सोती थी, और जालीदार कपडो से ढके सरियाये हुए तकिये अभी भी उन्हे अपने इस निश्चिन्त जीवन की याद दिला रहे थे जो उन्होंने अपने ही वाप-दादा की छत के नीचे विताया था। फिर भी यह कमरा इस समय एक षड्यन्त्र-केन्द्र बना हुआ था।

अव ओलेग, ओलेग नही कशूक था। यह नाम उसके सौतेले पिता का था जो अपनी जवानी के दिनो मे एक प्रसिद्ध उक्रइनी छापामार रहा था और मृत्यु मे वर्ष भर पहले कानेव नगर मे कृषि-विभाग का अध्यक्ष था।

ग्रोलेग ने यह उपनाम इसलिए पसद किया था कि वह उसे छापेमारो के सघर्ष की उसकी प्रथम साहसपूर्ण कल्पनाग्रो ग्रौर उस कठिन से कठिन ट्रेनिग से सबद्ध करता था जो उसके पिता ने उसे खेतो मे काम करने के रूप में तथा शिकार करने, घोड़े पालने ग्रौर द्नीपर में नाव खेने के रूप में दी थी।

उसने ग्रपनी नोटबुक उस पन्ने पर खोली जहा उसने ग्रपनी ही सकेतलिपि मे कार्यक्रम लिखा था, ग्रौर ल्यूबा शेव्त्सोवा से ग्रनुरोध किया कि वह कुछ बोले।

ल्यूबा सोफे पर से उठी ग्रौर ग्राखे सिकोड़ती हुई खडी हो गयी। उसकी कल्पना के समक्ष वोरोशीलोवग्राद की उसकी हाल की यात्रा के सारे विवरण, घोर कठिनाइया, मुकाबले, खतरे ग्रौर साहसिक कारनामे घूम गये। इन सब का वर्णन करने के लिए दो शामे भी काफी न थी।

ग्रभी कल ही वह ग्रपना सूट-केस लिये चौराहे पर खडी थी, जो उसके लिए जरूरत से ज्यादा भारी था, ग्रौर ग्राज वह फिर यहा ग्रपने मित्रो के बीच थी।

जैसा कि ल्यूबा ग्रौर ग्रोलेग ने पहले से ही निश्चय कर लिया था, ल्यूबा ने 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर के सदस्यो को वह सब कुछ बताना शुरू किया जो इवान फ्योदोरोविच ने स्तखोविच के बारे मे कहा था। हां, उसने इवान फ्योदोरोविच का नाम नही लिया हालाकि ल्यूबा ने उसे देखते ही पहचान लिया था। उसने यही कहा कि वह इत्तिफाक से किसी ऐसे व्यक्ति से मिली थी जो स्तखोविच के दस्ते में रहा था।

ल्यूबा स्पष्टवादी ग्रौर निर्भीक लडकी थी ग्रौर जिसे वह नही चाहती थी उसके प्रति निर्ममता का भी व्यवहार करने मे न चूकती थी। उसने उक्त व्यक्ति का यह ग्रदेशा भी किसी से न छिपाया कि शायद स्तखोविच जर्मनो के हाथो मे पड गया था।

जब ल्यूबा यह सब कह रही थी उस समय 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर के सदस्यो को स्तखोविच की ओर देखने का भी साहस न हो रहा था। और स्तखोविच सामने की ओर घूरता हुआ, वाह्यत चुपचाप और निश्चेष्ट, मेज पर अपनी पतली बाहे रखे बैठा था। उसके चेहरे पर दृढता का भाव था। किन्तु जब ल्यूबा ने अपने अतिम शब्द कहे तो उसके चेहरे पर सहसा एक परिवर्तन दिखाई पडने लगा।

उसके बदन मे शिथिलता सी आ गयी। अब उसके होठो और हाथो मे कोई तनाव न रह गया था। उसने पूरी तरह अपनी आखे खोली और आश्चर्य तथा क्लेश के साथ बारी बारी से अपने साथियो को देखने लगा। उस समय वह एक छोटे-से बालक जैसा दीख रहा था।

"उसने ... उसने ऐसा कहा? . क्या सचमुच उसने यही सोचा था?" उसने बालसुलभ आहत भाव से सीधे ल्यूबा की आखो मे देखते हुए कई बार यही शब्द दुहराये।

सब चुप थे। स्तखोविच ने अपना चेहरा अपने ही हाथ से ढंक लिया। उसके बाद उसने मुह पर से हाथ हटाया और धीरे धीरे बोला—

"मुझपर शक किया जा रहा है और इस किस्म का शक कि मै उसने तुम्हे यह क्यो नही बताया कि एक हफ्ते तक बराबर हमारा पीछा किया गया और तब हमे दलो मे बंट जाने को कहा गया?" उसने ल्यूबा पर तेज नजर डालते हुए कहा और तब सभी सदस्यो की ओर बारी बारी से देखा, "मै वहा झाडियो मे पडा था कि मुझे यह बात सूझ गयी—वे लोग अपनी अपनी जान बचाने के लिए घेरा तोडने की कोशिश कर रहे है और यदि सब नही तो अधिकाश मौत के मुह मे चले जायेगे और शायद मै भी उन्ही के साथ मारा जाऊगा, पर मै अपने को बचाकर कही अधिक काम का सिद्ध हो सकता हू। उस समय मैने यही सोचा था . पर अब मै समझ रहा हू कि यह सिर्फ बहाना था। गोलाबारी इतनी

अधिक थी . . देखने से रोमाच हो आता था", उसने सरल भाव से कहा। "फिर भी मैं यह नहीं समझता कि मैंने इतना गभीर अपराध किया है। वे लोग खुद अपनी जान बचा रहे थे . अधेरा हो चुका था। मैंने सोचा—मैं एक अच्छा तराक हू, शायद जर्मनो का मुझ अकेले पर ध्यान न जायेगा। जब वे सब वहा से भाग गये तो मैं वहा कुछ समय तक पड़ा रहा। वहा गोलाबारी बन्द हो चुकी थी किन्तु दूसरी जगह काफी जोरो से गोलाबारी हो रही थी। मैंने सोचा—यही समय है और मैं पानी की सतह पर चित्त होकर तैरने लगा। सिर्फ मेरी नाक पानी से ऊपर थी। मैं अच्छा तैराक हू। पहले मैं सीधा नदी के बीच तक, और फिर धारा के अनुकूल तैरने लगा। इस प्रकार मैंने अपनी जान बचायी। लेकिन मुझपर इस तरह का शक किया जाये—क्या यह सभव है? आखिर वह आदमी भी तो बचा ही होगा। बोलो उसकी जान बची कि नही? मैंने सोचा था—चूकि मैं अच्छा तैराक हू, अत मुझे इस कला से लाभ उठाना चाहिए। मैं चित्त तैरता रहा और मेरी जान बच गयी।"

स्तखोविच के बाल अस्त-व्यस्त हो रहे थे। वह वहा एक बालक की भाति बैठा रहा।

"अच्छा मान लिया ...कि तुमने अपनी जान बचायी," वान्या ज़ेम्नुख़ोव बोला, "पर तुमने हमसे यह क्यो कहा कि तुम्हे यहा छापेमार दस्ते ने भेजा है?"

"इसलिए कि वे सचमुच मुझे भेजना चाहते थे . . मैंने सोचा—चूकि मैं जिन्दा हूं, इसलिए स्थिति मे कोई परिवर्तन नही हुआ। जो भी हो मुझे अपनी ही चमडी तो बचानी नही थी। मै हमलावरो से लडना चाहता था और अब भी वही चाहता हू। फिर मुझे अनुभव भी था। मैंने दस्ते की व्यवस्था करने मे सहायता दी थी और लडाइयो मे भाग लिया। इसी लिए मैंने यह बात कही थी।"

उन सभी को बडी निराशा हो रही थी, किन्तु जब उन्होने स्तख़ोविच का स्पष्टीकरण सुना तो उन्हे कुछ राहत मिली। फिर भी सारी कार्यवाही बडी अप्रिय रही। आख़िर यह सब बाते न हुई होती तो कितना अच्छा था?

उन सभी ने यह अनुभव किया था कि स्तख़ोविच सच बोल रहा है, किन्तु उन्हे यह भी लग रहा था कि उसका रवैया ठीक नही रहा और अपनी रामकहानी बड़े अप्रिय ढंग से सुनायी। उसकी दास्तान पहेली जैसी लग रही थी, जिसे सुनकर क्रोध आता था। स्तख़ोविच के साथ क्या कार्रवाई की जाये यह उनकी समझ मे नही आ रहा था।

बेशक स्तख़ोविच कोई बाहरी आदमी न था और न ही स्वार्थी अथवा अपना भविष्य बनानेवाला। वह उस तरह का युवक था जो बचपन ही से बड़े बडे लोगो के सम्पर्क मे आया था। उसने इन लोगो के अधिकारो की ऊपर ही ऊपर नकल की थी और वह भी उस कच्ची उम्र मे था जब वह लोकप्रिय अधिकार का प्रयोजन और सच्चा अर्थ तक न समझता था और न यही जानता था कि इन लोगो को यह अधिकार इसलिए मिला है कि उन्होने जी-तोड़ परिश्रम किया है और अपने आचरण को खरा बनाया है।

वह एक प्रतिभाशाली युवक था, जिसे हर चीज आसानी से समझ मे आ जाती थी। उसके स्कूली दिनो मे ही कुछ बडे लोगो ने उसपर ध्यान देना शुरू किया था और इसलिए कि उसके कम्यूनिस्ट भाई भी बडे प्रतिष्ठित लोग थे। वह जिन्दगी भर ऐसे ही लोगो के बीच रहा था, अतएव जब कभी वह अपने स्कूली दोस्तो से उन बड़े बडे लोगो के बारे मे बातचीत करता तो लगता जैसे वह अपने बराबर वालो के बारे मे बाते कर रहा हो। उसके लिए बातचीत मे या लिखित रूप मे दूसरो के विचारों

को, जो उसने व्यक्त होते सुने थे, स्पष्ट रूप से रखना हमेशा सरल प्रतीत होता था। उन दिनों वह अपने विचारो को विकसित नही कर सकता था। उसके इन्ही गुणो के कारण ज़िले के कोमसोमोल-नेता उसे सक्रिय कोमसोमोल-सदस्य समझते थे हालांकि उस समय तक उसने जीवन में ऐसा कोई खास काम न किया था जो उसकी इस सक्रियता को सिद्ध करता। आम कोमसोमोल-सदस्य उसे व्यक्तिगत रूप से न जानते थे। वे हमेशा उसे अपनी सभी सभाओं में मच पर अध्यक्ष-मंडल मे वैठे देखा करते और इसी लिए उसे ज़िले या प्रदेश का कोमसोमोल-अधिकारी समझते। वह जिन लोगो के बीच रहता या घूमता-फिरता उनके कार्यो को अवश्य ही न जानता-समझता, फिर भी वह उनके निजी और औपचारिक सबधो के सारे व्योरे जानता था—कौन किसका प्रतिद्वन्द्वी है और कौन किसका समर्थक। उसने अधिकार-उपयोग की कला के सबंध मे एक झूठी धारणा बना ली थी—उसका विश्वास था कि अधिकार जनता की सेवा के लिए नही वल्कि स्वयं आगे बढने के लिए दो किस्म के जनसमूहो के बीच अपने लिये समर्थन प्राप्त करने का साधन है।

ये लोग एक दूसरे के साथ मजाक मजाक मे बडप्पन के लहजे मे बात करते थे—उसने यह आदत भी सीखी, किन्तु गलत ढग से। उसने उनकी रूक्ष स्पष्टवादिता और आजाद-ख्याली की नकल की किन्तु यह न समझा कि इसके पीछे जिन्दगी की कितनी कर्मठता और कठिनाइया छिपी हुई है। वह युवको की भाति सीधे सीधे अपनी भावनाओ को व्यक्त करने के वजाय जान-बूझकर गुपचुप रहता और हल्की और वनावटी आवाज मे वोलता, खास तौर से उस समय जब वह टेलीफोन पर अपरिचितो से वातचीत करता। सामान्यत· यह वह अच्छी तरह जानता था कि दूसरे साथियो के साथ अपने सवधो मे अपनी श्रेष्ठता कैसे जताते रहना चाहिए।

इस प्रकार अपने आरंभिक वर्षों में ही वह अपने को साधारण लोगों से ऊंचा समझने का आदी हो चुका था। वह अपने को ऐसा व्यक्ति समझने लगा था जिसपर सामूहिक जीवन के सामान्य नियम लागू नहीं होते।

वह दूसरों की तरह—या उस छापेमार की तरह जिससे ल्यूबा मिली थी—अपनी जान बचाने के बजाय मौत के मुह में क्यों जाये? और उस व्यक्ति को क्या अधिकार था कि वह आने-याने स्तखोविच के प्रति दूसरों के दिलों में सन्देह पैदा करता, जब कि जिस स्थिति में दस्ता पड गया था उसके लिए वह स्वय नहीं, बल्कि दूसरे जिम्मेदार लोग दोषी थे?

युवक लोग स्थिति के सबंध मे निश्चित रूप से निर्णय न कर सकने के कारण चुपचाप बैठे थे, पर इन बहसों से स्तखोविच कुछ कुछ खुश नजर आने लगा था। सहसा सेर्गेई की कठोर आवाज ने मौन भंग किया—

"दूसरी जगह फिर गोलाबारी शुरू हुई, किन्तु वह चित्त तैरता रहा। फिर भी गोलाबारी पुन: आरभ हुई क्योंकि दस्ता घेरा तोडकर भाग निकला था और उस समय प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत थी। इसके माने यह हुए कि वे आगे बढे थे उसकी जिन्दगी बचाने के लिए, है न?"

कमांडर, वान्या तुर्केनिच किसी की ओर नही देख रहा था। वह सैनिक शिष्टता बरत रहा था। उसके चेहरे पर असाधारण सरलता और दृढ़ता का भाव झलक उठा था। उसने कहा—

"सैनिक को आज्ञा माननी चाहिए। इधर लड़ाई चल रही थी उधर तुम भाग गये। लड़ाई के समय तुम भगोडे साबित हुए। इस अपराध के लिए मोर्चे पर लोगों को गोली मार दी जाती है या सगीन फ़ौजी सजा दी जाती है। लोग अपने अपराध का प्रायश्चित अपने खून से करते हैं।"

"मुझे अपना खून बहाने मे डर नही लगता," स्तखोविच बोला। उसके चेहरे का रग फीका पड़ गया।

"तुम आडम्बर करते हो। बस और कुछ नही," ल्यूबा ने कहा।

सभी ने ओलेग की ओर देखा। आखिर इन सब के बारे मे उसका अपना क्या विचार है। ओलेग बडी शान्ति से बोला—

"वान्या तुर्केनिच ने तो सब कुछ कह ही दिया है। यह बात और अच्छे ढग से कही भी नही जा सकती। स्तखोविच के व्यवहार से स्पष्ट है कि वह जरा भी अनुशासन नही मानता। क्या इस तरह का व्यक्ति हमारे दस्ते के हेडक्वार्टर मे रह सकता है?"

जब ओलेग अपनी बात कह चुका तो दूसरो की भी हिम्मत खुली और जो कुछ वे सोच रहे थे कह चले। वे जैसे उत्तेजित हो होकर स्तखोविच पर झपट पडे। उन सभी ने साथ साथ शपथ ली थी। उसने, जब वह ऐसा अधम अपराध कर चुका था तो शपथ क्यो ली? उसने हर बात साफ साफ स्वीकार क्यो नही की? उसने इस पवित्र अवसर को दूषित किया—आखिर वह किस तरह का साथी है? बेशक वे ऐसे साथी को एक क्षण के लिए भी हेडक्वार्टर मे नही रख सकते थे। ल्यूबा और ऊल्या ने भी कुछ नही कहा क्योंकि वे उससे घृणा करती थी। और स्तखोविच को यह देखकर सब से अधिक दुख हुआ।

स्तखोविच का दर्प चूर्ण हो चुका था। वह अपमानित लग रहा था। उसने बार बार अपनी बात दुहराते हुए किसी न किसी की आखो मे आखे डालने का प्रयत्न किया—

"तुम लोग मेरा यकीन क्यो नही करते? जैसे चाहो, मेरी परीक्षा लेकर देख लो . ."

ठीक इसी क्षण ओलेग ने दिखा दिया कि वह ओलेग नही कशूक है।

"तुम खुद ही देख लो न, कि तुम हेडक्वार्टर में नही रह सकते," उसने कहा।

और स्तखोविच को मानना पडा कि यह बात उचित भी है।

"तुम्हारे लिए यह जरूरी है कि इसे तुम स्वय समझो," ओलेग कहता गया, "बेशक हम तुम्हें जिम्मेदारी सौपेंगे और केवल एक ही नही। हम तुम्हारी परीक्षा लेगे। तुम अब भी अपने पाच के दल का नेतृत्व करोगे और तुम्हे अपने यश को पुनः प्राप्त करने के बहुत-से मौके मिलेगे।"

"वह बड़े उच्च कुल का है। पर जो कुछ उसने किया है वह बडे शर्म की बात है!" ल्यूबा बोली।

येव्गेनी स्तखोविच को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर से निकाल दिये जाने के सवाल पर वोट लिये गये। वह अपना सिर झुकाये बैठा रहा, तब उठा और अपनी अनुभूतियो को दबाता हुआ बोला—

"इससे मुझे बहुत कष्ट हो रहा है—तुम लोग यह बात समझ सकते हो। पर मै जानता हू कि तुम कुछ और कर भी नही सकते थे। मै इसका बुरा नही मानता। मै कसम खाकर कहता हू ..." उसके होठ कापे और वह कमरे से निकल गया।

सभी सदस्य कुछ क्षणो तक चुप बैठे रहे। पहली बार अपने एक साथी के प्रति वे निराश हुए थे और इस कारण वे दुखी थे। इतना निर्मम बनना भी उनके लिए कठिन था।

ओलेग ने दात निकाले और जैसे हकलाते हुए बोला—

"व-वह ठीक हो जायेगा, म-मेरी बात याद रखना।"

वान्या तुर्केनिच ने अपनी कोमल आवाज़ में इस विश्वास का समर्थन किया—

"तुम्हारा ख्याल है ऐसी बाते मोर्चों पर नही होती? तरुण सैनिक पहले बुज़दिली दिखाता है, पर बाद मे बहादुरी के कितने ही कारनामे भी करता है।"

ल्यूबा को लगा कि इस समय उसे, इवान फ्योदोरोविच से हुई अपनी मुलाकात के बारे मे, सभी कुछ कह देना चाहिए। वेशक उसने इस वारे मे कुछ नही कहा कि वह उससे कैसे मिली—उसके काम के सबंध में कुछ ऐसी वाते भी होती थी, जिन्हे प्रगट करने की उसे इजाजत न थी। कमरे मे चहलकदमी करते हुए उसने पूरा ब्योरा देकर वताया कि किस प्रकार प्रोत्सेको उससे मिला था और उससे क्या कहा था। जव ल्यूबा ने वताया कि छापेमारो के हेडक्वार्टर के प्रतिनिधि ने आप लोगो की वड़ी तारीफ की, ओलेग की सराहना की और वहा से मेरे चलते समय मुझे चूमा तो सदस्य उत्तेजित हो उठे। निश्चय ही वह हम लोगो से वडा खुश होगा, उन्होंने सोचा।

अपने को इस नये रूप मे देखकर वे उत्तेजित थे, प्रसन्न थे और कुछ कुछ चकित भी। वे परस्पर हाथ मिलाने और एक दूसरे को मुवारक देने लगे।

"जरा सोचो वान्या, जरा कल्पना करो," ओलेग ने ज़ेम्नुख़ोव से कहा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी। "'तरुण गार्ड' दल एक वास्तविकता है जिसे प्रदेश के नेता तक मानते है।"

ल्यूबा ने ऊल्या की कमर मे हाथ डाला। तुर्केनिच के घर में मिलने के वाद से दोनो मे गहरी दोस्ती हो गयी थी। अभी तक ल्यूबा को ऊल्या से उसका हालचाल पूछने का मौका न मिला था, अव उसने उसे वहन की तरह चूम लिया।

ओलेग ने फिर अपनी नोटवुक देखी। पिछली बैठक मे वान्या जेम्नुख़ोव को पाच पाच के दलो का सघटनकर्ता वनाया जा चुका था। वान्या ने प्रस्ताव रखा कि पाच पांच के दूसरे दलो के लिए भी नेता नियुक्त किये जायें क्योकि सघटन को विस्तृत करना था।

"पेर्वोमाइका से शुरू करे, क्यो?" वान्या ने ऊल्या को प्रोफेसरो की तरह अपने चश्मे में से देखते हुए, प्रसन्नतापूर्वक कहा।

ऊल्या उठी और अपने दोनो हाथ लटकाकर सीधी खडी हो गयी। उसके नारी सौन्दर्य ने सभी उपस्थित लोगो मे एक सुखद, निष्काम अनुभूति पैदा कर दी थी जो उनके चेहरो पर झलक उठी थी। जिन युवको के मन साफ़ होते है, उनके मन मे ऐसी ही भावनाए उठती है जब वे किसी सुन्दर युवती को देखते है। किन्तु ऊल्या ने लोगो की इस मूक प्रशंसा पर कोई ध्यान न दिया था।

"हम लोग, यानी मैं और तोल्या पोपोव, वीत्या पेत्रोव और माया पेग्लिवानोवा को मनोनीत करते है," वह बोली। सहसा उसने देखा कि ल्यूबा उसे परेशान-सी दृष्टि से देख रही है। "और ल्यूबा वोस्मीदोमिकी जिले का काम ले ले, फिर तो हम पडोसी रहेगे," उसने इतना और जोड दिया। उसकी गंभीर आवाज शान्त थी और वह बडी आसानी से बाते कर रही थी।

"वाह, तुम्हे भी खूब सूझी . सचमुच।" ल्यूबा का चेहरा लाल हो उठा और उसने अपने छोटे छोटे हाथ हिला दिये। वह कैसी सगठन-कर्त्री बनेगी!

उन सभी ने ऊल्या का समर्थन किया और ल्यूबा चुप हो गयी। एक ही क्षण में ल्यूबा ने अपने को वोस्मीदोमिकी जिले की संगठनकर्त्री के रूप मे देखा। यह विचार उसे बहुत ही पसद आया था।

वान्या तुर्केनिच को लगा कि इसी समय उसे वह प्रस्ताव भी सामने रखना चाहिए जिसपर वह और ओलेग रात मे एकमत हो चुके थे। उसने बैठक मे वे सारी बाते बयान की जो ओलेग के साथ घटी थी और बताया कि यह काम न सिर्फ ओलेग के लिए बल्कि सारे संघटन के लिए सकट का कारण बन सकता था। उसने सुझाव दिया कि हम

लोग यह निश्चय करे कि ओलेग को, विना हेडक्वार्टर की अनुमति के, कभी किसी भी कारंवाई मे भाग लेने का अधिकार न हो।

"मै नही समझता कि इसके लिए अभी और स्पष्टीकरण की भी आवश्यकता है," उसने कहा, "वेशक यह निपेध मुझपर भी लागू होना चाहिए।"

"इनका क .कहना ठी . ठीक है," ओलेग वोला।

इस प्रकार यह निश्चय भी सर्वसम्मति से किया गया। अव सेर्गेई अपनी कुर्सी से उठा। वह परेशान-सा लग रहा था।

"मुझे यहा दो वाते कहनी है," उसने उदास होकर कहा और अपने मोटे मोटे होंठो को अजीव-से ढंग से फरफराया। सभी को यह वात इतनी मजेदार लगी कि कुछ समय तक तो उन्होने उसे वोलने का भी मौका न दिया।

"पहले-पहल मै इस इग्नात फोमीन के वारे मे कुछ कहना चाहता हू। क्या हम सचमुच इस सुअर की हरकते वरदाश्त करते रहेगे?" उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। "उस वदमाश ने ओस्तप्चूक और चाचा अन्द्रेई के साथ गद्दारी की और हम अभी तक यह नही जानते कि उस नीच ने हमारे कितने खनिको का सफाया करवाया है। मेरा सुझाव है कि उसे मारकर ठिकाने लगा दिया जाये," सेर्गेई वोला, "यह काम आप लोग मेरे जिम्मे कर दे क्योकि मै यो भी उसे जिन्दा नही रहने दूगा," उसने कहा और सभी को यह स्पष्ट हो गया कि सेर्गेई सचमुच ऐसा करने मे समर्थ है।

ओलेग का चेहरा गभीर हो उठा। उसके माथे पर गहरी और लवी झुर्रिया पड गयी। हेडक्वार्टर के सभी सदस्य शात थे।

"क्या राय है? वह ठीक कहता है," वान्या तुर्केनिच ने शात आवाज मे धीरे-से कहा, "इग्नात फोमीन गद्दार है। वह हम लोगो का

अनिष्ट करता है, उसे सूली पर चढाया जाना चाहिए। और ऐसी जगह जहा लोग उसे लटका हुआ देखे। उसके गले मे एक पोस्टर बधा हो जिसमे उसे फासी देने के कारण लिखे हो। यह लोगों के लिए एक सबक बने। क्या कहना है आप लोगो को इस बारे मे?" उसकी आवाज मे अप्रत्याशित निर्ममता की ध्वनि थी। "ये लोग हमपर कभी दया नही करेंगे। यह काम मुझे और त्युलेनिन को सोंपा जाये।"

और जब सदस्यो ने तुर्केनिच को त्युलेनिन का समर्थन करते सुना तो जैसे उन्हे राहत-सी मिली। यद्यपि वे गद्दारो से घृणा करते थे, फिर भी उन्हे मौत की नीद सुलाना उनके लिए कठिन था। पर, चूकि इस मामले मे लाल सेना के एक अफसर, और उनके सीनियर साथी तुर्केनिच का समर्थन प्राप्त हो चुका था, इसलिए वह कार्य करना अनिवार्य-सा लग रहा था।

"बेशक इसकी अनुमति सबसे पहले हमे अपने सीनियर साथियो से लेनी होगी," ओलेग ने कहा, "और उसी दृष्टिकोण से हमे अपना सामान्य मत भी देना होगा। मै फोमीन के बारे मे त्युलेनिन के प्रस्ताव पर वोट लूगा और फिर इस सवाल पर कि यह काम किसे सौपा जाये?"

"सवाल बिलकुल साफ है," वान्या जेम्नुखोव बोला।

"हां, सवाल साफ है, फिर भी मै फोमीन के सवाल पर अलग से वोट लूगा," ओलेग ने जैसे हठधर्मी से कहा।

ओलेग इस बात पर क्यों जोर दे रहा था—सभी यह जानते थे। उन्होने शपथ जो ली थी। उन्हे अपनी आत्मा की आवाज सुनकर निश्चय जो करना था। सभी ने गभीर शाति के साथ फोमीन को फासी देने के पक्ष मे वोट दिया और यह काम तुर्केनिच और त्युलेनिन को सौपा गया।

"यह निश्चय बिलकुल ठीक है। इन सुअरो को यही सजा मिलनी चाहिए।" सेर्गेई की आखो मे चमक दौड गयी, "अब मै अपनी दूसरी बात पर आऊगा"।

अस्पताल की डाक्टर नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने सेर्गेई को बताया था कि क्रास्नोदोन से कोई अठारह मील दूर एक बस्ती मे—इस वस्ती का नाम भी क्रास्नोदोन ही था—कुछ युवको ने एक विरोधी दल बनाया है। यह वही छोटे छोटे गुदगुदे हाथोवाली नताल्या अलेक्सेयेव्ना थी, जिसकी आखो में सदा दृढता और कर्तव्यपरायणता का भाव झलका करता था। नताल्या अलेक्सेयेव्ना इस दल की सदस्या न थी किन्तु उसे इस दल का पता चला था उसकी मा की पड़ोसिन, अध्यापिका अन्तोनीना येलिसेयेको से, जो वस्तुतः क्रास्नोदोन वस्ती मे रहती थी। उसने अन्तोनीना येलिसेयेको से यह वादा किया था कि वह नगर से सम्पर्क स्थापित करने मे उसकी मदद करेगी।

सेर्गेई के सुझाव पर वाल्या बोर्त्स को इस दल के साथ सम्पर्क स्थापित करने का भार सौंपा गया। यह निश्चय वाल्या की गैर-मौजूदगी में किया गया था क्योंकि संदेशवाहिकाए इवान्त्सोवा वहने और वाल्या, हेडक्वार्टर की बैठक मे नही आयी थी। वस्तुतः उस समय वे मरीना के साथ अहाते मे एक शैड के नीचे बैठी हुई हेडक्वार्टर की चौकसी कर रही थी।

येलेना निकोलायेव्ना और मामा कोल्या, कुछ चीज़े रोटी के बदले मे बदलने के लिए, देहात मे मरीना के संबंधियो के पास गये थे। उनकी इस अनुपस्थिति का लाभ 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर के सदस्यो ने उठाया था। नानी वेरा को मालूम था कि युवक क्यो उनके घर इकट्ठे हुए है लेकिन उसने उनपर यह प्रगट नही होने दिया कि उसे मालूम है। इसी तरह व्यवहार करती रही मानो सभी दावत के लिए एकत्र हुए हैं। वह मामी मरीना और उसके नन्हे बेटे को लेकर पहले से ही शैड के नीचे चली गयी थी।

युवको को वाद-विवाद करते करते शाम हो चुकी थी। तभी नानी वेरा भी कमरे मे आयी। उसके चश्मे का एक भाग टूट गया था और

काले डोरे की सहायता से कमानी से बधा था। उसने चश्मे के ऊपर से देखते हुए तुरन्त ही यह जान लिया कि मेज पर रखी हुई वोद्का की बोतल छुई तक न गयी थी और मर्गो का भी कोई इस्तेमाल न किया गया था।

"शायद तुम लोग चाय पीना चाहते हो। मैंने कुछ न कुछ खाने के लिए भी बना रखा है," वह बोली जिससे षड्यन्त्रकारियों को कुछ झेप सी हुई। "और हा, मैंने मरीना को समझा दिया है कि वह बच्चे को लेकर सायबान मे सोये। वहा की हवा ताजी है।"

नानी ने वाल्या, नीना और ओल्गा को बुलाया, चायदानी उठा लायी और एक दराज मे से कुछ छिपायी हुई मिठाइया निकालकर मेज पर रख दी, फिर झिलमिली गिरायी, दिया जलाया और कमरे से बाहर चली गयी।

इस समय सब के सब दिये के पास बैठे थे, जिस मे से धुआ निकल रहा था, और जिसकी झिलमिलाती हुई लौ कमरे के अधेरे मे उनके चेहरो, कपडो और अन्य चीजो पर पडकर कुछ क्षणो के लिए उन्हे प्रकाशित कर देती थी। वे सचमुच वहां षड्यन्त्रकारी-से लग रहे थे। उनकी आवाजे शात और रहस्यपूर्ण लग रही थी।

"आप लोग मास्को की बात भी सुनेगे?" ओलेग ने धीरे-से कहा।

सभी ने इसे मजाक समझा। किन्तु अकेली ल्यूबा ही कुछ हैरान-सी हुई और सहसा पूछ बैठी—

"मास्को, कैसे?"

"एक शर्त्त पर—कोई प्रश्न न किया जाये।" ओलेग अहाते मे गया और तत्काल लौट आया।

"एक क्षण धीरज रखे," वह बोला और मामा कोल्या के कमरे के अधेरे मे गायब हो गया।

युवक शात बैठे रहे। इस बात पर यकीन किया जाये या नही, यह वे समझ ही न पा रहे थे। लेकिन क्या आदमी को ऐसे मौके पर इस तरह का मजाक करना चाहिए!

"नीना, आकर मेरी मदद करो न!" ओलेग ने पुकारा।

नीना इवान्त्सोवा उसके पास चली गयी।

फिर सहसा मामा कोल्या के कमरे से एक हल्की-सी हिसहिसाती हुई आवाज सुनाई पडी जो परिचित होने के साथ साथ अर्द्धविस्मृत-सी लग रही थी—फिर किसी किसी वक्त सगीत की धुन सुनाई देने लगी, कही कुछ लोग नाच रहे थे। बीच बीच मे जर्मन 'मार्च' की आवाजे भी आ रही थी। एक बुजुर्ग की आवाज अग्रेजी में सुनाई दे रही थी—वह दुनिया के हताहतो की सख्या सुना रहा था। उसके बाद कोई व्यक्ति बहुत ही जल्दी जल्दी जर्मन मे बोलने लगा था। उसकी बातो मे क्रोध की झलक थी और लग रहा था जैसे उसे यह डर हो कि उसे अपनी बात समाप्त करने का मौका न मिलेगा।

और फिर जैसे अनन्त शून्य से होकर कमरे मे आती हुई, अनाउन्सर लेवितान की परिचित-सी आवाज सुनाई दी। लेवितान स्थिर, व्यावहारिक, धीमी और मधुर आवाज़ मे बड़े सहज ढग से बोल रहा था

"हम सोवियत सूचना-केन्द्र से बोल रहे है। ७ सितबर के सायकालीन सवाद "

"तुरन्त लिख लो," वान्या जेम्नुखोव उत्तेजित होकर फुसफुसा उठा और अपनी पेसिल तलाश करने लगा, "हम यह खबर कल फैलाएगे"।

फिर एक स्वतत्र क्षेत्र से आती हुई वही स्थिर, स्वच्छन्द आवाज शून्य मे हजारो मील का चक्कर लगाती हुई सुनाई पडी—

" ७ सितम्बर को हमारी सेनाओ ने दुश्मनो को स्तालिनग्राद के पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम मे तथा नोवोरोसिइस्क और मोज्दोक के पड़ोस मे घमासान लडाइयो मे उलझाये रखा। दूसरे मोर्चो की स्थिति में कोई भी महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन नही हुआ. ."

मानो महायुद्ध की प्रतिध्वनिया कमरे मे प्रवेश करने लगी थी।

सभी सदस्य पूरी एकाग्रता के साथ आजाद ज़मीन से आनेवाली आवाज, सांस रोके, सुन रहे थे। दिये के हल्के प्रकाश से उनकी आखें बड़ी बड़ी और काली नज़र आती थी और चेहरे देव प्रतिमो पर अंकित चेहरो की भाति लग रहे थे।

और नानी वेरा दरवाजे से सटी खड़ी थी। उसका दुबला-पतला, सावला और झुर्रीदार चेहरा दान्ते अलिघियेरी* जैसा लग रहा था। बेशक उसकी ओर किसी का भी ध्यान न गया था।

## अध्याय ६

बिजली सिर्फ जर्मन दफ्तरों को ही दी जाती थी। बेशक मामा कोल्या ने इस बात का लाभ उठाया था कि प्रशासन और कमाडाट के आफिस को जानेवाली बिजली की लाइन सडक से होकर नही बल्कि उसके अपने अहाते और उसके पडोसी के अहाते के बीच से होकर जाती थी और बिजली का खंभा कोरोस्तिल्योव के मकान के ठीक पास पडता था। मामा कोल्या ने रेडियो उपकरण अपने कमरे में अलमारी तले, फर्श के तख्तो के नीचे रखा हुआ था। जब कभी रेडियो का प्रयोग करना होता तो उसका 'तार' खिडकी के ऊपर वाले चौखटे मे से निकालकर तार

---

*इटली के महान कवि (१२६५–१३२१)

के एक टुकडे के साथ जोड दिया जाता। यह तार लम्बी-सी चोब से बन्धा था और चोब के ऊपर एक हुक लगा था जिसके ज़रिये चोब खंभे के पास बिजली लाइन से मिली थी।

सोवियत सूचना-केन्द्र का सवादपत्र! भले ही उन्हे कितनी ही तकलीफ और जोखिम उठाना पडे छपाई की मशीन का प्रबन्ध तो उन्हे करना ही था।

जब वोलोद्या ओस्मूख्निन, जोरा अरुत्युन्यान्त्स और 'घर्घरक' तोल्या ने पार्क मे खुदाई की तो उन्हे थोडे मे ही टाइप हाथ लग सके। शायद जिन लोगो ने उन टाइपो को जमीन मे गाड़ा था, उनके पास पैकिंग का सामान न था। उन्होंने टाइपो को एक गड्ढे में रखकर उन्हे मिट्टी से ढक दिया था। लारियो और विमानमार तोपो के लिए खोदनेवाले जर्मन सैनिको ने पहले-पहल यह जानने का प्रयत्न न किया कि यह सब था क्या और इसलिए उन्होंने मिट्टी के साथ ही टाइप भी इधर-उधर फेक दिये। पर बाद मे उन्हे अपनी गलती मालूम हुई और उन्होंने इसकी सूचना उच्च अधिकारियो को दी। नतीजा यह हुआ कि शायद बहुत-से टाइप हटा लिये गये किन्तु कुछ अब भी गड्ढे के तल मे पडे रह गये थे। छोकरो ने वहा बडे सयम के साथ कई दिनो तक खुदाई की और उन्हे नक्शे मे दिखाये गये स्थान से कुछ गज के व्यासार्ध के दायरे मे काफी छिटपुट टाइप मिल गये। इस प्रकार उन्होने एक एक अक्षर बटोरकर रख लिया। वे टाइप ल्यतिकोव की जरूरत लायक न थे इसलिए उसने 'तरुण गार्ड' के उद्देश्यो के लिए उसका प्रयोग करने की अनुमति वोलोद्या को दे दी थी।

ज़ेम्नुख़ोव का बडा भाई अलेक्सान्द्र, जो अब सेना मे था, कभी छपाई का व्यवसाय करता था। उसने काफी अरसे तक स्थानीय समाचारपत्र 'सोत्सिआलिस्तीचेस्काया रोदिना' के छापाखाने मे भी काम

किया था। वान्या प्राय उससे वहा मिलने जाया करता था। वान्या के निरीक्षण मे अब वोलोद्या छापने की एक छोटी-सी मशीन बनाने मे जुट गया। वोलोद्या जिस मशीन के कारखाने मे काम करता था, वहा उसने छापेखाने के लिए गुप्त रूप से धातु के पुर्जे बना लिये, और जोरा ने सामान रखने के लिए एक लकडी का बक्सा और कुछ टाइप-केस बनाने का काम अपने ऊपर ले लिया।

जोरा का पिता बढई था। उसकी मा बडी चरित्रवान् महिला थी। जोरा को इस बात की आशा थी कि जर्मनो के अधिकार प्राप्त करने पर उसके माता-पिता उनके विरुद्ध अवश्य हथियार उठायेगे। लेकिन दोनो मे से किसी ने भी इस दिशा मे कदम नही उठाया। किन्तु जोरा को इस वात मे कोई सन्देह न था कि वह उन्हे धीरे धीरे अपने ही क्रियाकलापो मे खीच लेगा। काफी सोच-विचार के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुचा था कि शुरू शुरू मे पिता को ही अपने अनुकूल ढालना ठीक होगा। मा को बाद मे समझाया जा सकता था। वह तो एक ऐसी औरत थी, जो जरूरत से ज्यादा सक्रिय थी। जोरा का पिता अपने वेटे के कधे तक आता था। वह अधेड उम्र का, शात-स्वभाव व्यक्ति था। वेटा हर चीज मे मा की नकल था—क्या आचरण, क्या कद-बुत्त, क्या काले काले वाल। वेशक उसके पिता को यह बात बडी अखरी कि खुफिया काम करनेवालो ने, उसके युवा वेटे द्वारा नाजुक हुक्म भेजा है, फिर भी उसने विना अपनी पत्नी को बताये, बक्सा और टाइप-केस वनाने का काम हाथ मे ले लिया। बेशक वह यह न जानता था कि जोरा और वोलोद्या, पाच पाच लोगो के ग्रुप-लीडर थे, और अपने अधिकारो के नाते स्वय महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे।

इन दोनो छोकरो की दोस्ती इतनी गहरी हो गयी कि कोई भी, विना एक दूसरे को देखे एक दिन भी जिन्दा न रह सकता था। किन्तु

ल्यूस्या ओस्मूखिना और जोरा के सबंध पहले की ही तरह औपचारिक थे। उनमे अब भी पहले-सा तनाव था।

बेशक, उनके स्वभाव और रुचिया अलग अलग थी। दोनो अच्छे-खासे पढ़े-लिखे थे किन्तु जोरा को विज्ञान और राजनीति की बाते पसद थी और ल्यूस्या को मुख्यत. उन किताबो मे मजा आता जिनमे मानव-भावनाओ का उल्लेख होता। हा, यहा यह जान लेना चाहिए कि ल्यूस्या, जोरा से बडी थी। हा जब कभी जोरा अस्पष्ट भविष्य मे झाकने का प्रयास करता तो उसे यह सोच सोचकर गुदगुदी-सी होने लगती कि ल्यूस्या का तीन विदेशी भापाओ पर पूरा अधिकार रहेगा। फिर भी वह इस तरह की ट्रेनिग काफी न समझता और उसे सिविल इजीनियर बनने के लिए आग्रह करता रहता। इसमे वह चतुराई से काम न लेता था।

जब से दोनो मिले थे, तभी से जब जब ल्यूस्या की स्वच्छ और चमचमाती हुई आखे जोरा की काली काली और सकल्परत आखो से मिलती तो जैसे दो तलवारे झनझना उठती। वे अधिकतर अलग अलग न रहकर साथ ही रहा करते और एक दूसरे पर उत्तर प्रत्युत्तरो से प्रहार करते—ल्यूस्या के प्रत्युत्तर उद्धत और दशक होते और जोरा के नियत्रित और उपदेशात्मक।

आखिर वह दिन भी आया जब जोरा ने अपने मित्रो अर्थात् वोलोद्या ओस्मूखीन, 'घर्घरक' तोल्या और वान्या जेम्नुखोव को अपने कमरे मे जमा किया। वान्या उन सबमे बडा था, उनका नेता था। अब वह कवि न था बल्कि 'तरुण गार्ड' के अधिकाश परचो और नारो का लेखक था। इसलिए छापाखाना बनने मे वान्या की सब से बडी दिलचस्पी थी। छापने की मशीन बन चुकी थी। तोल्या ओर्लोव नाक बजाता और खासता हुआ—लग रहा था जैसे ये आवाज़े किसी पीपे मे से निकल रही ह—बार बार कमरे मे चहलकदमी करता हुआ यही

प्रदर्शन करता रहा कि जरूरत पडने पर अकेला एक ही आदमी सारी मशीन उठाकर अन्यत्र ले जा सकता है।

उनके पास एक चिपटा ब्रश और रोलर था ही। छापे की स्याही के स्थान पर जोरा के पिता ने जिसने जिन्दगी भर लकडी पर रगाई और वार्निश का काम किया था, 'एक मौलिक घोल' तैयार कर दिया था। अब सभी मित्र अक्षरो को छाट छाटकर केसो मे रखने लगे और वान्या जेम्नुखोव, जिसे सारे अक्षर 'o' जैसे लगते थे, —क्योकि उसकी नजर कमजोर थी—जोरा के पलग पर बैठकर पूछने लगा कि इस एक 'o' से वर्णमाला के सारे अक्षर बनते कैसे है।

ठीक इसी क्षण खिडकी पर दस्तक हुई। खिडकी पर परदा पडा था। दस्तक से वे जरा भी विचलित न हुए क्योकि वस्ती के इस दूरस्थ कोने मे कोई जर्मन या पुलिस वाला कभी न आया था। वस्तुत ओलेग और तुर्केनिच आये थे। वे मशीन पर शीघ्र से शीघ्र कुछ छपाना चाहते थे, इसी लिए घर बैठे रहना उन्हे असम्भव लगा और वे यहा चले आये।

किन्तु वाद मे पता चला कि सचमुच वे इतने मुर्ख न थे। तुर्केनिच ने चुपचाप जोरा को एक ओर बुलाया और दोनो साथ साथ वगीचे मे चले गये। इधर ओलेग, वोलोद्या और तोल्या की सहायता करने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

तुर्केनिच और जोरा वगीचे के बाडे के अन्तिम छोर तक गये और घास पर पड रहे। बार बार बादल सूर्य को ढक लेते। शरद काल निकट था, अत धूप की अधिकाश गरमी कम हो चुकी थी। हाल की वर्षा के कारण घास और जमीन दोनो ही भीग गयी थी। तुर्केनिच जोरा के पास झुककर फुसफुसाने लगा। जोरा ने उसके प्रश्न का उत्तर पूरे विश्वास के साथ दिया। तुर्केनिच ने इसी उत्तर की आशा भी की थी।

जोरा ने कहा—"बहुत अच्छा। यह ठीक भी है। इससे दूसरे गद्दारो को अच्छा सबक मिलेगा। बेशक, मै राजी हू।"

ओलेग और वान्या तुर्केनिच को खुफिया जिला पार्टी कमिटी की अनुमति मिल चुकी थी। अब उनके सामने जो काम था उसके लिए काफी चतुराई और बारीकी की जरूरत थी। फिर से युवको की तलाश की जानी थी जो इस कार्य को न्याय और अनुशासन की भावना से सपन्न करे। इन युवको मे नैतिक कर्त्तव्य की भावना और इतनी सकल्प शक्ति की भी आवश्यकता थी कि उनके हाथ न कापे।

तुर्केनिच और सेर्गेई त्युलेनिन ने पहले-पहल सेर्गेई लेवाशोव के नाम पर विचार किया था। वह लगन का पक्का और अनुभवी छोकरा था। फिर उनके सामने कोवल्योव का नाम आया था—निर्भीक, विवेकशील हृष्ट-पुष्ट। उन्हे ऐसे ही किसी व्यक्ति की जरूरत थी। त्युलेनिन ने पिरोज्होक के नाम का सुझाव दिया था, पर तुर्केनिच ने यह सुझाव न माना क्योकि पिरोज्होक असावधानी बरत सकता था। त्युलेनिन अपने साथी, वीत्का लुक्याचेको के नाम पर भी विचार करना नही चाहता था—वह उसे इस अप्रिय कार्य से दूर रखना चाहता था। अन्तत वे जोरा के नाम पर एक मत हो गये। उन्होने जोरा को चुनकर कोई गलती न की थी।

"पर क्या तुमने अभी तक यह तय नही किया कि 'फौजी अदालत' मे कौन कौन होगे?" जोरा ने पूछा, "लम्बी-चौडी जाच की कोई जरूरत नही, पर यह जरूरी है कि फासी देने से पहले अभियुक्त यह देख ले कि उसका विधिवत् न्याय-परीक्षण हुआ है"।

"हम ही फौजी अदालत के सदस्य होगे", तुर्केनिच बोला।

"हम जनता के नाम पर उसे सजा देगे, क्योकि हम यहा के लोगो के कानूनी प्रतिनिधि है!" जोरा की अविचलित काली आखे चमचमा उठी।

"दिल का मजबूत है छोकरा," तुर्केनिच न सोचा। "हमें अब भी एक व्यक्ति की और जरुरत है," उसने कहा।

जोरा ने इस प्रश्न पर विचार किया और उसकी कल्पना के आगे वोलोद्या का चित्र घूम गया। किन्तु इस काम के लिए वोलोद्या बड़ा ही भावुक और कोमल स्वभाव लड़का था।

"मेरे ग्रुप में एक युवक है—रादिक युर्किन। वह हमारे ही स्कूल का है। तुम उसे जानते हो। मेरा ख्याल है, वह ठीक रहेगा।"

"वह तो अभी बच्चा है। उसके दिल पर ज्यादा असर होगा।"

"नही, यह बात नही बच्चे ऐसी चीजो को महसूस नहीं करते। अजी महसूस तो हम जैसे प्रौढ लोग करते है," जोरा ने कहा, "बच्चे हमारी तरह नही होते। वे सख्तदिल होते है। रादिक बडा भयकर बच्चा है। और हमेशा खीरे जैसा ठंढा रहता है।"

इस समय, जब जोरा का पिता शैड के नीचे उन लोगो के लिए कुछ बढईगीरी के काम मे लगा था, जोरा ने देखा कि उसकी मां चाभी के छेद मे से झाक रही है। फलत जोरा को कहना पड़ा कि अब वह पूरी तरह अपने पैरो पर खड़ा हो सकता है और उसके साथी भी इतने समझदार है कि अगर सब के सब कल ही अपनी शादी कर ले तो उसे याने उसकी मां को आश्चर्य नही होना चाहिए।

जोरा और वान्या तुर्केनिच वक्त पर कमरे मे लौटकर आये—टाइप छाटे जा चुके थे और वोलोद्या कई लाइनो के लिए टाइप बिठा रहा था। जोरा ने ब्रश 'मौलिक घोल' मे डुबोया और लाइनो पर लगा दिया। वोलोद्या ने लाइनो पर एक कागज रखा और रोलर चला दिया। छपे हुए लेख के चारो ओर एक शोकसूचक काली रेखा-सी बनी थी जो धातु की प्लेट के कारण बन गयी थी। वस्तुतः अनुभव न होने के कारण

वोलोद्या न प्लेट को कारखाने मे, जहा वह काम करता था, अच्छी तरह रेता न था। इसके अतिरिक्त अक्षर भी एक आकार के न थे, पर उन्हे किसी प्रकार इन्ही से काम चलाना था। सबसे जरूरी बात यह थी कि उनके सामने एक छपा हुआ पन्ना था और जो कुछ वोलोद्या ने कम्पोज़ किया था उसे सभी पढ सकते थे—

"हमसे नाता तोड़कर वान्या के साथ न रहो हमे परेशान न करो हम तुम्हारे मन का भेद जानते है नानानाना।"

वोलोद्या ने समझाया कि ये कुछ पक्तियां उसने जोरा को समर्पित की है और वह उन्ही शब्दो के चुनाव की कोशिश करता रहा है जिसमे 'न' अक्षर अधिक हो। इसी लिए नानानाना शब्द छप गया है—इसका कारण यही था कि उनके केस मे 'न' अक्षर अधिक थे। फिर विरामचिह्न न होने की वजह यह थी कि वह भूल गया था कि इन चिह्नो को भी अक्षरो की ही भाति रखा जाता है।

सहसा ओलेग उत्तेजित हो उठा।

"जानते हो 'पेर्वोमाइका' की दो लड़किया कोमसोमोल मे भरती होने का अनुरोध कर रही है?" उसने बारी बारी से उनकी ओर देखते हुए कहा।

"और मेरे ग्रुप मे भी एक छोकरा है जो कोमसोमोल मे भरती होना चाहता है," जोरा ने कहा। यह छोकरा वही रादिक यूर्किन था जो जोरा के 'पाच के ग्रुप' मे तबतक अकेला सदस्य था।

"हम 'तरुण गार्ड' छापाखाने का उपयोग कोमसोमोल के अस्थायी सदस्यता-कार्ड छापने के लिए कर सकते है," ओलेग बोला, "जानते नही, अब जब हमारे सघटन को औपचारिक रूप से मान्यता मिल चुकी है तो हमे कोमसोमोल मे सदस्य भरती करने का भी अधिकार है।"

उसकी ग्राखे ग्रजगर जैसी थी—ग्रसख्य मासल झुर्रियो के वीच गडी हुई सी। वेशक उसका लम्बा शरीर, पुराने फैशन की चोचदार टोपी से ढका उसका छोटा-सा सिर, और उसके हाथ-पैर हरकत कर रहे थे, फिर भी वह मुरदा ही था।

चाहे वह दिन मे ड्यूटी पर हो या रात मे ग्रपने 'शिकार' पर, प्रतिशोध उसके पीछे पीछे लगा रहता था। वह उसे उस समय भी खिड़की मे से घूरा करता था, जव वह ग्रपने ग्रन्तिम 'शिकार,' किसी परिवार से चुराये गये वस्त्राभूपण ग्रपनी पत्नी के साथ देखता-निरखता था। प्रतिशोध उसका एक एक ग्रपराध जानता था ग्रौर उनका लेखा-जोखा रखता था। यह प्रतिशोध उसका पीछा करता था एक छोकरे के वेप मे, जो ग्रभी पूरी तरह जवान भी न हुग्रा था ग्रौर जो बिल्ली की तरह चपल था। उसकी ग्राखो को ग्रधेरे मे भी सूझता था। यदि फोमीन को पता चल जाता कि यह प्रतिशोध—नगे पैरोवाला यह छोकरा—इतना निर्मम है तो वह उस हरकत को भी बन्द कर देता जो बाह्यत उसके जीवित होने का सकेत कर रही थी।

फोमीन मुर्दा या क्योकि उसके कार्य सीधे-सादे स्वार्थ ग्रौर बदले की भावना से प्रेरित न होते थे। वे ग्रफसरी की शान ग्रौर ठाटबाट के वाह्याडम्बर के पीछे लोगो के प्रति, यहा तक कि जर्मनो के प्रति भी, तथा उस जीवन के प्रति भी सर्वागीण घृणा से प्रेरित होते थे जो उसे व्यतीत करना पडता था।

इस घृणा के कारण सदा ही फोमीन का दिमाग खराब रहा करता, किन्तु यह घृणा कभी इतनी उग्र ग्रौर निराशाजनक न हुई थी, जितनी इस समय थी, क्योकि उसके मानसिक ग्रस्तित्व का ग्रन्तिम गदा ग्राश्रय भी धराशायी हो गया था। यद्यपि उसने वड़े वडे ग्रपराध किये थे, फिर भी उसने यह ग्राशा हमेशा ही लगा रखी थी कि उसे इतना ग्रधिकार

प्राप्त होगा कि सभी उससे डरेंगे और इस डर के कारण ही उसकी इज्जत करेंगे, उसके सामने सिर झुकायेंगे। फिर, पुराने जमाने के इज्जतदार लोगो की तरह ही वह मान-सम्मान के बीच रहता हुआ स्वतत्रता और समृद्धि का जीवन व्यतीत करेगा।

किन्तु बात बिलकुल उल्टी सिद्ध हुई। वह अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा की कोई कायदे की व्यवस्था न कर पाया और न अब इसकी कोई उम्मीद ही थी। वह जिन लोगो को गिरफ्तार करता था या मौत के घाट उतारता था उनकी सारी चीजे चुरा लेता था। और यद्यपि जर्मन उसकी इस चोरी को नजर-अन्दाज कर देते थे फिर भी उसकी इन हरकतो से नफरत करते थे और उसे एक भाडे के टट्टू, परजीवी, नीच, लुटेरे से अधिक कुछ नही समझते थे। वह जानता था कि जर्मनो को उसकी सेवाओ की तभी तक जरूरत रहेगी जब तक कि वह उनका शासन मजबूत बनाने मे उनकी इच्छानुसार काम करता रहेगा और जब शासन मजबूत हो जायेगा और शान्ति और सुरक्षा, अर्थात् Ordnung-'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो चुकेगी तो उसे निकाल फेकेंगे या दुनिया से ही उसका टिकट कटा देंगे।

यह ठीक है कि बहुत-से लोग उससे डरते थे, परन्तु दूसरो ही की तरह वे भी उससे घृणा करते थे, उससे दूर रहते थे। और बिना कायदे की हैसियत और लोगो की इज्जत प्राप्त किये हुए, उसे उन सारे वस्त्राभूषणो से भी कोई सतोष न हो पाता था जो वह अपनी बीबी के लिए घर लाता था। उसकी और उसकी पत्नी की जिन्दगी पशुओ से भी गयी-बीती थी—कम से कम पशुओ को अपने चारे, धूप और सन्तानोत्पत्ति से सतोष तो होता है।

इग्नात फोमीन की ड्यूटी थी—अन्य पुलिस वालो की ही तरह, सड़को पर गश्त लगाना, दफ्तर की इमारतो की चौकसी करना

और लोगों के घरो मे छापे मारना और गिरफ़्तारियां करने मे सहायता देना।

इस विशेष रात को वह प्रशासन मे ड्यूटी पर था, जिसके लिए पार्क में, गोर्की स्कूल की इमारत इस्तेमाल की जाती थी।

वृक्षो की शाखाओ मे सरसराती और पेड के पतले तनो के इर्द-गिर्द विलाप-सा करती हुई हवा सडको पर भीगी भीगी पत्तिया विखेर रही थी। कुहरे के वीच हल्की हल्की वूदावादी हो रही थी। नीचे लटका हुआ सा आसमान अधकारपूर्ण और मेघाच्छन्न था। पर, कुहरे के पीछे चांद और सितारो का आभास मिल रहा था। पेडो के छोटे छोटे झुरमुट काले और भूरे धव्वो की तरह लग रहे थे। उनकी आर्द्र आकृतिया आकाश के साथ एकाकार होकर उसी मे घुल रही थी।

सडक के दोनो ओर एक दूसरे के सामने खड़े स्कूल का पक्का भवन और लकडी का बना परित्यक्त ग्रीष्मकालीन थियेटर-भवन अंधेरे मे विशाल चट्टानो जैसे लग रहे थे।

फोमीन इन्ही दोनों इमारतो के वीच लम्वे लम्वे डग भरता हुआ सड़क पर गश्त लगा रहा था। उसके शरीर पर एक लम्बा, काला ओवरकोट था, जिसका कॉलर उल्टा हुआ था। ओवरकोट बटनो से कसा था। वह कभी इमारतो के उस पार कदम भी न रखता मानो जजीर से वधा हो। वह समय समय पर पार्क के मेहरावदार फाटक के पास पहुचकर स्तभ से सटकर खडा हो जाता। वह अधेरे मे, सादोवाया मार्ग के मकानो की दिशा मे टकटकी लगाये खडा था कि सहसा एक शक्तिशाली हाथ ने पीछे से उसका गला इस जोर से दवोचा कि उसके मुह से आह तक न निकल सकी। तव उसी हाथ ने उसे पीछे घसीटा यहां तक कि उसकी रीढ में कोई चीज़ चटखी और वह जमीन पर गिर पडा। उसी क्षण उसके शरीर पर और वहुत-से हाथ भी वरसने लगे। एक हाथ अभी तक

उसका गला जकड़े था, दूसरा उसकी नाक लोहे की सडसी की तरह दबाये था और तीसरा मुंह में डाट ठूस रहा था। किसी ने तौलिये जैसी किसी रुखी चीज़ से उसका जबडा कसकर बाध दिया था।

जब उसे कुछ होश आया तो उसने देखा कि उसके हाथ-पैर बाध दिये गये हैं और वह पार्क के फाटक की लकड़ी की मेहराब के नीचे पीठ के बल पड़ा है। आकाश पर धुवलका छा रहा था और सिर के ऊपर लटकती हुई धुव का शामियाना-सा तना था।

उसके दोनों ओर कुछ मानव-आकृतियां निश्चेष्ट खडी थी। वह उनके चेहरे नही पहचान पा रहा था। उनमे से एक छरहरी आकृति वाले ने मेहराब पर एक नज़र डाली और कहा—

"यही जगह हमारे लिए ठीक रहेगी!"

तब एक नाटा और दुबला-पतला छोकरा बडी होशियारी से अपने हाथो, केहुनियो और घुटनो के बल मेहराब पर चढ गया और कुछ समय तक उसके बीचोंबीच कुछ खटपट करता रहा। तभी सहसा अपने ऊपर कुछ ऊचाई पर उसने, आकाश के झुटपुटे मे, इधर-उधर हिलता-डुलता हुआ मोटे रस्से का एक फंदा देखा।

"इसे दोहराकर लो," जमीन पर खडे एक छोकरे ने हुक्म दिया। उसकी टोपी की काली नोक आकाश की ओर इशारा कर रही थी।

फोमीन ने आवाज सुनी और सहसा उसकी निगाहो के सामने शाघाई जिले मे, उसके रहने का मकान, कमरे मे रखे पौधो के गमले, मेज के पास बैठा हुआ, कोयले के काले दागो से भरा चेहरे वाला एक भारी-भरकम-सा आदमी और यही छोकरा घूम गये। फोमीन का लम्बा बदन, टंडी, गीली जमीन पर पडे हुए कीडे की भाति जोर से तडपने लगा। वह सिकुड़ता-फैलता और हिलता-डुलता हुआ उस जगह से कुछ दूर तक रेग गया किन्तु एक व्यक्ति ने अपने पैर से फिर फोमीन को उसकी पहली

ही जगह पर धकेल दिया। इस व्यक्ति के कधे बेहद चौडे थे, बाहे मजबूत थी और वह नाविको की जैकेट जैसा एक भारी-सा कोट पहने था।

फोमीन ने कोवल्योव को पहचान लिया। वह उसी के साथ पुलिस दल मे काम करता था, किन्तु उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। उन्ही के पास खडे उसने प्रशासन के एक मोटर-ड्राइवर को भी पहचान लिया। यह भी चौड़े कधोवाला एक मजबूत छोकरा था। फोमीन ने उसी दिन उसे गैरेज मे देखा था। वह ड्यूटी पर जाने से पहले सिगरेट के दो-चार कश लगाने गैरेज मे गया था। आश्चर्य की बात यह है कि उस स्थिति मे पडे हुए भी फोमीन के दिमाग मे तत्काल यह विचार कौंध गया कि प्रशासन की लारिया जो रहस्यपूर्ण ढग से बार बार फेल हो जाती है उसकी जड मे शायद यही छोकरा होगा, शायद यही मुख्य अपराधी है। जर्मन प्रशासन ने इस टूट-फूट की शिकायत भी की थी। बेशक, इस मामले की रिपोर्ट की जानी चाहिए। ठीक इसी मौके पर उसे अपने ऊपर एक आवाज सुनाई दी, जिसका उच्चारण आर्मीनियाई जैसा था। वह बडी गभीरता के साथ कह रही थी—"सोवियत सघ के नाम पर ..."

फोमीन तुरन्त जडवत् पडा रह गया। उसने अपनी आखे ऊपर आसमान की ओर उठायी और उसे एक बार फिर धुधले भूरे आकाश की पृष्ठभूमि मे, मोटे-से रस्से का एक फदा लटकता हुआ दिखाई दिया। वह दुबला-पतला छोकरा मेहराब के सिरे पर चढा हुआ अभी तक उसको अपने परो से साधे नीचे की ओर टकटकी बाधे देख रहा था। तभी आर्मीनियाई उच्चारण वाली आवाज बन्द हुई। फोमीन के मन मे इतना अधिक डर बैठ गया कि वह बुरी तरह कापने लगा। तभी कुछ शक्तिशाली हाथो ने उसे उठाया और उसके पैरो पर खडा कर दिया। मेहराब पर जमे हुए दुबले छोकरे ने वह तौलिया काट दिया जिससे उसका मूह बधा था और फंदा उसकी गरदन मे डाल दिया।

फोमीन ने अपने मुह मे से डाट निकाल फेकने का प्रयत्न किया, किन्तु उसकी एक न चली और उसका शरीर तडपता हुआ हवा में लटक गया। उसके पैर जमीन तक पहुचने मे असमर्थ थे। उसका लम्बा काला ओवरकोट वैसे ही उसके शरीर से सटा था। वान्या तुर्केनिच ने उसे घुमाकर उसका चेहरा सादोवाया मार्ग की ओर कर दिया और एक पिन की सहायता से उसकी छाती पर एक कागज लगा दिया जिसमे उस अपराध की चर्चा थी जिसके आधार पर उसे फासी दी गयी थी।

इसके वाद सभी लोग अपने अपने घर खिसक गये। पर नन्हा रादिक यूर्किन, रात विताने के लिए, उपनगर मे स्थित जोरा के मकान मे पहुचा।

"क्या हाल है तुम्हारा?" जोरा ने जोर जोर से फुसफुसाते हुए रादिक से पूछा। उसकी काली काली आखे अधेरे मे चमचमा रही थी।

रादिक काप रहा था। "मुझे नीद आ रही है, मेरी आखे भी नही खुल रही है मै जल्दी सो जाने का आदी हू," उसने उत्तर दिया और विनम्र दृष्टि से जोरा को देखने लगा।

सेर्गेई त्युलेनिन विचारो मे डूवा हुआ, पार्क मे पेड़ो के नीचे खडा था। उसने फोमीन के घर मे जिस हृष्ट-पुष्ट, सदय व्यक्ति को देखा था उसी के साथ फोमीन ने गद्दारी की थी और उसे जर्मनो के हाथ सौप दिया था। और जैसे ही सेर्गेई को इसकी खवर लगी थी उसने उसे ठिकाने लगाने की शपथ खा ली थी। आज वह शपथ पूरी हो चुकी थी। सेर्गेई ने इस वात पर जोर ही न दिया था कि उसे फासी दी जाये वल्कि इस काम के लिए उसने अपनी समस्त शारीरिक और मानसिक शक्ति भी लगा दी थी। उसे अपने काम मे सफलता मिली थी और उसे सतोप के साथ साथ उत्तेजना का अनुभव भी हो रहा था। उसने गद्दारी का वदला लिया था। अव वह वेहद थक चुका था। उसका जी कर रहा था कि वह गर्म पानी मे नहाये-धोये, किसी सीधे, सरल विपय पर मित्रो के साथ वाते

करे, जैसे पत्तियो की गुनगुनाहट, झरने की झरझर, थकी और मुदी आंखों मे पड़ता हुआ सूर्य का प्रकाश ...

यदि इस समय वह वाल्या के पास होता तो ख़ुशी से नाच उठता। पर रात मे उसके यहा जाना उसके लिए असभव था, ख़ास तौर से जब घर मे उसकी मा थी, उसकी छोटी वहन थी। इसके अलावा, वाल्या नगर मे थी भी तो नही। वह तो क्रास्नोदोन की छोटी-सी वस्ती मे गयी हुई थी।

तो उस विचित्र और कुहरे-भरी रात मे, जब लगातार झीसी पड़ रही थी, सेर्गेई ने वान्या जेम्नुख़ोव के घर की खिड़की खटखटायी। रास्ते भर वह अपनी भीगी कमीज मे कापता रहा था। सर्दी से उसके पैर नीले पड़ गये थे और कीचड़ मे सन चुके थे।

दोनो साथी, दिये के प्रकाश मे, रसोईघर में वैठ गये। मकान की खिडकियो पर मोटे मोटे काले परदे पड़े थे। आग चट्टचट्ट वोल रही थी, अगीठी पर एक बड़ी-सी केतली गर्म हो रही थी और वान्या ने अपने मित्र को गर्म पानी से नहलाने-धुलाने का निश्चय कर लिया था। सेर्गेई आग के बिल्कुल पास उकड़ू वैठा था। खिड़की पर हवा के झोके पड़ रहे थे और पानी की वूदे उस पर गिर रही थी। वूदो की पटर-पटर और हवा के दवाव से रसोईघर का दिया तक झिलमिलाने लगा था। दोनो मित्र सोच रहे थे कि ऐसे समय मे स्तेपी का चक्कर लगानेवाले किसी एकाकी यात्री की कितनी दयनीय दशा होती होगी। इसके विपरीत, एक छोटे-से गर्म रसोईघर मे दो मित्रो का साथ साथ रहना कितना सुखद है।

वान्या की आखो पर चश्मा था। उसके पैर नगे थे। उसने अपनी गहरी आवाज़ में धीरे धीरे कहना शुरू किया—

"मैं उसे अपनी कल्पना की आखो से देखता हू—किसान का छोटा-सा घर, घर के वाहर वर्फ का तूफान गरज रहा है और उसके पास नर्स

अरीना रोदिओनोव्ना के सिवा और कोई नही। वाहर तूफान है और नर्स चर्खा चला रही है। चर्खा भनभना रहा है, आग अगीठी मे चटक रही है। मै इस सव का अनुभव कर सकता हू। मै खुद देहात का रहनेवाला जो हू। और तुम तो जानते ही हो कि मेरी मा लिखना-पढना नही जानती। वह भी देहात ही मे पल है न! तुम्हारी मा की तरह . मुझे अब भी अपना छोटा-सा घर याद है, मुझे याद है कि मै अगीठी के ऊपर तख्ते पर लेटा करता था। तव मेरी उम्र छ साल की थी। उस समय मेरा भाई साशा स्कूल से घर आता था और कोई कविता रटा करता था ... मुझे यह भी याद है कि जानवरो के झुड मे से मादा भेडो को खदेडा जाता था और मै एक भेड पर चढकर अपने छाल वाले जूतो की एडिया उसकी कमर मे मारता था, इसलिए कि वह आगे वढे, आगे चले, पर वह मुझे नीचे गिरा देती थी।

वान्या सहसा घवराकर चुप हो गया। किन्तु कुछ ही क्षणो मे फिर वोला—

"जव कभी उसका कोई मित्र उससे मिलने आता तो वह वडा खुश हो उठता ... मसलन् पूश्चिन उससे मिलने आता था, इसकी मुझे आज भी याद है। घोडे की घटियो की आवाज उसके कान मे पडती थी और वह सोचने लगता था—वह कौन हो सकता है? क्या सशस्त्र पुलिस के सिपाही तो उसे पकडने नही आ रहे है?—पर नही, वह उसका मित्र पूश्चिन होता . फिर मै अकेले नर्स के साथ वैठे हुए भी उसकी कल्पना कर सकता हू। वे लोग कही वहुत दूर एक हिमावृत्त गाव मे रहते थे, जिसमे कही पर भी रोशनी नही थी। उन दिनो रोशनी के लिए वे खपच्चिया इस्तेमाल करते थे। याद है तुम्हे—'तूफानी वादल, तूफानी वादल, गगन हो उठता श्यामल, श्यामल?' जरूर याद होगा तुम्हे। यह पक्ति तो मेरे अन्तस् तक को झकझोर देती है।"

वान्या उठ खड़ा हुआ और किसी कारणवश सेर्गेई के सामने खड़ा होकर यह कविता पढ़ने लगा—

प्यारे, बड़े पुराने साथी,
तुमने दुख में हाथ बटाया, आओ, साथ पियें।
प्याले भरे, डुबाये दुख को,
जीने का बस यही ढंग है, आओ, जरा जियें।
आओ, गायें फुदकी के गुन—
उसकी कथा कि कैसे वह सागर के पार गई।
या गायें वह गीत कि जिसमें
होते तड़का पानी ले आती है भरकर
नई-नवेली, अलबेली वह नार कि जैसे
छवि की छूट नई।"*

सेर्गेई अंगीठी के पास बिलकुल शांत बैठा था। उसके भरे हुए ओंठ आगे निकले हुए से थे। उसकी आंखें वान्या पर लगी थीं और उनमें कठोरता और मृदुता दोनों ही झलक रही थीं। अंगीठी पर चढ़ी हुई केतली का ढक्कन खड़खड़ाने लगा। उसके पानी में बुलबुले उठ रहे थे और हिसहिसाहट की सी आवाज निकल रही थी।

"काफी, कविता हो चुकी!" जैसे वर्तमान में आंखें खोलता हुआ वान्या बोला, "चलो कपड़े उतारो। मैं तुम्हें अव्वल दर्जे का गुसल कराऊंगा," उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा। "सारे कपड़े उतारो, तकल्लुफ न करो! मेरे पास तुम्हारे लिए खीसा भी है।"

सेर्गेई कपड़े उतारने लगा। इधर वान्या ने अंगीठी पर से केतली उतारी। फिर एक तख्त उठाकर ले आया और स्टूल पर रख दिया। वहीं

---

* अ० पूश्किन—'सर्दी की शाम'

पास में कपड धोनेवाले साबुन की एक टिकिया भी रख दी जिसमे से कुछ दुर्गन्ध-सी ग्रा रही थी। टिकिया पहले से ही बहुत कुछ घिस चुकी थी।

"तम्बोव प्रदेश मे, हमारे गाव मे एक बूढा रहता था जो जिन्दगी भर मास्को के सन्दुनोव गुसलखाने मे ही काम करता रहा," अपनी लम्बी लम्बी टागे फैलाकर, स्टूल पर बैठते हुए वान्या ने कहा, "जानते हो ऐसे गुसलखाने मे काम करने के क्या माने होते है? अच्छा थोडी देर के लिए कल्पना करो कि तुम एक गुसलखाने मे गये हो और मान लो तुम एक ठाठवाट वाले आदमी हो, या खुद अपनी सफाई करने में बड़े काहिल हो। और तुम अपने गुसल के लिए वहा काम करनेवाले एक व्यक्ति को किराये पर लेते हो। यह आदमी एक खुर्राट मुछैल होता है और तुम्हारे बदन पर कसकर खीसा लगाता है। जिस आदमी को मै जानता था वह यही कहा करता था कि उसने अपनी जिन्दगी मे कोई पन्द्रह लाख व्यक्तियो को खीसा लगाया है। और जानते हो उसे अपने इस काम का बड़ा घमड था—उसने इतने लोगो को साफ-सुथरा बनाया था। हा, तुम तो खुद ही जानते हो लोग कैसे होते है। एक हफ्ते के बाद वे फिर ज्यो के त्यो गदे हो गये।

सेर्गेई ने दात निकाले और बदन पर से आखिरी कपडा उतारकर एक ओर रखा, तश्त मे कुछ और गरम पानी उडेला और अपना रूखा और घुघराले बालोवाला सिर उसमे घुसा दिया।

"तुम्हारे कपडे ऐसे नही है जिनपर कोई गर्व करे," गीले कपडो को अगीठी के ऊपर बिछाते हुए वान्या ने कहा, "मुझसे भी गये बीते है .. पर मै समझता हू तुम कायदे कानून जानते हो यहा यह पानी इस गन्दी बाल्टी मे डाल दो और साफ पानी ले लो। नीचे पानी गिरने की चिन्ता न करो। फर्श मै बाद मे साफ कर लूगा।"

सहसा वान्या के चेहरे पर एक फीकी-सी मुस्कान दौड़ गयी और

वह अपन लम्बे लम्बे और दुबले-पतले हाथ फैलाता हुआ—मानो वे सहसा भारी और सुन्न हो गये हो—गहरी आवाज मे बोल उठा—

"अब जरा घूम जाइये, मालिक, मै आपकी पीठ साफ कर दू।" सेर्गेई ने, अपने मित्र को कनखियो से देखते हुए, खीसे मे साबुन लगाया और दात निकाल दिये। फिर उसने खीसा वान्या को थमाया और अपनी धूप से झुलसी हुई पतली और मासल पीठ वान्या की ओर कर दी। सेर्गेई की रीढ की हड्डी खूब उभरी हुई थी।

आखे कमजोर होने के कारण वान्या कुछ अटपटे ढग से ही सेर्गेई की पीठ मलता रहा। पर सेर्गेई सहसा हाकिमो के से लहजे मे, खीज कर बोल उठा—

"क्या बात है मेरे दोस्त? कमजोर हो गये हो या काहिल? मै तुम्हारे इस काम से खुश नही हू ..."

"हुजूर, आप खुद ही देख ले न! मुझे खाने को जो कम मिलता है।" वान्या ने जैसे बडी गभीरता के साथ अपनी सफाई पेश की।

ठीक इसी समय रसोईघर का दरवाजा खुला। उस समय वान्या, सीगवाले फ्रेम का चश्मा पहने और आस्तीन उठाये, और सेर्गेई नग-धड़ग पीठ पर साबुन लगाये था। दोनो ने एक साथ दरवाजे की ओर घूमकर देखा कि रसोई के दरवाज़े पर बनियाइन और जाघिया पहने वान्या का पिता खडा था। लम्बा-सा कद, दुबले-पतले भारी हाथ उसी प्रकार झूलते हुए जैसे वान्या अभी झुला रहा था। उसने दोनो पर थकी-सी आखे उठायी। वहा वह कुछ क्षणो तक खडा रहा, तब बिना एक भी शब्द कहे घूमा और दरवाजा बदकर, बाहर निकल गया। दोनो ने सोने के कमरे की ओर जाते हुए गलियारे मे उसके पैरो की आहट सुनी।

"तूफान थम गया," वान्या ने शाति से कहा। किन्तु अब वह पहले जैसे उत्साह से सेर्गेई की पीठ पर खीसा नही मल रहा था। "हुजूर बख्शिश!"

"भगवान देगा," सेर्गेई ने उत्तर दिया किन्तु उसे यह विश्वास न था कि गुसलखाने मे काम करनेवाले किसी नौकर से ऐसा कहना उचित भी है या नही और ठडी सास भर दी।

"हा ... तुम्हारी गाडी कैसी चल रही है, यह मै नही जानता, किन्तु हमारे माता-पिता हमारा कडा विरोध करेगे।" जिस समय साफ-सुथरा सेर्गेई एक वार फिर अगीठी के पास की छोटी मेज के निकट वैठा तो वान्या ने गम्भीरता से कहा।

किन्तु सेर्गेई को इस वात का भय न था कि उसके मा-वाप उसके रास्ते मे वाधक वनेगे। उसकी आंखे वान्या के चेहरे पर लगी थी, लेकिन उसके विचार कही और चक्कर लगा रहे थे।

"जरा कागज-पेंसिल तो देना। मै अभी एक मिनट मे चला जाऊगा, पर पहले मुझे कुछ लिखना है," वह वोला।

और जव वान्या रसोईघर साफ करने मे लगा था उस समय सेर्गेई कागज़ पर लिख रहा था

"वाल्या, मैने सोचा भी न था कि तुम्हारे अकेले चले जाने पर मेरा दिल इतना वैठ जायेगा। मेरे मन मे वार वार यह ख्याल उठता है कि सव कुछ ठीक-ठाक भी है या नही। हमे कभी भी एक दूसरे से अलग नही होना चाहिए। जो कुछ करे मिलकर करे। वाल्या, यदि मै मारा जाऊ तो तुम एक काम जरूर करना—मेरी कब्र पर आकर दो आसू वहा देना।"

और वर्फ जैसी झीसी मे, वह नगे पैर, 'लघु शाघाई' से होता हुआ चक्कर काटता हुआ अपनी राह चल पडा। वायु जैसे कराह रही थी और वह कछार और खड्डो से होकर आगे वढ रहा था। वह दिन निकलते ही अपना पुर्जा वाल्या की छोटी वहन ल्यूस्या के हाथो मे थमा देने के उद्देश्य से, पार्क से होकर देरेव्यान्नाया मार्ग पर वढता चला जा रहा था।

# अध्याय ७

एक दिन प्रातःकाल वाल्या और नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने स्तेपी से होकर जानेवाली सडक पकडी। नताल्या अलेक्सेयेव्ना किरमिच के जूते पहने, हमेशा की तरह, अपने कामकाजी ढग से चमचमाती हुई गीली सडक पर चल रही थी। किन्तु वाल्या के दिमाग मे अपनी मा के संबध मे तरह तरह के विचार उठ रहे थे इसलिए वह अन्यमनस्क और सुस्त थी।

वाल्या जो काम पहले-पहल अकेले करने जा रही थी, उसमे उसके लिए तो खतरा था ही, पर मा के लिए?

जब वाल्या ने सामान्य ढंग पर मा को बताया कि वह कुछ दिनो के लिए नताल्या अलेक्सेयेव्ना से मिलने जा रही थी, तो मां ने उसे किस ढग से देखा था। ऐसे वक्त, जब वाल्या के पिता के अभाव मे उसकी मा को इतना अकेलापन महसूस हो रहा था, उसकी बेटी के स्वार्थ ने मा के दिल को कितना दुखाया होगा। और मान लो उसे पहले से ही कुछ शक हो गया हो तो?

"मै तोस्या येलिसेयेंको से तुम्हारा परिचय करा दूगी..." नताल्या अलेक्सेयेव्ना कह रही थी, "वह एक अध्यापिका है और मेरी मा की पड़ोसिन है। या यो कहे वह और उसकी मा, और मेरी मा, दो कमरो के एक फ़्लैट मे एक साथ रहती है। तोस्या स्वतंत्र और दृढ चरित्र की लड़की है। वह उम्र मे तुमसे काफी बड़ी है। और यह बात मै तुम्हे साफ साफ बता दू कि किसी दढियल खुफिया कार्यकर्त्ता के बजाय जब वह मेरे साथ एक खूबसूरत लडकी को देखेगी तो परेशान ज़रूर हो उठेगी!" नताल्या अलेक्सेयेव्ना जो कुछ कहती थी उसके यथार्थ अर्थों पर उसका अधिक ध्यान रहता था और उसे यह पर्वाह न रहती थी कि सुननेवाले पर

उसकी बातो का क्या असर पडेगा। "मै सेर्गेई को अच्छी तरह जानती हू। वह सचमुच बड़ा गभीर स्वभाव लडका है। अपने से अधिक मै उस पर भरोसा करती हू। अगर सेर्गेई मुझसे यह कहता है कि तुम जिला खुफिया सघटन मे काम करती हो, तो मेरे लिए काफी है। और मै तुम्हारी मदद करना चाहती हू। अगर तोस्या तुमसे खुलकर बात नही करती तो कोल्या सुम्स्कोई के पास जाओ। तोस्या कोल्या के प्रति जो रुख अपनाती है उसे देखते हुए मै कह सकती हू कि कोल्या वहा का सबसे प्रमुख व्यक्ति है। तोस्या की मा और मेरी मां को यह विश्वास दिलाया जाता है कि तोस्या और कोल्या एक दूसरे से प्रेम करते है। बेशक मै अन्य कामो मे उलझी रहने के कारण अपने निजी मामलो की ओर कोई ध्यान नही दे पायी फिर भी मै सामान्यत जवान लडके-लडकियो के मामले मे बहुत कुछ जानती हू। मै जानती हू कि कोल्या सुम्स्कोई, लीदा अन्द्रोसोवा से प्यार करता है और लीदा सही माने मे तितली है," नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने न मानते हुए कहा, "लेकिन निश्चय ही लीदा भी उनके सघटन की सदस्या है," अपनी न्यायप्रियता की भावना पर स्वय ही उत्प्रेरित होती हुई वह बोल उठी, "अगर तुम इस बात की जरूरत समझो कि कोल्या सुम्स्कोई जिला सघटन के साथ निजी सम्पर्क स्थापित करे तो जिला श्रम-केन्द्र मे मै अपनी डाक्टर की हैसियत से उसे दो दिन के लिए बीमारी की छुट्टी दे सकती हू। वह कही किसी छोटी-सी खान मे काम करता है। ठीक ठीक कहू तो वह खान मे भारी बोझ उठाने के किसी यन्त्र पर काम करता है "

"और जर्मन तुम्हारे सर्टीफिकेट का विश्वास कर लेगे?" वाल्या ने पूछा।

"जर्मन!" नताल्या अलेक्सेयेव्ना बोल उठी, "वे मेरे सर्टीफिकेटो पर ही विश्वास नही करते, बल्कि उन्हे तो हर उस कागज पर

अन्धविश्वास रहता है जिसपर सरकारी मुहर लगी हो। उस खान मे प्रशासन-कार्य रूसी करते है। अन्य दूसरी जगहो की ही तरह, वहा भी डाइरेक्टर से सवद्ध टेक्नीकल दस्ते का एक सर्जेंट या कारपोरल है। लेकिन वह विलकुल उल्लू है। उसकी निगाह मे हम सारे रूसी एक दूसरे से इतना मिलते-जुलते है कि वे लोग यह हिसाव नही रख पाते कि कौन काम पर आया है और कौन नही।"

आखिर हुआ वही जैसा कि नताल्या अलेक्सेयेव्ना ने पहले से ही कह दिया था। क्रास्नोदोन की खनिक-वस्ती मे हरियाली का नाम भी न था। वह तो एक प्रकार से खुली हुई जगह थी जहा वैरको की तरह की वडी वडी इमारते थी, खाने और मिट्टी के ढेर थे, खानो मे लट्ठे गाडने के यन्त्र थे जो अव यो ही वहा पडे थे। वाल्या को इस मनहूस वातावरण मे दो दिन विताने थे और उन लोगो के वीच जिन्हे मुश्किल से ही इस वात पर विश्वास दिलाया जा सकता था कि उसकी लम्वी, काली वरौनियो और सुनहरी लटो के पीछे 'तरुण गार्ड' का शक्तिशाली अधिकार विद्यमान था।

नताल्या अलेक्सेयेव्ना की मा इस वस्ती के एक सवसे घने वसे हुए और पुराने भाग मे रहती थी। वस्ती कई कई खेतो को धीरे धीरे एक दूसरे से मिला देने के फलस्वरूप वनी थी। अब तो वहा के छोटे छोटे मकानो मे छोटे छोटे वगीचे भी दिखाई देने लगे थे। पर वाग की झाडिया पहले से ही पीली पड़ गयी थी। अभी हाल ही की वर्षा के कारण सडक पर करीव करीव कमर तक कीचड विछ गया था। जाडो तक यह कीचड़ ऐसे ही वना रहेगा।

इन दिनो एक रूमानियन दस्ता वस्ती से होकर स्तालिनग्राद की दिशा मे गुजर रहा था। दस्ते की तोपें और वैगन खीचनेवाले दुवले-पतले घोड़े घटो कीचड़ मे खडे रहते जव कि ड्राइवर उन्हे रूसी मे कोसा

करते और उनकी आवाजे स्तेपी की वासुरी की तरह सारी वस्ती मे गूज जाती।

तोस्या येलिसेयेको २३ वर्ष की एक मोटी-ताजी आकर्षक उक्रइनी लडकी थी। गठा हुआ वदन और काली आवेगपूर्ण आखे। उसने साफ साफ वाल्या से कह दिया, "मै समझती हू कि जिला खुफिया केन्द्र ने क्रास्नोदोन जैसी खनिक-वस्ती को तुच्छ समझकर भूल की है। आखिर अभी तक इस वस्ती मे कोई लीडर क्यो नही आया? केन्द्र ने उनके इस अनुरोध को क्यो नही माना कि काम के सिलसिले मे हिदायते देने के लिए यहा किसी जिम्मेदार व्यक्ति को भेजा जाये।"

वाल्या ने इसका यही स्पष्टीकरण देना उचित समझा कि वह केवल 'तरुण गार्ड' युवा सघटन की प्रतिनिधि है जो जिला खुफिया पार्टी कमिटी के निर्देशन मे काम कर रही है।

"तो 'तरुण गार्ड' दल के हेडक्वार्टर का ही कोई सदस्य हमसे क्यो नही मिलने आया?" तोस्या की आखो मे विरोधियो जैसी चमक आ गयी, "जानती हो, हमारे यहा भी एक युवक सघटन है," उसने गर्व से कहा।

"मै भी हेडक्वार्टर की एक अधिकृत सदेशवाहिका हू," वाल्या ने भी उतने ही गर्व से कहा और उसका ऊपरी ओठ काप उठा। "जिस सघटन के वारे मे अभी तक यह पता न चला हो कि वह कोई काम भी कर रहा है या नही, उसमे हेडक्वार्टर के किसी सदस्य का भेजा जाना जल्दवाज़ी की वात होती, और यह वात साजिश के कामो के लिए उपयुक्त न होती। अगर तुम साज़िशी काम के वारे मे कुछ समझती हो तो मेरी वात समझ लोगी।"

"क्या कहा, काम का ही पता न चला," तोस्या ने क्रोध से कहा, "मै तो कहूंगी कि वड़ा अच्छा है हेडक्वार्टर तुम्हारा जो अपने ही

संघटनो के काम के बारे में कुछ नही जानता! मैं पागल नही हूं कि अपने सघटन की कार्रवाइयो के बारे मे एक अजनबी को बताने लग जाऊं।

कौन जाने कि यदि कोल्या सुम्स्कोई की बात बीच ही मे न छिड गयी होती तो ये दो गर्वीली और सुन्दर लडकिया किसी बात पर एकमत हुई ही न होती।

बेशक जब वाल्या ने कोल्या सुम्स्कोई का नाम लिया तो तोस्या ने कहा कि उसने उसके बारे मे कभी कुछ नही सुना। किन्तु वाल्या ने बडी रुखाई से कहा कि 'तरुण गार्ड' दल के सदस्य यह अच्छी तरह जानते है कि सघटन मे सुम्स्कोई का प्रमुख स्थान है। और यदि तोस्या उसे सुम्स्कोई के पास नही ले जायेगी तो वाल्या स्वयं उसका पता चला लेगी।

"तुम खुद उसका पता लगा लोगी यह जानना कुछ कम दिलचस्प नही है," तोस्या बोली। वह कुछ आशंकित हो गयी थी।

"शायद लीदा अन्द्रोसोवा की मार्फत!"

"लीदा भी तुम्हे वही कुछ समझेगी जो मै समझ रही हू।"

"यह तो और भी बुरी बात है . . मैं खुद जाकर उसका पता चलाऊगी, पर चूकि मै उसका पता ठिकाना नही जानती, अत हो सकता है कि, इत्तिफाक से, मेरे ही कारण, वह किसी मुसीबत मे पड जाये।"

तोस्या येलिसेयेको को वाल्या की बात माननी पडी।

और जब दोनो कोल्या सुम्स्कोई के पास पहुची तो सारी बाते साफ हो गयी। वह खनिक-बस्ती के छोर पर एक खुले देहाती घर मे रहता था। उसके मकान के पीछे स्तेपी शुरू हो जाती थी कभी उसका पिता खान मे गाडीवान का काम करता था किन्तु वे लोग हमेशा ग्रामीण ढग से ही रहना पसंद करते रहे।

सुम्स्कोई का नाक बहुत बडा और चेहरा सावला था। उसपर बुद्धिमत्ता, और उसके पितामह का उक्रइनी साहस झलकता था। उसके

स्वभाव मे चातुर्य तथा स्पष्टवादिता के मिश्रण ने उसके व्यक्तित्व को वेहद ग्राकर्षक वना दिया था। उसने ग्राखे मिचकाईं, वडे धैर्य के साथ वाल्या की ग्रहकारपूर्ण ग्रौर तोस्या की उत्तेजनापूर्ण सफाई सुनी ग्रौर विना एक भी शब्द वोले-चाले, उन्हे ग्रपने घर के वाहर ले ग्राया। तव वह दीवाल के सहारे खड़ी एक सीढ़ी पर चढता हुग्रा एक दरवे मे जा पहुचा ग्रौर लडकियो से पीछे पीछे चढ ग्राने को कहने लगा। तभी ज़ोर ज़ोर से पंख फड़फडाते हुए कुछ कवूतर दरवे से निकले ग्रौर ग्राकाश मे उड गये, कुछ उसके सिर ग्रौर कधो पर वैठ गये ग्रौर कुछ हाथो पर वैटने का प्रयास करने लगे। ग्राखिर उसने एक ग्रति सुन्दर सफेद कवूतर को ग्रपने हाथ मे ले लिया।

दरवे मे हट्टे-कट्टे वदन का एक युवक वैठा था। वह एक ग्रजनवी लड़की को देखते ही जैसे वेहद घवरा गया ग्रौर कोई चीज वहीं पडी घास-फूस मे छिपाने लगा। सुम्स्कोई ने उसे इशारा किया कि सव कुछ ठीक है। युवक ने दात निकाले, घास-फूस एक ग्रोर हटायी ग्रौर वाल्या को वहा एक रेडियो-सेट दिख गया।

“वोलोद्या ज्दानोव. . ग्रज्ञात वाल्या से मिलो,” विना मुस्कराये हुए सुम्स्कोई वोला, “हा, हम तीन लोग यहा है—तोस्या, वोलोद्या ग्रौर मैं यानी नर्क का पापी, हम ग्रपने सघटन के ‘तिगड्डे’ हैं,” उसने समझाया। वह गुटर-गूं, गुटर-गू करते तथा पख फडफडाते हुए कवूतरो से ढंक-सा गया।

वे लोग जव परस्पर इस वात पर विचार कर रहे थे कि सुम्स्कोई वाल्या के साथ नगर जा सकेगा या नही, वाल्या को लगा कि वह हट्टा-कट्टा युवक उसकी ग्रोर देख रहा है ग्रौर उसकी वह दृष्टि वाल्या को विचलित कर रही है। वह इसी प्रकार के एक ग्रौर लड़ाके छोकरे को जानती थी। वह छोकरा था—‘तरुण गार्ड’ दल का सदस्य कोवल्योव,

जो अपने शक्तिशाली शरीर और सदय हृदय के कारण पास-पड़ोस के इलाको में 'छोटे जार' के नाम से मशहूर था। किन्तु यहा बैठा हुआ व्यक्ति तो अत्यधिक रोबीला था। उसके चेहरे और शरीर की गठन इतनी शानदार थी कि किसी की भी निगाह बरबस उसकी ओर खिच जाती थी। उसकी गर्दन कासे मे ढली लगती थी। उसके व्यक्तित्व में शान्त और सुन्दर ओजस्विता का भास होता था। फिर न जाने क्यो सहसा वाल्या को, दुबले-पतले और नंगे पैर, सेर्गेई त्युलेनिन की याद आ गयी, और उसके हृदय में इतना मीठा मीठा दर्द होने लगा कि वह चुप हो गयी।

तब चारो व्यक्ति दरबे के किनारे आ गये। तभी कोल्या सुम्स्कोई की निगाह, सहसा अपने हाथ पर बैठे सफेद बाजीगर कबूतर पर पडी। उसने उसे पकडा, नीचा किया और पूरी शक्ति के साथ मेघाछन्न आकाश मे उड़ा दिया। बाकी कबूतर भी उसके कन्धो पर से फडफडाते हुए उड गये। अब सभी लोग छत की तिरछी खिडकी में से उस सफेद कबूतर को आकाश में उडकर भूत की तरह गायब होते हुए देख रहे थे।

तोस्या येलिसेयेको ताली बजा बजाकर उछलने-कूदने लगी और इस तरह चहकने लगी कि सभी लोग उसकी ओर देखकर हस पडे। उसका यह जोश और उसकी आखो का उत्साहपूर्ण भाव जैसे साफ साफ कह रहा था, "मै जानती हूं, तुम लोग समझते हो कि मै हृदयहीन हू लेकिन आख खोलो और देखो कि सचमुच मै कितनी अच्छी हू।"

दूसरे दिन सुबह वाल्या और कोल्या सुम्स्कोई नगर की ओर जाने के लिए स्तेपी से होकर गुजर रहे थे। रात मे घने बादल छट गये थे। अब आकाश साफ था और सूरज निकल चुका था। उसकी गर्मी ने शीघ्र ही सभी चीजें सुखा डाली थी। उनके चारो ओर स्तेपी का विशाल प्रदेश और सिर्फ झुलसी हुई घास थी। फिर भी वहा शरद के आरंभ

की, पिघले हुए ताम्बे के रंग की छटा बिखर रही थी। मकडी के जाले सभी दिशाओ मे फैले हुए थे। स्तालिनग्राद की दिशा मे उडते हुए जर्मन यातायात-विमानो से स्तेपी गूजने लगी। परन्तु कुछ ही देर वाद फिर नीरवता छा गयी।

करीव आधी दूरी पार कर चुकने के वाद वाल्या और सुम्स्कोई आराम करने के लिए पहाडी पर धूप मे पड रहे। सुम्स्कोई ने एक सिगरेट सुलगा ली।

सहसा उन्हे स्तेपी से होकर आनेवाले गीत के स्वर सुनाई दिये। यह गीत इतना परिचित था कि उन दोनो के दिलो मे गूजने लगा—'शात पड़ी सोती पहाड़िया'।

यह गीत दोनेत्स स्तेपी के लोगो के वीच वडा ही लोकप्रिय था। पर गीत के ये स्वर यहा, और इतने सवेरे, आ कहा से रहे है? वाल्या और कोल्या केहुनियो के सहारे उठ वैठे और पास आते हुए गीत के शब्द मन ही मन दुहराने लगे। एक स्त्री और एक पुरुष मिलकर यह गीत गाये जा रहे थे। स्वर मे यौवन था, दम था और लग रहा था जैसे वे अपने इर्द-गिर्द की सारी दुनिया को ललकार रहे है—

शात पडी सोती पहाडिया—
वह प्रकाश की किरन! झाडिया—
भोर हो गई, सूरज झाका—
और, धुध को उसने आका!
जागे खेत, कुज सव जागे—
धारे हरित वसन, सुख-पागे—
जाता स्तेपी को लडका—
घने जंगलो का दिल धडका!

शीघ्र ही वाल्या सरकती हुई गयी और पहाडी की चोटी पर से छिपकर नीचे देखने लगी, फिर उठ खडी हुई और ठहाका मारकर हस पडी—सडक पर वोलोद्या ओस्मूखिन अपनी वहन ल्युद्मीला के हाथ मे हाथ डाले चला आ रहा था। दोनो गाने में—या यो कहे, चिल्लाने मे मस्त थे।

वाल्या उछल पड़ी और उनसे मिलने के लिए वच्चो की तरह, पहाडी के नीचे भागती हुई सडक पर आ गयी। सुम्स्कोई अधिक आश्चर्यचकित न हुआ था। वह भी धीरे धीरे वाल्या के पीछे पहाड़ी उतरने लगा।

"सवारी किधर जा रही है?"

"दादा से कुछ अनाज लेने, गांव की तरफ। वह तुम्हारे पीछे कौन लगा है?"

"वस्ती का हमारा एक साथी। कोल्या सुम्स्कोई।"

"मै तुम्हारा परिचय एक और हमदर्द यानी अपनी प्यारी वहन ल्युद्मीला से करा दू। उसने मुझसे अपने दिल की वात यहां, स्तेपी में, अभी अभी वतायी है," वोलोद्या वोला।

"वाल्या, तुम्हीं वताओ, है न ये लोग गधे! सव के सव मुझे अच्छी तरह जानते है, फिर भी मेरा सगा भाई मुझसे हर वात छिपाता है। जो कुछ हो रहा है, यह सव मै जानती हू। मैने छापेखाने का टाइप भी देख लिया, जिसे वह किसी वदवूदार घोल मे धो रहा था। अभी यह सव का सव नही धो पाया था कि मै पहुंच गयी और आज वाल्या जानती हो, आज क्या हुआ?" वह सहसा वोल पड़ी और सुम्स्कोई पर एक उड़ती हुई नज़र डाली, जो इस समय तक पास आ चुका था।

"एक मिनट ठहरो," वोलोद्या ने वड़ी गम्भीरता से बात काटी,

"कारखाने के मेरे साथियों ने अपनी आखो से देखा है और उन्होंने मुझे वताया है—रोज की तरह वे पार्क से होकर जा रहे थे कि सहसा उन्होंने देखा कि फाटक पर, काला कोट पहने हुए एक व्यक्ति लटका हुआ है। उसकी छाती पर एक नोटिस भी चिपकी थी। पहले तो उन्होंने सोचा कि हमारे किसी साथी को जर्मनो ने फासी दे दी है, पर जव वे और निकट आ गये तो देखा कि फोमीन लटका हुआ है। तुम तो जानती हो उस सुअर को, जर्मनो का सिपाही वना फिरता था। नोटिस मे लिखा था—'जो लोग हमारे आदमियो के साथ गद्दारी करेगे, उनके साथ हम यही सलूक करेगे।' वस और कुछ नही सिर्फ इतना ही।" फिर फुसफुसाते हुए उसने इतना और जोड़ दिया, "उन्होंने काम सफाई से किया है"। और सहसा जोर से वोला, "वह पूरे दो घटे तक दिन के उजाले मे लटका रहा। और उसे फासी तव दी गयी जव वह गश्त की ड्यूटी पर था। पास-पडोस मे कोई और पुलिस वाला भी न था। झुड के झुंड लोगो ने देखा है। सारे नगर मे आज इसी की चर्चा है।"

फोमीन को फासी देने के सवध मे 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निश्चय से न तो वोलोद्या ही अवगत था न वाल्या ही और न वे इसकी कल्पना ही कर सकते थे कि इस तरह की कोई वात हो सकती है। वोलोद्या को विश्वास था कि यह काम वोल्शेविक खुफिया सघटन ने किया होगा। पर सहसा वाल्या के चेहरे का रग उड गया और वह पीली-सी पड गयी—वह एक ऐसे व्यक्ति को जानती थी जो यह काम कर सकता था।

"वता सकते हो, हमारी तरफ का तो कोई व्यक्ति नही पकडा गया न? सब ठीक-ठाक तो है न? कोई गिरफ्तारी तो नही हुई?" उसने पूछा। वह कापते हुए ओठो को निश्चल रखने में असमर्थ थी।

"कमाल का काम किया है।" वोलोद्या ने कहा, "कोई कुछ भी नही जानता। सब ठीक है .. पर मेरे घर में आफत मची हुई है... मेरी मां को यकीन है कि उस कुत्ते को मैंने ही लटकाया है और अब वह भविष्यवाणी कर रही है कि मुझे भी फासी दे दी जायेगी। इसी लिए तो मैंने ल्युद्मीला को केहुनियाते हुए कहा था—'जानती हो, मां कुछ बहरी है, उसे बुखार भी है। और यों भी हमे दादा की खबर लेनी चाहिए'।"

"कोल्या, चलो चले," सहसा वाल्या ने सुम्स्कोई से कहा।

बाकी रास्ते वाल्या सुम्स्कोई से प्रायः आगे आगे ही चलती रही। और सुम्स्कोई यह न समझ सका कि वाल्या में सहसा यह परिवर्तन क्यो आ गया। आखिर वह क्षण भी आया जब वह अपने मकान की सीढ़िया चढ़ती दिखाई दी। सुम्स्कोई जैसे कुछ घबराकर उसके पीछे पीछे खाने के कमरे मे चला आया।

वहां अपनी कसी हुई गहरे रग की पोशाक मे भारी-भरकम मरीया अन्द्रेयेव्ना और कधो तक बिखरे हुए हल्के सुनहरे बालोंवाली छोटी पीली ल्यूस्या एक दूसरे के आमने-सामने बैठी थी। दोनों चुप थी, किसी औपचारिक जन्मदिवस-समारोह में आये हुए मेहमानो की तरह।

जब मरीया अन्द्रेयेव्ना की बड़ी बेटी ने कमरे मे प्रवेश किया तो मां जल्दी से उठी, कुछ कहने को हुई परन्तु शब्द जैसे उसके गले मे ही अटककर रह गये। उसने जैसे शक की नजरो से सुम्स्कोई और वाल्या की ओर देखा और फिर बेटी को जोर से चूम लिया। ठीक इसी समय वाल्या को लगा जैसे उसकी अपनी मां भी उसी परह छटपटाती रही होगी जैसे वोलोद्या की मा। उसने यही सोचा था कि मेरी बेटी वाल्या बोर्त्स भी फोमीन को फासी देने की साजिश मे शामिल थी, इसी लिए तो वह पिछले दो दिनो से गायब थी।

इस समय वाल्या जैसे यह भूल ही गयी थी कि सुम्स्कोई भी दरवाजे पर खड़ा अटपटा-सा महसूस कर रहा है। उसने मा को इस दृष्टि से देखा जो यह कहती सी लग रही थी, "मा, अब मैं तुमसे क्या कहू?"

उसी क्षण छोटी ल्यूस्या वाल्या के पास आयी और उसने एक शब्द भी कहे विना, उसे एक पुर्जा थमा दिया। वाल्या ने, अन्यमनस्कता से उसे खोला–और पढने के पहले ही लिखावट पहचान ली। सड़क पर चलते चलते वाल्या का चेहरा धूल से सन चुका था, धूप से पुत चुका था, पर पुर्ज़ा पढते ही खिल उठा। उसके होठो पर एक वाल-सुलभ मुस्कान दौड़ गयी। उसने कधे के पीछे सुम्स्कोई पर एक नजर डाली और उसकी गरदन और उसके कान लाल हो उठे। उसने मां का हाथ पकड़ा और उसे दूसरे कमरे मे ले गयी।

"मा!" वह बोली, "जो कुछ तुम सोच रही हो, वह सब वेकार है। क्या तुम यह नही देख सकती कि हम, यानी मैं और मेरे साथी किस लक्ष्य को लेकर चल रहे है? देखती नही कि हम किसी और ढग से रह ही नही सकते। प्यारी मा!" वाल्या वडी खुश थी, उसका चेहरा लाल था और मा के चेहरे पर निगाह गड़ाये थी।

प्राय मरीया अन्द्रेयेवना का चेहरा अच्छे स्वास्थ्य के कारण दमकता रहता। अब सहसा वह पीला पड़ गया। उसे लगा जैसे उसे कोई प्रेरणा मिली हो।

"मेरी वेटी! भगवान तुम्हे लम्बी उम्र दें," मरीया अन्द्रेयेव्ना वोली। यही मरीया अन्द्रेयेव्ना जिन्दगी भर, स्कूल मे और उसके वाहर, सक्रिय रूप से धर्मविरोधी शिक्षा देती रही थी। "भगवान तुम्हे लम्बी उम्र दे," वह वोली और उसकी आखो से आसू झरने लगे।

# अध्याय ८

जव अपने बच्चो के विचारो और अनुभूतियो से अपरिचित माता-पिता यह देखते हैं कि उनके बच्चे गुप्त, रहस्यपूर्ण और ख़तरनाक कार्रवाइयो मे भाग लेते है और वे न तो अपने वच्चो के क्रियाकलाप की दुनिया मे प्रवेश कर सकते है और न उन्हें रोक ही सकते है, तो उनकी स्थिति वडी क्लेशपूर्ण हो उठती है।

वान्या को आनेवाले तूफान की भनक नाश्ते के समय ही लग गयी थी जब उसने अपने पिता का गभीर चेहरा देखा था। उसने यह भी समझ लिया था कि वे उसकी ओर देखेंगे भी नही। तूफान की शुरूआत उस समय हुई जब उसकी बहन नीना कुए से पानी लेकर लौटी और साथ ही, फोमीन की फांसी की खबर लायी। उसने वहा यह भी बताया कि लोग उसके बारे मे क्या क्या कह रहे है।

उसके पिता के चेहरे पर एक परिवर्तन दिखाई दिया। उसके दुबले-पतले गालो की मासपेशिया तन गयी।

"बात यह है कि हमे सारे मामले की सर्वाधिक अधिकृत"–उसे बडे बड़े शब्द इस्तेमाल करना बहुत भाता था–"सूचना यही घर मे ही, मिल सकती है," उसने अपने बेटे की ओर देखे बिना ही वडी कटुता से कहा। "आख़िर बोलते क्यो नही? इसके बारे मे हमे तो बताओ। कहना चाहिए कि तुम सब चीजो के निकट सम्पर्क मे रहते हो। है न?" उसने धीरे-से कहा।

"निकट सपर्क मे किसके? पुलिस के?" वान्या का चेहरा पीला पड़ गया।

"पिछली रात को त्युलेनिन क्यो आया था? कर्फ़्यू के बाद?"

"कर्फ़्यू का पालन कौन करता है? क्या निषिद्ध घटो मे नीना

किसी से मिलने नही जाती? वह यहा गप्प लड़ाने आया था और वह भी पहली बार नहीं।"

"झूठ मत बोलो!" पिता ने चीखते हुए मेज पर मुक्का मारा। "इसकी सजा है जेल। बेशक तुम चाहो तो फसाओ अपना गला लेकिन अपने मां-बाप को इसमे क्यो घसीटते हो?"

"पिता जी, आपके मन मे कोई और बात है," वान्या चुपचाप उठ खड़ा हुआ। पिता ने फिर एक बार मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा, "जो मैं कहता हूं वही बात है"। पर वान्या ने उधर कोई ध्यान न दिया। "आप यही जानना चाहते है न," वान्या बोला, "कि मै खुफिया सघटन में काम करता हू या नही। बोलिये यही जानना चाहते हैं न! तो मै कहता हूं कि नही। और नीना ने फोमीन के बारे मे जो कुछ कहा है वह मैं इस वक़्त पहली बार सुन रहा हूं। वह बदमाश इसी काबिल था। मैं यही कह सकता हूं। और जो कुछ नीना कहती है उसके अनुसार दूसरे लोग भी यही सोचते हैं। आप भी वही सोचते है। बस मैं एक बात कहूगा— मुझसे जितना बन पडता है, अपने लोगो की मदद करता हू। हम सबको उनकी मदद करनी चाहिए। मै कोमसोमोल का सदस्य हू। इसके बारे मे न तो मैंने आपसे ही कुछ कहा, न मा से ही, क्योकि मै आपको अकारण चिन्ता मे नही डालना चाहता था।"

"सुन रही हो, अनस्तसीया इवानोव्ना?" आपे से बाहर होते हुए क्रुद्ध पिता ने अपनी निस्तेज आखे पत्नी के चेहरे पर गड़ा दी। "उसकी बात सुनो—हमारी चिन्ता कर रहा है। तुम्हे शर्म नही आती? मै जिन्दगी भर खून-पसीना एक करके तुम्हारे लिए काम करता रहा .. भूल गये कि हम एक ही घर मे बारह परिवार कैसे रहते थे—अट्ठाईस अट्ठाईस बच्चे फर्श पर रेगा करते थे? तुम्ही बच्चो के लिए मैंने और तुम्हारी मां ने अपने खून का आखिरी कतरा तक बहा दिया था। ज़रा अपनी मां

की ओर तो देखो। अलेक्सान्द्र स्कूल गया पर हमने उसे अपनी शिक्षा पूरी नहीं करने दी। यही बात नीना की शिक्षा के सबध मे भी हुई। हमने सब कुछ तुम्हारे ही लिए किया और अब तुमने अपना फदा खुद अपने गले मे फसा लिया है। अपनी मा की ओर देखो। तुम्हारे ही लिए बेचारी रो रोकर आधी हुई जा रही है। पर तुम हो कि आखे मूदे हो।"

"और आपका क्या सुझाव है? मुझे क्या करना चाहिए?"

"काम मे लगो। नीना काम करती है, तुम भी कर सकते हो। वह एकाउन्टेट है, फिर भी मशक्कत करती है। लेकिन तुम क्या करते हो?"

"काम करू? किसके लिए करू? जर्मनो के लिए? ताकि वे हमारे लोगो को अधिक सख्या मे मौत के घाट उतारे। जब लाल सेना वापस आयेगी तो सबसे पहले मैं काम पर जाऊगा। मेरा भाई, यानी आपका अपना बेटा लाल सेना मे है और फिर भी आप मुझसे यह कह रहे है कि जाकर जर्मनो की मदद करो ताकि वे उसे जल्दी ही मार डाले। नही तो और बात क्या है?" वान्या ने क्रोध से कहा। इस समय तक दोनो आमने-सामने खड़े हो चुके थे।

"तो तुम्हारे लिए खाना कहा से आयेगा?" पिता चिल्ला पड़ा। "और क्या यह ठीक होगा कि जिन लोगो की तुम्हे इतनी फिक्र है उन्ही मे से कोई तुम्हारे साथ गद्दारी करके तुम्हे जर्मनो के हाथ मे सौप दे। तुम हमारे मोहल्ले के लोगो के बारे मे क्या जानते हो? उनके सिर मे कौन-सी चक्की चल रही है? मैं तुम्हे बताऊगा। उन्हे सिर्फ अपने स्वार्थ और अपनी चमडी की चिन्ता है। बस तुम्हारी ही कसर रह गयी है उन सबका भला करने के लिए।"

"यह बात ठीक नही है! जिस समय आपने सरकारी सामान मोर्चो से दूर, सुरक्षित स्थानो मे भेजने मे मदद दी थी, उस समय क्या आप वह काम अपने लिये कर रहे थे?"

"तुम मेरी वात छोडो।"

"क्यो छोडूं? आप यह किस आधार पर समझते है कि आप दूसरों से अच्छे है?" वान्या वोला। उसका चश्मे वाला चेहरा एक ओर को झुक गया था। वह मेज पर एक हाथ की उगलियो का सहारा लिये खडा था। "स्वार्थ! हर शख्स अपने ही फायदे के पीछे! मैं आपसे पूछता हू—उन दिनो कैसे जव आपको काम से छुट्टी मिल गयी थी और तनख्वाह आपकी जेव मे थी और आप जानते थे कि आप यहा ठहरेगे और इससे आपको नुकसान पहुच सकता था, फिर भी वीमार होने पर भी, आप रात भर दूसरे लोगो का सामान लदवाते रहे, और उसी की चिन्ता करते रहे। इसमे आपका कौन-सा स्वार्थ था? क्या इस प्रकार का आचरण करनेवाले दुनिया मे अकेले आप ही है? यह तो वैज्ञानिक तथ्यो को असत्य वताना हुआ न?"

उस दिन रविवार था। अत उसकी वहन नीना घर पर ही थी। वह जैसे इस वाद-विवाद से मुह मोडे, कुढती हुई सी, पलग पर वैठी थी। उसके विचार हमेशा की भाति उसके मानस मे ही उमड-घुमडकर घुट रहे थे। उसकी मा—सहृदय और दुवली-पतली समय से पहले ही वूढी लगने लगी थी। उसने सारी जिन्दगी या तो खेतो मे काम किया था या रसोईघर मे। वह डर रही थी कि कही क्रोध मे उसका पति वान्या को शाप देकर घर से निकाल न दे। जव जव उसका पति बाते करता, तब तव वह कुछ कुछ मुस्कराकर और सिर हिलाकर जैसे उसे शात करने का प्रयत्न-सा करती हुई उसकी ओर देखती, पर जव वेटा कुछ कहने लगता तो वह पति की ओर ऐसी दृष्टि से ताकती मानो उससे अनुरोध कर रही हो कि वह वेटे की वात ध्यान से सुने और उसे क्षमा कर दे। वेशक दोनो—वूढा और वूढी—जानते थे कि इसमे कोई दम या तुक न था।

पिता कमरे के बीचोबीच खड़ा था। वह कई बार की धोयी हुई गंजी के ऊपर एक लम्बी-सी जैकेट और नीचे एक पुराना तार-तार पतलून पहने था जिसके घुटने निकल आये थे। उसके सिकुडे-ऐंठे पैरो मे स्लीपर पड़े थे।

"मै जिन्दगी की बात कर रहा हू, वैज्ञानिक तथ्यों की नही," वह चिल्लाया और अपनी मुट्ठी सीने से चिपकाकर निर्बलो की तरह नीचे गिरा दी।

"और यदि विज्ञान जिन्दगी का अग नही है तो आख़िर है क्या?.. अकेले आप ही इन्साफ की मांग नही कर रहे है, दूसरे भी है जो करते है," वान्या बोला। उसके चेहरे पर जो रोष दिखाई पड़ रहा था, वह उसके लिए असामान्य था, "आपमे जो कुछ भी अच्छाई है, उसके लिए आपको शर्म आती है"।

"शर्म आने लायक मैंने कोई काम ही नही किया।"

"तब साबित कीजिये कि जो कुछ मैंने कहा है वह गलत है! सिर्फ़ चीखने-चिल्लाने से ही मै आश्वस्त नही हो सकता। यह बात दूसरी है कि मैं आपके आगे सिर झुका दूं और चुप हो जाऊ। पर मेरी आत्मा मुझे जो रास्ता दिखायेगी उसपर ज़रूर चलूगा।"

पिता का शरीर जैसे शिथिल पड गया। उसकी धूमिल दृष्टि और भी धुधलाने लगी।

"तो यह बात है, समझी अनस्तसीया इवानोव्ना," उसने ऊंची आवाज़ मे कहा, "हमने अपने बेटे को शिक्षा दी है ... हमने उसे पढ़ाया-लिखाया है और अब उसे हमारी कोई जरूरत नही रही। अलविदा!"

उसने हाथ झटकारे, मुडा और कमरे से बाहर निकल गया।

अनस्तसीया इवानोव्ना भी उसके पीछे पीछे चली गयी। नीना वैसे ही अपने बिस्तर पर बैठी रही। न बोली, न सिर उठाया।

वान्या निरुद्देश्य कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक टहलता रहा। उसकी आत्मा तड़प रही थी और वह उसे शान्त रखने मे असमर्थ था। आखिर वह भी बैठ गया। अपने भाई को कविता मे पत्र लिखकर, अपने दिल का गुबार निकालने का प्रयत्न करने लगा। पहले भी वह अक्सर यही किया करता था।

सच्चा साथी, स्नेही मेरा,<br>साशा मेरा प्यारा भाई!

यह ठीक नही।

मेरा प्रियतम मित्र कि मेरा अपना प्यारा भाई!

नही, कविता की पक्तिया सूझ ही नही रही थी। और लिख भी लू तो भाई के पास पत्र भेजना असम्भव है। आखिर वान्या ने समझ लिया कि उसे क्या करना चाहिए—उसे नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की के यहां जाकर क्लावा से मिलना चाहिए।

येलेना निकोलायेव्ना कोशेवाया को बहुत अधिक चिन्ता थी क्योकि वह यह निश्चय नही कर पा रही थी कि वह ओलेग के कामो पर रोक लगाये या उनमे उसकी मदद करे। दूसरी माताओं की तरह उसे भी अपने बेटे के लिए हमेशा भय बना रहता और दिन-ब-दिन उसकी नीद हराम होती जाती। उसका दिमाग और शरीर दोनो ही शिथिल होते जा रहे थे और उसके चेहरे की झुर्रिया गहरी होती जा रही थी। कभी कभी तो उसमें पशुओ जैसा भय जाग्रत हो उठता और उसे लगता कि वह सारे बन्धन तोड डाले, चीखे-चिल्लाये और अपने बेटे को जबरदस्ती उस बदकिस्मती के पजो से छुड़ा ले, जिसे वह गले लगाने की तैयारी कर रहा है।

येलेना निकोलायेव्ना में अपने पति, अर्थात् ओलेग के सौतेले पिता, के कुछ गुण मौजूद थे। वह पति को बेहद प्यार करती थी। जीवन में येलेना निकोलायेव्ना ने केवल उसी को प्यार किया था। उसमें अपने पति की तरह ही योद्धा जैसा उत्साह था, इसलिए उसे अपने बेटे के कामो के प्रति हमदर्दी के अलावा कोई और भाव न उठ सकता था।

प्राय: वह अपने बेटे के रुख से चिढ भी जाती· वह हमेशा ही अपनी मां से सारी बाते साफ साफ, स्नेह और विनम्र भाव से कहता आया था, उसका हुक्म मानता आया था, तो अब उससे अपनी बाते क्यो छिपाने लगा था। इतना चुप्पू क्यो हो गया था? वह अपने को खास तौर से अपमानित समझती क्योकि उसकी अपनी मां, नानी वेरा, प्रत्यक्षत ओलेग की साजिशों मे शामिल रहती और स्वय अपनी बेटी तक से सारी बाते छिपाया करती। जहां तक येलेना निकोलायेव्ना का ख्याल था, उसका भाई निकोलाई भी साजिशो मे भाग लेता था। यहा तक कि पोलीना गेओर्गियेव्ना सोकोलोवा भी, जिसे कोशेवोई परिवार वाले चाची पोल्या कहकर बुलाते थे, और जिसे सापेक्षतया बहुत कम जानते थे, वह भी उसकी मां की अपेक्षा ओलेग के कही निकट हो गयी थी। यह सब कैसे, कब और क्यो हुआ?

पहले येलेना निकोलायेव्ना और चाची पोल्या एक दूसरे से इतनी अभिन्न थी कि जब कभी बातचीत मे एक का जिक्र आता तो दूसरी का नाम भी तत्काल दिमाग मे घूम जाता। उनकी मित्रता प्रौढ और अनुभवी स्त्रियों की मित्रता जैसी थी। एक ही कार्य क्षेत्र मे सक्रिय होने के कारण वे एक दूसरी के अधिक निकट आ गयी थी। उनके दृष्टिकोण एक जैसे थे। किन्तु जब लडाई छिड़ी तो चाची पोल्या ने जैसे सभी लोगो से नाता ही तोड़ लिया। उसने कोशेवोई परिवार के घर जाना तक बंद

कर दिया। जब कभी पुरानी दोस्ती की याद कर येलेना निकोलायेव्ना उसके पास आती तो चाची पोल्या को यह स्वीकार कर शर्म आने लगती कि उसके पास एक गाय है जिसका दूध वह बेचती है। उसे यह डर बना रहता कि कही येलेना निकोलायेव्ना उसे इस बात के लिए बुरा-भला न कहे कि उसने अपने निजी स्वार्थो के लिए देश की भलाई की खातिर काम करने से मुह मोड लिया है। पर येलेना निकोलायेव्ना मन ही मन समझती कि पोलीना के साथ इन बातो पर बहस करने की कोई सम्भावना नहीं है। अत. उनकी मित्रता जहा की तहा रुक गयी। वह आगे न बढ सकी।

पोलीना गेओर्गियेव्ना ने कोशेवोई परिवार मे फिर से तब आना शुरू किया जब जर्मन उसके नगर को अपना घर समझकर वही बसने लगे थे। वह वहा खुले दिल से आती, और अपना दुख सुनाने लगती। येलेना निकोलायेव्ना को फिर अब उसकी पुरानी सहेली मिल गयी थी। वे अपने मन की बाते कहने-सुनने के लिए फिर अक्सर एक दूसरे से मिलती, एक दूसरे के पास उठती-बैठती। अब भी ज्यादा बाते येलेना निकोलायेव्ना ही करती और नम्र तथा शाचित्त चाची पोल्या अपनी थकी हुई किन्तु होशियार आखो से, चुपचाप उसे निरखा करती। चाची पोल्या की चुप्पी के बावजूद येलेना निकोलायेव्ना ने यह बात समझ ली थी कि ओलेग पोलीना की ओर पूरी तरह आकृष्ट हो चुका है। जब कभी वह आ जाती तो ओलेग उसी के पास मडराने लगता और प्राय येलेना निकोलायेव्ना उन्हे एक-दूसरे के साथ आखे मिलाते हुए देख लेती —कुछ वैसी ही निगाह जैसी प्राय. वे लोग डालते है जिन्हे एक दूसरे से कुछ कहना होता है। और जब कभी वह दो-चार मिनट के लिए कमरे से बाहर जाकर फिर लौट आती तो उसे महसूस होता जैसे उसने उनकी किसी खास बातचीत मे बाधा डाली है। और जब कभी पोलीना गेओर्गियेव्ना जाने लगती और येलेना निकोलायेव्ना उसे

दरवाजे तक पहुंचाना चाहती थी पर वह [illegible] — "नहीं नहीं, प्यारी येलेना, धन्यवाद। मैं खुद चला जाऊंगा।" वह जब कभी ओलेग उसे [illegible] तो वह घुमा फिरा कर टाल जाता।

यह सब हुआ कैसे? मां का दिल यह सब महसूस करता था। दुनिया में ऐसा कौन है जो उसके बेटे को उससे ज्यादा समझता है, कौन उसके विचारों और भावों को उतना समझकर उनसे प्रेम कर सकता है। कुसमय में मातृ-स्नेह की शक्ति से बढ़कर और दूसरी चीज भी क्या कर सकता है? किन्तु हृदय की गहराई में उसे यह विश्वास हो गया था कि उसका बेटा जिन्दगी में पहली बार उससे अपना भेद छिपा रहा है क्योंकि उसे अपनी मा में विश्वास नहीं रह गया था।

एकलौते बेटों की सभी माताओं की तरह यह भी अपने बेटे में सब ही गुण देखती थी, पर वस्तुतः वह उसे अच्छी तरह समझती थी।

जिस समय से नगर में 'तरुण गार्ड' के रहस्यपूर्ण हस्ताक्षरों से परचे निकलना शुरू हो गये थे, तभी से उसे इस बात में कोई सन्देह नहीं रह गया था कि ओलेग का उस संघटन से न सिर्फ संबंध ही है बल्कि वह उसमें प्रमुख भाग भी लेता है। उसे चिन्ता होती थी, कष्ट होता था और साथ ही गर्व भी होता था, पर वह यह भी समझती थी कि कृत्रिम साधनों से वह उससे कुछ भी कबुलवा नहीं सकती।

सिर्फ एक बार उसने उससे बातों बातों में पूछा था—

"इन दिनों तुम्हारे दोस्त कौन कौन है?"

और कपट तथा धूर्तता के साथ, जो उसके लिए एक असामान्य बात थी, उसने ऐसा रुख अपनाया मानो इस प्रश्न का संबंध उस बातचीत से हो जो कभी पहले लेना पोज्दनिशेवा के बारे में उनके बीच हुई थी। उसने कुछ घबराकर उत्तर दिया:

"मैं मैं ... नीना इवान्त्सोवा के स-साथ घूमता हू . ."

उसकी मा ने जिस लापरवाही का बहाना करके सवाल पूछा था उसकी वह लापरवाही कायम न रह सकी, बल्कि वह चतुराई से पूछ बैठी—

"और लेना?"

ओलेग ने एक शब्द कहे विना, अपनी डायरी निकाली और अपनी मा को थमा दी। इसमे उसकी मा ने लेना पोज्दनिशेवा के साथ अपने बेटे के भूतपूर्व प्रेम और मोह की कहानी पढी और यह भी पढ लिया कि अब लेना के बारे मे ओलेग की क्या राय है।

किन्तु जिस दिन सुबह उसने अपने पड़ोसियो से फोमीन की फासी की खबर सुनी तो वह जोरो से चीखने ही वाली थी कि उसने अपने पर जब्र किया और अपने विस्तर पर निढाल होकर पड रही। नानी वेरा, सुरक्षित लाश की तरह मूक और रहस्यपूर्ण, उसके पास आयी और उसके माथे पर एक ठडा तौलिया रख दिया।

दूसरी माताओ की तरह उसे भी एक क्षण के लिए यह सदेह न हुआ कि सचमुच उसी के बेटे ने फोमीन को फासी दी होगी। परन्तु वह ऐसी ही दुनिया मे आजकल रह रहा था और उनका यह सघर्ष बड़ा ही भयानक और क्रूर था! उसके बेटे को कौन-सी सजा दी जायेगी? उसे इस प्रश्न का अब भी कोई उत्तर न मिल रहा था। पर अब इस तरह के रहस्य का अन्त होना चाहिए—जिन्दगी ऐसे नही चल सकती।

इस समय उसका बेटा शैड मे अपने पलग पर, सिर झुकाये बैठा था। उसका एक कधा दूसरे से ऊचा था। वह हमेशा की तरह साफ़-सुथरा था, बढिया कपडो मे था। धूप मे घूमने के कारण उसकी चमडी सवला गयी थी। उसके ठीक सामने सावला, चुस्त-वदन और लम्बी नाक वाला कोल्या सुम्स्कोई लकड़ी के कुन्दे पर बैठा था। दोनो शतरंज खेल रहे थे।

दोनो खेल मे खो से गये थे। हा, कभी कभी कुछ क्षणो के लिए वे आपस मे कुछ ऐसी बाते जरूर कर लेते, जिनके कुछ अश सुनकर किसी भी कम अनुभवी व्यक्ति को यही विश्वास होने लगता कि वे दोनो पुराने और पक्के अपराधी है।

सुम्स्कोई – "स्टेशन पर अनाज की खत्ती है   जैसे ही उसमे पहली कटाई का अनाज भरा गया कि कोल्या मिरोनोव और पलागूता ने उसमे किलनी डाल दी, जो अनाज चाट जाती है। ..."

चुप्पी।

ओलेग – "तो सारा अनाज काटा जा चुका है?"

सुम्स्कोई – "वे हमसे कटवा रहे है .. वहुत-सा अनाज गट्ठरो और टालो मे बधा है और खुला हुआ भी पडा है। वहा उसकी फटकाई या लदाई का कोई प्रवन्ध नही।

चुप्पी।

ओलेग – "टालो मे आग लगा देनी चाहिए। तुम्हारा रुख पिटनेवाला है।

चुप्पी।

ओलेग – "यह भी अच्छा ही है कि तुम्हारे लोग सरकारी फ़ार्म पर है। हेडक्वार्टर मे हमने इस सवंध मे विचार करके यह निश्चय किया था कि फार्मो पर हमारे अपने दल जरूर होने चाहिएं। तुम्हारे पास हथियार है?"

सुम्स्कोई – "ज्यादा नही है।"

ओलेग – "तो तुम्हे कुछ इकट्ठा करने की जरूरत पडेगी।"

सुम्स्कोई – "इकट्ठा करने की, कहा से?"

ओलेग – "स्तेपी मे। और जर्मनो के पास से भी चुरा सकते हो। वे लोग वहुत ही लापरवाह है।"

सुम्स्कोई – "मुझे खेद है, अच्छा लो गह!"

ओलेग—"गोट मार दी! तुम्हे इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी जिस तरह हमारे हमलावरो को चुकानी पड रही है।"

सुस्कोई—"मै हमलावर नही हू।"

ओलेग—"लेकिन तुम भी दुमछल्ले देशो की तरह नोक-झोक कर रहे हो।"

सुस्कोई—"इस समय मेरी स्थिति फ्रासीसियो की सी है।" सुस्कोई मुस्करा दिया।

चुप्पी।

सुस्कोई—"अगर मेरा पूछना मुनासिब न हो तो माफ करना। मै उस आदमी के बारे मे जानना चाहता हू जिसे फासी दी गयी थी। क्या उसमे लोगो का हाथ था?"

ओलेग—"कौन कह सकता है?"

"खूब," सुस्कोई ने सतोप के साथ कहा। "मेरा ख्याल है कि अगर उनमे से कुछ और लोगो को ठिकाने लगा दिया जाय तो बेहतर होगा, भले ही यह काम पीछे से हमला करके किया जाय। अच्छा तो यह हो कि छुटभैयो के साथ साथ उनके 'अफसरो' को भी ठिकाने लगाया जाये।"

"बेशक होना तो यही चाहिए। वे है भी बडे लापरवाह!"

"मेरा विचार है कि सब कुछ छोड-छाड दू," सुस्कोई बोला, "खेल मे मेरी स्थिति निराशाजनक है और अब समय आ गया है कि मै घर चला जाऊ"।

ओलेग ने बडी सतर्कता के साथ शतरज एक ओर हटाकर रख दिया, तब दरवाजे के पास गया, बाहर देखा और लौट आया।

"शपथ लो।"

खेल खत्म होने के कुछ ही मिनटो बाद दोनो आमने-सामने खडे हो गये। उनका क़द एक जैसा था किन्तु ओलेग के कधे अधिक चौड़े थे।

दोनो के हाथ लटके हुए थ। उनकी आंखों मे निष्ठा की स्वाभाविक झलक थी।

सुम्स्कोई ने अपने जैकेट की जेव टटोली और एक पुर्जा निकाल लिया। उसका चेहरा पीला पड गया।

"मै, निकोलाई सुम्स्कोई," उसने नीची आवाज मे कहना शुरू किया, "'तरुण गार्ड' दल मे भरती होने के समय अपने साथियो, चिरसंतप्त अपनी मातृभूमि और अपने सारे जन-समाज के समक्ष पूरी निष्ठा के साथ शपथ लेता हूं"—वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि उसकी आवाज मे झनझनाहट-सी सुनाई पड़ती थी। वह फिर यह सोचकर कि उसकी आवाज वाहर किसी को सुनाई न दे जाय फुसफुसाती हुई आवाज मे कहता रहा। ".. यदि जुल्म या वुज़दिली के कारण मै इस पवित्र शपथ का अतिक्रमण करूं तो सारे भविष्य के लिए मेरे और मेरे स्वजनो के नाम पर कलंक लगे और मेरे साथी मुझे कठोर से कठोर दंड दे। खून का बदला खून! और मौत का वदला मौत!"

"मै तुम्हे बधाई देता हूं। अब से तुम्हारी जिन्दगी तुम्हारी अपनी नही रही। वह पार्टी की, सारी जनता की हो चुकी है," ओलेग ने उत्तेजित होकर कहा और उसका हाथ दबाया, "अब तुम्हे अपने सारे क्रास्नोदोन दल को शपथ दिलानी होगी"।

अव मुख्य काम घर जाना और कपडे उतारकर चुपचाप सो जाना था। उसकी मा पहले से ही सो गयी थी या शायद सोने का बहाना कर रही थी। उस हालत मे उसकी चमकती किन्तु व्यथित-सी दृष्टि से आखे चुराने की जरुरत ही न होगी और न उसके सामने यह वहाना करने की जरूरत होगी कि उनके जीवन मे कोई परिवर्तन नही हुआ है।

अपने शरीर के वजन का ख्याल रखते हुए उसने पजो के वल रसोईघर में प्रवेश किया, चुपचाप कमरे का दरवाजा खोला और अन्दर घुस गया। हमेशा की तरह खिड़की के कपाट वन्द थे और खिड़की पर

काले काले परदे पडे थे। रसोईघर में चूल्हा दिन भर जलता रहा था। सारे मकान मे बुरी तरह घुटन थी। एक पुराने टीन के डिब्बे मे तेल की वत्ती जला रखी थी, ताकि ऊचाई पर रहने से मेजपोश पर तेल की बूदे न गिरे। वत्ती की टिमटिमाती रोशनी मे उस अधियारे कमरे मे परिचित वस्तुओ का आकार और कोई कोई हिस्सा अधिक स्पष्ट नजर आने लगा था।

उसकी मा हमेशा वड़ी साफ-सुथरी रहती थी। इस समय न जाने क्यो वह पलंग पर वैठी हुई थी। उसका कम्वल पलटा हुआ था। वह अपने कपड़े अभी भी पहने हुए थी और उसके वाल सवरे हुए थे। उसके छोटे छोटे वादामी हाथ जिनके जोड़ों मे सूजन थी, उसकी गोद मे पडे थे। वह वत्ती की लौ की ओर देख रही थी।

घर मे कितनी शान्ति थी! मामा कोल्या, जो अब अपना अधिकाश समय अपने साथी इंजीनियर विस्त्रीनोव के साथ व्यतीत किया करता था, घर पर सो रहा था। खुद मरीना भी सो रही थी। नन्हा-सा भतीजा, जो अव भी ओठ फुलाये हुए था शायद पहले ही सो गया था। आज पहली वार नानी नीद मे खर्राटे नही भर रही थी। घडी की टिक टिक तक जैसे सो रही थी। सिर्फ मां जग रही थी, प्यारी मा!

किन्तु इस समय सवसे जरूरी वात यह थी कि अपनी अनुभूतिया प्रगट न होने पाये ... उसे मा के पास से होकर गुजर जाना और अपने विस्तर पर पड़कर ऐसा वहाना करना था मानो उसे नीद लग गयी हो ...

लम्वा कद, भारी-सा वदन। वह मां के सामने घुटनो के वल पड़ रहा और मुह उसकी गोद मे छिपा लिया। उसे लगा जैसे मा के हाथ उसके गालो पर फिरे, और उसे ऐसी स्निग्धता का अनुभव हुआ जो सिवा मा के अन्यत्र असंभव है। कही दूर से आती हुई चमेली की खुशबू और

चिरायते या बैंगन की पत्तियां की तीखी तीखी गन्ध उनकी घ्राणेन्द्रियों में प्रवेश करने लगी.. पर इससे क्या!

"प्यारी, प्यारी मा!" वह फुसफुसाया और उनकी ओर देखने लगा। उसकी आखो मे चमक दौड़ गयी। "प्यारी मां, तुम तो सब कुछ समझती हो, सब कुछ!"

"हा, मैं सब समझती हूं," वह फुसफुसायी और बिना उसकी ओर देखे उसके ऊपर झुक गयी।

बेटे ने मा की आखो मे आखे डालकर देखने का प्रयत्न किया किन्तु मां ने अपनी आखें उसके रेशम जैसे बालो मे छिपा लीं। वह बराबर यही फुसफुसाती रही·

"मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं... हर जगह! डरना मत। हिम्मत रखना, मेरे बेटे .. आखिरी दम तक..."

"नही, मां, कुछ मत कहो... अब तुम्हे सोना चाहिए..." वह फुसफुसाया, "तुम्हारे बालो के पिन निकाल दू?"

और जैसा वह बचपन में किया करता था, वह एक के बाद एक, सभी पिने निकालने लगा। मा अपना चेहरा छिपाती हुई अपना सिर उसकी बाहो पर रखे रही। उसने सभी पिने निकाल ली और उसकी चोटिया बगीचे मे बोझल सेबों की तरह नीचे गिर पड़ी। उसके बाल इतने लम्बे थे कि उनसे उसका सारा तन ढक सकता था।

## अध्याय ९

कुछ दिनो के लिए नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाने से पहले वान्या जेम्नुखोव को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर से अनुमति लेनी जरूरी थी।

"जानते हो, यह केवल माशूक से मिलने का बहाना नही है,"

उसने ओलेग से कहा, "मै बहुत दिनो से यह योजना बना रहा हूं कि उसे कज्जाक बस्तियो मे युवक-युवतियो को सघटित करने का काम सौंपा जाये,' उसने जैसे शर्माते हुए कहा।

किन्तु सफर के लिए वान्या के तमाम जोरदार तर्कों के बावजूद ओलेग ने इजाजत न दी।

"दो-एक दिन ठहर जाओ," वह बोला, "तुम्हारे लिए कोई दूसरा काम भी निकल आ सकता है . नही, यहा नही, वहा," वान्या के चेहरे पर आत्म-नियन्त्रण का भाव दिखाई पडते ही, मुस्कराते हुए ओलेग ने कहा। जब वान्या अपनी वास्तविक अनुभूतिया छिपाना चाहता, तो उसकी शक्ल ऐसी ही लगने लगती।

पिछले कुछ दिनो से पोलीना गेओर्गियेव्ना ओलेग से बराबर यह अनुरोध करती रही थी कि वह सीधे ल्यूतिकोव के अधीन काम करने के लिए किसी ऐसे होशियार छोकरे की तलाश करे, जो क्रास्नोदोन और नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की के बीच सदेशवाहक के रूप मे काम कर सके। ओलेग ने इसके लिए ज़ेम्नुखोव का नाम सोच रखा था।

ओलेग को ल्यूतिकोव का सदेश देते हुए चाची पोल्या ने उससे जोर देकर कहा था कि इस काम के लिए साथी चुनने मे यह ध्यान रखा जाये कि वह सबसे अधिक होशियार और सबसे अधिक विश्वसनीय व्यक्ति हो।

ओलेग से जेम्नुख़ोव के बातचीत कर लेने के दूसरे ही दिन, वान्या, स्तेपी से होकर गाव की सडक पर जाता हुआ दिखाई दिया। उसकी आखें कमजोर थी, उसके बिना मोजे के पैरो मे खेलने के कैनवस जूते थे और हालाकि धूप तेज न थी फिर भी उसके सिर पर रूमाल बधा था। उसके दोनो ओर खडी फसल लहरा रही थी, लेकिन फसल अच्छी नही थी।

उसके मन में, अपनी इस नयी भूमिका और उसके चरम उद्देश्य के महत्त्व के सम्बन्ध में तरह तरह के विचार उठ रहे थे। सफर के समय अपने ही विचारों में खो जाना कमजोर दृष्टि वाले वान्या की एक आदत-सी बन गयी थी। वह स्तेपी से गुज़रता हुआ न जाने कितने गांवों से होकर निकल गया किन्तु रास्ते की किसी भी चीज पर उसका ध्यान न गया।

यदि कोई स्थिति से अनभिज्ञ व्यक्ति जर्मन अधिकृत किसी इलाके से गुजर रहा होता तो वह अपनी आंखों के सामने पड़नेवाले, असाधारण रूप से निराशाजनक और बडे ही विपरीत, दृश्य देखकर अवश्य ही विचलित हो उठता। उसने सैंकड़ों गावों को राख के ढेर के रूप मे देखा होता। उसे भूतपूर्व गांवो और कज्जाक बस्तियों के स्थान पर उस समय सिवा कहीं, किसी जली-भुनी अगीठी के ढाचे, जली हुई शहतीर अथवा घास-फूस से घिरे हुए किसी स्याह दरवाजे पर धूप में घमाती हुई बिल्ली के और कुछ न दिखाई पडता। हा कभी कभी उसकी निगाहो के सामने कज्जाको की कुछ ऐसी बस्तिया भी पड जाती जहा किसी भी जर्मन के कदम नहीं पडे थे; हा, उन लुटेरे सैनिको को छोड़कर जो लूट-मार की तलाश मे घूमते हुए कभी कभी वहां पहुंच जाते थे।

और ऐसे गांव भी थे जहा जर्मन शासन की स्थापना हो चुकी थी और इस ढग से, जिसे जर्मन अपने राज्य के लिए सबसे अधिक लाभप्रद और सुविधाजनक समझते थे। वहा सैनिक लूट-पाट अर्थात् गुजरती हुई फौजो द्वारा की जानेवाली लूट-मार तथा हर किस्म की निर्दयता और हिसा बरती जाती थी। यह सब काड उतने ही बडे पैमाने पर होते थे जितने बड़े पैमाने पर पहले समय मे रूस पर जर्मन सेनाओ का अधिकार हो जाने के बाद हुआ करते थे जहा कहा जाता था कि जर्मन प्रशासन सबसे शुद्ध रूप में था।

नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की का कज्जाक गाव ऐसा ही एक गाव था।

वहा क्लावा कोवल्योवा और उसकी मां को, क्लावा की मा के रिश्तेदारो न आश्रय दे रखा था।

वे दोनो क्लावा के कज्जाक मामा के मकान मे रहती थी। क्लावा का मामा जर्मनो के आने के पहले एक मामूली सामूहिक किसान था जो अपने परिवार के साथ सामूहिक स्वामित्व वाले खेतो मे काम करता था। इस कमाई से तथा उसे अपने निजी जमीन के टुकडे से जो कुछ पैदावार या आमदनी हो जाती थी उसी पर गुजर बसर करता था। न वह फार्म मे ब्रिगेड-लीडर रहा था, न ही मवेशीखाने का कर्त्ता-धर्त्ता।

जैसे ही जर्मन आये कि क्लावा के मामा, इवान निकनोरोविच, तथा उसके परिवार को जिन जिन सकटो का सामना करना पडा उनका अनुभव जर्मन शासन काल मे प्रत्येक साधारण कृपक परिवार को हुआ था। आगे वढती हुई जर्मन सेनाओ ने उन्हे इस बुरी तरह लूटा था कि उनके मवेशी, कुक्कुट और अनाज इत्यादि सभी लुट गये थे। मतलव यह कि उन्हे अच्छी तरह लूटा गया था, पर वे उनकी चीजो का पूरा पूरा सफाया न कर सके थे। क्योकि दुनिया मे रूसियो के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसे किसान नही जो आडे वक्त के लिए अपना सामान छिपाये रखने मे इतने हिकमती होते हो।

सेनाओ के निकल जाने और Ordnung – 'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो जाने के वाद दूसरे सभी लोगो की तरह इवान निकनोरोविच को भी यह सूचना दी गयी कि नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की की जो भूमि सामूहिक किसानो को स्थायी रूप से सामूहिक प्रयोग के लिए दी गयी थी, वह अन्य सारी जमीन के साथ साथ, अव जर्मन शासन की सम्पत्ति होगी। किन्तु कीयेव के राइह कमीसार की मार्फत Ordnung – 'नयी व्यवस्था' ने यह फरमान निकाला था कि यह जमीन जिसे इतने परिश्रम से और सकट झेलकर एक सामूहिक फार्म का रूप दिया गया था, अव फिर छोटी छोटी पट्टियो मे

बाटी जायेगी और एक एक पट्टी की जोताई-बुआई एक एक कज़्ज़ाक परिवार करेगा। किन्तु यह कार्रवाइया तब तक के लिए स्थगित रहेगी जब तक सभी कज्जाको और किसानो के पास खेतीबारी के अपने अपने औजार और माल ढोने के साधन नही हो जाते। और जब तक उनके पास ये औजार और साधन नही हो जाते तब तक जमीन अपनी पहली ही स्थिति मे रहेगी, फर्क यही होगा कि अब वह जर्मन राज्य की सम्पत्ति बन जायेगी। जमीन की खेतीबारी के निरीक्षण के लिए जर्मन अधिकारी, कज्जाक गाव मे एक मुखिया नियुक्त करेगे, जो रूसी होगा। वस्तुत उसकी नियुक्ति पहले से ही हो चुकी थी। कृपक परिवारो को दस दस के समूहो मे बाटा जाना था और एक एक समूह के लिए जर्मनो द्वारा एक एक रूसी मुखिया की नियुक्ति होनी थी। इन मुखियो की नियुक्ति भी जर्मनो द्वारा हो चुकी थी। जमीन पर काम करने के बदले किसानो को कुछ अनाज दिये जाने की व्यवस्था थी और किसान अच्छा काम करे इसके लिए उन्हे पहले से ही बता दिया गया था कि आगे चलकर निजी इस्तेमाल के लिए जमीन का एक एक टुकडा सिर्फ उन्ही किसानो को दिया जायेगा जो इस समय अच्छा काम करेगे।

किसान अच्छा काम कर सके इस हेतु, इस बीच, जर्मन सरकार न तो उन्हे मशीने दे सकी थी, न पेट्रोल, न घोड़े। खेतो मे काम करनेवालो को अपने हल या हसिये आदि औजारो से और अनाज की ढुलाई के लिए अपनी अपनी गायों से काम चलाना था। जो लोग अपनी गायो से काम न लेना चाहते थे, उन्हे इस बात की आशा नही हो सकती थी कि आगे चलकर उन्हे अपने इस्तेमाल के लिए जमीन का कोई टुकडा मिलेगा भी। इस बात के बावजूद कि इस ढग की खेतीबारी के लिए काफी श्रम-शक्ति की जरूरत पडती है, जर्मन अधिकारियो ने स्थानीय श्रम-शक्ति को सुरक्षित रखने के बजाय सबसे स्वस्थ और योग्य स्थानीय

लोगो को जर्मनी भेज देने के सम्वन्ध मे सभी आवश्यक कार्यवाहिया कर ली थी।

चूकि जर्मन सरकार यह तख्मीना नही लगा सकी थी कि उसे कितने गोश्त, दूध और अडो की आवश्यकता होगी अतएव उसने नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की गाव पर आरम्भ मे हर पाच परिवारो पीछे एक एक गाय तथा हर परिवार पीछे एक एक सुअर, आधा आधा हड्रेडवेट आलू, वीस वीस अडो और ७५-७५ गैलन दूध का टैक्स वाध दिया था। किन्तु चूकि अधिक की जरुरत पड सकती थी-और हमेशा पडती ही थी-अतएव कज्जाकों और किसानो को अपने इस्तेमाल के लिए किसी भी मवेशी या मुर्ग-मुर्गी को वध करने का अधिकार न था। किन्तु यदि जरूरत आ ही पडे और उन्हे एक सुअर मारने की जरूरत पड़े तो चार परिवार परस्पर मिलकर एक सुअर काट सकते थे, किन्तु ऐसा करने पर उन्हे जर्मन राज्य को तीन सुअर भेट करने पडते थे।

इवान निकनोरोविच तथा उसके साथी ग्रामीणों के परिवारो से यह सारी चौथ वसूल करने के लिए डाइरेक्टर सोन्दरफ्यूरर साण्डेर्स के अधीन एक जिला कृषि कमाडाटुर की स्थापना की गयी। यह व्यवस्था दस दस परिवारो पर नियुक्त एक एक मुखिया और गाव भर के एक मुखिया की व्यवस्था के अतिरिक्त थी। यह सोन्दरफ्यूरर, ओवेरलेफ्टिनेट ग्रीक से भिन्न न था। उसे गावो की आवोहवा गर्म लगती थी और वह एक जाघिया और सैनिक जैकेट पहने गावो और वस्तियो का दौरा किया करता था। हा जब कभी वह कज्जाक औरतो के सामने पड जाता तो वे अपने शरीर पर सलीव का निशान वनाने और जमीन पर ऐसे थूकने लगती मानो उन्होंने स्वय शैतान को देख लिया हो। यह जिला कृषि कमाडाटुर क्षेत्रीय कृषि कमाडाटुर के अधीन था जिसके पास कही अधिक कर्मचारी थे। क्षेत्रीय कृषि कमाडांटुर का अध्यक्ष था सोन्दरफ्यूरर श्ल्यूक्केर जो, यह सही है,

पतलून पहनता था किन्तु वह इतना ऊंचा था, अपने को इतना बड़ा समझता था कि गावो का दौरा करके अपने पद को हीन न करना चाहता था। अन्तत क्षेत्रीय कृषि कमाण्डर Landwirtschaftsgruppe लैंड्वीर्तशाफ्त्सग्रुप्पे अथवा संक्षेप मे ग्रुप्पे 'लै' के अधीन था, जिसका अध्यक्ष था मेजर स्तान्डेर। ग्रुप्पे 'लै' इतने ऊंचे स्तर का था कि किसी ने उसे कभी नही देखा। पर स्वय ग्रुप्पे 'ले' भी Wirtschaftskommando वीर्तशाफ्त्सकोमान्दो ६, अथवा संक्षेप मे 'विर्को ६' के एक विभाग से कुछ अधिक न रह गया। इसका प्रधान था डाक्टर स्पूंदे। और 'विर्को ६' एक ओर तो वोरोशीलोवग्राद के नगर मे फेल्डकमान्डाटुर यानी जर्मन पुलिस हेडक्वार्टर, के अधीनस्थ था और दूसरी ओर राइख कमिसार के अधीन काम करनेवाले सरकारी सम्पत्ति के प्रमुख प्रशासन के अधीनस्थ। इस प्रशासन का मुख्य कार्यालय कीयेव मे था।

इस विस्तृत शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत बडे बडे पदो पर आसीन इन लोफरो और डाकुओ से इवान निकनोरोविच और उनके ग्रामीण साथी अपने अनुभव से यह अच्छी तरह समझ चुके थे कि जर्मन फासिस्टो का शासन न सिर्फ अत्याचारी शासन है वह तो आरम्भ मे ही नजर आ गया था—अपितु तुच्छ, मूढ और लुटेरा भी है। अबोध जबान बोलनेवाले, इन लुटेरो को भर पेट खाना भी चाहिए था और यह भी उसे और उसके साथियो को जुटाना था।

बेशक, इस समय तक इवान निकनोरोविच और उसके गाव के साथी तथा पास-पडोस के कज्जाक गावो—गुन्दोरोव्स्काया, दवीदोवो और मकारोव-यार—के निवासी जर्मन अधिकारियो के प्रति उसी ढग से व्यवहार करने लगे थे, जसे स्वाभिमानी कज्जाको को मूर्ख अधिकारियो के साथ करना चाहिए। वे उनकी आखो मे धूल डालने लगे थे।

अधिकारियो को धोखा देने का उनका मुख्य ढग यह था कि वे

खेतो मे सचमुच काम करने के बजाय केवल काम करने का वहाना करते थे, जो कुछ उगा लेते थे उसे नष्ट कर डालते थे और अगर मौका लग जाता था तो उसे अपने इस्तेमाल के लिए उड़ा लेते थे और पशु, मुर्ग-मुर्गिया और खाद्यान्न छिपा देते थे। इस धोखेबाजी को आसानी से क्रियान्वित करने की दृष्टि से कज्जाक और किसान पूरी पूरी कोशिश करते थे कि दस दस परिवारो पर एक एक मुखिया के पद पर और गावो तथा वस्तियो के मुखियो के पदो पर कायदे के लोग नियुक्त किये जाये। सभी प्रकार के क्रूर शासनो की भाति जर्मन अधिकारियो को भी मुखियो के पद पर नियुक्त करने के लिए काफी क्रूर लोग मिल गये थे। पर जैसा कि कहते है, इन्सान अमर नही है। मुखिया एक दिन रहता था तो दूसरे दिन विला जाता था, मानो हवा मे गायब हो गया हो।

क्लावा कोवल्योवा की उम्र कोई १८ साल की थी। वह इन सब कार्रवाइयो से दूर ही रहा करती। वह चिडचिडी हो उठी थी इसलिए कि उसके रहने-सहने के वर्तमान ढग पर अनेकानेक प्रतिवन्ध लगे थे, इसलिए कि उसके कोई मित्र न थे, इसलिए कि वह अध्ययन नही कर पाती थी, इसलिए कि वह अपने पिता के लिए चिन्तित रहती थी। वह वान्या के सपने देख देखकर अपने को खुश करती रहती और यह कल्पना किया करती कि एक दिन वह भी आयेगा जव ये सारी मुसीवते खत्म होगी, वान्या के साथ उसका व्याह होगा, उनके वच्चे होगे और वे दोनो अपने वाल-वच्चो के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेगे। उसकी कल्पना वडी स्पष्ट और व्यावहारिक हुआ करती थी।

उसने कितावे पढ पढकर भी कुछ समय आराम से काटने का प्रयत्न किया, किन्तु नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की मे तो पुस्तके मिलना आसान काम न था। अतएव जव उसे पता चला कि गाव मे उस अध्यापिका के स्थान पर, जो वाहर चली गयी थी, एक नयी अध्यापिका आ गयी है, तो उसने

निश्चय किया कि उससे पुस्तके मांगने मे कोई लज्जा की बात नही। अगरचे उस अध्यापिका की नियुक्ति नये जिला अधिकारियों द्वारा हुई थी तो भी क्या हुआ।

अध्यापिका स्कूल मे उस कमरे में रहने लगी थी जहा उससे पहले उसी की जगह काम करनेवाली अध्यापिका रहती थी। स्थानीय गप्पियो के अनुसार, नयी अध्यापिका पुरानी अध्यापिका का फर्नीचर और उसकी निजी चीजे भी इस्तेमाल कर रही थी। क्लावा ने दरवाज़ा खटखटाया और विना उत्तर की प्रतीक्षा किये हुए अपने भारी और मजबूत हाथ से द्वार खोल दिया। वह उस कमरे मे पहुची जो इमारत की परछायी वाली ओर पडता था जिसकी खिडकियो पर परदे पडे थे। उसने कमरे मे झाका यह देखने के लिए कि अध्यापिका घर पर है भी या नही। अध्यापिका एक ओर झुकी हुई खिडकी पर पखो के झाड से दासा साफ कर रही थी। उसने सिर घुमाया, गझी हुई भौहे ऊपर उठायी, सहसा चौंकी और खिड़की की सिल्ली के सहारे खडी हो गयी। फिर वह सीधी खड़ी हुई और क्लावा को ग़ौर से देखने लगी।

"शायद, तुम . ."

उसने अपनी बात पूरी नही की। उसके चेहरे पर अपराधियो जैसी मुस्कराहट बिखर गयी और वह क्लावा से मिलने के लिए आगे बढ आयी। वह छरहरे वदन की और सुनहरे वालोवाली स्त्री थी। वह साधारण पोशाक पहने थी, उसके ओठ पतले और खिचे हुए तथा आखे भूरी, कठोर और सीधी थी। उसके ओठों पर प्राय मुस्कराहट बिखर जाती जिससे उसका चेहरा बेहद आकर्षक लगने लगता।

"जिस अलमारी मे स्कूली पुस्तके रखी थी उसे उसी इमारत मे रहनेवाले जर्मनो ने नष्ट कर डाला था। पुस्तको के पन्ने गन्दी से गन्दी जगहो मे पडे मिले। पर कुछ किताबे अब भी साबुत वच गयी है। चलो

देखें," वह वोली। वह एक एक शब्द इतना तौल तौलकर, और शुद्ध वोल रही थी, जैसे प्राय एक अच्छी रूसी अध्यापिका वोलती है— "तुम यही रहती हो क्या?"

"हां, मेरा ख्याल तो है," कुछ सकुचाते हुए क्लावा ने जवाव दिया।

"वात छिपा क्यो रही हो?"

क्लावा जैसे घवरा गयी। अध्यापिका ने सीधे उसपर एक निगाह डाली।

"आओ, वैठें," वह वोली।

पर क्लावा वरावर खडी रही।

"मैंने तुम्हे क्रास्नोदोन मे देखा है," अध्यापिका वोली।

क्लावा ने उसे कनखियो से देखा पर कोई उत्तर न दिया।

"मैंने सोचा था तुम चली गयी हो," अध्यापिका ने अपनी वात जारी रखी। उसके ओठो पर मुस्कान वैसे ही खेल रही थी।

"मै कही नही गयी थी।"

"तो फिर किसी को पहुचाने गयी होगी!"

"तुम्हे कैसे मालूम?" क्लावा ने जैसे एक वार फिर डरकर और उत्सुकता के साथ उसे कनखियो से देखा।

"किसी तरह जानती ही हू। पर चिन्ता न करो। तुम शायद यह सोच रही हो, मुझे यहा जर्मनो ने भेजा है और "

"मै कुछ भी नही सोच रही हू।"

"नही, सोच रही हो!" अध्यापिका हस दी और उसका चेहरा कुछ कुछ लाल हो उठा। "तुम किसे पहुचाने गयी थी?"

"अपने पिता को।"

"नही, वह तुम्हारे पिता नही थे!"

"पिता ही थे।"

"अच्छी वात है, और तुम्हारे पिता काम क्या करते है?"

"ट्रस्ट मे काम करते है," क्लावा वोली और उसके वालो की जडे तक शर्म से लाल हो उठी।

"वैठ जाओ और यह शर्म-वर्म छोडो," अध्यापिका ने क्लावा का स्पर्श करने के लिए लापरवाही से अपना हाथ आगे वढाया। क्लावा वैठ गयी।

"तो तुम्हारा मित्र चला गया है?"

"कैसा मित्र?" क्लावा का दिल जोर जोर से धड़कने लगा।

"मुझसे मत छिपाओ। मै सव जानती हू।" अव अध्यापिका की आखो की कठोरता दूर हो गयी थी और उनमे दया और शरारत छलकने लगी थी।

"भले ही तुम मुझे मार डालो, मै तुम्हे कुछ न वताऊंगी!" सहसा उग्र होकर क्लावा ने सोचा। "तुम क्या कह रही हो, मै नही जानती। ऐसी वाते मुझे अच्छी नही लगती," उसने खुलकर कहा और खड़ी हो गयी।

इस समय तक अध्यापिका को अपने ऊपर कोई वस न रह गया था। वह जोर से हस पडी और धूप से तपे अपने हाथ और सुनहरे वालोवाला अपना सिर हिलाने-डुलाने लगी। सहसा वह उठी और उग्र गति के साथ क्लावा के कंधे के चारो ओर वाहे डाल दी।

"मेरी प्यारी . मुझे माफ करना। तुम्हारा दिल तो हथेली मे रहता है," वह वोली और उसे अपने और निकट खीच लिया। "मै तो केवल मजाक कर रही हू। तुम्हे मुझसे नही डरना चाहिए। मै सिर्फ रूसी अध्यापिका हू। हमे जीना है और यह जरूरी नही कि जर्मनो के अधीन हम केवल वुरी वाते ही लोगो को सिखाये।"

दरवाजे पर जोरो की दस्तक हुई।

"शायद मार्फा है!" उसने धीरे-से, खुश होकर कहा।

चमचमाता हुआ सफेद रूमाल लपेटे एक लम्बी और मजबूत हड्डियोंवाली औरत ने कमरे मे प्रवेश किया। उसके नगे और धूप से तपे पैर धूल से भरे थे। उसकी वगल मे कपडो का एक वडल था।

"नमस्ते!" उसने कहा और एक प्रश्नसूचक दृष्टि क्लावा पर डाली, "हम लोग काफी पास पास रहते है फिर भी मै वहुत अरसे से तुमसे मिलने न आ सकी," उसने अध्यापिका से ऊची आवाज मे कहा और अपने मजवूत दात निकाल दिये।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"क्लावा।"

"क्लावा," अध्यापिका वोली, "मै तुम्हे कक्षा मे ले चलूगी और वहा तुम्हे अपने लिए कुछ किताबे मिल जायेगी। वस चली न जाना, मुझे ज्यादा देर न लगेगी," वे साथ साथ कमरे से निकल गयी।

अध्यापिका और कोई नही येकतेरीना पाव्लोव्ना प्रोत्सेको थी वह कुछ मिनटो वाद वापस आ गयी।

"क्या वात है? क्या खवर है?" उसने उत्तेजित होकर पूछा।

मार्फा वैठी थी। उसने अपना वडा और मेहनत से कठोर पडा हाथ अपनी आखो पर रखा हुआ था। उसके मुह पर अभी तक जवानी झलक रही थी, किन्तु मुह के कोनो पर परेशानी की गहरी रेखाए उभर आयी थी।

"हसू, या चिल्लाऊ, मै नही जानती," आखो पर से हाथ हटाती हुई मार्फा उक्रइनी भाषा मे वोली, "पोगोरेली गाव से एक छोकरा आया था। उसने मुझे वताया कि गोर्देई कोर्नियेको को वन्दी वना लिया गया है। कात्या, वताओ क्या करू?" उसने सिर उठाया और रूसी मे

कहने लगी, "पोगोरेली फोरेस्ट्री स्टेशन पर कोई साठ कैदी काम करते है और उनके चारो तरफ पहरा रहता है। वे सेना के लिए लकडी काटते है। मेरा गोर्देई भी वही है। वे लोग वैरको मे रहते है और उन्हे वाहर नही निकलने दिया जाता। वह भूखो मर रहा है। उसका सारा वदन सूज गया है। बताओ न, मै क्या करूं? जाऊ वहा?"

"उसने तुमसे कहलाया कैसे?"

"कुछ और लोग भी वहां काम करते है जो कैदी नही है। उसे एक गाव वाले से फुसफुसाकर एक-दो बाते करने का मौका मिल गया था। जर्मन लोग यह नही जानते कि वह इसी इलाके का है।"

येकतेरीना पाव्लोव्ना कुछ क्षणो तक चुपचाप उसे देखती रही। इस मामले मे कोई सलाह नही दी जा सकती थी। मार्फा हफ्तो पोगोरेली गाव मे रहकर चिन्ता करती रहे और फिर भी पति से उसकी मुलाकात न हो। ज्यादा से ज्यादा वे एक दूसरे पर निगाह भर डाल लेगे, पर इससे तो शारीरिक कष्ट से पीडित उसके पति की असह्य दिमागी परेशानी ही वढेगी। और उसके पास खाना पहुचाना भी असम्भव ही होगा—ये युद्ध-वन्दियो के वैरक किस प्रकार के थे इसकी कल्पना करना कठिन न था।

"तुम्हे खुद निश्चय करना होगा।"

"तुम चलोगी?" मार्फा ने पूछा।

"हा, मै जाऊगी," आह भरते हुए येकतेरीना पाव्लोव्ना ने कहा, "और तुम जाओगी—लेकिन कोई मतलव न निकलेगा"।

"और मैं भी यही कहती हू कोई मतलव न निकलेगा। इसलिए मै नही जा रही हू," मार्फा वोली। उसने आखे अपने हाथ से ढक ली।

"क्या कोर्नेई तीखोनोविच यह वात जानता है?"

"उसका कहना है कि अगर उसे अपना दस्ता ले जाने की इजाजत मिल जाय तो वह उसे छुडा लेगा..."

येकतेरीना पाव्लोव्ना के चेहरे पर परेशानी और उदासी की झलक उठी। वह जानती थी कि कोर्नेई तीखोनोविच के अधीन काम करनेवाले छापेमार दस्ते को इस प्रकार के गौण कार्यों के लिए इस्तेमाल नही करना चाहिए।

सभी प्रमुख जर्मन सचार-लाइने अब वोरोशीलोवग्राद प्रदेश से होकर जाती थी। इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको के हाथो मे जो कुछ था, उसने जो नयी नयी व्यवस्थाए की थी, उन सभी का एक ही उद्देश्य था कि दोनवास से सैकडो मील दूर स्तालिनग्राद की बडी लडाई मे विजय प्राप्त करने में मदद दे।

प्रदेश के सभी छापेमार दस्तो को कई छोटे छोटे दलो मे वांट दिया गया था जो अब पूर्व और दक्षिण को जानेवाले समस्त राजमार्गों, देहाती सडको और तीन रेलवे लाइनो पर काम कर रहे थे। इन दलो की शक्ति अभी तक कम थी। इसी लिए इवान फ्योदोरोविच ने जिसका पता-ठिकाना अकेली उसकी पत्नी मार्फा कोर्नियेंको और सदेशवाहिका कोतोवा को मालूम था, प्रदेश मे काम करनेवाली सभी खुफिया जिला कमिटियो की शक्ति तमाम सड़को पर तोड-फोड के कामो में लगा दी थी।

येकतेरीना पाव्लोव्ना यह सब कुछ अच्छी तरह जानती थी क्योकि दलो के असख्य सचार-सूत्र उसके छोटे छोटे और समर्थ हाथो मे होते थे जिन्हे वह सूचना के एक सूत्र के रूप मे इवान फ्योदोरोविच को भेज दिया करती थी। इसलिए जब मार्फा ने उसके सामने कोर्नेई तीखोनोविच का सुझाव रखा तो उसने कोई उत्तर न दिया हालाकि उसने यह समझ लिया था कि उसके पास मार्फा के आने का एक ही उद्देश्य था – अपनी गुप्त आशा को फलीभूत होते हुए देखना। पति के साथ येकतेरीना पाव्लोव्ना का कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क न था। यह सम्पर्क मार्फा, या कहना

चाहिए, मार्फा के घर के जरिये होता था। उसने पति के बारे मे कुछ पूछा-ताछा भी नही। उसने समझ लिया था कि अगर मार्फा ने उसके पति के बारे मे कुछ नही कहा था तो इसके माने यह है कि उसकी कोई खबर नही।

इस बीच क्लावा अलमारी के पास खड़ी खडी यह देख रही थी कि कौन कौन-सी पुस्तके बच गयी थी। ये वे किताबे थी जो उसने बचपन मे पढी थी। वह बचपन के इन मित्रो को यहा देखकर उदास हो गयी। उसने स्कूल की काली काली और खाली डेस्के देखी और दुखी हो उठी। सायकालीन सूर्य की किरणे तिरछी होकर खिडकी से प्रवेश कर रही थी और उनके स्निग्ध प्रकाश मे जैसे विदाई की उदास और प्रौढ मुस्कराहट छिपी थी। इस समद जिन्दगी क्लावा को इतनी दुखभरी लग रही थी कि वह व्यथित कर देनेवाली इस उत्सुकता तक को भूल गयी थी कि अध्यापिका उसे जानती कैसे है।

"कुछ मिला तुम्हे?" अध्यापिका सीधे क्लावा पर दृष्टि गडाये थी। उसके ओठ कसकर जुडे थे किन्तु उसकी भूरी आखो मे उदासी की झलक थी। "तो देख रही हो न! कभी कभी जिन्दगी कितनी निर्मम होती है," वह बोली, "फिर भी जब हम छोटी रहती है तो जल्दबाजी मे इस बात पर ध्यान नही देती कि उस समय हमे जो कुछ मिलता है, वह जिन्दगी भर हमारे साथ रहता है .. तुम जैसी इस समय हो यदि मैं फिर कभी वैसी बन सकती तो मैं उस सत्य को याद रखती। पर मैं उस सत्य को तुम्हे समझा भी नही सकती। अगर तुम्हारा मित्र यहां आ जाये तो मुझसे परिचय जरूर करा देना।"

येकतेरीना पाव्लोव्ना यह अनुमान भी न लगा सकी कि ठीक उसी समय वान्या जेम्नुखोव गाव मे प्रवेश कर रहा था और उसके लिए कोई सन्देश ला रहा था।

वान्या ने उसे सकेत-भापा में सदेश दिया। यह सदेश वस्तुतः क्रास्नोदोन जिला खुफिया कमिटी के कार्यो की रिपोर्ट थी। येकतेरीना पाव्लोव्ना ने भी उसे मौखिक रूप से अपने पति का यह निर्देश वता दिया कि क्रास्नोदोन खुफिया सघटन को एक छापामार लडाकू दस्ता वन जाना चाहिए और सभी सडको पर तोड-फोड के कार्य और भी तेज गति से किये जाने चाहिए।

"उनसे कहना कि मोर्चे की स्थिति खराव नही है। हो सकता है कि अव वहुत शीघ्र ही हमे वन्दूको से काम लेना पडे," येकतेरीना पाव्लोव्ना वोली और अपने सामने वैठे हुए इस वेडौल से युवक को पैनी दृष्टि से देखने लगी मानो यह जानना चाहती हो कि उसके चश्मे के पीछे क्या छिपा है।

वान्या, उकडूं-सा होकर चुपचाप वैठ गया और वार वार अपने हाथ से वालो को ठीक करने लगा। काश, वह जान पाती कि वान्या के दिल मे कौन-सी ज्वाला धधक रही थी।

पर, शीघ्र ही वे वातचीत मे मगन हो गये।

"कभी कभी लोगो के लिए जीवन कितना निर्मोही हो उठता है," वान्या के मुह से शुल्गा और वाल्को की मृत्यु सवधी हृदयविदारक समाचार मुन चुकने के वाद येकतेरीना पाव्लोव्ना वोली, "तुम लोग उसे ओस्तप्चुक कहकर पुकारते थे न! उसका सारा परिवार शत्रुअधिकृत प्रदेश मे रहता था। हो सकता है, उन्हे भी तडपा तडपाकर मार डाला गया हो। या कौन जाने, वह वेचारी औरत अपने वच्चो को लेकर अजनवियो के वीच रह रही हो और उसे यह आशा लगी हो कि एक न एक दिन वह आयेगा और उसकी तथा उसके वच्चो की रक्षा करेगा। पर अव तो वह इस दुनिया मे रहा ही नही अभी एक औरत मुझसे मिलने आयी थी।" और येकतेरीना पाव्लोव्ना ने मार्फा और उसके पति

के वारे मे वान्या को बताया, "वे एक दूसरे के इतने निकट है, फिर भी मिल नही सकते। दुश्मन उसके पति को और भी पीछे के इलाको मे खदेड़ देगे, जहा वह घुट घुटकर मर जायेगा.. इन दुष्टो के लिए कठोर से कठोर दड भी कम है!" उसने कसकर मुट्ठी भीच ली।

"पोगोरेली–यह जगह हमसे दूर नही है। हमारा एक साथी वहा रहता है," वान्या वोला। उसे वीत्या पेत्रोव की याद आ रही थी। उसके मस्तिष्क मे एक अस्पष्ट-सा विचार आया, हालाकि अभी तक उसका उसे भलीभाति ज्ञान न था। "वहा वहुत-से कैदी है क्या? और वहुत-से पहरेदार भी?" उसने पूछा।

"तुम बता सकते हो कि क्रास्नोदोन मे अब भी कुछ योग्य सघटनकर्त्ता जीवित रह गये है या नही?" अपने विचारो की शृखला को आगे वढाती हुई वह वोली।

वान्या जिन जिनको जानता था, उनके नाम उसने गिना दिये।

"उन सैनिको का क्या हुआ जिनका सेना से सवध कट चुका है या किसी कारण वहा रह गये है?"

"ऐसे वहुत-से लोग है," वान्या को उन घायल सैनिको की याद आ गयी जो लोगो के घरो मे छिप छिपकर रह रहे थे। उसे सेर्गेई से मालूम हो चुका था कि नताल्या अलेक्सेयेव्ना उन्हे अभी तक चुपचाप चिकित्सा-सहायता पहुचा रही थी।

"जिन लोगो ने तुम्हे यहा भेजा है उनसे कहो कि उन लोगो से मिलकर उनका सहयोग प्राप्त करे... बहुत शीघ्र ही तुम्हे उनकी आवश्यकता पड़ेगी। हा, उनकी जरूरत पड़ेगी तुम युवको की अगुवाई करने के लिए। तुम लोग अच्छे हो, जवान हो, पर वे लोग तुमसे अधिक अनुभवी है," येकतेरीना पाव्लोव्ना वोली।

वान्या ने क्लावा के घर को एक गुप्त मिलने की जगह वनाने की

अपनी योजना येकतेरीना पाव्लोव्ना को बतायी। उद्देश्य यह था कि 'तरुण गार्ड' गाव के युवको के सपर्क मे रहे। उसने येकतेरीना पाव्लोव्ना से इस मामले मे क्लावा की मदद करने को कहा।

"अच्छा तो यह होगा कि क्लावा को यह पता न चले कि मै कौन हू," येकतेरीना पाव्लोव्ना ने मुस्कराते हुए कहा, "हम सिर्फ सहेलिया बनकर रहेगी"।

"पर आपने हम लोगो के बारे मे जाना कैसे?" वान्या ने पूछा। वह अपनी उत्सुकता दबाये रखने मे असमर्थ था।

"यह बात मै तुम्हे कभी न बताऊगी – इससे तुम्हे बड़ी झेप होगी," वह बोली और उसके चेहरे पर सहसा चतुराई का भाव झलक उठा।

"तुम्हारे और उसके बीच कौन-सी राज की बाते हो रही थी?" जब क्लावा ने वान्या से यह प्रश्न किया तो उसके स्वर मे ईर्ष्या साफ साफ झलक रही थी। दोनो इवान निकनोरोविच के घर मे, घुप अधेरे मे, बैठे थे। क्लावा की मा काफी समय से, और खासकर नावोवाले पुल की घटनाओ के बाद से, वान्या को परिवार का ही एक अग समझने लगी थी। इस समय वह पखो के गर्म गर्म बिस्तर पर बडे चैन से सो रही थी। कज्जाको के घरो मे ऐसे बिस्तर विशेष रूप से मिलते है। बिस्तर गुब्बारे की तरह फूला हुआ था।

"तुम कोई राज अपने दिल मे रख सकती हो?" वान्या ने क्लावा के कान मे फुसफुसाते हुए कहा।

"यह भी कोई पूछने की बात है? ."

"नही, शपथ लो. "

"मै शपथ लेती हू।"

"उसने मुझसे कहा था कि क्रास्नोदोन का हमारा एक साथी कही पास ही मे छिपा है और यह कि मै उसके घर मे खबर कर दू। उसके

बाद हमने कुछ इधर-उधर की बातचीत की... बताया!" वह उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर धीरे-से और बड़ी गंभीरता से बोला—"हमने हमलावरो के खिलाफ अपना मोर्चा जारी रखने के लिए युवक-युवतियो का एक सघटन बनाया है। तुम उसमे भरती होना चाहती हो?"

"तुम हो उसमे?"

"जरूर हू।"

"फिर तो स्वाभाविक है कि मै भी भरती हूंगी।" उसने अपने गर्म गर्म ओठ उसके कान मे सटा दिये। "मै तो तुम्हारी ही हू, हूं न?"

"तुम्हे मेरी मौजूदगी मे शपथ लेनी होगी। यह शपथ मैंने और ओलेग ने मिलकर लिखी थी। मुझे तो जबानी याद है और तुम्हे भी याद रखनी होगी।"

"मै याद कर लूगी—तुम तो जानते ही हो कि मै तुम्हारी ही हूं.."

"तुम्हे यहा और पास-पडोस के गावो के नवयुवको को सगठित करना होगा।

"तुम्हारे लिए मैं उन सभी को सगठित करूगी।"

"पर इसके बारे में तनिक भी लापरवाही न बरतना। कही गलत कदम रखा कि जिन्दगी खतरे म पड़ जायेगी।

"तुम्हारी भी?"

"हां मेरी भी!"

"तुम्हारे साथ मरने में मुझे कोई चिन्ता नही।"

"पर मै समझता हू साथ साथ जिन्दा रहना कही अच्छा है है न?"

"बेशक!"

"सुनो, मेरे लिए अपने साथियो के साथ ही बिस्तर बिछाया गया है। अब मुझे चलना चाहिए। न जाना ठीक न होगा।"

"तुम वहां क्यो जाओगे? समझते नही, मैं तुम्हारी ही हू। केवल तुम्हारी," क्लावा के गर्म गर्म ओठ उसके कान मे फुसफुसाने लगे।

## अध्याय १०

पेर्वोमाइस्की 'तरुण गार्ड' सघटन वोस्मीदोमिकी जिले और खान १-बीस के आस-पास के क्षेत्र मे फैल चुका था। सितम्बर समाप्त होते होते यह सघटन खुफिया काम करनेवाले युवको के बडे से बडे दलो मे से एक हो गया था। पेर्वोमाइस्की स्कूल की उच्च कक्षाओ के सबसे अधिक जागरूक भूतपूर्व छात्र और छात्राए इस सघटन मे शामिल हो चुकी थी।

पेर्वोमाइस्की के युवक-युवतियो ने स्वय अपना वायरलैस रिसीवर तैयार किया था और वे सोवियत सूचना केन्द्र के सवादपत्र और परचे गुप्त रूप से, स्कूली कापियो के फटे हुए पन्नो पर भारतीय स्याही से लिखा करते थे।

वायरलैस ने तो उनके लिए मुसीबत ही खडी कर दी! कई बेकार वायरलैस सेट और पुर्जे बहुत-से घरो मे बिखरे पडे थे, जिन्हे चुपके से चुरा लिया गया था। एक मोल्दावान, बोरीस ग्लवान (जिसे दल के लोग अलेको के नाम से जानते थे) ने इन पुर्जो से एक वायरलैस रिसीवर तैयार करने का जिम्मा लिया था। बोरीस ग्लवान के माता-पिता-बेस्सराबिया के शरणार्थी थे और अब क्रास्नोदोन मे बस गये थे। बोरीस को घर लौटते समय सडक पर एक पुलिस वाले ने गिरफ्तार कर लिया था और उसके पास से कई वाल्व और रेडियो के पुर्जे बरामद हुए थे।

थाने पर ग्लवान ने सिवा रूमानियन भाषा के और किसी भाषा मे एक शब्द भी न कहा। वह चिल्ला चिल्लाकर यही कहता रहा कि पुलिस मेरे परिवार वालो की रोटी छीने ले रही है क्योंकि उसके पास जो सामान निकला है वह सिगरेट-लाइटर बनाने के काम आता है, जो उसकी जीविका है। उसने कसम खा खाकर यह भी कहा कि वह रूमानियाई सैनिक-कमाड मे इस बात की शिकायत करेगा। क्रास्नोदोन मे कई रूमानियाई अधिकारी रहते ही थे। ग्लवान के घर की तलाशी ली गयी जिसमे कई पूरे बन चुके लाइटर निकले और कई ऐसे जो अधबने थे। वह सचमुच सिगरेट-लाइटर बना बनाकर ही अपनी रोजी चलाता था। पुलिस ने मित्र राष्ट्र के इस नागरिक को छोड दिया, पर उसको उसके रेडियो के पुर्जे नही दिये। फिर भी उसके पास जो कुछ पुर्जे थे उन्ही से उसने एक वायरलैस रिसीवर तैयार कर लिया।

पेर्वोमाइस्की के युवक पास-पडोस की खेतिहर बस्तियो से सम्पर्क रखते थे लील्या इवानीखिना के जरिये। जर्मनो की कैद से छूटने के बाद लील्या धीरे धीरे कारावास के कटु अनुभवो को भूलने लगी और उसने सुखोदोल की खेतिहर बस्ती मे अध्यापिका का काम कर लिया था। पेर्वोमाइस्की बस्ती के युवक स्तेपी मे हथियार इकट्ठा करते थे और इसके लिए उन्हे कभी कभी दोनेत्स के युद्धो के क्षेत्र मे दूर दूर तक जाना पडता था। वे उन जर्मन और रूमानियाई सिपाहियो और अफसरो के हथियार भी गायब कर देते थे जो गावो मे आकर ठहरते थे। अतएव पेर्वोमाइस्की बस्ती के युवक हथियार सप्लाई करने का मुख्य साधन थे। जब पेर्वोमाइस्की सघ के सभी सदस्यो के पास हथियार हो गये तो फिर उन्हे सुरक्षित रूप से रखने के लिए सेर्गेई त्युलेनिन के सुपुर्द कर दिया गया। त्युलेनिन ने सारे हथियार एक गोदाम मे रख दिये जिसका पता-ठिकाना सिर्फ सेर्गेई को और थोडे से-दूसरे लोगो को मालूम था।

जिस प्रकार 'तरुण गार्ड' के मुखिया ग्रोलेग कोशेवोई ग्रौर इवान तुर्केनिच थे, ग्रौर क्रास्नोदोन की वस्ती के कोल्या सुम्स्कोई ग्रौर तोस्या येलिसेयेको, उसी प्रकार 'पेर्वोमाइका' के मुखिया थे ऊल्या ग्रोमोवा ग्रौर ग्रनातोली पोपोव।

ग्रनातोली पोपोव को 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर ने पेर्वोमाइस्की दल का कमाडर नियुक्त किया था। कोमसोमोल मे रहकर वह सघटनात्मक कौशल मे दक्ष हो चुका था। उसका दृष्टिकोण भी गम्भीर था। ग्रतएव ग्रपने इन्ही गुणो के ग्राधार पर वह पेर्वोमाइस्की वस्ती के युवको मे ग्रपने कामो के प्रति कठोर ग्रनुशासन ग्रौर कर्मठता का भाव पैदा कर सकता था। युवको के सब काम सामूहिकता तथा सद्भावना के ग्राधार पर सम्पन्न होते थे।

दूसरी ग्रोर ऊल्या ग्रोमोवा हर किस्म की क्रियाशीलता की प्रेरक ग्रौर पेर्वोमाइस्की वस्ती की ढेरो ग्रपीलो ग्रौर परचो की लेखिका थी। जब से वह ग्रपने मित्रो ग्रौर साथियो के साथ, बराबरी के दर्जे पर, स्कूल मे पढती थी, स्तेपी मे घूमती थी, उनके साथ नाचती, गाती या कविता पाठ करती थी, या तरुण पायोनियरो का नेतृत्व करती थी, तब से ग्रब कही यह बात स्पष्ट हुई थी कि उसके साथी उसकी कितनी इज्जत करते थे। उसका कद लम्बा था, चोटिया काली ग्रौर भारी थी, ग्राखे प्राय चमकती रहती थी ग्रौर ग्रक्सर लगता मानो उनमे कोई रहस्यपूर्ण शक्ति भरी हुई है। वह चुप रहना, न कि चिल्लपो करना, ग्रधिक पसन्द करती थी। वह उत्तेजित से ग्रधिक सतुलित रहती थी यद्यपि उसमे एक ही समय मे इन दोनो ही गुणो को प्रदर्शित कर सकने की क्षमता थी।

यौवन्, निकट के पर्यवेक्षण ग्रौर ग्रनुभव की ग्रपेक्षा, एक ही नजर मे ग्रथवा एक ही शब्द ग्रथवा भाव देखकर, दिखावटीपन ग्रौर निष्ठा,

स्फूर्ति और क्लान्ति अथवा नकली और महत्त्वपूर्ण आदि सभी के विषय मे तत्काल अपना निर्णय दे डालता है। इन समय ऊल्या के कोई खास मित्र न थे। वह सभी के प्रति समान रूप से सदय, कठोर अथवा चिन्ताशील रहती थी। किन्तु लडकिया ऊल्या मे दो बाते करके ही समझ जाती कि वह वैसी नही जैसी दिखाई पडती है। और उनकी बाहरी सूरत-शक्ल के पीछे अनुभूतियो और विचारो, लोगो के मूल्याकन और उनके प्रति क्या रुख अपनाया जाना चाहिए इन सब का जैसे एक ससार-सा छिपा हुआ है। और यह ससार पूरी तीव्रता के साथ अपना उद्घाटन कर सकता था विशेपकर उस समय जब किसी से कोई नैतिक भूल हो जाती। ऊल्या जैसो की प्रकृति मे तो स्वय सतुलन भी एक विशिष्टता का रूप ले लेता है। किन्तु जब यह प्रकृति हृदय का उद्घाटन करती है—भले ही यह उद्घाटन एक क्षण के लिए ही क्यो न हो—तो यह विशिष्टता भी कितनी महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

लड़को के साथ भी वह समान रूप से व्यवहार करती थी। यह कोई न कह सकता था कि वह दूसरो की अपेक्षा मुझसे अधिक मित्रता निभाती है। साथ ही कोई यह सोचने की भी हिम्मत न कर पाता कि वह उसके साथ अधिक गहरी दोस्ती निभायेगी। जिस ढग से वह छोकरो की ओर देखती थी, अथवा चलती-फिरती या काम करती थी, उससे प्रत्येक व्यक्ति यह समझ लेता था कि मै किसी गर्वपूर्ण और अतिरजित व्यक्तित्व के साथ बात नही कर रहा हू न ही किसी ऐसी लड़की के साथ जिसमे भावना की गहराई नही है। किन्तु किसी ऐसे के साथ बातचीत कर रहा हू जिसके अन्तस् मे उन वास्तविक भावोद्वेगो का निहित ससार-सा छिपा है, जिन्हे पूर्णतया तथा स्वच्छता के साथ न्योच्छावर करने के लिए अभी तक कोई योग्य पात्र नही मिला। ऊल्या ऐसी लडकी नही है जो अपनी भावनाओ को शनै शनै बूद बूद करके, नष्ट कर दे।

ऊल्या के इन्ही गुणो पर युवक रीझते थे, उसकी उपासना करते थे। ऐसी उपासना उन्ही स्त्रियो के प्रति सम्भव है जिनके मन अत्यधिक शुद्ध होते है, अत्यधिक सुदृढ।

वस इसी कारण न कि इसलिए कि वह पढी-लिखी और वुद्धिमान थी ऊल्या ने स्वतत्र तथा स्वाभाविक रूप से और जैसे अनजाने, पेर्वोमाइस्की वस्ती के अपने मित्रो और साथियो को प्रभावित किया था।

एक दिन कुछ लडकिया इवानीख़िना बहनो के यहा एकत्र हुई। वे प्राय. इसी घर मे मिला करती थी। वे घायलो के लिए पट्टियो के पैकेट वनाती थी।

ल्यूवा ने ये पट्टिया उन अफसरो तथा जर्मन चिकित्सा दल के अन्य अधिकारियो के पास से चुरा ली थी जो एक रात उसकी मा के घर ठहरने आये थे। ये पट्टिया उसने यो ही चुरा ली थी और इस चोरी को कोई महत्त्व न दिया था। किन्तु जव ऊल्या ने सुना तो उसने ये पट्टिया इकट्ठी करके तुरन्त अपने काम मे शामिल कर लिया।

"हमारे हर छोकरे को पट्टियो का एक एक पैकेट हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। उन्हे लडना पडेगा हमे नही लडना होगा," वह वोली।

उसे शायद कोई वात मालूम हो गयी थी जिस कारण उसने साथ मे यह भी कह दिया—

"शीघ्र ही वह समय आयेगा जव हम सवको जूझना होगा। उस समय हमे ढेरो पट्टियो की आवश्यकता होगी।"

वस्तुत ऊल्या अपने शव्दो मे वही वात कह रही थी जो वान्या जेम्नुख़ोव ने 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की एक वैठक मे कही थी। वान्या को इस वात का कहा से पता चला था यह ऊल्या न जानती थी।

इस प्रकार सभी लोग पैकेट वनाते रहे। स्वय छात्रा, शूरा दुव्रोविना भी, जो पहले गैर मिलनसार और अहवादी समझी जाती थी,

अपने हिस्से का काम कर रही थी। वह 'तरुण गार्ड' दल मे इसलिए भर्ती हुई थी कि वह माया पेग्लिवानोवा को बहुत मानती थी, उससे स्नेह करती थी।

"जानती हो, लडकियो, इस समय हम कैसी लग रही है?" दुबली-पतली साशा बोन्दरेवा बोली, "हम लग रही है उन बूढी औरतो की तरह जो खानो मे काम करती थी, या पेंशन पा रही है और जिनके बच्चे उनकी देख-रेख करते है—मैंने ऐसी औरतो को प्राय अपनी दादी के यहा देखा है। वे एक के बाद एक आती और जम जाती—कोई कुछ बुनने लगती कोई सीने-पिरोने लगती, कोई ताश लेकर बैठ जाती और कोई आलू छीलन मे मेरी दादी की मदद करने लगती। और कोई एक शब्द भी मुह से न निकालती। सब चुप रहती। फिर सहसा उनमे मे कोई औरत उठ खडी होती और कहती—'यह सब क्या है। चलो कोई हसी-खेल की बात करो'। फिर वे मुस्कराती, झेपती और कोई एक बोल उठती—'यह कोई पाप तो है नही। भला तुम इसे पाप कहोगी?' और सीधे सीधे वे सब से थोडे थोडे पैसे इकट्ठा करती, और यह क्या! मेज़ पर एक पाइंट की बोतल आ जाती! इन बूढियो को ज्यादा नही चाहिए। वे घूट भर तो गटकती है, फिर हाथो पर गाल रखती है, इस तरह, और गाना शुरू कर देती है,—'मेरी उगली मे सोने की अगूठी है एक'."

"साशा, तुम हमेशा कोई न कोई ऐसी ही बात ढूढती रहती हो!" त्र्उबिया जी खोलकर हस दी। "कोई गाना हो जाय तो कैसा रहे, उन्ही बूढियो की तरह?"

किन्तु ठीक इसी क्षण नीना इवान्त्सोवा आ गयी। अब तो वह बहुत ही यदा-कदा आती और आती भी तो उनके पास थोडा बैठने के लिए। वह हमेशा हेडक्वार्टर की सदेशवाहिका के रूप मे ही आती। किन्तु

कोई भी लडकी हेडक्वार्टर का पता-ठिकाना अथवा उसके सदस्यो के संबध मे कुछ भी न जानती थी।

उनके मस्तिष्क मे 'हेडक्वार्टर' शब्द उन प्रौढ लोगो के दल का चित्र खडा कर देता था जो किसी अनजान तहखाने मे किसी खुफिया बैठक मे भाग लेते है, जिनके सामने दीवालो पर ढेरो नक्शे टगे रहते है, जो स्वयं अच्छी तरह हथियारो से लैस होते है और रेडियो-टेलीफोन द्वारा इच्छानुसार मास्को से या मोर्चे से वाते कर सकते है।

नीना इवान्त्सोवा कमरे मे आयी और तुरन्त ऊल्या को वुलाकर वाहर सड़क पर ले गयी। इसपर वहा एकत्र लडकियो ने फौरन समझ लिया कि नीना उन्हे कोई न कोई नया काम सुपुर्द करने आयी है। कुछ ही क्षणो मे ऊल्या वापस आकर वोली कि उसे अभी जाना होगा। उसने माया पेग्लिवानोवा को अलग वुलाकर कहा कि लडकिया पट्टियो के पैकेट अपने अपने घर ले जाये और वह खुद सात-आठ पैकेट ऊल्या के घर छोड जाये। शीघ्र ही इन पट्टियो की जरूरत पड सकती है।

कोई पन्द्रह मिनट के भीतर ऊल्या अपना स्कर्ट ऊपर उठाये, अपनी लम्बी और पतली टागे, वारी वारी से उठाकर अपने घर का बाडा पार करके पोपोव के वगीचे मे उतर रही थी। वहा चेरी के एक पुराने वृक्ष के नीचे सूखी, अधजली घास के ऊपर अनातोली पोपोव, जिसने उज्वेकी टोपी से अपने गेहुए रग के वालो को ढक रखा था, और वीक्तोर पेत्रोव, जिसका सिर नगा था, एक दूसरे के आमने-सामने पेट के वल लेटे हुए जिले के नक्शे का अध्ययन कर रहे थे।

उन्होने दूर से ही ऊल्या को देख लिया था और उसके आ जाने के वाद भी, नक्शे पर मे आखे उठाये विना, चुपचाप वातचीत मे लगे रहे। ऊल्या ने अकस्मात अपनी कलाई घुमाकर अपनी चोटी अपने कन्धे

पर डाली, अपनी स्कर्ट टागो तक नीची की, जमीन पर बैठी और घुटने समेटकर नक्शे का अध्ययन करने लगी।

जिस काम की सूचना अनातोली और वीक्तोर को पहले ही दी जा चुकी थी और जिसके लिए ऊल्या को भी बुलाया गया था, वह पेर्वोमाइस्की बस्ती के युवको की पहली कठिन परीक्षा थी—'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर ने उन्हे पोगोरेली फोरेस्ट्री स्टेशन मे काम करनेवाले युद्ध-बन्दियो को मुक्त कराने का काम सौंपा था।

"पहरेदार कहा रहते है?" अनातोली ने पूछा।

"सडक की दाहिनी ओर, स्वय गाव मे। याद है तुम्हे, बैरक कुंज के निकट बायी ओर यहा पर है? वहा कभी एक गोदाम था। उन्होने वहा सोने के लिए कुछ तख्ते डालकर सारी जगह कटीली तारो से घेर दी है। वहा सिर्फ एक सन्तरी पहरा देता है। मेरा ख्याल है कि पहरेदारो के चक्कर मे न पडकर सिर्फ सतरी को ही ठिकाने लगा दिया जाये .. अफसोस की बात तो जरूर है—दरअसल चाहिए तो यह कि हम सब के गले घोट डाले", वीक्तोर बोला और उसके चेहरे पर क्रोध झलकने लगा।

अपने पिता की मृत्यु के बाद से वीक्तोर पेत्रोव मे बहुत अधिक परिवर्तन आ गया था। वह गहरे रग की एक मखमली जैकेट पहने, घास का एक तिनका चबाता हुआ लेटा था। उसकी साहस से चमकती आखे बड़ी उदासी के साथ अनातोली पर लगी थी।

"रात मे कैदी बन्द कर दिये जाते है। किन्तु हम अपने साथ ग्लवान को ले सकते है। वह अपने औजारो से चुपचाप सारा काम कर लेगा," उसने जैसे बडी अनिच्छा से कहा।

अनातोली ने सिर उठाकर ऊल्या की ओर देखा।

"तुम्हारा क्या ख्याल है?" उसने पूछा।

हालांकि ऊल्या ने शुरू से बाते नही सुनी थी, फिर भी उसने यह समझ लिया था कि वीक्तोर असतुष्ट क्यो है। जब से इन लोगो ने साथ साथ काम करना शुरू किया था तब से वे कुछेक शब्द सुन कर ही बातचीत का आशय समझ लेते थे।

"मै वीक्तोर की बात अच्छी तरह समझ रही हू—यानी यह कि अच्छा हो सभी पहरेदारों का सफाया कर दिया जाये। किन्तु हमे ऐसा काम इतने बडे पैमाने पर करने का कोई अनुभव नही," उसने शान्त किन्तु उत्साहपूर्ण आवाज़ मे कहा।

"हा, यही तो मै भी समझता हू," अनातोली बोला, "हमे वही करना चाहिए जो सबसे आसान हो, जो हमे अपने लक्ष्य के सबसे निकट ले जा सके"।

दूसरे दिन शाम होते होते छोकरे, अलग अलग, दोनेत्स के तट पर, पोगोरेली गाव के निकट के वन मे चले गये। वहा वे पाच थे। अनातोली, वीक्तोर, उसके स्कूल के दो साथी वोलोद्या रगोजिन और जेन्या शेपेल्योव जो इस ग्रुप मे सबसे कम उम्र का था और बोरीस ग्लवान। सभी के पास रिवाल्वर थे। वीक्तोर के पास उसके पिता का पुराना शिकारी चाकू भी था जिसे वह हमेशा अपनी मखमली जैकेट के नीचे एक पेटी मे लटकाये रखता था। बोरीस ग्लवान के पास कुछ जरूरत के औजार थे—तार काटने की कैची, पेचकश और एक लोहे का डडा।

शरद के आरंभ की तारोभरी रात थी, किन्तु चाद न था। पाचो व्यक्ति नदी के दाहिने ढालवे तट के नीचे लेट गये। उनके ऊपर सरसराते पौधो की ध्वनि, नीचे पानी की सतह तक आ आकर विलीन हो रही थी। नदी पर प्रकाश के कण-से बिखरे हुए थे। वह नि शब्द बहे जा रही थी। हा, नीचे थोड़ी दूरी पर पानी के टपटप गिरने का शब्द सुनाई

देता। वहा किनारा नीचा हो गया था और पानी की टपटप या तो इसलिए होती कि गिरी हुई मिट्टी के रन्ध्रों से होकर पानी रिसता था या फिर किसी गिरी हुई टहनी को आलिंगन मे लेकर सहसा उसे मुक्त कर देता। उससे ऐसी ध्वनि निकलती मानो कोई बछडा गाय का दूध पी रहा हो। सामने का दूसरा नीचा किनारा धुध मे विलीन हो चुका था।

वे इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि रात मे कब सन्तरी को छुट्टी मिले और उसकी जगह दूसरा सन्तरी ड्यूटी पर आये।

शरद की रात का चमत्कारपूर्ण सौंदर्य। नदी कुहरे की चादर ओढे हुए और उससे निकलती हुई प्यारी प्यारी ध्वनिया। वहा लेटे हुए युवको के मन मे यही भाव उठ रहे थे कि क्या सचमुच उन्हे इस नदी, नदी की इन प्यारी प्यारी ध्वनियो से मुह मोड़कर जर्मन सन्तरी पर आक्रमण करना होगा, कटीले तारोवाले बाडे और तालाबद द्वारो से जूझना होगा! यह नदी, यह ध्वनिया उन्हे कितनी परिचित और प्यारी थी, उनके कितने निकट थी, पर उन्हे जो कुछ करना था वह एक ऐसी चीज थी जिसे वे जीवन मे पहली बार करने जा रहे थे। यह काम कैसा होगा, इसकी कल्पना भी वे नही कर सकते थे। किन्तु अपनी अनुभूतियो को उन्होने वाणी नही दी और परिचित चीजो के बारे मे फुसफुसाते हुए बाते करने लगे।

"वील्या, याद है तुम्हे इस जगह की? निश्चय ही यह वही जगह है, है न?" अनातोली ने पूछा।

"नही वह जगह यहा से कुछ दूरी पर है, बहाव की ओर—वहा जहा किनारा बैठ गया है और जहा से सरसराती हुई आवाज सुनाई पड रही है। मुझे दूसरे किनारे से तैरकर आना पडा था और मुझे तो यह भय लग रहा था कि तुम और नीचे बहकर कही भवर मे न फस जाओ।"

"हा, मै भी तुम्हे यह बता सकता हू कि मेरी भी उस वक्त जान खुश्क हो रही थी, हालाकि अपनी कमजोरी स्वीकार करने का इस समय कोई मौका नही," अनातोली ने दात निकालते हुए कहा, "मै तो आधी नदी पी गया था"।

"जेन्या मोग्कोव और मै जगल से बाहर निकल रहे थे . हे भगवान! मै तो एक हाथ भी नही तैर सकता था," वोलोद्या रगोजिन बोला। वह एक दुबला-पतला छोकरा था, जिसका चेहरा उसके सिर पर रखी टोपी के छज्जे के नीचे छिप गया था। टोपी उसने आखो तक सरका ली थी। "अगर जेन्या मोग्कोव सारे कपडे पहने पहाडी से पानी मे न कूद पडा होता तो तुम उसे खीचकर कभी निकाल न पाये होते," उसने वीक्तोर से कहा।

"बेशक मै नही निकाल पाता," वीक्तोर ने स्वीकार किया, "क्या तबसे किसी ने मोग्कोव के बारे मे कुछ सुना है?"

"एक शब्द भी नही," रगोजिन बोला, "सिवा इसके कि वह एक जूनियर लेफ्टिनेट है और पैदल सेना मे है। यह सेना के अफसरो मे से सबसे छोटा पद है और ये लोग मक्खियो की तरह मरते है ।"

"नही, तुम्हारी यह दोनेत्स बहुत शात है किन्तु हमारी द्नेस्त्र—ओह, कुछ न पूछो उसका!" बोरीस ग्लवान, केहुनी के सहारे उटता हुआ बोला। उसके दात अधेरे मे चमक उठे। "वह कितनी तेज बहती है। कितनी आकर्षक है वह! अगर तुम द्नेस्त्र मे डूबने लगो तो फिर बच नही सकते! और यहा के जगल—ये जगल भी कोई जगल है? हम भी स्तेपी मे रहते है, पर तुम्हे द्नेस्त्र के किनारे किनारे जगलो को देखना चाहिए। वहा काले 'चिनार' और 'सदाबहार' के पेड इतने मोटे मोटे है कि वे तुम्हारी दोनो बाहो की लपेट मे नही आ सकते। और इतने ऊचे कि आकाश को छूते है..."

"तब तो तुम्हें वही रहना चाहिए," जेन्या शेपेल्योव बोला, "यह सचमुच बडी बेजा बात है कि जहा लोग रहना चाहते है वहा नही रह पाते। ये लडाइया कम्बख्त .. अगर यह सब न होता तो लोग जहां चाहते रहते। अगर ब्राजिल मे रहना चाहते तो वही रहते। अगर मुझसे पूछा जाये तो मै तो यही दोनवास मे रहना चाहूंगा। यहां बड़ी शान्ति है, मुझे यहा बडा अच्छा लगता है।"

"सुनो, अगर तुम सचमुच शान्ति के साथ रहना चाहते हो तो लडाई खत्म हो जाने के बाद हमारे पास आकर सोरोका मे रहो—यह हमारे जिले का केन्द्र है—और भी अच्छा हो कि यदि तुम हमारे गांव मे रहो। जानते हो हमारे गांव का नाम कितना बडा, कितना ऐतिहासिक है—जारग्राद,*" ग्लवान मस्कराते हुए बोला, "हा वहां आकर कोई ऐसी नौकरी न करना जिसमे परेशानी और चिन्ता सिर पर सवार रहे, मसलन, भगवान के लिए मवेशी खरीद-विभाग के कर्मचारी के पद पर कभी काम न करना! हा, स्थानीय रेड क्रास सोसाइटी के अध्यक्ष बनकर आओ तो अच्छा हो—फिर तो तुम्हे नाइयो की ही दुकानो का मुआइना करना होगा। सच पूछो तो इस काम मे मौज ही मौज है। दिन भर कोई काम नही—बैठ बैठे शराब की चुस्कियां लिया करो। भगवान जानता है यह एक ऐसी नौकरी है जिसके लिए सभी तरसते है," उसने प्रसन्न मुद्रा में, हसते हुए कहा।

"ये अपनी बेवकूफी की बाते बद भी करो!" अनातोली ने अच्छे मन से कहा।

और एक बार फिर सब के सब सरिता की कलकल मे खो गये।

"बस, वक्त हो गया है," अनातोली बोला। और एक ही क्षण

---

* ज़ार बादशाह का शहर

मे प्रकृति के प्रति उनकी स्वाभाविक जागरुकता और जीवन के आह्लाद ने जैसे उनका साथ छोड़ दिया।

वीक्तोर पान-पडोस का एक एक पौधा जानता था। वही इस समय अगुआई कर रहा था। वह अपने साथियो को लेकर, कटाव के किनारे किनारे, किन्तु खुली हुई जगह बचाता हुआ, उस कुज की ओर बढ रहा था जिसके उस ओर बैरक था। उसके साथी, एक के पीछे दूसरा, उस के पीछे पीछे चले जा रहे थे। यह बैरक अभी तक उनकी दृष्टि से ओझल था। एक क्षण के लिए वे कुछ सुनने के लिए जमीन पर पड रहे—चारो ओर मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था। वीक्तोर ने हाथ से इशारा किया और वे पेट के बल सरकते हुए आगे बढने लगे।

आखिर वे कुज के किनारे पहुच गये। उनके सामने एक लम्बी और काली-सी इमारत थी जो एक साधारण बैरक जैसी लग रही थी। उसकी छत ढालवी थी। फिर भी वहा लोग भूसे की तरह भरे थे। इमारत बडी भयानक और मनहूस लग रही थी। उसके आस-पास के पेड काटे जा चुके थे। उसकी बायी ओर सतरी की काली-सी आकृति दिखाई पड रही थी। कुछ दूरी पर, और भी बायी ओर, सडक थी जिसके उस पार गाव के मकान शुरू हो गये थे। पर, जिस स्थान पर ये लोग लेटे थे वहा से मकान नज़र नही आ रहे थे।

सतरी की ड्यूटी खत्म होने मे कोई आधा घटा रह गया था। इस बीच सभी साथी सतरी की उस काली और निश्चेष्ट आकृति पर आखे गडाये अपनी जगह पडे रहे।

आखिर उन्हे सामने बायी ओर से पदचाप सुनाई दी और हालाकि वे अब भी कुछ न देख पा रहे थे, फिर भी उन्होने दो व्यक्तियो को मार्च करते, सडक पर मुडते और अपनी ओर आते हुए सुना। उनमे से एक पहरेदार-कारपोरल और दूसरा वह सतरी था, जिसे पहले सतरी

की जगह लेनी थी। काली परछाइया, ड्यूटी वाले सतरी की ओर बढी। सतरी, उनकी आहट सुनते ही, एटेंशन होकर खडा हो गया।

तब जर्मन मे, कोई घुटा घुटा-सा आदेश सुनाई पडा, वन्दूके खडकी, ज़मीन पर बूटो की धमक हुई और दो आकृतिया अलग अलग हो गयी और एक बार फिर से सडक पर पैरो की आहट सुनाई दी, जो सडक के कठोर धरातल पर विलीन होती हुई रात्रि की नीरवता मे खो गयी।

अनातोली ने धीरे-से अपना सिर जेन्या शेपेल्योव की ओर घुमाया। जेन्या इस समय कुज के बीचोबीच रेग रहा था। उसका काम बस्ती के छोर पर आकर उस छोटे-से मकान पर निगाह रखना था जहा पहरेदार रहते थे।

सतरी पिजडे के भेडिये की भाति कटीले तारोवाले बाडे मे चक्कर लगा रहा था। उसके कधे पर वन्दूक का पट्टा पडा था। वह फुर्ती से पैर पटक रहा था और हाथ भी मल रहा था। संभवत विस्तर से उठकर वाहर आने के वाद उसे ठढ लग रही थी।

अनातोली-ने वीक्तोर का हाथ छुआ जो अप्रत्याशित रूप से गर्म था। उसने हाथ दवा दिया।

"क्या हम दोनो जाये?" वह फुसफुसाया। उसके होठ वीक्तोर के कान के पास थे।

इस वाक्य में द्विविधा झलकती थी, किन्तु साथीपन की द्विविधा। वीक्तोर ने निषेधस्वरूप जोरो से सिर हिलाया और आगे बढने लगा।

अनातोली, वोरीस ग्लवान और वोलोद्या रगोजिन, सास रोके हुए सतरी और उसकी ओर टकटकी लगाये रहे। जब कभी वीक्तोर की ओर से जरा भी सरसराहट सुनाई पडती तो उन्हे लगता कि दुश्मन को उसका पता चल गया है। किन्तु वीक्तोर उनसे दूर तब तक रेगता रहा जब तक उसकी मखमली जैकेट अपने इर्द-गिर्द के वातावरण मे न विलीन

हो गयी, जब तक वह स्वयं आंखो मे ओझल न हो गया, जब तक उसकी ओर से आनेवाली आवाज सुन पडनी बंद न हो गयी। वे अपनी आखे संतरी पर गडाये रहे क्योकि किसी भी क्षण संभावित घटना घट सकती थी। किन्तु उसकी काली आकृति दाड़े मे आगे-पीछे होती रही और कोई घटना न घटी। उन्हे लगा कि काफी समय बीत गया और शीघ्र ही भोर हो जायेगी।

जैसे वीक्तोर अपने तरुण पायोनियर के दिनो मे अपने बचपन के, उन अर्द्धविस्मृत, खेलो मे, ड्यूटी पर तैनात अपने किसी साथी को चकमा देने के लिए किया करता था, ठीक वैसे ही इस समय भी वह जमीन से चिपके रहकर, किन्तु बदन कुछ ऊपर उठाये हुए, अपने अत्यधिक लचकीले हाथो और पैरो की सहायता से आगे बढता जा रहा था। जब जब संतरी उसकी ओर मुडकर चलने लगता तब तब वीक्तोर मूर्ति की तरह जडवत् वही रुक जाता। और जब संतरी विपरीत दिशा मे मार्च करता तो वीक्तोर फिर धीरे धीरे आगे बढने लगता।

उसका दिल जोर जोर से धडक रहा था, किन्तु उसे डर जरा भी न था। जब तक उसने रेंगना शुरू नही किया था तब तक वह अपने पिता के बारे मे सोचता रहा ताकि उसके दिमाग मे प्रतिशोध की भावना कूट कूटकर भरती जाये। पर इस समय वह यह सब कुछ भूल चुका था। उसकी सारी मानसिक शक्ति अकेले इसी प्रयास पर केन्द्रित थी कि वह किसी प्रकार चुपचाप संतरी के पास तक रेंग जाये और उसे पता न चले।

वह बैरको के चारो ओर लगे हुए कटीले तारोवाले बाडे के एक छोर पर पहुचा और निश्चेष्ट-सा पड रहा। संतरी विपरीत छोर तक पहुचकर अब लौटने के लिए मुड रहा था। वीक्तोर ने अपना शिकारी चाकू लिया, उसे दातो के बीच दबाया और उसकी ओर रेंगने लगा।

उसकी आखे अधेरे की इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि वे वाडे के तार तक देख सकती थी। 'उसे लग रहा था। कि इस समय तक सभवतः सतरी की आखे भी अधेरे की अभ्यस्त हो चुकी होगी और जैसे ही वह वीक्तोर की ओर आयेगा उसकी आखे वीक्तोर को जमीन पर पडे देख लेगी। किन्तु जब सतरी वाडे से होकर प्रवेश द्वार पर पहुचा कि रुक गया। प्रवेश मार्ग पर कटीले तार लपेट लपेटकर कई टेक-से वनाये गये थे और उनसे मार्ग वद कर दिया गया था। वीक्तोर तनावपूर्ण स्थिति मे प्रतीक्षा करता रहा, किन्तु सतरी अपने पतलून की जेवो मे हाथ डाले, और अपने कधे से वदूक हटाये विना, वैरक की ओर पीठ किये वही खडा रहा। उसका सिर तनिक झुका हुआ था।

वीक्तोर के मित्र फडकते हुए हृदय से यह इन्तजार करते रहे कि वह अपना काम पूरा करे। मित्रो की ही भाति सहसा वीक्तोर को भी यह ध्यान आया कि समय निकलता जा रहा है और शीघ्र ही भोर हो जायेगी। तब यह सोचे बिना कि अब सतरी के लिए उसे देखना और उसकी आवाज सुनना आसान होगा—क्योकि उसकी अपनी पदचाप अब अन्य ध्वनियो को दवा न सकती थी—वह सीधे सतरी की ओर रेगने लगा। अब वह सतरी से कोई दो गज की दूरी पर रह गया था। सतरी अव भी उसी स्थिति मे खडा था—जेबो मे हाथ, बदूक कधे से लटकती हुई, सिर फौजी टोपी मे नीचे झुका हुआ, बदन एड़ियो पर थोडा थोडा हिलता हुआ। वीक्तोर उस समय रेगा था या उछल पडा था, यह उसे वाद मे याद न रह गया था। हा, वह सहसा हाथ मे चाकू पकडे सतरी की वगल मे खडा हो गया। सतरी ने आखे खोली और जल्दी से सिर घुमाया। वह एक दुवला-पतला और ठूठदार दाढी वाला वयस्क जर्मन था। उसकी आखो मे उन्माद की झलक दिखाई दी। वह जेब से हाथ भी न निकाल पाया था कि उसके मुह से एक अजीव हल्की-सी चीख

निकली–'उफ...' वीक्तोर ने उसकी ठुड्ढी की बायी ओर गरदन मे पूरी ताकत के साथ अपना चाकू घुसेड़ दिया। चाकू गले की हड्डी के ऊपर के मुलायम मास में, मूठ तक घुस चुका था। जर्मन गिर पड़ा। वीक्तोर भी उसके ऊपर गिर पड़ा और उसपर एक प्रहार और करने ही वाला था कि जर्मन के शरीर में ऐंठन-सी हुई और उसके मुह से खून निकलने लगा। वीक्तोर एक ओर हट गया, खून से भरा चाकू एक तरफ फेंका और सहसा इतनी तेजी से वमन करने लगा कि उससे होनेवाली आवाज दवाने के लिए अपने मुह मे जैकेट की वायी आस्तीन ठूसने लगा।

सहसा अनातोली उसके सामने खड़ा दिखाई दिया और चाकू उसकी ओर करते हुए फुसफुसाकर वोला:

"इसे रख लो। हम इसे निशानी के रूप मे यहा नही छोड़ सकते। इस से सुराग लग सकता है..."

वीक्तोर ने चाकू छिपा लिया और रगोज़िन उसकी वाह पकड़ते हुए वोला–"चलो, चलो, अब सड़क पर चलो।" वीक्तोर ने अपना रिवाल्वर निकाला और दोनो दौड़कर सड़क तक आये तथा फिर लेट गये।

अंधेरे में कटीले तारोवाली टेक मे फस जाने का खतरा बना था, इसलिए वोरीस ग्लवान ने पेशेवर अनुभवी व्यक्ति की भाति तार काटनेवाली कैंची से दो खम्भो के वीच लगा तार काट डाला और अन्दर जाने का रास्ता वना लिया। इसके वाद वह और अनातोली वैरक के दरवाजो की ओर दौडे। ग्लवान ने ताला टटोला। वह तो लोहे की छड़ को साधनेवाला एक साधारण ताला था। उसने कुण्डे मे लोहे के डडे को फंसाया और तोड़ डाला। उन्होने छड हटायी और अत्यधिक उत्तेजित होकर द्वार खोल दिया।

उनकी ओर गन्दी गर्म हवा का एक झोका आया। उनके सामने, दाये और वाये, लोग अपने अपने तख्तो पर से उठने लगे थे। एक उनीदी और भयाकुल आवाज यह जानना चाहती थी कि मामला क्या था।

"साथियो " अनातोली ने कहना शुरू किया किन्तु वह इतना उत्तेजित हो चुका था कि आगे एक शब्द भी न वोल पाया। इधर-उधर कुछ प्रसन्नतापूर्ण आवाजे सुनाई दी किन्तु दूसरो ने उन्हे चुप करा दिया।

अनातोली ने अपने को सयत किया—"तुम लोग जगल से होकर नदी की ओर भागो, फिर नदी की धारा के अनुकूल और विपरीत, दोनो ही दिशा मे वट जाना," वह बोला। "क्या गोर्देई कोर्नियेको यही है? अगर तुम यहा हो, तो घर जाओ, तुम्हारी पत्नी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है..." अनातोली बाहर निकला और बैरक के दरवाजे पर खडा हो गया।

"शुक्रिया... भाइयो.. रक्षको. ." ऐसी कई आवाजे अनातोली को सुनाई दी। अब सामने के लोग उस द्वार की ओर भागने लगे थे जो कटीले तारोवाले टेक से वन्द था। अत. ग्लवान उन्हे जल्दी जल्दी धकेलकर उधर भेजने लगा जिधर उसने वाडे मे एक रास्ता बना दिया था। कैदी उस ओर वढ़ रहे थे कि सहसा कोई व्यक्ति अनातोली के पास आया और उसके कधे दोनो हाथो से पकडता हुआ, हर्षातिरेक मे फुसफुसाया—"तोल्या? . तोल्या? ."

अनातोली चौक पड़ा और उस व्यक्ति के चेहरे मे झाकने लगा जो उसे पकडे था। "जेन्या मोश्कोव," वह वोला। पता नही क्यो उसकी आवाज मे आश्चर्य का कोई पुट न था।

"मैने तुम्हारी आवाज़ पहचान ली थी," मोश्कोव ने कहा।

"ज़रा ठहरो। हम लोग साथ चलेगे।"

भोर के झुटपुटे से पहले ही तीनो साथी—अनातोली, वीक्तोर और जेन्या मोश्कोव—एक सकरे खड्ड की घनी झाड़ियो मे बैठ गये। मोश्कोव नगे पैर था। उसके चिथडो से वदवू आ रही थी। उसके वाल उलझे हुए थे।

वे दोनेत्स के तट पर इन्तजार करते समय मोश्कोव के वारे मे ही वाते कर रहे थे। वे इतना शीघ्र उसे मुक्त भी करा पायेंगे, यह सोचकर उन्हे सचमुच वडा आश्चर्य हो रहा था। अनातोली थककर चूर हो चुका था फिर भी वडा खुश था, वडा ही उत्साहित। उसने एक के वाद एक सभी कार्यो के वारे मे वताना शुरु किया। उन्हे इन कार्यो मे अच्छी सफलता मिली थी। उसने वीक्तोर और ग्लवान तथा अपने दूसरे साथियो की भी प्रशसा की, फिर वात जेन्या मोश्कोव को छुडाने की आश्चर्यजनक घटना पर आ गयी। वीक्तोर उदासी के साथ और रुक रुककर उत्तर देता रहा। और मोश्कोव सारा समय चुप रहा। अन्तत: अनातोली भी चुप हो गया। खड्ड मे काफी अधेरा और सन्नाटा छाया था।

सहसा दोनेत्स के पार, नीचे की ओर, आकाश मे रोशनी दिखाई दी। आकाश के एक वडे-से भाग पर प्रकाश जैसे अकस्मात फैल गया। आकाश आग के क्षेत्र के ऊपर लाल लाल शामियाने की भाति लटका-सा दिखाई दे रहा था। खुद खड्ड तक मे रोशनी छा गयी थी।

"कहा से आ रही है यह रोशनी?" वीक्तोर ने चुपचाप पूछा।

"गुन्दोरोव्स्काया के आसपास से," कुछ क्षणो तक सकोचवश चुप रहने के वाद अनातोली वोला। "यह काम सेर्गेई का है," वह फुसफुसाया। "वह अनाज के ढेरो मे आग लगा रहा है। यह काम अव वह रोज रात को करता है।"

"हम साथ साथ स्कूल मे पढे है। हमे अपने सामने दूर दूर तक फैली हुई जिन्दगी की राह नजर आती थी और अव हमे ये खुराफाते

करनी पड़ रही है," वीक्तोर उत्तेजित होकर बोल पड़ा। "पर दूसरा रास्ता भी तो नही है!"

"मेरे दोस्तो! मुझे यह यकीन नही होता कि मै सचमुच आजाद हूं... मेरे दोस्तो, मेरे दोस्तो!" जेन्या मोश्कोव की आवाज भारी हो रही थी। उसने अपने हाथो मे अपना चेहरा छिपा लिया और सूखी घास पर पड़ रहा।

## अध्याय ११

एक समय वह भी आया जब ठेलोवाले बेघर लोग भी कच्ची और अन्य बड़ी बडी सड़को पर जाने से डरने लगे क्योकि सुरंगो मे बिछे हुए बमो से प्राय. लारिया, कारे और पेट्रोल के टैकर उडा दिये जाते थे। इसी लिए वे लोग अपनी अपनी ठेलागाडिया देहातो की गलियो या सीधे खुली स्तेपी से होकर ले जाने लगे।

एक अफवाह यह भी सुनाई पड़ी थी कि मत्वेई कुर्गान से दक्षिण मे नोवोशाख्तिन्स्क के बीच किसी सडक पर एक गभीर दुर्घटना घटी थी। उसके बाद एक अफवाह और सुनने मे आयी कि उत्तर मे स्तारोबेल्स्क और बेलोवोद्स्क के बीच पेट्रोल की एक पूरी की पूरी रेलगाडी को नष्ट कर दिया गया था।

स्तालिनग्राद की ओर जानेवाले राजमार्ग पर क्रेपेन्का नदी पर बना हुआ ककरीट का एक पुल भी उन्ही दिनो उड़ा दिया गया था। यह दुर्घटना कैसे घटी, यह समझ मे आनेवाली बात न थी क्योकि पुल बोकोवो-प्लातोवो की एक घनी बस्ती के मध्य मे था और जर्मन उसपर कडा पहरा रखते थे। कुछ दिनो बाद वोरोनेज–रोस्तोव रेलवे पर, कामेंस्क के निकट बना हुआ एक बडा-सा रेलवे पुल भी टूटकर नदी मे समा गया था। इस पुल पर चार मशीनगनो और टामी-गनो के एक पूरे जर्मन दस्ते

का पहरा रहता था। पुल के विस्फोट से-रात मे इतना तेज धमाका हुआ कि उसकी गूंज क्रास्नोदोन तक सुनाई पडी।

ओलेग को शक था कि वह विस्फोट सभवत क्रास्नोदोन और कामेंस्क खुफिया पार्टी संघटनो के मिले-जुले प्रयासो के परिणामस्वरूप हुआ था क्योकि उस घटना के कोई दो हफ्ते पहले पोलीना गेओर्गियेव्ना ने उसे ल्यूतिकोव का यह अनुरोध सुनाया था कि उसे एक सदेशवाहक की जरूरत थी जिसे वह कामेस्क भेजना चाहता था।

ओलेग ने इस काम के लिए ओल्गा इवान्त्सोवा को चुना था।

अगले दो हफ्तो तक ओल्गा 'तरुण गार्ड' के क्रियाकलाप के क्षेत्र से एक तरह से वाहर थी। हा, नीना से ओलेग को यह पता अवश्य चल गया था कि ओल्गा इस वीच कई वार अपने घर, क्रास्नोदोन आयी थी और फिर वहां से वाहर निकल चली जाती रही थी। उक्त विस्फोट के कोई दो दिन वाद वह एक वार फिर ओलेग के घर आयी थी और 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर की सदेशवाहिका के रूप मे पुनः चुपचाप काम करने लगी थी। ओलेग जानता था कि उसे उससे सभी तरह की पूछ-ताछ करने की स्वतंत्रता नही है किन्तु प्राय. वह वडे ध्यान से और वडी उत्सुकता से उसका चेहरा देखा करता था। पर वह कभी इसपर कोई ध्यान न देती और हमेशा की तरह स्थिर, शान्त-स्वभाव और गुप-चुप वनी रहती। उसके नाक-नक्श वेडौल-से थे। मुस्कराहट तो उसके चेहरे पर यदा-कदा ही खेलती। ऐसा लगता मानो खुफिया वातो को छिपाने के लिए उसका चेहरा विशेष रूप से वनाया गया है।

इस समय तक 'तरुण गार्ड' का काम तीन लडाकू दलो मे वट गया था जो जिले की सडको पर और उसकी सीमाओ के पार वहुत दूर दूर तक काम कर रहे थे।

एक दल क्रास्नोदोन और कामेस्क के वीच की सडक पर काम करता

था और जर्मन अफसरो की कारो पर हमले करता था। वीक्तोर पेत्रोव इस दल का नेता था।

दूसरा दल वोरोशीलोवग्राद और लिखाया के बीच की सडको पर काम करता था। इसका नेता लाल सेना का लेफ्टिनेट जेन्या मोश्कोव था जो अभी हाल मे स्वतत्र हुआ था। इसका काम पेट्रोल टैकरो की खबर लेना अर्थात् टैकरो के ड्राईवरो और पहरेदारो को मौत के घाट उतारना और पेट्रोल को जमीन पर वहा देना था।

तीसरा दल त्युलेनिन की मातहती मे घूम-फिरकर काम करता था। वह हथियार, रसद और कपडा ले जानेवाली जर्मन लारियो को रोकता और भटके हुए घुमक्कड जर्मन सैनिको की खोज मे रहता था। वह शहर तक मे इन लोगो की खोज किया करता था।

प्रत्येक दल के लोग काम करने के लिए अपनी सारी मिली-जुली ताकत लगा देते और जैसे ही काम पूरा हो जाता कि बिखर जाते, भाग जाते। हर शख्स अपना अपना हथियार स्तेपी मे अपनी मन-पसन्द जगह पर गाड कर रखता था।

कैद से मोश्कोव को छुटकारा मिलते ही 'तरुण गार्ड' को एक और अनुभवी नेता मिल गया। वह वलूत की तरह हृष्ट-पुष्ट और मजबूत था। वह अपने भयावह अनुभव पूरी तरह भूल चुका था और अब वह बडे मजे से झूमझूमकर घूमता था। उसके गले मे एक वुना हुआ गुलूबन्द लिपटा रहता जिसकी वजह से वह भारी-भरकम दिखाई पडता। उसके पैरो मे ऊचे ऊचे वूट होते थे और उनपर रवड के खोल। वूट और खोल उसने अपने ही जैसे कद-वुत वाले एक जर्मन सैनिक के मार लिये थे, जिसे उसने शेविरेव्का गांव के थाने पर हमला करके मौत की नीद सुला दिया था। इस सैनिक के और मोश्कोव के पैरो की नाप एक ही थी। हालाकि वह विगड़े दिमाग का लगता था लेकिन सच वात तो यह थी कि वह दिल

का वड़ा अच्छा था। उसकी सैनिक सेवा ने, खासकर उस दिन से जब वह मोर्चे पर पार्टी मे भरती हुआ था, उसे आत्मानुशासन और सहिष्णुता की शिक्षा दी थी।

मोश्कोव पेशे से फिटर था और प्रशासन-कार्यालय न० १० के मशीन विभाग मे काम करने लगा था। ल्यूतिकोव के सुझाव पर उसे 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर का एक सदस्य वना लिया गया था।

अभी तक इस वात के लिए कोई प्रमाण न मिला था जिससे पता चलता कि जर्मन, 'तरुण गार्ड' जैसे किसी भी दल के अस्तित्व के वारे मे चिन्तित थे, हालाकि इस समय तक इस सघटन ने कई वड़े वडे कार्य संपन्न कर लिये थे।

जिस प्रकार पृथ्वी के नीचे थोडे थोडे जल के रिसते रहने से ही, जिसे आखे भली भाति देख तक नही पाती, वडे वडे झरने और नदिया वनती है, उसी प्रकार 'तरुण गार्ड' के कार्य भी उन, लाखो व्यक्तियो के गुप्त, गहरे तथा विशाल आन्दोलन का अग वन गये थे जो जल्द से जल्द उन स्वाभाविक स्थितियो को पुन प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे, जिनमे वे जर्मनो के आने से पहले रह रहे थे। जर्मनो के खिलाफ चलनेवाली छोटी वडी कार्रवाइयो के वीच दुश्मनो को 'तरुण गार्ड' के अस्तित्व का कोई भी विशेप चिह्न नजर न आया।

इस समय मोर्चा इतनी दूर था कि क्रास्नोदोन मे वसे हुए जर्मनो को यह नगर जर्मन राइह का एक दूरस्थ नागरिक प्रान्त-सा लग रहा था। अगर सडको पर छापेमारो की छिटपुट कार्रवाइया न होती रहती तो यही समझा जाता कि यहा हमेशा के लिए 'नयी व्यवस्था' की स्थापना हो चुकी है।

उत्तर, दक्षिण, पूरव, पश्चिम, सभी ओर युद्ध के मोर्चो पर एक सन्नाटा-सा छा गया था मानो सव के सव स्तालिनग्राद के महायुद्ध की

गरज सुन रहे थे। सितम्बर और अक्तूबर के महीनो में स्तालिनग्राद और मोज्दोक क्षेत्रो मे होनेवाली लड़ाइयो के संबंध मे, प्रतिदिन जो संक्षिप्त विज्ञप्तियां निकलती रहती थी, उनमें कोई ऐसी स्थायी वात ज़रूर रहती थी जिसे सुनने के लोग आदी हो गये थे। लगता था जैसे हमेशा सव कुछ इसी प्रकार चलता रहेगा।

कैदियो का जो तांता पूर्व की दिशा से आकर क्रास्नोदोन पहुंचा करता था और वहां से पश्चिम की ओर चल देता था, वह क्षीण होते होते अव करीव करीव खत्म हो गया था। किन्तु जर्मनी और रूमानिया के सेना-व्यूह, यातायात, तोपे और टैंक पश्चिम से आकर शहर मे से होते हुए, अव भी पूर्व दिशा की ओर वरावर जा रहे थे। वे शहर से वाहर जाते थे किन्तु लौटते न थे। हां, पश्चिम से पलटनें वरावर आती थी, नतीजा यह होता था कि क्रास्नोदोन से जर्मनी और रूमानिया के सैनिक और अफसर हमेशा गुज़रते रहते थे। लगता था जैसे यह स्थिति भी हमेशा वनी रहेगी।

कई दिनो तक कोशेवोई और कोरोस्तिल्योव के घर मे एक वढ़िया उड़ाकू जर्मन अफसर जो घावो से चंगा हो जाने के वाद फिर मोर्चे पर लौट रहा था, और एक रूमानियाई अफसर अड्डा जमाये रहे। रूमानियाई अफसर के साथ उसका एक अर्दली भी रहता था। वह खुशदिल जवान था, रूसी वोलता था और जिस चीज़ पर भी उसका हाथ पड़ जाता उसे चुरा लेता—चाहे वह वगीचे मे लगी हुई लहसुन की गाठ हो या दीवाल पर लटकता परिवार के चित्र का फ्रेम।

रूमानियाई अफसर छोटे कद का था। हमेशा हरे रग की वर्दी पहनता, टाई लगाता और कधो पर सुनहरी डोरी वाले विल्ले लगाये रहता। उसकी मूछे पतली और काली थी तथा आखे छोटी और वाहर की ओर निकली हुई। वह वेहद फुर्तीला था। उसकी नाक की नोक तक वरावर हिलती

रहती। वह मामा कोल्या के कमरे मे रहता था, पर अपना सारा दिन असैनिक कपड़ो मे, खानो, दफ्तरो और सैनिक दस्तो का चक्कर लगाते हुए विताता था मानो वहा कोई जाच-पडताल कर रहा हो।

"तुम्हारा चीफ असैनिक कपड़ो मे क्यो घूमता है?" मामा कोल्या ने उसके अर्दली से पूछा। इस समय तक उसने अर्दली से दोस्ती गाठ ली थी।

खुशदिल अर्दली ने गाल फुलाये फिर उन पर हाथ मारे और सर्कस के मसखरे की तरह मुह से हवा निकालते हुए मजा ले लेकर कहने लगा।

"वह जासूस है!"

इस वातचीत के वाद मामा कोल्या को अपना पाइप फिर कभी नही मिला।

जर्मन उड़ाकू अफसर ने वडे कमरे मे कब्जा जमा लिया था और येलेना निकोलायेव्ना को नानी वेरा के कमरे में और ओलेग को लकड़ी के शैड मे खदेड दिया था। उसका कद लम्बा और वाल सुनहरी रग के थे। उसकी आखे खून की तरह लाल थी। उसने फ्रास और खार्कोव के हवाई हमलो मे वहुत-से पदक जीते थे। जव उसे कमाडाट्टुर से लाया गया तो उसने वुरी तरह पी रखी थी। बहुत दिनो तक वह इसलिए टिका रहा कि वह रात-दिन इतनी वुरी तरह पीता था कि उसके लिए वाहर निकलना तक असभव था। वह घर के सभी लोगो को पिलाने की कोशिश करता सिवाय रूमानियन सैनिको के जिनसे उसे चिढ थी। वह उनके अस्तित्व की ओर ध्यान ही न देता था। वह किसी से बिना वातचीत किये एक क्षण भी न रह पाता। वह अपनी जर्मन और रूसी की खिचड़ी भाषा मे यह समझाता कि वह किस प्रकार सवसे पहले वोल्शेविको को, तव अग्रेजो को और उसके वाद अमेरिकनो को जमीन चटायेगा और तव सव कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। परन्तु अपने निवास के आखिरी दिनो मे उसपर गम का पहाड टूट पड़ा।

"स्तालिनग्राद! . हा!" उसने अपनी लाल तर्जनी उठाकर कहा।

"वोल्शेविक गोलिया बरसाता है ..हूह! हम kaputt"* और उसकी लाल लाल आखो मे निराशा के आमू छलछला आये।

जाने से कुछ ही पहले वह बस इतने ही होश मे आया था कि अपनी पिस्तौल से अहाते मे किलबिलाते चूजो पर गोली चला सका। किन्तु इन मरे हुए चूजो को वह रखता कहा? अत उसने उनके पैर बांध दिये और जब तक वह अपना सामान इकट्ठा करता रहा, चूजे ड्योढी के पास पडे रहे।

रूमानियाई अर्दली ने ओलेग को पुकारा, अपने गाल फुलाये, उन्हे मसख़रे की तरह पिचकाया और मरे हुए चूजो की ओर इशारा किया।

"सभ्यता है सभ्यता!" उसने मजा ले लेकर कहा।

इसके बाद ओलेग का कलम बनाने का चाकू ऐसा गायब हुआ कि फिर हाथ न लगा।

'नयी व्यवस्था' के अधीन क्रास्नोदोन मे भी एक 'सुचारु और प्रतिष्ठित वर्ग' का जन्म हुआ। वहा भी पद और हैसियत के लिहाज से वैसे ही जर्मन, अफसर और अधिकारी दिखाई दिये जैसे मसलन् हैडेलवर्ग या वाडन-वाडन मे मिलते थे। सबसे वडे पद पर थे हाप्तवह्टमिस्टर ब्रूक्नेर, वाह्टमिस्टर वाल्डेर और लेफ्टिनेट श्वैदे जो प्रशासन-कार्यालय का चीफ था। यह चीफ उन जर्मन कारख़ानो के स्वच्छ वातावरण मे काम करने का आदी था जिनका प्रवन्ध प्रमाणिक कोटि का था तथा जहा हर चीज की व्यवस्था थी। बेशक उसने बराकोव को अपने अधीनस्थ उद्यमो की स्थिति, से अवगत करा दिया था। यदि मजदूर, मशीने, औजार, लकडी, यातायात और साबूत खाने नही है तो कोयला मिल भी कहा से सकता

---

* हम अब बच नही सकते।

है। जो उलझन वह यहां प्रवन्ध योजनाएं वनाते समय महसूस करता था, वही अव भी किये जा रहा था। उसकी योजनाओ का यही कुछ वच रहा था। वह अपने कर्त्तव्य का पालन बस इसी हद तक ईमानदारी से कर सकता था कि इस वात की वाकायदा देख-रेख रखे कि रूसी साईस प्रशासन-कार्यालय के जर्मन घोड़ो को हर रोज सुवह जई खिलाते है या नही। इसके अलावा कागजो पर दस्तखत करना भी उसका एक काम था। वह अपना वाकी समय अधिक उत्सुकता से अपने निजी मुर्गीखाने, सुअर तथा मवेशियो के वाड़े और जर्मन प्रशासन के अधिकारियो के लिए दावतो का इंतज़ाम करने मे लगाता था।

हैसियतो और पदो मे कुछ नीचे आते थे श्वैदे का डिप्टी फेल्द्नेर, ओवेरलेफ्टिनेट श्प्रीक और सोन्दरफ्यूरर साण्डेर्स। साण्डेर्स निकर पहने रहता था। कुछ और भी नीचे पद पर थे पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की और वुरगोमास्टर स्तात्सेको। स्तात्सेको दिन भर शराव पीकर मस्त रहता था। प्रतिदिन सुवह स्तात्सेको मन ही मन स्वय अपने महत्त्व से गदगद होकर और छाता लेकर, वडी सफाई से कीचड को लाघता हुआ म्युनिसिपल दफ्तरो की ओर चल देता और शाम को उसी तरह गभीरता से लौटता मानो सारे दफ्तर का भार अकेले उसी के कधो पर हो। इस सिलसिले में सबसे अन्त मे नम्वर आता था एन० सी० ओ० फेनवोग और उसके सैनिको का। वस्तुत वे लोग ही सारा काम करते थे।

जिस समय अक्तूवर की मूसलाधार वर्षा आरभ हुई, उस समय यह प्यारा छोटा-सा खान-नगर बड़ा ही वदनसीव सिद्ध हुआ। वहां आराम के साधन तो जैसे समाप्त ही हो गये। हर जगह कीचड ही कीचड था। न ईंधन, न प्रकाश। सारे वाड़े तोड़े जा चुके थे, सामने के बगीचो के पेड़ और झाड़िया काट डाली गयी थी, खाली घरो की खिडकियां टूट चुकी थी। उधर से गुजरते हुए सैनिक घरो का सारा सामान और जर्मन प्रशासन

के कर्मचारी अपने अपने घरो मे इस्तेमाल करने के लिए वहां का सारा फर्नीचर चुरा ले गय थे। जव लोग आपस मे मिलते-जुलते तो जसे एक दूसरे को पहचान भी न पाते। वे इतने दुर्वल, क्षीण और निर्धन हो चुके थे। कभी कभी तो ऐसा व्यक्ति भी जिसे सामाजिक बातो से कोई सरोकार न था वीचोवीच सहसा रुक जाता अथवा रात मे जगकर सोचने लगता—'वेशक, वेशक, यह सत्य नही हो सकता? यह जरूर कोई दु:स्वप्न होगा। कोई भ्रमजाल? या कही मेरा ही दिमाग तो नही खराव हो गया?'

जव सहसा, गुप्त रूप से किसी दीवाल या तार के खभे पर पानी से भीगा हुआ कोई ऐसा छोटा परचा दिख जाता जिसपर लिखा हुआ शब्द 'स्तालिनग्राद!' मनुष्य के मस्तिष्क मे आग-सा लगा देता, या फिर कही सडक पर होनेवाला कोई विस्फोट सुनाई पड़ता तो लोग मन ही मन कहने लगते—'नही! यह सपना नही, भ्रमजाल भी नही! सत्य है, सत्य! और युद्ध चल रहा है!'

जिस समय ल्यूबा एक भूरी जर्मन कार मे वोरोशीलोवग्राद से आयी, उससे पहले कई दिनों तक शरद की घनघोर वारिश होती रही थी और सनसनाती हुई हवा चलती रही थी। कार रुकते ही एक युवक लेफ्टिनेंट [illegible] बाहर आया, उसने कार का दरवाजा खोला और ल्यूबा हाथ मे सूटकेस लटकाये, उतरी और भागकर अपने घर की ड्योढी की सीढियां चढने लगी। लेफ्टिनेंट ने सलामी मारी। ल्यूबा ने घूमकर उसकी ओर देखा तक नहीं।

उस बार उसकी मां, येफ्रोसीन्या मिरोनोव्ना, अपने को न संभाल सकी, और [illegible] के सोने की तैयारी कर रही थी, उस समय बोली—

"बेटी ल्यूबा, तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिए। जानती हो लोग [illegible] कहने लगे हैं। कहते हैं, 'जर्मनों के साथ मेल कर रही है ..'"

"यही कहते हैं न? यह तो बड़ी अच्छी बात है, प्यारी मां, सचमुच मेरे लिए यह बड़ी अच्छी बात है," ल्यूबा मुस्कराती हुई बोली और विस्तर पर सिकुड-मिकुड़कर सो गयी।

वान्या जेम्नुखोव को ल्यूबा के आने का समाचार मिल गया था। दूसरे दिन सुबह वह अपनी सडक और वोस्मीदोमिकी ज़िले के बीच पडनेवाले एक बहुत बडे खाली मैदान को पार करता हुआ उससे मिलने के लिए निकल पड़ा। उसके पाव जमीन पर नही पड रहे थे। वह घुटनो तक कीचड़ में सना था और बारिश मे भीग जाने के बाद काप-सा रहा था। आखिर वह बिना दरवाजा खटखटाये ही धड़धड़ाता हुआ शेव्त्सोव परिवार के बडे कमरे में पहुच गया।

ल्यूबा घर मे अकेली थी। वह एक हाथ से छोटा दर्पण पकडे हुए उसे अपने चेहरे के सामने रखे हुए थी और दूसरे हाथ से उसने पहले अपने बेतरतीब बालो को सहलाया। फिर अपनी हरी फ्राक को कमर पर से ठीक करने लगी। कमरे मे नगे पैर चहलकदमी करती हुई वह अपने आप से बाते कर रही थी—

"अरी प्यारी ल्यूबा! ये छोकरे तुम्हे प्यार क्यो करते है, मेरी समझ मे नही आता। आख़िर तुममे कौन-सी अच्छाई है? उफ ... मुह इतना बड़ा, आंखे इतनी छोटी, चेहरा इतना सादा, डीलडौल .. हा डीलडौल उतना बुरा नही ... नही, सचमुच बुरा नही। और अगर सोचा जाये.. यदि तुम छोकरो के पीछे लगी होती तो एक बात भी थी, लेकिन यह हकीकत नही .. उफ! किधर दिमाग भटक गया! छोकरो का पीछा! नही, यह सब बाते मेरी समझ मे नही आती।"

उसने अपने घुघराले बाल हिलाते हुए पहले सिर एक ओर टेढा किया, फिर दूसरी ओर। अन्तत· नगे पैरो से फर्श धमधमाती हुई नाचने लगी और यह गाने लगी

ल्यूबा, मेरी प्यारी ल्यूबा –
प्यारी, बड़ी दुलारी ल्यूबा!

वान्या चुपचाप बड़े धैर्य से उसे बडी देर तक देखता रहा। आखिर वह खास दिया।

पर ल्यूबा जरा भी न घबरायी। इसके विपरीत उसने ऐसी मुद्रा बना ली मानो उसे चिढ हुई हो। उसने धीरे धीरे अपना दर्पण नीचा किया, वान्या की ओर मुडी, अपनी नीली आखे मिचकायी और ठहाका मारकर हस दी।

"सेर्गेई लेवाशोव की किस्मत मे क्या है, यह मै साफ साफ देख रहा हू," वान्या ने अपनी धीर-गभीर आवाज मे कहा, "उसे रानी के पास जाकर तुम्हारे लिए उसकी जूतियां चुरानी होगी।"*

"वान्या, जानते हो, मेरे लिए यह आश्चर्य की बात जरूर है, पर मै उस सेर्गेई की अपेक्षा तुम्हे अधिक प्यार करती हू," ल्यूबा बोली और कुछ कुछ शर्मा गयी।

"मेरी आखे, इतनी कमजोर है कि दरअसल मुझे सभी लडकिया एक जैसी लगती है। मै तो उन्हे उनकी आवाज से पहचानता हूं। मुझे तो धीर-गभीर आवाज वाली लडकिया पसद है। पर तुम्हारी आवाज तो घटी जैसी है, घंटी जैसी!" वान्या ने शान्ति से कहा, "घर पर कौन कौन है?"

"कोई नही। मा इवान्त्सोवा के घर गयी है।"

"तो फिर चलो बैठे। और हा, खुदा के वास्ते यह दर्पण हटा दो। लगता है जैसे वह मेरे सिर पर सवार हो। अब मेरी बात सुनो। ल्यूबोव

---

*न० गोगोल की परीकथा 'क्रिसमस से पहले' मे वकूला लुहार को अपनी प्रेयसी का मन जीतने के लिए उसके आगे रानी की जूतिया पेश करनी थी।

ग्रिगोर्येव्ना! तुम क्या इतनी व्यस्त रही थी कि यह याद भी नही रहा कि क्रान्ति की पच्चीसवी वर्षगाठ दूर नही है?"

"वेशक, मुझे याद है," ल्यूवा बोली। पर सच वात तो यह थी कि वह इसके वारे मे सभी कुछ भूल गयी थी।

वान्या ने झुककर उसके कान मे कुछ कहा। "खूव! वहुत अच्छे! वहुत अच्छा ख्याल है।" और ल्यूवा ने इतने कसकर उसके होठ चूमे कि घवराहट के कारण उसका चश्मा तक गिर गया।

"मां, क्या कभी तुमने कोई कपडे रगे है?"

ल्यूवा की मा जैसे घवराकर उसकी ओर देखने लगी। "मेरा मतलब यह है कि तुम्हारे पास कभी कोई ऐसी सफेद ब्लाउज थी, जिसे तुम नीले रग मे रगना चाहती थी?"

"हा वेटी, कभी कभी मैंने यह भी किया था।"

"और कभी कोई चीज तुमने लाल रग मे रगी है?"

"रग से कोई फर्क नही पड़ता, वेटी।"

"तो मुझे भी रगना सिखा दो, मेरी मा। कभी किसी दिन मुझे भी कुछ न कुछ रगना पडेगा!"

"... चाची मरूस्या, यह तो वताओ कि कभी तुम्हे कोई ऐसा कपड़ा रगना पडा है कि कपडे का रग वदल जाये" वोलोद्या ओस्मूखिन ने अपनी चाची लित्वीनोवा से पूछा। उसकी चाची, ओस्मूखिन परिवार के घर के पास ही एक छोटे-से मकान मे अपने बच्चो के साथ रहती थी।

"रगना पडा है वोलोद्या!"

"तुम मेरे लिए दो तीन तकिए के गिलाफ रग दोगी—लाल रग मे?"

"लेकिन, प्यारे वोलोद्या, कभी कभी रग पक्का नही होता, अतः तुम्हारे कान और गाल तक लाल हो उठेगे।"

"मैं उनपर सोऊंगा नही। वस दिन भर अपने पलग पर रखे रहूगा। अच्छे लगेगे . ."

". . वापू, मुझे पक्का यकीन हो गया है कि तुम लकडी और धातुओं की रंगाई में सचमुच वड़े माहिर हो। क्या तुम मेरे लिए एक चादर लाल रग मे रंग दोगे? जानते हो, वही खुफिया काम करनेवालो ने मुझसे कहा: 'हमे एक लाल चादर चाहिए'। भला मै क्या कह सकता था!" जोरा अपने पिता से वोला।

"मै रग तो सकता हू। किन्तु . . चादर! तुम्हारी मा क्या कहेगी?" उसके पिता ने वडी सतर्कता से जवाब दिया।

"वापू, आखिर तुम हमेशा के लिए यह सवाल तय क्यो नही कर डालते कि घर का मालिक कौन है–तुम या मा? जो भी हो। यह तो साफ है–मुझे एक लाल चादर मिलनी ही चाहिए ..."

वाल्या वोर्त्स को सेर्गेई का पत्र मिला था, किन्तु उसने उससे कभी उस पत्र का जिक्र न किया और न सेर्गेई ने ही वात चलायी। किन्तु उस दिन से वे जैसे एक ही शरीर के दो अग बन गये थे। दिन निकलते ही दोनों एक दूसरे के लिए तड़पने लगते थे। प्राय. सेर्गेई ही पहले-पहल अपनी सूरत देरेव्यान्नाया सडक पर दिखाया करता था। घुघराले वालोवाला यह दुवला-पतला छोकरा अक्तूवर के ठडे और वरसाती दिनो मे भी नंगे पैर चलता था और वहां के लोग उसे पहचानने लगे थे। मरीया अन्द्रेयेव्ना और खासकर नन्ही ल्यूस्या उसे पसद करने लगी थी, हालाकि उनकी मौजूदगी में वह कभी कभी ही वात करता था।

"तुम जूते क्यो नही पहनते?" एक दिन नन्ही ल्यूस्या ने पूछा।

"नगे पैर नाचना आसान होता है," उसने दांत निकालते हुए उत्तर दिया।

पर जव वह दुवारा आया तो जूते पहने था–बात यह थी कि जूतो की मरम्मत करने का उसे समय ही न मिला था।

एक दिन, उस जमाने मे भी, जब 'तरुण गार्ड' के सदस्य सहसा चीजें रगने मे रुचि दिखाने लगे थे, सेर्गेई और वाल्या को परचे बाटने का काम करना था। इस बार यह उनकी चौथी बारी थी। उन्हे ये परचे ग्रीष्म थियेटर मे एक फिल्म-प्रदर्शन मे बाटने थे।

पहले इस ग्रीष्म थियेटर मे लेनिन क्लब हुआ करता था। यह लकडी की एक ऊची और लम्बी इमारत थी जिसमे एक मनहूस-सा आगे को बढा हुआ रगमच था, जो फिल्म दिखाते समय परदे के पीछे छिप जाता था। हाल का फर्श पीछे से आगे की ओर ढालवा होता गया था। फर्श पर बिना रगी हुई बेंचे गडी थी। दर्शक इन्ही बेंचो पर बैठते थे। क्रास्नोदोन पर जर्मनो का अधिकार हो जाने के बाद से वहा जर्मन फिल्मे दिखाई जाने लगी थी जो अधिकाशत युद्ध समाचार सबधी होती थी। कभी कभी दौरा करनेवाली मडलिया भी विविध कार्यक्रम प्रस्तुत करती थी। सीटो पर नम्बर न थे। टिकट का दाम एक ही रहता था। दर्शक जहा चाहे वहां बैठ जाये।

हमेशा की तरह वाल्या, हाल के ऊपरी अर्द्धभाग की ओर, यानी पीछे, चली गयी और सेर्गेई आगे, प्रवेशद्वार के पास ही रह गया। उसके बाद रोशनी गुल होते ही, जब सीटो के लिए अभी भी दर्शक खलबली मचा रहे थे, उन्होने परचे हवा मे फेक दिये जो बिखरकर दर्शको के सिरो के ऊपर गिरने लगे।

शोर-गुल मचाते हुए दर्शक उन परचो पर टूट पडे। सेर्गेई और वाल्या मच से चौथे खभे के पास चले आये। परस्पर मिलने का यह स्थान उन्होने पहले से ही तय कर लिया था। हमेशा की तरह वहा सीटो से अधिक दर्शको की सख्या थी, फलत· जिन्हे सीटे न मिल सकी थी, वे उन लोगो के बीच खडे हो रहे थे जो पहले से ही बगल के रास्ते मे खडे थे। जिस समय प्रोजेक्टर से निकलनेवाली नीली रोशनी परदे पर पडी उस समय सेर्गेई ने वाल्या को केहुनिआया और वाल्या की निगाहे परदे की

बायी ओर लगे हुए एक नाजी झंडे पर टिक गयी। झंडे का रंग गहरा लाल था और उसके बीचोबीच एक सफेद कपडे पर काला स्वस्तिका बना था। झंडा मच पर लटक रहा था और मन्द हवा के झोको से फहरा रहा था।

"मै वहा जाऊगा। जब फिल्म खतम हो जायेगी तो भीड के साथ तुम भी बाहर निकल जाना और बॉक्स-आफिस मे बाते शुरू कर देना। अगर कोई हाल साफ करने के लिए आये तो उसे कोई पाच मिनट तक बातो मे लगाये रखना," सेर्गेई वाल्या के कान मे फुसफुसाया।

उसने बिना उत्तर दिये, सिर हिला दिया।

परदे पर फिल्म का नाम जर्मन मे लिखा था। उसी के बीच सफेद रग के शब्दो मे उसका रूसी शीर्षक था–'लडकी का पहला अनुभव'।

"हम लोग बाद मे तुम्हारे मकान मे मिलेगे," सेर्गेई ने फिर फुसफुसाते और तनिक लजाते हुए कहा।

उसने हामी भरी।

फिल्म के अन्तिम भाग के शुरू होने के कुछ ही पहले जब परदे पर कालिमा दिखाई दी, सेर्गेई वाल्या के पास से हटकर गायब हो गया। इस प्रकार गायब होना अकेला सेर्गेई ही जानता था। वह ऐसा गायब हुआ कि उसका कोई चिह्न तक न दिखाई दिया। बगल मे खडे हुए लोगो मे कही भी कोई हरकत नही हुई। सेर्गेई पलक गिरते गायब कैसे हो गया। वाल्या यह देखने के लिए बडी उत्सुक थी कि वह कैसे यह काम करेगा। धीरे धीरे वह भी, परदे की दाहिनी ओर के छोटे-से दरवाजे पर अपनी निगाहे गडाये, प्रवेशद्वार की ओर बढी। सेर्गेई इस दरवाजे से ही सफाई से दाखल होकर मच तक पहुच सकता था।

खेल खत्म हुआ और लोग शोर मचाते हुए प्रवेशद्वार की ओर बढे। वाल्या को सेर्गेई का कोई सुराग मिले मिले कि इसके पहले ही बत्तिया

जल गयी। वह भीड़ के साथ ही थियेटर से वाहर आ गयी और द्वार के ठीक सामने लगे हुए वृक्षो के नीचे प्रतीक्षा करने लगी।

अधेरे पार्क मे सर्दी भी थी और नमी भी। पेडो पर जो थोडी-सी पत्तियां बच गयी थी वे गीली थी और जब वे हिलती थी तो लगता था मानो कराह रही हो। उस समय हाल मे से आखिरी थोडे-से लोग निकल रहे थे। वाल्या तत्काल बॉक्स-आफ़िस तक दौड़ी दौडी आयी और झुककर, हाल के खुले हुए दरवाज़े से निकलते हुए हल्के प्रकाश मे, जमीन पर कुछ ढूढने लगी।

"आपको चमड़े का कोई छोटा-सा पर्स तो नही मिला?"

"मुझे कैसे मिलता, वेटी? अभी अभी तो लोग वाहर निकले है!" बॉक्स-आफिस की प्रौढ महिला ने उत्तर दिया।

वाल्या झुकी और पैरो से कुचले हुए कीचड मे, इधर-उधर ढूढने लगी।

"यही कही होगा जव मै ठीक यहा पहुची थी तो मैने अपना रूमाल निकाला था और कुछ ही कदम चली थी कि देखा तो मेरा पर्स गायव!"

वह औरत भी पर्स ढूढने मे लग गयी।

इस वीच सेर्गेई मच पर पहुच चुका था–दरवाजे से होकर नही वल्कि आर्केस्ट्रा-पिट के डडहरो पर से चढकर और मच पार कर। झडा उसके ऊपर लगे हुए एक शहतीर पर, एक डडे मे लगा था। वह सारी शक्ति लगाकर झडा गिराने के लिए डडे से लटक गया था। पर वह वडी मजवूती से सधा था। उसने उसे और ऊचाई पर पकडा और अपना पूरा भार डालते हुए हवा मे उछला। झडा नीचे आ गया और सेर्गेई आर्केस्ट्रा-पिट मे गिरते गिरते वचा।

हाल के दरवाज़े वाहर पार्क में खुलते थे। सेर्गेई हाल की मद्धिम रोशनी मे मच पर खडा खडा, वडे आराम के साथ झडे को तह करता

रहा। आख़िर वह इतना छोटा हो गया कि वह उसे अपनी कमीज के नीचे खोस सकता था।

वाहर का पहरेदार प्रोजेक्शन-कक्ष का दरवाजा वंद कर चुकने के वाद अधेरे मे से उस स्थान पर आया जहा हाल से रोशनी निकलकर वाहर पहुच रही थी। वह वाहर आकर टिकट वेचनेवाली, और वाल्या के पास आ खडा हुआ, जो अभी तक पर्स ढूढने मे लगी थी।

"उधर की वत्ती क्यो जल रही है? जानती हो अगर वह खुली रह गयी तो तुम्हारी क्या दशा होगी!" वह क्रोध से चिल्लाया, "उसे वन्द करो! हम अव ताला लगाने जा रहे है"।

वाल्या दौड़ी दौड़ी उसके पास आयी और उसने उसका कोट पकड़ लिया।

"वस, वस, एक सेकड और!" वह गिडगिड़ायी।

"मेरा पर्स खो गया है। वत्ती वुझ जाने पर तो हमे कुछ भी न दिखाई देगा .. वस एक सेकड!" वह कहती गयी और उसने उसकी जैकेट कसकर पकड ली।

"लेकिन अव वह तुम्हे मिलेगा कहा!" पहरेदार ने कहा। वह कुछ पिघल गया था और स्वय भी आंखे घुमा घुमाकर पर्स ढूढने लगा था।

ठीक उसी क्षण, आखो तक टोपी नीची किये हुए एक तोदियल छोकरा खाली थियेटर-हाल से वाहर निकला। उसके वाद वह अपनी दुवली-पतली टागो पर हवा मे उछलता और 'म्याऊ' जैसी करुण ध्वनि करता-हुआ अधेरे मे लापता हो गया।

वाल्या ने पाखड भरे स्वर मे कहा—"मुझे पर्स खो जाने का कितना दुख है!" और उसे इतने जोर से हंसने की इच्छा हुई कि उसने दोनो हाथो से अपना चेहरा ढक लिया और जैसे वुटती हुई-सी, थियेटर से जल्दी जल्दी निकल गयी।

# अध्याय १२

एक वार जब ओलेग ने अपनी मा को सभी कुछ समझा दिया था तो अब उसके रास्ते की सारी बाधाएं दूर हो चुकी थी। अब तो सारा परिवार उसके कामो मे भाग लेता था। उसके सारे सबधी उसके सहायक हो गये थे और उसकी मा सबो की अगुआई करती थी।

उस सोलह साल के छोकरे के दिल मे पुरानी पीढियो के उपयोगी अनुभव, पुस्तको की सीख और अपने सौतेले पिता द्वारा सुनाई जानेवाली कथा-कहानियो के लाभकर अश किस तरह बैठ गये थे यह कोई न जानता था। विशेप रूप से जो सीख उसे उसके अतिसन्निहित परामर्शदाता फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव ने दी थी उसका एक एक शब्द उसके मस्तिप्क पर अकित हो गया था। और ये प्रभाव तथा शिक्षा उसके हृदय मे उन नये अनुभवो के साथ मिलकर एक हो गये थे जो उसे अब अपने काम मे मिल रहे थे। वेशक, उसे और उसके साथियो को पहले-पहल विफलताए मिली थी पर साथ ही उसकी पहली साजिशे कामयाव भी हुई थी। 'तरुण गार्ड' के कामो मे विकास होने के साथ साथ ओलेग का प्रभाव भी अपने साथियो पर अधिकाधिक बढता गया और वह इस तथ्य से भी अधिकाधिक अवगत होता गया।

वह इतना मिलनसार, उत्साही और निष्कपट था कि अपने साथियो पर रोब गाठना या उनकी और उनके विचारो की ओर ध्यान न देना उसके स्वभाव के ही विरुद्ध था। किन्तु वह बराबर यह समझता रहता कि उनके कामो की सफलता इस वात पर निर्भर है कि अपने मित्रो के वीच वह दूरदर्शी है या गल्तिया कर सकता है।

वह वडा ही फुर्तीला, खुश-तबीयत और साथ ही विश्वस्त, सतर्क और कठोर था। जिन वातो का सम्वन्ध अकेले उसी के साथ था उनमे

उसकी स्कूली बच्चे जैसी प्रवृत्ति बराबर झलका करती थी। उसे अकेले जाकर परचे चिपकाना, अनाज के ढेर मे आग लगाना, बन्दूके चुराना या जर्मनो पर छिपकर हमला करना बहुत अच्छा लगता था। वह अपने हर साथी तथा हर बात के लिए जिम्मेदार था और, वह अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह समझता था। अतएव वह अपने ऊपर सयम रखना जानता था।

वह अपने से अधिक उम्र की एक लडकी से अधिक हिला-मिला था। वह बडी ही स्पष्टवादी, निर्भय, मितभाषी और रोमाटिक स्वभाव की लडकी थी। उसके काले काले बाल, छल्लो के रूप मे, उसके मजबूत, सुडौल कधो पर लहराते थे। उसकी बाहे खूबसूरत तथा धूप के कारण सावली थी। उसकी धनुषाकार भौंहों और बड़ी बडी भूरी आखो मे उत्तेजना तथा आवेग की झलक थी। नीना इवान्त्सोवा ओलेग की हर दृष्टि और हाव-भाव का अर्थ समझती थी और उसके सभी निर्देशो का, बिना किसी हिचक के, अक्षरश पालन करती थी।

दोनो परचे तैयार करने, अथवा कोमसोमोल की सदस्यता के अस्थायी कार्ड लिखने अथवा नक्शो का अध्ययन करने मे एक दूसरे के साथ बिना बातचीत किये हुए घटो बिता देते और जरा भी न ऊबते। पर जब उन्हे बातचीत का मौका मिल जाता तो वे अपनी दैनिक दुनिया से बहुत ऊपर आसमान मे विचरा करते—मानव मस्तिष्क की महानता जिस किसी चीज का भी निर्माण कर सकती थी, और साथ ही जो युवको की समझ मे आ सकती थी, वह इन दोनो की कल्पना के समक्ष प्राय कौंध जाती। कभी कभी, और अकारण, दोनो इतने मगन हो जाते कि ठहाका मारकर हस पडते। ओलेग की हसी बच्चो जैसी निर्बाध, निर्द्वन्द्व होती। हसते समय वह प्राय अपनी उंगलियो के पोर मला करता। और नीना की हसी मे पहले तो मृदुता और मधुरता होती और

फिर सहसा स्त्रियो जैसी गूढता और ऐसी रहस्यपूर्णता आ जाती मानो वह कोई चीज उससे छिपा रही हो।

एक दिन उसने नीना को एक कविता सुनानी चाही।

"तुम्हारी अपनी कविता है?" उसने साश्चर्य पूछा।

"तुम सुनो तो "

वह कविता पढने लगा। पहले तो उसकी जबान कुछ कुछ लडखडायी किन्तु कुछ पक्तियो के बाद उसमे रवानी आ गयी।

रानी, आओ, मिलकर गाये गीत युद्ध का—
अरे, नही, मन करो न भारी और न छोडो अपनी हिम्मत—
क्योकि लाल डैनोवाले वे बाज हमारे,
सधे हुए पर-पख तोलते,
फिर आयेगे बीच हमारे और तुम्हारे!
आओ, पख लगाकर आओ—
बधन और बेड़िया काटो, ध्वस्त करो यह काल-कोठरी,
मेरी रानी, कल कि उगेगा सूर्य,
तुम्हारी भीगी पलके अपनी किरनो से पोछेगा,
और, तुम्हारे होठो पर बुन देगा मधुर मधुर मुस्काने!
गीली पलके सूख जायेगी—हमे साथ ही मुक्ति मिलेगी—
औ' हम दोनो यो गायेगे ज्योकि मई पहिली आई हो!
ऐसी स्थिति मे कि नही सन्देह रहेगा कही मनो मे,
हम लेगे प्रतिशोध कि बदला डटकर लेगे—
और, दिवस वह दूर नही है!

"मैंने अभी इसे मुकम्मल नही किया है," एक बार फिर जसे परेशान होकर ओलेग बोला, "अन्त मे हम साथ साथ सेना मे भरती होते है... भरती होगी तुम?"

"तुमने कविता मेरे लिए लिखी है? मेरे लिए लिखी है न?" अपनी चमकती हुई आखो से उसकी ओर देखती हुई वह बोली। "मैंने तुरन्त समझ लिया था कि यह तुम्हारी ही कविता होगी। तुमने मुझे पहले क्यो नही बताया कि तुम कविता लिखते हो?"

"शायद मुझे शर्म आती थी," उसने दांत निकालते हुए कहा। नीना को कविता पसन्द आयी, यह जानकर वह बडा खुश था? "मै बहुत समय से कविता करता रहा हू। मै अपनी कविताए किसी को नही दिखाता। सबसे ज्यादा वान्या मुझे नीचा दिखाता है। जानती हो वह सचमुच अच्छा लिखता है। मेरी कविता तो बस. . मुझे लगता है जैसे मेरी कविता मे मात्राएं ठीक नही रह पाती और काफिया मेरे लिए कठिन होता है।" वह खुश था क्योकि नीना को उसकी पक्तिया अच्छी लगी थी।

वस्तुत. हुआ यह कि जब उसके लिए सबसे अधिक सकट का समय था, उसी समय उसने जीवन के सबसे सुखद काल मे प्रवेश किया, उसी समय उसके यौवन की सभी क्षमताए खिल रही थी।

छ' नवम्बर के दिन, अर्थात, अक्तूबर समारोह के एक दिन पहले कोशेवोई के घर मे 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के सभी सदस्यो और सदेशवाहिकाओ – वाल्या बोर्त्स और नीना तथा ओल्या इवान्त्सोवा – का जमाव हुआ।

ओलेग ने निश्चय किया था कि यह दिन रादिक यूर्किन को कोमसोमोल मे भरती करके मनाया जायेगा।

अब रादिक यूर्किन वह छोटा-सा, शान्त, विनम्र आखोवाला बालक न रह गया था, जिसने जोरा अरुत्युन्यान्त्स से कभी कहा था कि मैं

"जल्दी सोने का आदी हू"। फोमीन की फांसी मे भाग लेने के बाद वह त्युलेनिन के दल का सदस्य वन गया था और रातो मे जर्मन लारियो पर होनेवाले आक्रमणो मे हिस्सा लेता था। वह दरवाजे के पास कुर्सी पर बैठा हुआ खिड़की मे से कमरे के दूसरी ओर देख रहा था। उसे जैसे अपने पर पूरा विश्वास था। ओलेग ने आरम्भिक भाषण दिया जिसके बाद त्युलेनिन ने रादिक के चरित्र पर प्रकाश डाला। कभी कभी वह यह जानने को भी उत्सुक दिखाई दिया कि जो लोग भाग्य का फैसला करेगे वे किस किस्म के लोग है। और वह, अपनी लम्बी लम्बी बरौनियो मे से, खाने की बडी मेज़ के चारो ओर बैठे हुए हेडक्वार्टर के सदस्यो की ओर देखने लगता। मेज ऐसी लगी थी मानो उसपर दावत का इन्तजाम हो। पर तभी दो लडकिया, जिनमे से एक सुनहरे बालोवाली थी और दूसरी काले बालोवाली उसकी ओर देखकर ऐसे मुस्करायी और दोनो देखने मे इतनी सलोनी थी कि सहसा रादिक असामान्य रूप से घबरा गया और उसने अपनी आखे हटा ली।

"क्या किसी को साथी रादिक यूर्किन से कोई प्रश्न करना है?" ओलेग ने जानना चाहा।

किसी को कोई प्रश्न न करना था।

"वह हमे अपना जीवनवृत्त सुनाये," वान्या तुर्केनिच बोला। "हमे अपनी ज... जीवन-कहानी सुनाओ।"

रादिक यूर्किन खडा हो गया और झनझनाती हुई आवाज मे ऐसे कह चला मानो दरजे मे किसी प्रश्न का उत्तर दे रहा हो।

"मै क्रास्नोदोन मे १६२८ मे पैदा हुआ। मै गोर्की स्कूल मे पढने लगा.." और इस वाक्य पर उसकी जीवनकथा समाप्त हो गयी। उसे लगा कि उसके जीवन मे कोई खास बात नही, फिर कुछ कम विश्वास के साथ बोला—

"जब से जर्मन आये है, मै स्कूल नही गया.. "

किसी ने कुछ न कहा।

"तुमने कभी कोई सामाजिक कार्य किया है?" वान्या जेम्नुख़ोव ने पूछा।

"नही," रादिक ने गहरी सास लेकर और बाल सुलभ आवाज मे कहा।

"कोमसोमोल सदस्य के कर्त्तव्यो को जानते हो?" सीग के फ्रेम वाले चश्मे मे से मेज की ओर घूरते हुए वान्या ने प्रश्न किया।

"कोमसोमोल सदस्य का कर्त्तव्य है कि जर्मन फासिस्ट हमलावरो से तब तक लडता रहे जब तक उनमे से एक भी ज़िन्दा न रहे," रादिक ने दो-टूक जवाब दिया।

"मेरा ख्याल है कि छोकरा राजनीति की बाते समझता है," तुर्केनिच ने कहा।

"मेरा प्रस्ताव है कि हम उसे स्वीकार कर ले," ल्यूबा बोली। शायद उसे डर लग रहा था कि स्थिति रादिक यूर्किन के अनुकूल नही है।

"बिलकुल ठीक!" हेडक्वार्टर के अन्य सदस्यो ने कहा।

"तो सभी लोग इस पक्ष मे है कि साथी रादिक यूर्किन को कोमसोमोल का सदस्य बना लिया जाय?" स्वयं हाथ उठाते और एक एक सदस्य की ओर देखकर दात निकालते हुए ओलेग ने कहा।

बाकी सभी लोगो ने भी हाथ उठा दिये।

"सर्वसम्मति से प-पास," ओलेग बोला और कुर्सी से उठकर खडा हो गया। "कृपया इधर आइये।"

रादिक का चेहरा पीला-सा पड गया। तुर्केनिच और ऊल्या ग्रोमोवा ने बड़ी गम्भीरता से उसकी ओर देखा और एक ओर हटकर उसे निकल जाने की जगह दे दी। वह मेज तक चला आया।

"रादिक!" ओलेग ने बडी गम्भीरता के साथ कहना शुरू किया, "'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निर्देश से मैं तुम्हे कोमसोमोल की सदस्यता का अस्थायी कार्ड देता हू। इसकी रक्षा करना अपनी इज्जत की तरह। तुम अपने ही दल मे अपना चन्दा अदा करना। जैसे ही लाल सेना लौटेगी कि कोमसोमोल की जिला कमिटी तुम्हे इस अस्थायी कार्ड के स्थान पर स्थायी कार्ड दे देगी।"

रादिक ने धूप से सवलाया अपना हाथ फैलाया और कार्ड ले लिया। कार्ड उपयुक्त आकार का था और उस किस्म के कार्ट्रिज पेपर मे से वनाया गया था जो नक्शो और प्लानो के लिए काम मे लाया जाता है। कार्ड दुहराकर मोड़ा गया था। वाहर सिरे पर छोटे-वडे टाइपो मे छपा था—"जर्मन हमलावर, मुरदावाद!" और कुछ ही नीचे लिखा था—"अखिल सघीय लेनिन तरुण कम्युनिस्ट लीग!" कुछ और नीचे थोडे और मोटे टाइपो मे छपा था—"कोमसोमोल की सदस्यता का अस्थायी कार्ड"। अन्दर वायी ओर के पन्ने पर रादिक का नाम, कुल-नाम, पिता का नाम और उसका जन्म दिन लिखा था और उसके भी नीचे भरती होने की तारीख· छ नवम्वर १९४२। उसके भी नीचे लिखा था—"क्रास्नोदोन नगर के 'तरुण गार्ड' कोमसोमोल सघटन द्वारा जारी किया गया। सेक्रेटरी. कशूक।" दाहिने पन्ने पर कुछ चौकोर खाने वने थे जिनमे सदस्यता चन्दे का भुगतान दिखाया जाना था।

"मै इसे अपनी जैकेट के अन्दर सी लूगा और तव यह हमेशा मेरे साथ रहेगा, रादिक ने इतने धीरे-से कहा कि उसकी आवाज मुश्किल से ही सुनाई पडी। उसने कार्ड अपनी जैकेट की भीतरी जेव मे रख लिया।

"अव तुम जा सकते हो," ओलेग वोला। और फिर सभी ने रादिक को वधाई दी और उससे हाथ मिलाये।

रादिक यूर्किन वाहर सादोवाया मार्ग पर चला गया। इस समय मेह नही पड रहा था अपितु तेज और ठढी हवा चल रही थी। करीव करीव सध्या हो चुकी थी। उस रात को उसे अक्तूवर क्रान्ति जयन्ती के उपलक्ष्य मे एक खुफिया कार्रवाई मे तीन छोकरो के एक दल का नेतृत्व करना था। घर की ओर जाते हुए उसके मुंह पर दृढता तथा खुशी का भाव था, क्योकि वह जानता था कि उसकी जेव मे कोमसोमोल की सदस्यता का कार्ड रखा है। वह दूसरे लेवेल-क्रॉसिंग आया और ज़िला सोवियत की इमारत से होकर गुज़रते समय, जिसमे फ़िलहाल कृषि कमांडाटुर का दफ़्तर था, उसने अपना निचला जवड़ा दवाया, ओठ अलग अलग किये और ज़ोर से सीटी वजायी सिर्फ इसलिए कि जर्मनो को उसके अस्तित्व का पता चल जाय।

उस रात जयन्ती के सम्मान में होनेवाले महत्त्वपूर्ण कार्य मे अकेले रादिक को ही नही वल्कि करीव करीव सारे संवटन को भाग लेना था।

"भूलना मत। जैसे ही खाली हो जाना, सीधे मेरे यहा चले आना," ओलेग ने कहा, "अकेले पेर्वोमाइस्की वस्ती के साथी न आयें।"

पेर्वोमाइस्की वस्ती के साथियो ने उस रात इवानीखिना के घर में एक समारोह-दावत की योजना वनायी थी।

ओलेग, तुर्केनिच, वान्या ज़ेम्नुखोव और संदेशवाहिकाए—नीना और ओल्या, कमरे मे ही रह गयी। सहसा ओलेग चिन्तित दिखने लगा।

"ल... लडकियो, उठो, च .. चलो... व... वक्त हो गया," उसने उनसे कहा। वह निकोलाई निकोलायेविच के कमरे के दरवाजे तक गया और द्वार खटखटाने लगा "मामी मरीना! व .. वक्त हो गया"।

मरीना रूमाल अपने सिर मे लपेटती हुई कमरे से वाहर निकल

आयी। वह कोट पहने थी। पीछे पीछे मामा कोल्या भी निकल आया। नानी वेरा और येलेना निकोलायेव्ना भी अपने कमरे से निकल आयी।

ओल्या और नीना ने अपने अपने कोट पहने और मरीना के साथ घर से बाहर निकल गयी। उन्हे पास-पडोस की सडको की निगरानी करनी थी।

इस प्रकार की चीज इस समय करना खतरनाक था क्योकि अभी तक लोग अपने अपने घरो मे सोये न थे और रास्ता चल रहा था। किन्तु मौके को हाथ से खोना भी तो वेवकूफी होती?

अंधेरा वढ रहा था। नानी वेरा ने खिडकी पर काला परदा डाला और दिया जला दिया। ओलेग घर से बाहर निकल आया जहा दीवाल के साथ मरीना खड़ी थी। मरीना दीवाल के पास से हट आयी।

"आस-पास कोई भी नही," वह फुसफुसायी।

मामा कोल्या ने झरोखे मे से सिर निकाला, अपने इर्द-गिर्द निगाह डाली और ओलेग को तार का सिरा थमा दिया। ओलेग ने उसे लग्गी के साथ जोडा, फिर लग्गी को हुक के सहारे खभे के पास ही विजली के वडे तार के साथ अटका दिया। लग्गी विलकुल खभे के साथ जुडी थी। अंधेरे मे वह नजर नही आती थी।

ओलेग, तुर्केनिच और वॉन्या ज़ेम्नुखोव मामा कोल्या के कमरे मे डेस्क के इर्द-गिर्द वैठ गये। उनकी पेंसिले तैयार थी। नानी वेरा तनकर वैठ गयी। उसके चेहरे पर ऐसे ऐसे भाव झलक रहे थे जिनकी थाह पाना असम्भव था। येलेना निकोलायेव्ना भी, कुछ आगे झुकी हुई, भोली किन्तु कुछ डरी हुई नानी वेरा के ही पास विस्तर पर वैठी थी। सब की आखे वायरलैस-सेट पर लगी थी।

मामा कोल्या की कुशल और फुर्तीली उगलिया ही शीघ्रता से और विना आवाज किये, अपेक्षित 'वेव लेग्थ' ढूढ सकती थी। उसने

सीधे रेडियो निश्चित जगह पर लगा दिया। जहा क्रान्ति की जयजयकार पुकारी जा रही थी। वायुमडल की गडबड़ी के कारण वह आवाज मुश्किल से ही सुनाई पड रही थी। वह कह रही थी:

"साथियो, आज हम अपने देश मे सोवियत क्रान्ति की विजय की २५ वी जयन्ती मना रहे है। हमारे देश मे सोवियत प्रणाली चालू हुए पच्चीस वर्ष हो चुके है। अब हम सोवियत शासन के २६ वे वर्ष मे प्रवेश कर रहे है "

तुर्केनिच वाह्यत वडा गम्भीर और चुप लग रहा था। और वान्या कागज़ पर इस कदर झुका हुआ था कि उसका चश्मा उसे छू रहा था। परन्तु दोनो ही जल्दी जल्दी उक्त समाचार घसीटे जा रहे थे। यह काम बहुत कठिन न था, क्योकि स्तालिन धीरे धीरे बोल रहा था। कभी कभी वह चुप हो जाता और इन लोगो को गिलास मे पानी उडेले जाने और गिलास नीचे रखे जाने की आवाज सुनाई पडने लगती। कोई चीज लिखने से छूट न जाय इसके लिए पहले-पहल तो उन्हे पूरी सावधानी बरतनी पडी किन्तु वाद मे वे भापण की रवानी से अवगत हो गये। उन्हे वरावर इस वात का आभास हो रहा था कि वे वडी ही असामान्य परिस्थिति मे है, उन्हे यकीन न हो रहा था कि उन्हे यह अनुभव प्राप्त होगा।

यदि आपने टिमटिमाते दिये की रोशनी मे किसी ऐसे कमरे मे, जहां गर्मी की कोई व्यवस्था न हो, अथवा किसी खाई-खन्दक मे, जिसके वाहर शरद के वर्फीले तुफान गरजते हो और सर्वत्र लोगो पर अत्याचार किया जाता हो, उन्हे अपमानित किया जाता हो, ठढ से अकड़ी हुई उगलियो से, अपने देश के अनधिकृत प्रदेश की द्योतक वेव-लेंग्थ पर, गुप्त रेडियो-सेट को नही चलाया है, तो आप उन लोगो की भावनाए नही समझ सकते जो मास्को से आनेवाले इस भाषण को सुन रहे थे।

" .. यह नरभक्षी हिटलर कहता है—'हम रूस को इतना वरबाद कर देंगे कि वह फिर उठ भी न सकेगा'। वह वात तो शायद साफ कहता है पर वात मूर्खों जैसी है।"

इसके तुरन्त ही वाद उन्हे उस वडे हाल से आती हुई हसी की जो गूज सुनाई पड़ी उसने इन सवो के चेहरो पर मुस्कराहट विखेर दी। नानी वेरा को तो अपने मुह पर हाथ तक रख लेना पडा।

"जर्मनी को वरवाद करने का हमारा कोई उद्देश्य नही, क्योकि जर्मनी को वरवाद करना असम्भव है, वैसे ही असम्भव जैसे रूस को वरवाद करना। किन्तु हिटलरी शासन को अवश्य नष्ट किया जा सकता है और नष्ट किया जाना चाहिए। सचमुच हमारा पहला फर्ज यह है कि हम हिटलरी शासन और उसके प्रेरको को नष्ट कर डाले।"

इस भाषण के वाद हाल मे तालियो की जो गडगडाहट हुई उससे इन लोगो की भी इच्छा हुई कि वे भी, शोर मचा मचाकर अपनी अनुभूतिया प्रकट करे, किन्तु वे ऐसा नही कर सकते थे, अतएव वे एक दूसरे की ओर ही देखते रहे।

सोलह साल के वालक से लेकर एक वूढी औरत तक के दिलो मे देशभक्ति की जो भावनाए अगड़ाइया ले रही थी वे अव तथ्य और आकडो की सीधी सरल भाषा में उनके सामने स्वरूप ग्रहण करने लगी थी।

वेशक, इन्ही सीधे-सादे लोगो के भाग्य मे इतने अकथनीय अत्याचार और कष्ट झेलने वदे थे। यह उन्ही की आवाज थी जो सारी दुनिया से कह रही थी।

"हिटलर के वदमाश हमारे देश के अधिकृत प्रदेशो की नागरिक जनसख्या पर हमारे स्त्री-पुरुषो, वच्चो, वूढो हमारे भाई-वहनो पर अत्याचार कर रहे है, उनका वध कर रहे है। सम्मान की भावना से च्युत और पशुओ के स्तर तक गिरे हुए कमीने लोग ही सीधे-सादे और

निहत्थे लोगो पर इतना अमानुषिक अत्याचार कर सकते है ... हम इन अत्याचारो के अपराधियो, 'यूरोप मे नयी व्यवस्था' के निर्माताओ, सभी नये वने गवर्नर-जनरलो, मामूली गवर्नरो, कमाडाटो और उप-कमांडाटो को जानते है। उनके नाम लाखो पीड़ितो की जबान पर है। इन कसाइयो को यह मालूम रहे कि वे अपने अपराधो की जिम्मेदारियो से नही बच सकते और न अत्याचार पीड़ित देश के प्रतिशोध से ही मुक्ति पा सकते है ..."

इन शब्दो मे वोल रहा था उनका प्रतिशोध और उनकी आशा।

ये शब्द वाहर के विराट संसार की उन्मुक्त सास के समान थे जो उनके छोटे-से नगर के वाहर था जिसे दुश्मनो के सैनिको ने अपने पैरो तक, कीचड मे रौंदकर रख दिया था। ये शब्द उनके देश की सिहरन के द्योतक थे और रात मे मास्को के हृदय की वलवती धडकन के। वे उनके कमरे मे प्रवेश करके उनके दिलो मे खुशी का सचार करते थे और उन्हे यह याद दिलाते थे कि वे भी अपने नगर के वाहर वाले ससार का ही अंग है... भाषण का प्रत्येक टोस्ट तालियो की गड़गडाहट मे डूब गया।

"हमारे छापामार नर-नारी अमर हो ! ."

"सुन रहे हो ?" ओलेग बोला। उसकी आखे खुशी से चमक रही थी।

मामा कोल्या ने रेडियो बन्द कर दिया, और कमरे मे भयानक सन्नाटा छा गया। एक ही क्षण मे हवा मे सारे स्वर विलीन हो गये। हा, झरोखे मे से हल्की हल्की-सी सरसराहट जरूर सुनाई पड रही थी। वाहर शरद की वायु सनसना रही थी। अव वे उस थोडे थोडे प्रकाशित कमरे मे अकेले रह गये थे और उनके और उस ससार के वीच, जहा की आवाज उन्हे अभी अभी सुनाई पड़ी थी, यातना की सैकडो मीलो की दूरी विखरी पडी थी।

# अध्याय १३

रात इतनी अधेरी थी कि हाथ को हाथ न सूझता था। सडको पर और सड़को के चौराहो के इर्द-गिर्द ठडी और नम हवा सरसरा रही थी। वह छतो पर हहराती, चिमनियो मे कराहती और तारो तथा तार के खभो पर घरघराती हुई चल रही थी।

अधेरे मे और गहरे कीचड से होकर गेटहाउस तक जाने के लिए आदमी के लिए नगर की उतनी ही जानकारी होनी जरूरी थी जितनी उन्हे थी।

सामान्यत वोरोशीलोवग्राद मार्ग और गोर्की क्लब के बीच की सड़क पर हर रात ड्यूटी वाला पुलिसमैन गश्त लगाया करता था। किन्तु उसने भी प्रत्यक्षत. सर्दी और कीचड से बचने के लिए कही सिर छिपा लिया था।

गेटहाउस पत्थर की एक इमारत थी जो गेटहाउस तो उतनी न लगती जितनी किसी दुर्ग पर बनी हुई कोई युद्धोपयोगी मीनार। नीचे एक छोटा कार्यालय था और एक फाटक जहा से कोयले की खान को रास्ता जाता था। मीनार के दाहिनी और बायी ओर पत्थर की एक ऊची दीवाल-सी चली गयी थी।

चौड़े कन्धोवाला सेर्गेई लेवाशोव और, आग जैसी हल्की, तथा अच्छी मजबूत टागोवाली ल्यूबा, मानो विशेष रूप से उस कार्य के लिए ही बनाये गये थे जो आज उन्हे सम्पन्न करना था। सेर्गेई ने अपना घुटना बढाया और हाथ फला दिये। यद्यपि ल्यूबा इन हाथो को न देख सकी फिर भी उसके छोटे हाथो ने सेर्गेई के हाथ पकड लिये और वह धीरे धीरे मुस्कराने लगी। उसने सेर्गेई के घुटने पर अपने पैर रख दिये—वह पैरो में जूते और उनके ऊपर रबड के खोल पहने थी—और एक ही

क्षण मे उसके कन्धो पर खडी हो गयी और बढ़कर दीवाल का सिरा पकड लिया। सेर्गेई उसके टखनो को मजबूती से पकड़े रहा ताकि वह गिर न पडे। हवा मे उसका घाघरा यो फडक रहा था मानो कोई झण्डा लहरा रहा हो। वह दीवाल के सिरे पर जमी और उसके सारे शरीर का भार उसके मुडे हुए हाथो पर थम गया। बेशक उसके हाथो मे इतनी शक्ति तो न थी कि वह सेर्गेई को खीचकर दीवाल के सिरे तक ले जाती, हा वह दीवाल से इतने कसकर चिपकी हुई थी। सेर्गेई ने उसकी कमर पकडी और दीवाल पर घुटनो की टेक देकर, पहले एक, फिर दूसरा हाथ फेककर दीवाल के सिरे पर चढ गया। ल्यूबा ने उसके लिए जगह बनायी और दूसरे ही क्षण वह उसी की बगल मे बैठा था।

मोटी दीवाल का सिरा ढालू और बहुत गीला तथा फिसलना था, किन्तु सेर्गेई मीनार की दीवाल के सहारे अपना माथा और हाथ टिकाये मजबूती से उस पर खडा हो गया। ल्यूबा उसकी पीठ पर चढकर बडी सरलता से उसके कन्धो पर खडी हो गयी। अब मीनार के कंगूरे उसकी छाती तक आ चुके थे। मीनार के सिरे तक चढ जाना अब उसके लिए मुश्किल न था। हवा उसकी पोशाक और जैकेट को जैसे फाडे दे रही थी और उसे लग रहा था कि किसी भी क्षण वह मीनार से गिरकर नीचे आ जायेगी। किन्तु सबसे कठिन चढाई पूरी हो चुकी थी।

उसने अपनी चोली मे छिपाकर रखा हुआ कपड़े का एक बडल निकाला, मगजी से होकर जानेवाली उसकी डोरी टटोली और बंडल कसकर पकडते हुए कपडा ध्वजदड से बाध दिया। फिर उसने बडल हाथ से छोडा और हवा कपडे को इतनी जोरो से फहराने लगी कि उत्साह से ल्यूबा का दिल जोर जोर से धडकने लगा। उसने एक और छोटा-सा कपड़ा खीचा और उसे ध्वजदड के नीचे बाध दिया, जिससे वह कपड़ा मीनार के नीचे और खान के भीतर लटकने लगा। फिर वह झुकी और

पहले की तरह सेर्गेई की पीठ का सहारा लेकर दीवाल पर उतर आयी। शीघ्र ही वह दीवाल पर बैठ गयी और पैर हिलाने लगी। उसे नीचे कीचड़ में कूदने मे सकोच हो रहा था। इसी बीच सेर्गेई जमीन पर कूदा, उसने दोनो हाथ फैलाये और उससे कूद पडने का अनुरोध करने लगा। वह उसे देख तो न सकती थी, हा उसकी आवाज से उसके खडे होने की जगह का अनुमान भर लगा सकती थी। सहसा उसका दिल जैसे बैठने लगा। उसने अपने हाथ फैलाये, आखे मिचकायी और कूद पडी। वह उसकी बाहो ही मे गिरी। उसने अपनी बाहे भी सेर्गेई के गले मे डाल दी। इस प्रकार कुछ क्षणो तक सेर्गेई उसे अपनी बाहो में पकड़े रहा। किन्तु उसने अपने को छुडाया, जमीन पर कूदी और उसके चेहरे पर सास छोडती हुई उत्तेजित होकर फुसफुसाने लगी

"सेर्गेई! चलो अपना गिटार सभाले?"

"हा, ठीक! और मैं कपडे भी बदलूगा। तुमने मुझपर अपने जूते रख रखकर मेरा तो तमाशा बना दिया," वह खुश होकर बोल उठा।

"नही कपडे बदलने की कोई जरूरत नही! हम जैसे भी है वे हमे उसी हालत मे स्वीकार कर लेगे!" वह खुलकर मुस्करा दी।

वाल्या और सेर्गेई त्युलेनिन को नगर के केन्द्रीय भाग मे काम करना था, जो सबसे खतरनाक क्षेत्र था—जिला सोवियत के भवन और श्रम-केन्द्र मे जर्मन सतरी तैनात किये गये थे। पुलिस का एक सिपाही प्रशासन-कार्यालय के पास पहरा देता था। जर्मन सशस्त्र पुलिस का हेडक्वार्टर पहाडी के ऐन नीचे था। किन्तु अधेरा और हवा दोनो ही उनकी सहायता कर रहे थे। सेर्गेई ने 'पगले रईस' का वीरान घर चुना था और वाल्या उस हिस्से की निगरानी करती रही जो जिला सोवियत के

सामने पडता था। सेर्गेई दरवे को जानवाली जीर्ण-शीर्ण सीढ़ी पर चढ गया। सीढी बहुत पुरानी थी और लगता था, वहा 'पगले रईस' के जीवन काल मे ही रखी गयी थी। सारा काम कुल पन्द्रह मिनट मे हो गया।

वाल्या को सर्दी लग रही थी। उसे खुशी थी कि हर काम इतनी जल्दी हो गया। किन्तु सेर्गेई ने हसते हुए अपना चेहरा उसके चेहरे के पास सटाया और बोला

"मेरे पास एक फालतू झडा है। चलो प्रशासन-कार्यालय पर फहरा दे।"

"वहा पुलिस का सिपाही जो है।"

"आग लगने पर भागने या बुझाने के लिए जो सीढ़ी लगी है, वह भी तो है।"

वस्तुत वह सीढी इमारत के पिछवाडे थी जो मुख्य द्वार से दिखाई नही पडती थी।

"तो चलो चले," वह बोली।

दोनो गहन अधेरे मे उतरकर रेलवे लाइन पर आ गये और बहुत समय तक पटरियो के किनारे किनारे चलते रहे। वाल्या ने सोचा कि वे वेर्ख्नेदुवान्नया के निकट होगे, किन्तु वह गलती पर थी। सेर्गेई अधेरे मे बिल्ली की तरह देख सकता था।

"अब पहुच गये," वह बोला, "बस मेरे पीछे पीछे चली आओ, क्योकि यदि तुम पहाडी के नीचे उतरी तो सीधे पुलिस ट्रेनिग स्कूल मे पहुच जाओगी।"

पार्क मे हहराती हवा पेडो से टकरा रही थी और नगी नगी शाखाए एक दूसरे से सटकर उन दोनो पर पानी की ठडी ठडी बूदे बरसा रही थी। सेर्गेई उसे आनन-फानन, एक के बाद एक कई गलियो से ले

गया, यहा तक कि स्कूल की छत की खड़खड से वाल्या को पता चल गया कि उन्हे दूर नही जाना है।

सेर्गेई लोहे की सीढिया चढ़ने लगा। वह ऊपर चढ़ता जा रहा था और वाल्या उनकी आहट सुन रही थी। आखिर आहट बद हुई और वह लापता हो गया। वाल्या को लगा जैसे सेर्गेई ने वहुत देर लगा दी है। वाल्या आग लगने पर भागने या बुझानेवाली सीढी के नीचे बिलकुल अकेली खड़ी रही... उफ, कितनी भयानक थी यह रात! पत्रहीन शाखाए करुण स्वर मे कराह रही थी। वे सब, याने वह, उसकी मां और ल्यूस्या, इस अंधेरी और भयानक दुनिया मे कितने निरीह, और कितने निर्बल थे! और उसका पिता? कौन जाने, इस समय भी वह कही निराश्रय भटक रहा हो! अंधो की तरह! . वाल्या की आखो के सामने दोनेत्स स्तेपी का अनन्त विस्तार कौंध गया–सारी खानें उड़ा दी गयी थी, छोटे छोटे नगर और गाव वर्षा से सने हुए थे। उनमे रोशनी की कोई व्यवस्था न थी, किन्तु जर्मन सैनिक सभी जगह पहरे पर तैनात थे।.. सहसा वाल्या को लगा कि सेर्गेई उस खडखडाती हुई छत से कभी न उतरेगा। उसकी हिम्मत जैसे उसका साथ छोडने लगी। किन्तु तभी उसे जीना हिलता-डुलता-सा लगा। फलत. तुरत उसके चेहरे पर उसके स्वाभाविक दृढता तथा स्वच्छन्दता के भाव झलक उठे।

"तुम यहां हो न?" वह अंधेरे मे मुस्कुराया।

वाल्या को लगा जैसे सेर्गेई ने उसकी ओर हाथ वढाया है। फलत उसने भी अपना हाथ वढा दिया। सेर्गेई का हाथ वर्फ जैसा ठडा था। उसने क्या क्या मुसीवते न उठायी थी–दुवला-पतला लड़का, वह घटो उन जूतो में चला-फिरा था, जिनमे पहले से ही छेद हो गये थे। जूतो मे शायद पानी भर गया होगा। फिर उसकी वटनहीन, पुरानी और तार तार हुई जैकेट भी उसे कम कष्ट न पहुचा रही थी। वाल्या ने

उसका चेहरा अपने हाथो मे थाम लिया। चेहरा भी बर्फ की तरह ठंडा हो गया था।

"तुम तो जैसे जम ही गये हो," अपने हाथो से उसके गाल दबाती हुई वह बोली।

दोनो कई क्षणो तक वही जडवत् खडे रहे। उनके सिरो के ऊपर नगी शाखाए एक दूसरे को झकझोर रही थी। आखिर सेर्गेई ने फुसफुसाकर कहा .

"आज रात हमको और घूमना-घामना नही है . चलो बाडे मे से निकलकर कही चले जाये "

वाल्या ने उसके चेहरे पर से अपने हाथ हटा लिये। वे पडोस के मकान से होकर ओलेग के घर पहुच गये। सहसा सेर्गेई ने वाल्या का हाथ पकडा और दोनो दीवाल से सट गये। वाल्या की समझ मे कुछ नही आया। उसने अपना कान सेर्गेई के ओठो के पास कर दिया।

"दो व्यक्ति इस ओर आ रहे है। उन्होने हमारी आहट सुन ली है और रुक गये है," वह फुसफुसाया।

"तुम्हारा भ्रम होगा!"

"नही, वे अब भी वही है।"

"तो चलो पीछे अहाते की तरफ चले।"

जैसे ही दोनो मकान की बगल से होकर गुजरे कि सेर्गेई ने उसे फिर पकड लिया– दूसरे दोनो व्यक्ति भी मकान की दूसरी ओर ठीक यही कर रहे थे।

"तुम्हे भ्रम हो रहा है।"

"नही, वे लोग वही है।"

कोशेवोई के घर का दरवाजा खुला, घर से कोई बाहर निकला और जिन दो व्यक्तियो को सेर्गेई और वाल्या चकमा दे रहे थे उन्ही से वह टकरा गया।

"ल्यूबा? तुम अन्दर क्यो नही आती?" येलेना निकोलायेव्ना की पतली-सी आवाज सुनाई पड़ी।

"श-श-ग-श!"

"दोस्त है!" वाल्या का हाथ पकड़ते और उसे अपने साथ खीचते हुए सेर्गेई बोला।

उन्होने अधेरे मे ल्यूबा की हसी सुनी। उसके साथ ही हाथो मे गितार लिये हुए लेवाशोव भी था। अब चारो व्यक्ति हसते हसते, हाथो मे हाथ डाले कोशेवोई के रसोईघर मे पहुच गये। सभी इतने भीगे, कीचड मे सने और प्रसन्न थे कि नानी वेरा, फूलदार आस्तीनो से ढंकी हुई अपनी लम्बी बाहें उठाती हुई चिल्ला पडी.

"हे भगवान! तुम सब थे कहा?"

उस नगर मे जहा पिछले तीन महीनो से जर्मनो का कब्जा हो गया था, गर्मी की व्यवस्था से वचित ठडे कमरे मे, टिमटिमाते दिये की मद्धिम रोशनी मे उस दिन की पार्टी मे इन लोगो को जितना सुख मिला था उतना जिन्दगी मे पहले कभी न मिला था।

किस प्रकार बारहो लोग एक ही सोफे पर सटकर बैठ गये थे, यह सचमुच बडी असाधारण बात थी। सभी एक दूसरे के साथ सटकर बैठे थे, सभी के सिर झुके हुए थे। बारी बारी वे भाषण को जोर जोर से पढ रहे थे। उनके चेहरो पर, जैसे अचेतन रूप से, वही भाव झलक रहा था जिसका अनुभव उनमे से कुछ लोगो को उसी दिन रेडियो के पास बैठे बैठे हुआ था, और बाकी लोगो को रात मे कीचड से होकर गलिया लाघते समय हुआ था। उनके चेहरो पर वह मृदु स्नेह भी झलक उठा था जो उनमे से कुछेक के दिल मे एक दूसरे के प्रति था तथा जिसका असर शेष लोगो मे बिजली के प्रवाह की तरह हो रहा था। उनके हृदय मे वह असाधारण सामूहिक भावना अगडाइया लेने लगी थी जो

युवको के हृदयो मे उस समय जन्म लेती है, जब वे एक साथ किसी महान मानवीय विचार और खासकर उस विचार के सम्पर्क मे आते है, जो क्षणविशेष पर, उनके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण भावनाओ की अभिव्यक्ति करता है। उनके चेहरो पर मैत्री, यौवन और भविष्य मे पूर्ण विश्वास की भावना इतनी अधिक साकार हो उठी थी कि उनकी संगत में स्वय येलेना निकोलायेव्ना तक जवान और खुश दिखने लगी थी। सिर्फ नानी वेरा अपने बादामी हाथ पर अपना चेहरा साधे स्थिर बैठी हुई कुछ भय और सहसा उत्पन्न सहानुभूति के साथ, अपनी अधिक उम्र की बुलदी से इन युवक-युवतियो को निहार रही थी।

भाषण पढ़कर वे युवक, जैसे सोच-विचार मे डूबे हुए, वही चुपचाप बैठे रहे। नानी वेरा के चेहरे पर चतुराई का भाव दौड गया।

"जरा अपनी तरफ देखो!" वह बोली, "ऐसी अद्भुत छुट्टी के दिन भी तुम लोग यो गुम-सुम कैसे बैठे रह सकते हो? जरा मेज़ की तरफ देखो। यहा रखी हुई शराब केवल सजावट के लिए नही है, वह पीने के लिए है।"

"अरे नानी! अगर दुनिया मे सबसे अच्छा कोई है तो वह तुम हो. चलो खाने की मेज़ पर धावा बोल दे। चलो उठो!" ओलेग बोला।

इस समय ज़रूरत इस बात की थी कि लोग बहुत शोर न मचाये। जब कभी कोई तेज आवाज मे बोलता तो सब लोग एक साथ ही 'हुश' कहने लगते और इसमें उन्हे बडा मजा आता। उन्होने बारी बारी से बाहर की निगरानी रखने का निश्चय किया था और जो लड़की या लडका अपने बगलगीर के साथ जरूरत से ज्यादा तकल्लुफ से बाते करने लगता था या बहुत चहकने लगता था उसे निगरानी करने की ड्यूटी पर भेजने मे उन्हे भी बडा मज़ा आता था।

सुनहरे वालोवाला स्त्योपा सफोनोव अपनी सामान्य स्थिति मे किसी भी विपय पर वाते कर सकता था, किन्तु जब उसे शराब की चुस्किया लेने का मौका मिल जाता तो फिर उसके लिए वातचीत का एक ही विषय रहता। इस समय उसकी चित्तीदार चिपटी नाक पर पसीने की वूदे चुहचुहा आयी थी और वह अपने पास बैठी हुई नीना इवान्त्सोवा को फ्लैमिगो पक्षी के वारे मे सव कुछ बताने लगा था। उसे तुरत चुप कराया गया और पहरे की ड्यूटी पर भेज दिया गया। वह ठीक उस समय लौटा था जव मेज को एक ओर हटाया जा रहा था और सेर्गेई लेवाशोव ने अपना गितार उठा लिया था।

सेर्गेई ने वैसे मस्त ढंग से गितार वजाया जैसे रूसी दस्तकार मगन होकर वजाते है। उसका सपूर्ण अस्तित्व और खासकर चेहरे पर का भाव इस वात की सूचना दे रहा था कि वह अपने आस-पास होनेवाली सभी घटनाओ को भूले हुए है—वह नाचनेवालो और दर्शको की ओर नही देखता और न अपने वाजे की ओर ही देखता है। दरअसल उसकी निगाह किसी खास चीज पर नही होती। लेकिन उसकी अगुलिया किसी ऐसी धुन की रचना कर रही होती है कि बरवस लोगो का मन नाचने के लिए मचल उठता है।

सेर्गेई ने गितार उठाया और विदेशी दो-कदम वाली 'वोस्टोन' नामक नाच की धुन वजाने लगा। लडाई से कुछ ही पहले इस धुन का वडा फैशन रहा था। स्त्योपा नीना की ओर दौड़ा और दोनो नाचने लगे। अभिनेत्री ल्यूवा यह विदेशी नाच जरूर सवसे वढिया नाची। पर पुरुषो मे सवसे अच्छा नर्तक सावित हुआ वान्या तुर्केनिच। लम्बा, आकर्षक और वहादुर! वह था असली अफसर। पहले ल्यूवा तुर्केनिच के साथ नाची, तव ओलेग के साथ जो स्कूल मे सर्वोत्तम नर्तको मे से एक समझा जाता था।

स्त्योपा सफोनोव नीना को संभाले रहा। नीना बिलकुल चुप थी—बुत जैसी। स्त्योपा उसके साथ सभी नृत्यों में नाचा और उन्हें पूरे विवरण सहित नर और मादा फ्लैमिंगो के परों में फर्क बताता रहा। उसने यह भी बताया कि मादा फ्लमिंगो कितने अंडे देती है।

सहसा नीना का चेहरा लाल और विकृत हो गया। वह बोली "स्त्योपा, तुम्हारे साथ नाचना भी एक मुसीबत है। एक तो तुम नाटे हो, मेरे पैर कुचलते हो और अपनी वाहियात बातें भी बंद नहीं करते।"

वह उसके आलिंगन से अपने को छुड़ाती हुई भाग गयी।

स्त्योपा नाचने के लिए वाल्या के पास सीधा पहुंचने ही वाला था कि वह तुर्केनिच के साथ नाचने लगी। फिर उसने ओल्गा इवान्त्सोवा को पकड़ लिया। वह शांत और गंभीर स्वभाव की लड़की थी और अपनी बहन से अधिक गुप-चुप। अतः स्त्योपा उसे बेधड़क फ्लैमिंगो की विचित्र आदतों के बारे में समझा सकता था। किन्तु वह यह न भूला कि उसे किसने खिझाया है। फलतः उसकी आंखें बराबर नीना को ढूंढ़ती रहीं। नीना ओलेग के साथ नाच रही थी और ओलेग पूरे विश्वास और धैर्य के साथ उसके गठीले बदन को इधर-उधर घुमा रहा था। नीना के ओठों पर मुस्कान, आंखों में खुशी की चमक और चेहरे पर बेहद आकर्षण था।

नानी वेरा अधिक बर्दाश्त न कर सकी और बोल उठी—"यह कैसा नाच है? इन्हें विदेशी नाच ही सूझते हैं। सेर्गेई, 'गोपाक'* शुरू करो, 'गोपाक'!"

और भौंहें ऊपर उठाये बिना, सेर्गेई ने 'गोपाक' बजाना शुरू कर

*एक उक्रइनी नृत्य है।

दिया। दो ही छलागों मे ओलेग कमरे के एक छोर से दूसरे छोर पर आया और नानी की कमर पकड़ ली। नानी के चेहरे पर घबराहट के कोई चिह्न न दिखाई दिये। वह फर्श को पैरो से पटपटाती हुई, बडी फुर्ती से, उसके साथ नाचने लगी। जिस ढंग से उसके घाघरे की काली मगजी फर्श से एक-दो इंच ऊपर उठकर घूम रही थी, उससे पता चलता था कि नानी भी एक अच्छी नर्तकी थी। उसके नृत्य-कौशल का परिचय उसके पैरो की अपेक्षा उसके हाथो और मुद्रा से अधिक मिल रहा था।

नाच और गान से अधिक ऐसी कोई चीज नही जिससे किसी राष्ट्र के चरित्र का परिचय मिलता हो। ओलेग की भौहो के कापते हुए सिरो पर एक शरारत साकार हो उठी थी, किन्तु मुह या आखो पर उसका कोई आभास न था। उसकी उक्रइनी कमीज के कालर के बटन खुले थे, उसके माथे पर पसीने की बूदे झलक उठी थी, उसका बडा सिर और कधे सन्तुलित और निश्चेष्ट से हो गये थे और वह इतनी फुर्ती और उत्साह से 'गोपाक' नाच मे चौकिया भर रहा था कि उसकी नानी के साथ साथ उसमे भी इस जन्मजात उक्रइनी कला का स्पष्ट परिचय मिल रहा था।

काली आखों और बर्फ जैसे सफेद सुन्दर दातोवाली मरीना उस पार्टी मे एक से एक अच्छे आभूषण पहनकर आयी थी। वह अब अपने पर नियन्त्रण न रख सकी और पैर पटकती हुई तथा हाथ झटकारती हुई, मानो कोई बहुमूल्य चीज गिरा रही हो, ओलेग के इर्द-गिर्द तेजी से नाचने लगी। पर तभी मामा कोल्या ने उसकी कमर पकडी। ओलेग ने फिर नानी की कमर मे हाथ डाला और पैर थपथपाते हुए दोनो जोडे फिर नाचने लगे।

सहसा नानी वेरा सोफे पर लुढकी और रूमाल से अपने लाल चेहरे पर हवा करती हुई चिल्लाकर बोली—"ओह! इसके लिए मेरी पुरानी हड्डिया बेकार है।"

सभी मे जैसे फुर्ती आ गयी और वे तालियां वजाने लगे। अब उन्होने नाचना वद कर दिया था। किन्तु लेवाशोव, अपने आस-पास की दुनिया से बेखबर, लगातार 'गोपाक' वजाये जा रहा था, मानो उसके लिए अन्य किसी चीज का कोई महत्त्व नही। फिर सहसा अतिम गत के वीचोवीच वह रुका और उसकी हथेली ने तारो को छूकर उनकी झनझनाहट वद कर दी।

"उक्रइन ने वाजी मार ही ली," ल्यूवा चिल्लायी। "तो सेर्गेई अव एक हमारी धुन भी हो जाय।"

सेर्गेई ने तारो पर हाथ रखा ही था कि ल्यूवा रूसी नाच नाचने लगी। उसके पैर और एड़िया इतनी ताल-लय के साथ फर्श पर वज रही थी कि किसी का ध्यान उसके पैरो के सिवा, और किसी चीज़ पर जाता ही न था। उसका सिर गर्व से उसके कधो के वीच सीधा तना था। वह सारे फर्श पर नाच रही थी, सेर्गेई त्युलेनिन के सामने ताल-लय पर थिरक रही थी। इसके वाद उसने अन्तिम वार अपने पैर पटके और सेर्गेई को अपने स्थान पर आ जाने का निमत्रण देती हुई पीछे हट गयी।

वाजा वजाते अथवा नाचते समय रूसी दस्तकार के चेहरे पर तटस्थता का जो भाव आता है, ठीक वही भाव चेहरे पर लाते हुए सेर्गेई, ल्यूबा के सामने आया और उसके पुराने और चिप्पी लगे जूते फर्श पर पटपटाने लगे। उसने कमरे का एक चक्कर लगाया, ल्यूवा के पास वापस आया और एड़िया पटपटाते हुए हट गया। ल्यूवा ने अपना रूमाल निकाला और ऐसा लगा मानो वह सेर्गेई के पीछे पीछे हवा मे उड़ रही है। उसकी एडिया पटपटायी और उसने सारे कमरे का गोल गोल चक्कर लगा डाला। उसकी नृत्यकला दिखावटी न थी। वह तो उसके स्थिर और तने हुए सिर और लापरवाही तथा विनोदप्रिय ढग से दर्शको को देखते वक्त उसकी मुद्रा से ही, जिसमे अकेली नाक ही काम करती-

सी लगती थी, प्रगट होती थी। उसके पीछे सेर्गेई फर्श पर आया। उसके पैर भी अपने कौशल का चमत्कार दिखा रहे थे। उसके चेहरे पर तटस्थता का वैसा ही भाव था। उसके हाथ लटक रहे थे, किन्तु फिर भी उनसे उसी प्रवीणता का परिचय मिल रहा था जो उसके पैरो की कुछ कुछ हास्यजनक गति से मिलता था।

ल्यूबा ने गिटार की बढी हुई गति के साथ साथ अपना थिरकना भी तेज कर दिया और सेर्गेई के सामने आने के लिए एक पूरा चक्कर लगा डाला। सेर्गेई इतनी उत्तेजना और अतृप्त प्रेम के उन्माद मे उसके पीछे पीछे नाच रहा था कि जूते पटपटाने के साथ ही उनमे लगे हुए कीचड के टुकडे तक सभी दिशाओ मे उडने लगे।

उसके नृत्य की विशेपता थी उसका ताल-लय सवधी ज्ञान और दिलेरी—वह दिलेरी जिसे वह छिपाये रखता था। और ल्यूबा? वह तो अपने मजवूत और सुघड पैरो से कैसे काम लेती थी, देखनेवाले हैरान रह जाते थे! उसका चेहरा अधिकाधिक लाल होता जाता, उसकी सुनहरी घुघराली लटो मे लहरें-सी उठने लगती, वे उछलती और शुद्ध सोने जैसी दिखाई देती। और जव लोग उसे देखते तो उनकी निगाहे जैसे यह कहती-सी लगती—"वह है हमारी ल्यूबा! वह रही हमारी अभिनेत्री!" अकेला सेर्गेई लेवागोव ही, जो ल्यूबा को प्यार करता था, उसकी ओर पैनी नज़रो से न देखता। वह अव भी अपने इर्द-गिर्द के वातावरण के प्रति तटस्थ था और उसकी मजवूत, कापती उगलिया वरावर गिटार के तारो पर दौड़ रही थी।

सेर्गेई ने विजली जैसी फुर्ती के साथ हाथ फैलाया मानो अपनी टोपी फर्श पर फेक रहा हो और ल्यूबा की ओर वढा। उसने हथेलिया घुटनो और जूतो के तलो पर वरावर ताल-लय के साथ पटपटायी। वह ल्यूबा को दर्शको के वीचोवीच ले गया और अपनी एडियो की अतिम पटापट के

साथ दोनो रुक गये। सभी जी भरकर हंसने और तालियां वजाने लगे। तव सहसा ल्यूवा ने करुण आवाज मे कहा—"यह था हमारा रूसी नृत्य ,

इसके वाद वह विलकुल न नाची वल्कि सेर्गेई लेवाशोव के पास वैठ गयी और अपना छोटा-सा सफेद हाथ उसके कधे पर रखे रही।

उसी दिन, खुफिया जिला पार्टी कमिटी की आज्ञा से 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर ने मोर्चे पर काम करनेवाले लाल सेना के सैनिको के कुछ परिवारो को कुछ आर्थिक सहायता दी थी। इन परिवारो को पैसे की सख्त ज़रूरत थी।

'तरुण गार्ड' की निधि चन्दो से उतनी नही जमा होती थी जितनी सिगरेटो, दियासलाइयो, कपड़ो तथा अन्य वहुत-सी चीजो और खासकर शराव की विक्री से। ये सभी चीज़ें 'तरुण गार्ड' के सदस्य जर्मन लारियो मे से चुरा लाते थे।

वोलोद्या ओस्मूखिन दोपहर के समय अपनी चाची लित्वीनोवा से मिलने आया और उसे प्रचलित सोवियत रूवलो की एक गड्डी पकडा दी। सोवियत रूवल जर्मन मार्क के साथ साथ इस्तेमाल किये जाते थे लेकिन उनकी विनिमय-दर वहुत ही कम थी। "चाची मरूस्या, खुफिया कामो मे लगे हुए लोगो ने आप और कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना के लिए यह रकम भेजी है," उसने चाची मरूस्या से कहा, "त्योहार मनाने के लिए इस पैसे से कुछ चीजे बच्चो के लिए खरीद लेना!"

कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना, लित्वीनोवा की ही भांति, लाल सेना के एक अफसर की पत्नी थी। दोनो पडोसिने थी। दोनो के घरो मे बच्चे थे और दोनो ही वडे कष्ट मे थी—जर्मन उनकी एक एक चीज लूट ले गये थे। उनका अधिकाश फर्नीचर तक लारियो पर ढो ले गये थे।

दोनो स्त्रियो ने इस उत्सव को शाम के समय दावत करके मनाने

का निश्चय किया। उन्होने घर की वनी वोद्का खरीदी और पातगोभी तथा आलू के समोसे वना लिये।

कोई आठ वजे वोलोद्या की मा येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना, वोलोद्या की वहन ल्युद्मीला और अपनी दो वेटियो सहित चाची मरूस्या, कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना के मकान मे जमा हुई। कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना अपने घर मे अपने वच्चो और मा के साथ रहती थी। छोकरो ने वाद मे आने का वादा किया था—उन्होने कहा था कि पहले उन्हे अपने मित्रो से मिलना है। प्रौढा स्त्रियो ने एक दो जाम चढाये और इस वात पर खेद प्रगट किया कि इतना वडा त्योहार इतने गुप्त ढग से मनाना पड रहा है। वच्चो ने धीमी धीमी आवाज मे कई सोवियत गीत गाये और माता-पिताओ ने कुछ आसू वहाये। ल्युद्मीला ऊव रही थी। इसके वाद वच्चो को सोने के लिए भेज दिया गया।

रात मे काफी देर गये जोरा अरुत्युन्यान्त्स आया। वह कीचड़ मे लथ-पथ था और जव वह रोशनी मे आया और खासकर जव उसने देखा कि अभी तक वहा दूसरे छोकरे नही आये है और उसे ल्युद्मीला के पास वैठना पडा है तो उसे वेहद झेप होने लगी। वह इतना वुझा वुझा-सा दिखाई पड रहा था कि ल्युद्मीला ने उसे घर की वनी आधा गिलास वोद्का दी तो वह तुरत चढा गया और फौरन ही नशे मे झूमने लगा। जिस समय तोल्या ओर्लोव और वोलोद्या लौटे, उस समय जोरा इतना गमगीन हो उठा था कि वह अपने साथियो के आने पर भी ठीक नही हुआ।

तोल्या ओर्लोव और वोलोद्या ने भी पी। प्रौढा स्त्रिया अपनी वातचीत मे लगी थी। छोकरे आपस मे जिस ढग से वाते कर रहे थे उससे ल्युद्मीला ने शीघ्र ही समझ लिया था कि वे सिर्फ दोस्तो से मिलने-जुलने ही नही गये थे।

"कहा?" वोलोद्या, 'घर्घरक' तोल्या के और भी आगे झुकता हुआ, जोरा के कान मे फुसफुसाया।

"अस्पताल मे," जोरा ने उदास होकर उत्तर दिया। "और तुम?"

"हमारा स्कूल—वोलोद्या की छोटी और काली आखो मे साहस और चतुराई की एक चिनगारी-सी दिखाई दी और वह जोरा की ओर झुककर उसके कान मे कुछ कहने लगा।

"क्या? यह झूठमूठ तो नही?" जोरा की उदासी एक क्षण के लिए जाती रही।

"नही, सच है," वोलोद्या वोला, "स्कूल के लिए अफसोस है, पर चिन्ता करने से क्या फायदा? हम नया स्कूल वना लेगे।"

"देखो अगर किसी से मिलने का वादा करो तो घर पर ही रहा करो," ल्युद्मीला ने वोलोद्या से कहा। उसे इन गोपनीय वातो मे शामिल नही किया जा रहा था इससे उसे खीझ हो रही थी। "दिन भर तुमसे मिलने के लिए लड़को और लडकियो का ताता लगा रहा। सभी एक ही सवाल करते थे 'वोलोद्या घर पर है? वोलोद्या घर पर है या नही?'"

वोलोद्या हसा और इस प्रश्न को मजाक मे उडा दिया।

'घर्घरक' तोल्या के हाथ-पैर हडीले थे। उसके सिर के वाल खडे थे। सहसा वह अपनी कुर्सी से उठा और वेसुरी आवाज मे वोलने लगा—"महान अक्तूवर क्रान्ति की पच्चीसवी जयन्ती के अवसर पर सभी को मेरी बधाइया"।

उसने ऐसा कहने की हिम्मत वटोर ली थी क्योकि वह नशे मे था। उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था, उसकी आखो मे धूर्त्तता खेल रही थी और वह फीमोच्का नाम की एक लडकी का नाम ले लेकर वोलोद्या को चिढा रहा था।

जोरा की काली आरमीनियाई आंखे अपने सामने की मेज पर जमी

थी। उसने सहसा, विशेष रूप से किसी को भी सबोधित न करते हुए कहा –

"बेशक यह समकालीन नही लेकिन मैं पेचोरिन* को अच्छी तरह समझ सकता हूं . यह हमारे समाज की चेतना के अनुकूल भले ही न हो ... पर कभी कभी उनके साथ इसी तरह व्यवहार करना चाहिए।" वह चुप हो गया और तब उदास होकर बोला – "स्त्रिया"।

ल्युद्मीला जैसे सभी को दिखाती हुई, अपनी कुर्सी से उठी, 'घर्घरक' तोल्या के पास गयी और बडे प्यार से उसका कान चूमती हुई बोली – "प्यारे तोल्या, आज तुम बहुत पी गये हो, है न?"

सामान्यत. स्थिति बड़ी निराशाजनक लग रही थी, अत विशेष फुर्ती और तत्परता से, जो येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना की अपनी विशेपता थी, उसने घोपणा की कि अब घर जाने का समय हो गया है।

घरेलू कामो और बच्चो के कारण चाची मरूस्या को जल्दी उठने की आदत पड गयी थी। उस दिन भी वह भोर हुए उठी, पैरो मे स्लीपर डाले, अपनी पोशाक पहनी और तुरन्त रसोईघर का चूल्हा जला दिया। उसने चूल्हे पर केतली रखी और विचारो मे खोयी हुई उस खिडकी तक आयी जिसके बाहर खाली मैदान था। बायी ओर बच्चो का अस्पताल और वोरोशीलोव स्कूल था और दाहिनी ओर की पहाडी पर ज़िला सोवियत की इमारत और 'पगले रईस' का मकान। सहसा उसके मुह से एक दबी हुई सी चीख़ निकल गयी . नीचे लटकते से आसमान और उसपर भागते हुए बादलो के नीचे वोरोशीलोव स्कूल की छत पर, हवा मे एक लाल

---

*लेरमोन्तोव के 'हमारे युग का नायक' नामक उपन्यास का मुख्य पात्र। इसमे काकेशिया मे १९ वी शताब्दी के रूसी जीवन की एक झाकी प्रस्तुत की गयी है।

झडा लहरा रहा था। उससे हवा इतने जोरो से टकरा रही थी कि वह एक कापते हुए चतुर्भुज जैसा लग रहा था। कभी वह झुक जाता, कभी तन जाता, कभी परतो मे मुड जाता और कभी उसके सिरे खुलते, कभी मुद जाते।

एक इससे भी वडा झडा 'पगले रईस' के मकान पर लहरा रहा था। जर्मन सैनिको और कई नागरिको का एक वडा-सा जत्था, उस मकान से लगी हुई लकडी की एक सीढी के नीचे खडा, झडे को घूर रहा था। दो सैनिक सीढी पर चढ गये थे, जिनमे से एक तो छत तक पहुच गया था और दूसरा उससे कुछ ही नीचे था। वे झडे की ओर देख रहे थे। उन्होने जमीन पर खडे लोगो से कुछ वाते की और फिर झडे की ओर ताकने लगे। न जाने क्यो कोई भी झडे को उतारने के लिए और ऊपर न चढा और झडा पूरी शान से लहराता रहा। झडा नगर की सब से ऊची जगह पर लहरा रहा था।

चाची मरूस्या ने जोश मे अपने स्लीपर फेके, जूते पहने और वेतरतीव वालो पर विना रूमाल लपेटे दौडती हुई, अपने पडोसियो के पास चली गयी।

उसने देखा कि कलेरिया अलेक्सान्द्रोव्ना अपने भीतरी कपडे पहने खिडकी पर झुकी हुई झडो पर निगाह गडाये हुए थी। उसके पैर सूजे हुए थे। उसके चेहरे पर उत्तेजना और उत्साह की झलक थी। उसके धसे हुए गालो पर आसू नजर आ रहे थे।

"मरूस्या!" वह बोली, "मरूस्या! यह काम उन्होने हमारे लिए किया है। हम सोवियत जनता के लिए। वे हमे याद रखते है। हमारे लोग हमे भूले नही हैं। ओह मरूस्या! मै . . इस महान दिवस पर मेरी वधाइया!"

और दोनो एक दूसरे के आलिगन मे वध गयी।

# अध्याय १४

लाल झडे केवल 'पगले रईस' के घर और वोरोशीलोव स्कूल पर ही नही , वल्कि और भी कई इमारतो पर लहरा रहे थे, जैसे – प्रशासन-कार्यालय के ऊपर, उस भवन के ऊपर जिसमे कभी जिला सहकारिता-कार्यालय था, खान न० १२, न० ७–१०, २-वीस और १-वीस खानो के ऊपर और 'पेर्वोमाइका' तथा क्रास्नोदोन खनिक-वस्तियो की सभी खानो पर।

झडो का दर्शन करने के लिए नगर के सभी भागो से लोगो की भीडे उमड़ी चली आ रही थी। इमारतो और खानो के फाटको पर वहुत वडी भीडे जमा हो गयी थी। सिपाही और सशस्त्र जर्मन पुलिस भीड हटाने के लिए भाग-दौड कर रहे थे किन्तु झडे उतारने के लिए कोई आगे न वढता था क्योकि हर झडे के नीचे सफेद कपडे का एक टुकडा लगा था जिसपर लिखा था · "विस्फोटक सुरग"।

एन० सी० ओ० फेनवोग वोरोशीलोव स्कूल की छत पर चढा। उसने देखा कि एक तार झडे से निकलकर एक खिडकी के अधेरे मे चला गया है। और सचमुच उसे अटारी के नीचे एक विस्फोटक सुरग मिली भी थी। और उसे छिपाने के लिए किसी चीज से ढका भी नही गया था।

इन सुरगो के वारे मे क्या कार्रवाई की जाये यह न तो जर्मन सशस्त्र पुलिस का ही कोई कर्मचारी जानता था, न एस० एस० का ही कोई व्यक्ति। हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर ने सफर-मैनो के फौजी दल को मगाने के लिए अपनी कार रोवेन्की मे स्थित जर्मन सशस्त्र पुलिस हेडक्वार्टर मे भेजी थी, किन्तु वहा भी सफर-मैन मौजूद न थे। अत कार को वोरोशीलोवग्राद जाना पडा।

आखिर अपराह्न मे कोई दो बजे वोरोशीलोवग्राद से कुछ सफर-मैन आये और स्कूल की अटारी में रखी विस्फोट सुरग में से फ्यूज हटाया। अन्यत्र कही कोई सुरग न मिली।

अक्तूबर क्रान्ति के सम्मान में क्रास्नोदोन मे फहराये गये लाल झडो की खबर दोनवास के सभी नगरो और गावो मे बिजली की तरह फैल गयी। साथ ही यूजोव्का मे प्रादेशिक फेल्दकमाडाटुर मेजर-जेनरल क्लेर से यह बात भी न छिपी रह सकी कि क्रास्नोदोन की जर्मन सशस्त्र पुलिस ने अपने कार्यो मे कितनी अपमानजनक असावधानी बरती है। फलत: मिस्टर ब्रूक्नेर को आज्ञा दी गयी कि वह खुफिया सघटन के लोगो का पता लगाये और किसी भी दशा मे उन्हे गिरफ्तार करे। साथ ही उससे यह भी कहा गया कि यदि वह ऐसा न कर सका तो उसके कंधो पर लगे चादी के सितारे वापस ले लिये जायेगे और उसका दरजा घटा दिया जायेगा।

मिस्टर ब्रूक्नेर को इस सघटन की कोई भी जानकारी न थी, अत उसने वही व्यवहार किया जैसा कि ऐसी स्थिति मे कोई भी जर्मन सैनिक या गेस्टापो का एजेट करता। उसने एक पकड-जाल—सेर्गेई लेवाशोव ने एक बार इस व्यवस्था को इसी नाम से पुकारा था—बिछाया और सारे नगर और जिले मे दर्जनो निरपराध व्यक्ति गिरफ्तार कर लिये। यद्यपि उसका जाल बडा ही लम्बा-चौडा था, फिर भी वह जिला पार्टी संघटन का, जिसने झडे फहराने के निर्देश निकाले थे, या 'तरुण गार्ड' का एक भी सदस्य न फास सका। जर्मनो के पास यह अनुमान करने का कोई कारण भी न था कि जिस सघटन ने इतना बडा काम किया है उसमे सिर्फ लडके-लडकिया ही थे।

और सचमुच यह अनुमान करना कठिन था क्योकि जिस रात अंधाधुध गिरफ्तारियां हुई थी उस रात खुफिया लड़ाकुओ का अग्रणी स्त्योपा सफोनोव एक ओर सिर लटकाये, पेंसिल चूसते हुए, अपनी डायरी मे यह लिख रहा था

"सेन्का पांच बजे आया। उसने यह कहकर मुझे गोलुब्यात्निकी ज़िले मे अपने मकान मे बुलाया और कहा कि वहा कुछ सुन्दर लडकिया मिल जायेगी। हम लोग वहा गये और काफी देर तक बैठे रहे। दो तीन लडकिया तो अच्छी थी लेकिन वाकी बिलकुल मामूली।"

नवम्बर के उत्तरार्द्ध मे 'तरुण गार्ड' को गावो के सपर्क-व्यक्तियो से सूचना मिली कि जर्मन कोई पन्द्रह सौ मवेशी रोस्तोव क्षेत्र से हाककर पीछे के इलाको की ओर लिये जा रहे है। मवेशियो को कामेन्स्क के निकट एक जगह दोनेत्स पार कर दाहिने तट पर पहुचाया जा चुका था और अब उन्हे नदी और उस बडी सडक के बीच से हकाया जा रहा था जो कामेन्स्क गुन्दोरोव्स्काया की ओर जाती है। दोन के उक्रइनी चरवाहो के अलावा जो चौपायो को हाक रहे थे, मवेशियो के झुड के साथ एक प्रशासनीय टुकड़ी के कोई एक दर्जन जर्मन सैनिक भी थे जो बन्दूको से लैस थे। सैनिक वडी उम्र के थे।

जिस रात यह सूचना मिली थी, उसी रात त्युलेनिन, पेत्रोव और मोश्कोव के दल, बन्दूको और टामी-गनो से लैस होकर उत्तर दोनेत्स मे गिरनेवाली एक छोटी-सी नदी के पास जगली खड्ड मे एकत्र हुए। यहा से वे उस लकडी के पुल को आसानी से देख सकते थे जिसके ऊपर कच्ची सडक नदी को पार करती थी। स्काउटो ने खबर दी कि रात मे सारे मवेशियो को यहा से पाच किलोमीटर की दूरी पर एक जगह अनाज के ढेरो के पास ठहरा दिया गया है और चरवाहो तथा सैनिको ने मवेशियो को खिलाने के लिए अनाज के कुछ गट्ठर खोल दिये है।

उस रात पानी के साथ साथ वर्फ भी पड़ रही थी जो पिघल पिघलकर कीचड का रूप लेती जा रही थी। स्तेपी पार करते समय छोकरो के बूटो पर ढेरो कीचड़ लग गया था। वे एक दूसरे को गर्मी पहुचाने के लिए एक

दूसरे से सट गये थे और मजाक मे यह भी पूछ लेते थे—"यह स्वास्थ्य-केन्द्र तुम्हे कैसा लग रहा है?"

उषा की लाली इतनी वोझिल, मेघाच्छन्न और तन्द्रिल थी और दिन का प्रकाश फैलने मे अभी देर थी मानो वह सोच मे पड गया हो कि—"इस वेतुके मौसम में उठने मे क्या लाभ, क्यो न मै लौट चलूं और एकाध झपकी और ले लू।" परन्तु इन विचारो पर कर्त्तव्य की भावना ने विजय पायी और दोनेत्स की भूमि पर प्रभात का प्रकाश फैल गया। वर्षा, वर्फ और कुहरे के कारण तीन सौ कदम के वाद भी कुछ न दीखता था।

तीनो दलो का कमाडर था तुर्केनिच। उसी की आज्ञा से सभी छोकरे, ठढ से ठिठुरते हुए अपने हाथो मे अपनी अपनी वन्दूके सभाले, नदी के दाहिने तट पर कायदे से जम गये। इसी ओर से जर्मनो को पुल पर आना था।

इस कार्रवाई मे ओलेग भी भाग ले रहा था। वह पुल से कुछ हटकर नदी के छोटे-से मोड के पास छिपकर पड़ रहा। उसके साथ स्तखोविच भी था जो इसलिए साथ लाया गया था कि यह पता चले कि इस प्रकार की कार्रवाइयो मे वह कैसा ठहरता है। हेडक्वार्टर से निकाले जाने के वाद भी उसने 'तरुण गार्ड' की कई कार्रवाइयो मे भाग लेकर एक वार फिर अपनी प्राय पहले जैसी ही धाक जमा दी थी। यह काम कोई कठिन न था क्योकि 'तरुण गार्ड' के सदस्यो की निगाहो मे उसकी धाक यो भी कम नही हुई थी।

मानव प्रकृति की कमजोरी प्राय. उन लोगो मे भी पायी जाती है जो वडे सिद्धान्तवादी होते है। इस कमजोरी के कारण वे किसी व्यक्ति के प्रति अपनी धारणा नही वदलना चाहते, जो उनके स्वभाव, उनके जीवन का अग वन चुकी होती है। उन्हे ऐसा करना वडा वेतुका लगता

है, उन तथ्यो के बावजूद भी, जिनसे यह पता चलता है कि वह व्यक्ति वस्तुत· जैसा लगता है वैसा है नही। ऐसे मौको पर लोग यह कह डालते है, "वह अपने तौर-तरीके ठीक कर लेगा। आखिर हम सभी मे कोई न कोई दोष है ही।"

न केवल 'तरुण गार्ड' के साधारण सदस्य ही, जो स्तख़ोविच के बारे मे कुछ भी न जानते थे, बल्कि वे बहुत-से लोग भी जो 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निकट सम्पर्क मे रहते थे, उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते थे मानो कुछ हुआ ही न हो।

ओलेग और स्तख़ोविच एक छोटी-सी झाडी मे, जमीन पर गिरी पत्तियो पर लेटे हुए सामने के नग्न, आर्द्र और ऊर्मिल भूखड पर आखे गडाये रहे। वे बरसते हुए मेह और गिरती हुई बर्फ के धुधले परदे के उस पार अधिक से अधिक दूरी तक देखने की कोशिश कर ही रहे थे कि सहसा उन्हे सैकडो मवेशियो के रभाने की आवाज सुनाई दी जो बराबर बढती ही गयी। लगता था जैसे शैतान अपना साज बजा रहा है।

"चौपाये प्यासे है," ओलेग धीरे-से बोला, "वे उन्हें नदी मे पानी पिलायेंगे। वही मौका हमारे लिए सबसे ठीक रहेगा।"

"उधर देखो, उधर!" जोश मे आकर स्तख़ोविच फुसफुसाया।

उनके सामने, और बायी ओर, धुध मे से लाल लाल सिर निकलते हुए दिखाई दिये—एक, दो, तीन दस, बीस और फिर अनगिनत। सभी के सिरो पर पतले पतले सीग थे जो सीधे ऊपर की ओर निकले थे। सीगो के नुकीले सिरे एक दूसरे की ओर झुके हुए थे। उनके सिर साधारण गायो जैसे थे, किन्तु सीग रहित गायो के भी कानो के बीच, जहा से सीग फूटते है, एक उठान होता है। लेकिन इन जानवरो के सीग चिकने सिरो के ऊपर सीधे निकले दिखाई पड रहे थे। पृथ्वी के निकट धुध घनी होने के कारण इन जानवरो के शरीर अभी भी दिखाई न दे

रहे थे। जब ये जानवर धुध में से दिखाई दिये तो 'हिमेरा'* जैसे लग रहे थे।

ये सभवत. झुड की अगुआई करनेवाले जानवर न थे बल्कि सबसे बायी ओर के झुड के एक अग थे। पीछे से, और उनके उस पार कही बहुत दूर से, रभाने की तेज आवाज सुनाई पड़ रही थी और ऐसा लग रहा था मानो पशुओ के शरीर, एक दूसरे से रगड़ खाते हुए आगे बढ रहे है और उनके हजारो खुरो की पटपट से जमीन हिल रही है।

ठीक इसी समय ओलेग और स्तखोविच को कही अपने पास ही, सड़क की दाहिनी ओर, जर्मन मे बातचीत सुनाई दी। उनकी आवाज से ही यह समझ मे आ रहा था कि जर्मनो ने अच्छी नीद मारी है और अब बडे खुश है! वे हसी-खुशी अपने रास्ते पर बढ़ रहे थे और उनके बूट कीचड़ में सने हुए थे।

ओलेग और स्तखोविच नीचे झुके झुके उस स्थान पर आ गये जहा दूसरे छोकरे लेटे हुए थे।

तुर्केनिच पुल से अधिक से अधिक दस गज की दूरी पर, मिट्टी के एक टीले के नीचे खडा था। टीला नदी के ऊपर लटका-सा दिखाई पड रहा था। उसकी टामी-गन उसकी बायी बाह पर सधी थी, उसका सिर झुलसी किन्तु गीली घास के डठलो के बाहर निकला था और वह सडक पर, काफी दूर तक झांक झाककर देख रहा था। उसके पैरो पर जेन्या मोश्कोव बैठा था। हल्के लाल लाल बाल, चेहरे पर क्रोध का भाव और गले में लिपटा गुलूबन्द। वह भी हाथ मे टामी-गन लिय पुल पर नजर गडाये था। बाकी लोग ढालवे तट पर एक उतरती हुई सीधी रेखा के रूप

---

*शेर के मुह तथा साप की सी पूछ तथा बकरी के बदन वाला एक कथा कल्पित राक्षस।

में लेटे थे। सबसे आगे सेर्गेई त्युलेनिन और सबसे अन्त मे वीक्तोर था। दोनों ही के पास टामी-गने थी।

ओलेग और स्तख़ोविच, मोश्कोव और सेर्गेई त्युलेनिन के बीच ज़मीन पर पड रहे।

अधेड़ जर्मन सैनिको की निश्चित-सी बातचीत अब ठीक सिर के ऊपर सुनाई पड़ रही थी। तुर्केनिच एक घुटने के बल बैठ गया और अपनी टामी-गन का घोड़ा चढ़ा लिया। मोश्कोव लेट गया, उसने अपने नीचे की रूईदार जैकेट सीधी की और अपनी टामी-गन तैयार कर ली।

ओलेग जैसे बालसुलभ सीधी, सरल दृष्टि से पुल की ओर ताकता रहा। सहसा पुल पर बूटो की पटापट सुनाई दी और कीचड से सने बडे बड़े ओवरकोट पहने, जर्मन सैनिको का एक जत्था पुल पर दिखाई दिया। कुछेक ने लापरवाही से बन्दूके हाथो मे उठा रखी थी, और कुछेक की बन्दूके कन्धो पर से लटक रही थी।

आगे के कुछ सैनिको में लम्बे कद का, और सुनहरे रग की Lands-knecht* मूछोवाला एक लान्स-कार्पोरल दिखाई दिया। वह जब-तब पीछे घूमकर कुछ कहता जा रहा था, ताकि पीछे के लोग उसकी बात सुन ले। उसने अपने इर्द-गिर्द निगाह डाली और तट पर लेटे हुए लड़को की दिशा मे भी अपना सिर घुमाया। उसके साथी सैनिक भी, किसी अपरिचित स्थान से गुजरनेवाले व्यक्तियो की स्वाभाविक उत्सुकता के साथ पुल के दाहिने, बाये नदी की दिशा में देख रहे थे। पर चूकि उन्हे इन इलाको मे किन्ही छापेमारो से सामना हो जाने की आशा न थी, इसलिए उन्हे कोई भी नजर नही आया।

ठीक इसी मौके पर तुर्केनिच ने टामी-गन दाग दी और उसकी धाय धाय बराबर कान के परदे फाड़ती रही। इसके बाद मोश्कोव ने भी

---

*मध्य युग मे भाड़े पर भरती किया जानेवाला सिपाही।

गोलियां बरसायीं और बाकी लोगों ने भी अपनी बन्दूकों से लगातार
गोलाबारी की।

ओलेग ने जैसी कल्पना कर रखी थी, वैसा कुछ भी न हुआ। सारी
घटना इतनी अकस्मात् घटी कि उसे बन्दूक थामने का मौका भी न मिला।
पहले एक सेकंड तक वह सब कुछ बालसुलभ आश्चर्य के साथ देखता रहा,
फिर उसकी अन्तश्चेतना ने भी उसे गोली चलाने को प्रेरित किया। परन्तु
उस समय तक सब कुछ समाप्त हो चुका था। अब पुल पर एक भी
सैनिक नजर न आ रहा था। उनमें से अधिकतर धराशायी हो चुके थे
और दो, जो अभी अभी पुल पर दिखे थे वे सहसा कूदकर दाहिनी सड़क
पर चले गये थे। सेर्गेई और उसके पीछे पीछे मोश्कोव और स्तखोविच ने
किनारे पर कूदकर उन्हें भी गोलियों का निशाना बना दिया।

तुर्केनिच तथा उसके कुछ और साथी कूदकर पुल पर आ गये। एक
जर्मन सैनिक अभी भी तड़प रहा था। उन्होंने उसका भी काम तमाम
किया। फिर वे सभी सैनिकों को, उनकी टांगें पकड़कर घसीटते हुए,
झाडियों मे ले आये ताकि कोई उन्हे सडक पर से न देख सके और उनकी
बन्दूकें उतार लीं। मवेशियों का झुंड दूर दूर तक नदी किनारे फैल गया।
सभी मवेशी नदी मे अपनी प्यास बुझा रहे थे। कुछ के अगले पैर जल
मे थे तो कुछ के चारों पैर। कुछ आगे बढकर नदी के दूसरे किनारे पर
भी चले गये थे। वे अपने नथुने फैलाये हुए जल्दी जल्दी पानी गुटक रहे
थे। उनके मुह से सीं-सीं की ऐसी आवाज निकल रही थी मानो सैकडों
पम्प एकसाथ काम कर रहे हों।

बहुत बडे झुंड में सभी तरह के मवेशी थे—साधारण वाहक मवेशी,
लाल, भूरे, चितकबरे और नीची छाती और मोटे सींगोंवाले बैल जो
देखने में ऐसे लगते थे मानो धातु के ढले हों और अपने मजबूत खुरों पर
जड से गये हों। गाएं भी सभी नस्ल की थीं। दुधार और गाभिन, कुछ

के पटे वढे हुए, थन लाल लाल और फूले हुए क्योकि उन्हे दुहा न गया था। कुछ गाए हल्के रग की थी और देखने मे विचित्र-सी। उनके समतल सिर के ऊपर उनके सीग सीधे निकले थे। वे वाकी झुड से कुछ अलग थी। वहा हालैंड की काली-सफेद गाए और लाल-सफेद चौपाये भी थे जो अपने उजले धब्बो मे इतने शिष्ट लग रहे थे मानो टोपिया और एप्रॉन पहने हुए हो।

चौपाये हाकनेवाले वूढे चरवाहे थे जिनकी आदते धीरे धीरे सरकनेवाले अपने ही पशु-समूहो जैसी पड गयी थी या जो शायद युद्धकाल की विपत्तियो के आदी हो चुके थे क्योकि उन्होने चार कदम पर होनेवाली गोलावारी पर कोई ध्यान न दिया था और वे पानी पीते हुए मवेशियो के पीछे भीगी जमीन पर एक मडल मे वैठे हुए, अपने पाइप सुलगा रहे थे। किन्तु जव उन्होने हथियारवद लोगो को अपनी ओर आते देखा तो उठकर खड़े हो गये।

छोकरो ने अदव से अपनी अपनी टोपिया उठाकर उनका अभिवादन किया।

"नमस्ते, प्यारे साथियो!" एक वूढे ने उत्तर दिया। गठीला वदन, नाटा कद, वाहर की ओर मुडे हुए पैर। शरीर पर एक सूती कमीज और उसके ऊपर भेड की कच्ची खाल की विना आस्तीनोवाली जैकेट। उसके हाथ मे दूसरो की तरह लम्वे लम्वे चावुक के वदले एक गाठदार शिकारी कोडा था जो इस वात का सूचक था कि वह इनका मुखिया था। अपने साथियो को भय से मुक्त करने का प्रयास करते हुए वह उनकी ओर मुडा और वोला—

"डर की कोई वात नही—ये लोग छापेमार है।"

"भले आदमियो, हमे माफ करना," टोपी सिर पर से उठाते और फिर सिर पर रखते हुए ओलेग वोला, "हमने जर्मन पहरेदारो को ठिकाने

लगा दिया है और हमें अब आप लोगों से यह अनुरोध करना है कि आप स्तेपी में इन मवेशियों को खदेड़ने में हमारी सहायता करें ताकि वे जर्मनों के हाथ में न पड़ें।"

कुछ क्षणों तक मौन छाया रहा। तब: "हूंह् ... उन्हें खदेड़ दें।" एक टुइयां-से चुस्त बूढ़े ने कहा, "वे हमारे अपने मवेशी हैं, दोन के इलाके के। हम उन्हें इन विदेशी इलाकों में क्यों खदेड़ दें?"

"अच्छी बात है! तो फिर इन्हें वापस ले जाइये," ओलेग ने दांत निकालते हुए कहा।

"यह तो बिलकुल ठीक है हम अब ऐसा नहीं कर सकते," टुइयां बूढ़े ने सहमत होते हुए कहा।

"अगर हम उन्हें खदेड़ देंगे तो वे हमारे अपने लोगों के हाथों में ही पड़ेंगे।"

"अई-अई-अई, कितने ताकतवर मवेशी हैं ये," सहसा वह टुइयां बूढ़ा बोल उठा। उसकी आवाज़ में खुशी और निराशा दोनों ही झलक रही थीं। उसने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। यह एक ऐसा भाव था जिससे स्पष्ट पता चलता था कि इन बूढ़ों पर क्या बीत रही है। उन्हें इतने बड़े पशु-समूह को अपने वतन से खदेड़कर विदेशी भूमि पर, जर्मन भूमि पर ले जाने के लिए मजबूर किया गया था। छोकरों को मवेशी और बूढ़ों दोनों ही पर दया आ रही थीं, किन्तु वहां एक क्षण भी बरबाद न किया जा सकता था।

"बाबा, मुझे देना तो अपनी चाबुक," ओलेग बोला और चाबुक टुइयां बूढ़े के हाथों से लेता हुआ झुंड की ओर चल दिया।

गाय-बैल छककर पानी पी चुकने के बाद नदी को पार कर उसके दूसरे किनारे पर पहुंच गये। वहां पहले से ही कुछ चौपाये नंगी और गीली ज़मीन पर, अपने नथुने फैलाये हुए, सूखी हुई घास की तलाश

मे घूमने लगे थे। कुछ जानवर अपनी पिछाडी वौछार की ओर किये हुए निराश से खड़े थे या मानो यह सोचते हुए अपने इर्द-गिर्द देख रहे थे, "हमे हाकनेवाले कहा गायव हो गये। अव हमे करना क्या है?"

ओलेग पूरे विश्वास के साथ, मानो इस समय वह पूरी तरह आश्वस्त हो, चुपचाप मवेशियो, के वीच घुसा और ऐसा करते समय कभी किसी जानवर को केहुनियाता रहा, किसी की पीठ या गर्दन थपथपाता रहा, या फिर किसी को कोड़े से सटकारता रहा। उसने नदी पार की और झुड के वीचोवीच चला आया। भेड की खाल की विना आस्तीनवाली जैकेट पहने वूढा भी अपना शिकारी कोडा लिये हुए उसकी मदद को आ गया। उसके पीछे पीछे दूसरे वूढे और छोकरे भी चले आये।

आख़िर कोड़े सटकारते और चीख़ते-चिल्लाते हुए उन्होने सारे झुड को दो हिस्सो मे वाट दिया किन्तु इस काम मे उन्हे वहुत समय लग गया।

"नही, यह ठीक नही," भेड की खाल की जैकेट पहने वूढे ने कहा, "तुम अपनी टामी-गने इन पर चला दो। हमारे लिए तो ये पहले से ही मर चुके है।"

"अई-अई-अई!" ओलेग ने इस तरह आखे मिचकायी मानो उसे वडी वेदना हो रही हो और उसी क्षण उसके चेहरे पर स्वत कठोरता झलक उठी। उसने कधे पर से टामी-गन उतारी और झुड पर गोली चला दी।

कई पशु ज़मीन पर गिर पडे, कई घायल होकर, वुरी तरह दहाडते हुए स्तेपी मे भाग गये। वारूद और ख़ून की महक से लगभग आधे जानवर पखे के आकार मे स्तेपी मे फैल गये और वहा का वातावरण उनके खुरो की पटापट से गूज उठा। सेर्गेई और जेन्या मोष्कोव ने झुड के दूसरे आधे भाग पर भी एक एक राउड गोली चलायी और वे जानवर भी भाग खडे हुए।

छोकरे उनके पीछे दौडे और जब कभी कोई दस-पन्द्रह पशु एक साथ एकत्र होते तो छोकरे उनपर गोली चला देते। सारी स्तेपी मे बन्दूक की धाय धाय, मवेशियो की दहाड़, उनके खुरो की पटापट, कोडो की सटाक और लोगो की चीख़-पुकार गूज उठी। कही किसी दौड़ते बैल को गोली लगती और वह अगले पैर सिकोडता हुआ मुह के बल धम्म से गिर पडता। कही घायल गाये दर्दनाक आवाज मे कहरा रही थी। वे अपने ख़ूबसूरत सिर उठाती और असहायो की तरह गिरा लेती। सारे क्षेत्र पर पशुओ की लाशे बिछ गयी। ये लाशे काली मिट्टी की पृष्ठभूमि मे धुध मे से लाल लाल-सी दिखाई पड़ रही थी।

लडके एक दूसरे से अलग अलग होकर जब अकेले अपने अपने रास्ते पर चल पड़े तो बहुत देर बाद भी उनकी मुलाकात स्तेपी मे इधर-उधर मडराते हुए चौपायो से होती रही।

कुछ समय बाद स्तेपी के आकाश मे धुए का बादल उठता हुआ दिखाई दिया। तुर्केनिच के आदेश का पालन करते हुए सेर्गेई त्युलेनिन ने लकडी के पुल मे आग लगा दी थी। उसके पहले यह पुल जैसे किसी चमत्कारवश नष्ट होने से बच गया था।

ओलेग और तुर्केनिच साथ साथ गये थे।

"तुमने उन गायो पर ध्यान दिया जिनके सीग उनके सिर मे से सीधे निकले हुए थे तथा जिनके सिरे ऊपर जाकर जैसे एक दूसरे का स्पर्श कर रहे थे?" ओलेग ने उत्तेजित होकर पूछा। "वे साल्स्क स्तेपी के पूर्वी भागो की है और हो सकता है, आस्त्रख़ान की हो। ये हिन्दुस्तानी मवेशी है। वे हमारे यहा 'स्वर्ण दल'* के जमाने से आये है।"

---

*तेरहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे पूर्वी यूरोप के अधिकृत क्षेत्रो पर मगोलो द्वारा स्थापित राज्य।

"तुम्हे कैसे मालूम हुआ?" अविश्वास के साथ तुर्केनिच ने पूछा।

"जब मै बच्चा था तो मेरे सौतेले पिता व्यापार करने बाहर दौरे पर जाया करते थे। वह मुझे हमेशा अपने साथ ले जाया करते। उन्हे इन बातो के बारे मे बडा अच्छा ज्ञान था।"

"आज स्तखोविच ने बडी हिम्मत दिखायी है न?" तुर्केनिच बोला।

"हा-आ " ओलेग ने अनिश्चय के साथ उत्तर दिया। "हमारी यात्राए यानी मेरी और मेरे पिता जी की–बडी दिलचस्प हुआ करती थी। जरा सोचो–द्नेप्र, धूप और स्तेपी मे मवेशियो के बडे बडे झुड उस समय कौन सोच सकता था कि मै . हम " ओलेग के माथे पर फिर कुछ सिलवटे पड गयी मानो उसे बडा दुख हो रहा हो। उसने हाथ झटकाकर अपने विचारो को वही छोड दिया और घर पहुचने तक एक शब्द भी न बोला।

## अध्याय १५

चूकि जर्मनो ने धोखा देकर नगरवासियो के पहले जत्थे को जर्मनी भेज दिया था, अत अब सभी इस खतरे से होशियार हो गये थे और श्रम-केन्द्र मे अपना नाम दर्ज कराने से कतराने लगे थे। फलत अब जर्मन, लोगो को सड़को पर अथवा उनके घरो मे पकड लेते, ठीक उसी तरह जिस तरह गुलामी के दिनो मे हवशियो को जगलो मे पकडा जाता था।

वोरोशीलोवग्राद फेल्दकमाडाटुर के विभाग न० ७ द्वारा एक छोटा-सा अखबार निकलता था जिसका नाम था 'नोवे जीता'। उसके प्रत्येक अक मे जर्मनी भेजे गये बच्चो के तथाकथित पत्र अपने माता-पिता के नाम छपते थे। उनमे लिखा रहता था कि वे जर्मनी मे बडी आजादी और सुख से रह रहे है और उन्हे ऊची तनखाहे मिल रही है।

कभी कभी ऐसे युवक-युवतियो के पत्र भी क्रास्नोदोन मे पहुच

जाया करते जिनमे से कुछ पूर्वी प्रशिया में, खेतो में मजदूरों के रूप में अथवा घरेलू कामकाज सबधी निम्न स्तर की नौकरिया कर रहे थे। पत्रो मे सेसर-विभाग का कोई ठप्पा न होता और यद्यपि उनमे अपने रहन-सहन की बाह्य परिस्थितियो की ही चर्चा रहती, फिर भी पढ़नेवाला ऐसी बहुत-सी बातो का अनुमान लगा लेता था जो पत्रों में अनकही छोड दी जाती थी। बहुत-से माता-पिताओ को तो एक भी पत्र नसीब न होता था।

डाकखाने मे काम करनेवाली एक औरत ने ऊल्या को बताया कि सशस्त्र पुलिस कार्यालय का एक रूसी जाननेवाला जर्मन जर्मनी से आनेवाले सभी पत्रो की डाकखाने मे जाच करता है। वह एक के बाद एक पत्र लेता जाता है, उन्हे अपनी मेज की दराज मे बन्द करता जाता है और जब उनकी सख्या बहुत बढ जाती है तो उन्हे जला देता है।

'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के निर्देशो पर चलते हुए, ऊल्या ग्रोमोवा ने वह सब कार्य अपने कधो पर ले लिया था, जो नवयुवको को भरती करने और उन्हे जर्मनी भेजने के विरुद्ध किया जाता था। वह परचे लिख लिखकर बाटती थी, जिन युवको को जर्मनी भेजे जाने का खतरा होता था, उनके लिए नगर मे काम का इन्तज़ाम करती थी, या कभी कभी बीमारी के बहाने उन्हे नताल्या अलेक्सेयेव्ना की सहायता से मुक्त करा देती थी। कभी कभी वह उन लोगो को फार्मों मे पनाह भी दिलाती थी जो श्रम-केन्द्र मे अपने नाम दर्ज कराने के बाद भाग आते थे।

ऊल्या यह सारा काम करती थी, केवल इसलिए नही कि यह काम उसे सौपा गया था बल्कि इसलिए भी कि उसकी आत्मा उसे प्रेरित करती थी—सम्भवत वह वाल्या को दुर्भाग्य से बचा न सकने के लिए अपने को ही अपराधी समझती थी। अपराध की यह चेतना ऊल्या को और भी कचोटती थी क्योकि न तो उसको वाल्या की कोई खबर मिली थी, न वाल्या की मा को ही।

एक दिन, दिसम्बर के शुरू मे, डाकखाने की औरत की सहायता से, पेर्वोमाइस्की बस्ती के छोकरे रात को सेसर की दराज मे से सारे पत्र चुरा ले गये। अब पत्रोंवाला बोरा ऊल्या के सामने पडा था।

सर्दी बढते ही वह अपने घर मे आकर अपने वाकी परिवार के साथ रहने लगी थी। किन्तु 'तरुण गार्ड' के अधिकाश सदस्यो की भाति, उसने अपनी सदस्यता की वात भी अपने संबधियो से गुप्त रखी। उन दिनो, जव ऊल्या के मां-वाप उसकी सुरक्षा के बारे मे चिन्तित हो उठे थे और उसके लिए नौकरी तलाश करने लगे थे, ऊल्या को वडी परेशानी उठानी पड़ी थी। उसकी वीमार माता अपनी काली भयग्रस्त आखो से अपनी वेटी को निहारती और परेशान होकर रोने लगती। और इधर कई वर्षों मे पहली वार ही वूढा मत्वेई मक्सीमोविच अपनी वेटी पर बुरी तरह बरस पडा था। उसका चेहरा और उसकी गजी खोपड़ी तक वैगनी हो उठी थी। उसके हड्डियो के बडे ढाचे और भयानक मुट्ठियो के बावजूद, उसकी गजी खोपड़ी के चारो ओर उगनेवाले छल्लेदार छोटे छोटे वालो मे और अपनी वेटी को प्रभावित न कर सकने की असमर्थता मे जरूर कोई दयनीय वात थी।

ऊल्या ने अपने माता-पिता से साफ साफ कह दिया था कि यदि वे उसे यह कहकर फटकारेगे कि वह उनके लिए एक वोझ है तो वह घर से निकल जायेगी। ऊल्या उनकी दुलारी वेटी थी, अत वे सचमुच वडे परेशान हो उठे थे। यह वात पहली वार स्पष्ट लग रही थी कि मत्वेई मक्सीमोविच का अपनी वेटी पर जैसे कोई अधिकार न रहा और उसकी पत्नी इतनी वीमार रहती थी कि उस अधिकार का प्रयोग करना उसकी शक्ति के वाहर था।

चूकि ऊल्या अपने कार्यों को छिपाती थी, अत वह घर का अपना काम-काज पूरा कर लेने का वरावर ध्यान रखती, और जव कभी वह

काफी देर तक बाहर रहती तो घर आकर यही रोना रोया करती कि अब जिन्दगी इतनी अपमानजनक हो गयी है कि उसे मजबूर होकर अपनी सहेलियो के साथ उठ-बैठकर मन बहलाना पडता है। प्राय. उसकी मा काफी देर तक और बडे दुख के साथ उसकी ओर देखा करती, मानो उसकी आत्मा मे उतरने का प्रयास कर रही हो। उसका पिता तो जैसे ऊल्या से शरमाता और जब ऊल्या मौजूद रहती तो जैसे पिता की जबान ही बंद हो जाती।

अनातोली के घर की स्थिति भिन्न थी। उसका पिता मोर्चे पर चला गया था और इसी लिए अनातोली परिवार का कर्त्ता जैसा बन गया था। उसकी मां ताईस्या प्रोकोफ्येव्ना और उसकी छोटी बहन उसकी योग्यता पर मुग्ध थी; इसलिए घर मे उसकी चलती थी। इस समय ऊल्या अपने सामने पत्रो का बोरा लिये बैठी थी, अपने घर मे नहीं बल्कि अनातोली के घर मे। अनातोली दिन भर के लिए सुखोदोल गया था, वहां उसे लील्या इवानीखिना से मिलना था। अपनी पतली पतली उंगलियो, से वह सेसर द्वारा खोले गये लिफाफो मे से पत्र निकालती, उनपर एक सरसरी निगाह डालती और मेज पर रख देती।

उसकी आंखें तुरन्त नाम, उपनाम और सामान्य अभिवादन के साथ साथ माता-पिता अथवा बहनो के लिए लिखी गयी खबरो पर पड़ जाती। पत्र साधारण थे फिर भी दिल को जैसे छू लेते थे। पत्रो की सख्या इतनी अधिक थी कि उन्हे सरसरी नजर से देखने पर भी बहुत-सा समय लग गया। किन्तु इन पत्रों मे वाल्या का कोई पत्र न था ...

ऊल्या अपनी कुर्सी पर झुकी, हाथ नीचे डाले और चेहरे पर असहायो जैसा भाव लाती हुई, शून्य की ओर ताकने लगी। घर मे सर्वत्र शाति थी। ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना और नन्ही लडकी सोने जा चुकी थी। दिये की टिमटिमाती लौ, ऊल्या की सासो के कारण कभी झिलमिलाकर नीचे

आ जाती तो कभी ऊपर उठती। उसके सिर के ऊपर दीवालघड़ी टिकटिक करती हुई सेकडो की गिनती कर रही थी। लगता जैसे सुई मे जंग लगा हो। ऊल्या की तरह पोपोव परिवार का मकान भी खेतिहरो की वस्ती मे एकाकी-सा था। फलत वचपन से ही ऊल्या मे यह अनुभूति घर कर गयी थी कि उसकी जिन्दगी, जैसे दूसरो की जिन्दगी से अलग, कटी कटी, वीत रही है। यह अनुभूति शरद और जाड़ो की शामो मे विशेप रूप से प्रवल हो उठती थी। पोपोव परिवार का मकान पुख्ता वना था। इस समय वाहर सनसनाती हवा मे सर्दी थी पर उस की आवाज खिड़कियो के वद पल्लो से होकर वहुत हल्की-सी प्रवेश कर पाती थी।

ऊल्या को लग रहा था जैसे इस रहस्यपूर्ण और अरुचिकर ध्वनियोंवाली दुनिया मे वह विलकुल अकेली है और उसका साथ देने के लिए अकेला एक ही झिलमिलाता हुआ दिया है जिसकी लौ उठ रही है और गिर रही है ...

आखिर यह दुनिया इस तरह वनी कैसे कि लोग अपने दिल पूर्णतया दूसरों को नही दे पाते। वचपन से ही उसकी और वाल्या की अनुभूतियो में साम्य रहा है, फिर भी उसने सव कुछ भूल-भुलाकर वाल्या को वचाने का प्रयास क्यो नही किया? वह क्यों उस समय अपने परिवार की दैनिक चिन्ताओ से, उन सव चीज़ो से जिनकी वह अपने जीवन मे अभ्यस्त हो गयी थी, और अपने माता-पिता तथा संगी-साथियो से चिपटी रही? वह उसके पास जाती, उसके आंसू पोंछती और उसे छुडाने का प्रयास करती। किन्तु उसकी अन्तश्चेतना उसे उत्तर देती—"नही, यह संभव न होता, क्योंकि तुमने वाल्या की अपेक्षा, किसी और वड़े लक्ष्य के लिए अपनी ज़िन्दगी लगा दी है। तुमने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्राणो की वाज़ी लगायी है।" पर ऊल्या मन ही मन कहने लगी—"नही, वहाने मत

वनाओ। समय रहते तुमने कुछ नही किया क्योकि तुमने वैसा करने की इच्छा ही अपने दिल मे न आने दी। तुम वैसी ही बनी रही, जैसे बाकी दूसरे है।"

"पर जब मै क्यो नही कर सकती?" ऊल्या ने सोचा। और वह बच्चो के से सपनो मे खो गयी—वह ऐसे ऐसे हिम्मती लोगो को जुटायेगी जो उसके इशारे पर चलेगे। वे अपने रास्ते की सारी बाधाए पार करेगे, जर्मन कमाडाटो को बेवकूफ बनायेगे और वहा, उस भयानक देश मे, वह वाल्या से मिलकर कहेगी—"अपनी शक्ति भर मुझसे जो कुछ हो सकता था वह मैने किया। मैने तुम्हे बचाने के लिए कुछ भी उठा नही रखा और अब तुम मुक्त हो।" काश यह सब संभव हुआ होता! पर यह सभव न था। ऐसे लोग थे भी कहा! वह खुद बहुत कमजोर थी। यह काम कोई मित्र ही कर सकता था—कोई लडका, यदि वाल्या का कोई ऐसा मित्र होता तो!

पर क्या उसका अर्थात् खुद ऊल्या का वैसा कोई मित्र है? यदि वह स्वय वाल्या की जगह होती तो उसके लिए यह सब कौन करता? नही, उसका ऐसा कोई मित्र नही। शायद दुनिया मे ऐसा कोई मित्र नही होता।

तो क्या दुनिया मे ऐसा भी कोई है जिसे वह प्यार करेगी? वह होगा कैसा? वह उसकी कल्पना तो न कर सकी, किन्तु वह रहता उसी के दिल मे था—लम्बा, गठीला, हर दृष्टि से सुन्दर, बहादुर उसकी आखो से दया छलकती थी। उसके दिल मे प्रेम करने की उत्कट आकांक्षा उठी। आंखे बन्द कर लो सब कुछ भूल जाओ और पूरे मन से . . ऊल्या की काली काली आखो मे दिये की झिलमिलाती हुई सुनहरी लौ प्रतिबिम्बित हो रही थी . जो कभी उसकी सुखद अनुभूतियो का आश्रय पाकर चमक उठती, तो कभी उसके दुख से बोझिल होकर धूमिल पड जाती .

सहसा ऊल्या ने एक हल्की-सी कराह सुनी, मानो कोई धीरे-से पुकार रहा हो। वह सिहर उठी और उसके सुन्दर नथुने धीरे धीरे कापने लगे.. किन्तु यह तो अनातोली की ही बहन थी जो नीद मे कराह रही थी। ऊल्या के सामने मेज पर पत्रो का ढेर पड़ा था। लौ से धुआ उठ रहा था। खिडकी के बाहर से हवा की हल्की हल्की सरसराहट सुनाई पड रही थी और घडी का लटकन बराबर सेकडो की गिनती कर रहा था ... टिक, टिक, टिक ...

ऊल्या के गालो पर गुलाबी छा गयी। वह इस लज्जा का कारण स्वयं ही न जानती थी – क्या इसका कारण यह था कि अपने सपने सजोकर उसने अपने कर्त्तव्यो की उपेक्षा की थी? या फिर उसे सपनो मे कुछ और बाते कहनी थी, कुछ ऐसी बाते, जिनपर उसे लज्जा आ सकती थी? उसे अपने ऊपर क्रोध आया और वह पत्रो की जांच बडी सावधानी से करने लगी। वह उन पत्रो को ढूढ रही थी जिनसे काम निकल सकता था।

"काश तुमने उन्हे पढ़ा होता! रोये खडे हो जाते है!" ओलेग और तुर्केनिच का सामना होने पर ऊल्या बोली, "नताल्या अलेक्सेयेव्ना का कहना है कि जर्मनो ने कुल मिलाकर ८०० लोगो को जर्मनी भेजा है। और अन्य १५०० व्यक्तियो की एक गुप्त सूची तैयार की गयी है जिसमें पते वगैरह लिखे हुए है। निश्चय ही बडे पैमाने पर कुछ किया जाना चाहिए अर्थात जब वे हमारे लोगो को लिये जा रहे हों तो उनपर हमला करना चाहिए, या उस बदमाश श्प्रिक को ही मौत के घाट उतार देना चाहिए।"

"हम उसे मार तो सकते हैं, पर वे उसकी जगह फिर किसी न किसी को भेज देगे," ओलेग बोला।

"हमें उस सूची को नष्ट कर डालना चाहिए। यह काम कैसे किया जाये, यह मै जानती हूं – हम पूरे श्रम-केन्द्र को ही जलाकर राख कर

देगे," सहसा वह बोल उठी। उसके चेहरे पर प्रतिकार का भाव साकार हो उठा था।

यह कार्य 'तरुण गार्ड' के दूसरे सभी कार्यों की अपेक्षा सबसे अकल्पनीय था। इसे वीत्या लुक्याचेको की सहायता से त्युलेनिन और ल्यूबा ने पूरा किया था।

हवा मे नमी बहुत पहले ही आ चुकी थी। रात मे पाला पडता और लारियो द्वारा छितरायी मिट्टी के सख्त लोदे और गहरी लीके पूरी तरह जम जाती दोपहर को जब धूप मे गरमी आती तो वे कुछ कुछ पिघलने लगते थे।

मित्रो के मिलने का स्थान लुक्याचेको का साग-सब्जी वाला बगीचा निश्चित हुआ था। वहा से वे रेलवे लाइन के किनारे किनारे और तब सीधे–सड़क को छोडकर, पहाडी के उस पार चले आये। सेर्गेई और वीत्या के पास पेट्रोल का एक टीन और विस्फोटक द्रव्य से भरी हुई कुछ बोतले थी। वे दोनो हथियारों से लैस थे। ल्यूबा के पास सिर्फ एक बोतल शहद और 'नोवे जीता' ('नया जीवन') नामक समाचारपत्र का एक अक था।

रात्रि इतनी नीरव थी कि सुई के गिरने की आवाज तक सुनाई पड़ सकती थी। अगर पैर जोर से पडा या असावधानी के कारण हाथ हिला या पेट्रोल का टीन झनझनाया तो उनकी खैर न थी। अधेरा इतना गहन था कि वहा के स्थानों की अच्छी जानकारी होने के बावजूद, उन्हे कभी कभी यह पता न चल पाता कि वे है कहा। वे एक कदम चलते और कुछ सुनने लगते फिर एक कदम बढते और फिर सुनने लगते।

उन्हे अपनी मज़िल तक पहुचने मे बडा समय लग गया। लग रहा था उनकी मजिल अनन्त दूरी पर है। हा, यह जरूर आश्चर्य की बात है कि जब उन्होने श्रम-केन्द्र के बाहर सतरी के पैरो की आहट सुनी तो

उनका डर कम हो गया। रात मे यह आहट साफ साफ सुनाई पडती और जब सतरी कुछ क्षणो के लिए कुछ सुनने या ड्योढी पर आराम करने के लिए रुक जाता तो फिर सहसा बन्द हो जाती।

इमारत के सामने का लम्बा भाग और उसकी ड्योढी कृषि कमाडाटुर के सामने पडती थी। वे इमारत को तो नही देख सकते थे, हा सतरी के पैरो की आहट से जरूर बता सकते थे कि वे इमारत की बायी ओर पहुंच गये है। वे उसके किनारे किनारे होकर चलने लगे ताकि उसकी पिछली लम्बी दीवाल से होकर इमारत तक पहुच सके। वीत्या लुक्यांचेको इमारत से कोई बीस गज़ की दूरी पर रह गया ताकि शोर और भी कम हो। ल्यूबा और सेर्गेई धीरे धीरे खिड़कियो तक बढ आये। ल्यूबा ने एक खिडकी के शीशे के निचले पल्ले पर शहद लगाया और उसपर अख़बार का कागज चिपका दिया। सेर्गेई पल्ला दबाकर खडा हुआ, शीशा धीरे-से चिटका किन्तु गिरा नही। इसके बाद उसने पूरा शीशा हटा दिया। इस काम के लिए बड़े धैर्य की जरूरत थी। इसी प्रकार उन्होने उसी खिडकी का दूसरा शीशा भी तोड डाला।

तब वे सुस्ताने लगे। सतरी को शायद ठंड लग रही थी। वह ड्योढ़ी पर पैर पटपटा रहा था। उन्हे इन्तजार करना था क्योकि वे डर रहे थे कि ड्योढी से कही वह इमारत के भीतर से आती हुई ल्यूबा के पैरों की आहट न सुन ले। आखिर सतरी फिर टहलने लगा किन्तु इतना अरसा भी उन्हे युग की तरह लम्बा लगा। तब सेर्गेई तनिक झुका और अपने दोनों हाथ कसकर जकड लिये ल्यूबा ने खिड़की का चौखटा पकड़ा, एक पैर सेर्गेई के हाथो पर रखा और दूसरा पैर फेंककर खिड़की के दासे पर। वह भीतरी दीवाल से सधी और पैर फैलाये दासे पर खड़ी रही। उसे बराबर यही लग रहा था जैसे चौखटा उसकी जाघें काट रहा है। किन्तु इन छोटी छोटी बातो पर ध्यान देने का समय न था। आख़िर

उसने पैर नीचे किया और बडी सावधानी से फर्श तक पहुच जाने का प्रयत्न करने लगी। आखिर वह इमारत के भीतर पहुच ही गयी।

सेर्गेई ने उसे पेट्रोल का टीन थमा दिया।

वह बहुत देर तक अन्दर रही। सेर्गेई को भय लग रहा था कि कही वह अधेरे मे किसी कुर्सी या मेज से न टकरा जाये।

अन्ततः जब वह फिर खिडकी पर दिखाई दी तो उसके बदन से पेट्रोल की बू आ रही थी। वह सेर्गेई को देखकर मुस्करायी, उसने अपनी एक टाग खिडकी के दासे के बाहर की, और एक हाथ और सिर बाहर निकाला। सेर्गेई ने उसे बाहो के नीचे से पकड़कर उसे सहारा दिया और ल्यूबा बाहर निकल आयी।

इसके बाद अकेला सेर्गेई खिडकी के पास खडा रहा। उसके नथुनों मे पेट्रोल की तेज़ गन्ध भरती जा रही थी। वह वहा तब तक खडा रहा जब तक उसे यह यकीन न हो गया कि ल्यूबा और वीत्या इतनी दूर निकल गये है कि अब उनपर कोई आच नही आ सकती। तब उसने अपनी कमीज की भीतरी जेब से विस्फोटक द्रव्य वाली बोतल निकाली और खिड़की के भीतर जोर से फेक दी। आग का शोला इतने जोर से भभककर उठा कि क्षण भर के लिए उसकी आखे चौंधिया गयी। उसने बाकी बोतलें नही फेकी किन्तु भागकर पहाड़ी से होकर रेलवे लाइन की ओर दौड़ने लगा।

संतरी चिल्लाया और उसने उसके पीछे गोली दाग दी। सेर्गेई ने अपने सिर से बहुत ऊपर सनसनाती हुई गोली की आवाज सुनी। तब उस पूरे स्थान मे एक विचित्र पीला-सा प्रकाश कौधा और तुरंत अधेरा छा गया। तब सहसा असख्य लपटे एक साथ उठी और वहा दिन का सा प्रकाश हो उठा।

उस रात ऊल्या विना कपड़े उतारे ही सोने चली गयी। वह सभल सभलकर पैर वढाते हुए खिड़की तक जाती ताकि कोई जग न जाय और काले परदे का कोना उठाकर देखने लगती। लेकिन वाहर घुप अधेरा था। उसे सेर्गेई और ल्यूबा की चिन्ता लगी थी। कभी कभी उसे लगता कि यह सब योजना उसने व्यर्थ ही बनायी। धीरे धीरे रात कटती रही। वह वेहद थक गयी थी। उसकी आख लग गयी।

सहसा उसकी आख खुली। वह एक कुर्सी से लड़खडायी और दरवाज़े तक दौड़ गयी। उसकी मा जगी और उसने उनीदी तथा डरी हुई अवाज मे कुछ पूछा; किन्तु ऊल्या विना उत्तर दिये हुए, अपने महीन कपडो मे ही वाहर अहाते मे निकल आयी।

पहाड़ी के उस पार नगर मे लाल लाल प्रकाश फैल रहा था। काफी दूरी पर गोलिया दगने की आवाज़ भी सुनाई पड रही थी। ऊल्या को लगा मानो उसे शोर-गुल भी सुनाई पडा। लपटो के प्रकाश मे, नगर के इस दूरस्थ भाग के मकानो की छते और सायबान भी प्रकाशित हो उठे थे।

लाल लाल प्रकाश देखकर भी ऊल्या को वैसा अनुभव न हुआ जिसकी उसे आशा थी। आकाश की चमक, इमारतो पर पड़नेवाली रोशनी, चीख-पुकार, गोलियो की धाय धाय, और उसकी मा की डरी हुई आवाज ने ऊल्या के दिल मे विपत्ति की एक अस्पष्ट-सी अनुभूति पैदा कर दी थी। उसे ल्यूवा और सेर्गेई के खतरे मे पड जाने की आशका हो रही थी। खास तौर से वह यह सोच रही थी कि इस समय, जब उनके सघटन का सुराग लगाने के सभी सभव प्रयत्न हो रहे थे, इस घटना का सारे सघटन पर न जाने कैसा प्रभाव पड़े। उसे इस वात का भी भय लगा हुआ था कि मजवूरी मे किये जानेवाले इन भयानक और विनाशकारी कार्यो के वीच कही उसे ऐसी किसी चीज़ से हाथ न

धोना पडे जो उच्च कोटि की है, श्रेष्ठ है, दुनिया मे अभी तक जिन्दगी की सासे ले रही है और जिसे वह दिल की धडकन मे महसूस कर रही है। ऊल्या को यह अनुभूति उसके जीवन मे पहली बार हुई थी।

## अध्याय १६

२२ नवम्बर १९४२ को वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के सभी जिलो में दर्जनो गुप्त रेडियो-सेटो पर सोवियत सूचना केन्द्र का 'ताजा समाचार' सुनने को मिला कि सोवियत सेनाओ ने उन दो रेलवे-लाइनों को काट दिया है जिनसे स्तालिनग्राद के जर्मन मोर्चे को सप्लाई मिलती थी और ढेरो कैदियो को गिरफ़्तार कर लिया है। तभी वे तमाम खुफिया कार्रवाइया, जिन्हे इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको धीरे धीरे सघटित और रात-दिन निर्देशित कर रहा था, सहसा सतह पर आ गयी और उन्होने 'नयी व्यवस्था' के खिलाफ कुछ कुछ जन-आन्दोलन का रूप लेना शुरू किया।

प्रतिदिन यही ताजे समाचार मिलते थे कि स्तालिनग्राद मे सोवियत सेनाओं को बराबर सफलताए मिलती जा रही है। इन समाचारो ने प्रत्येक सोवियत नागरिक के मन मे असीम उत्साह भर दिया था। जहा पहले उनके हृदय मे एक धूमिल-सी आशा और इन्तज़ार बना रहता था, अब वहा यह विश्वास पैदा हो गया था कि "वे आ रहे है!"

३० नवम्बर को सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना ने हमेशा की भाति ल्यूतिकोव के घर दूध पहुचाया। फिलीप्प पेत्रोविच ने केन्द्रीय कारखानों मे पहले ही दिन से दैनिक कार्य का जो ढर्रा अपना लिया था उसमे उसने कोई हेर-फेर न किया था। उस दिन सोमवार था। पोलिना गेओर्गियेव्ना ने देखा कि वह अपना वही पुराना सूट पहने है जो धातु

ग्रौर चिकनाई के बराबर सम्पर्क मे ग्राने के कारण चमचमाता रहता था। फिलीप्प पेत्रोविच काम पर जानेवाला था। यह सूट काम के घटो में उसने हमेशा ही पहना था, नगर पर जर्मनो का ग्रधिकार होने के पहले भी। जब वह कारखाने के दफ्तर मे ग्राता तो, हमेशा की भाति ग्रपने सूट के ऊपर नीली 'दुंगरी' पहने रहता। फर्क यही था कि पहले जमाने मे ये 'दुगरी' दफ्तर की ही एक ग्रलमारी मे रहती थी पर इन दिनो वह उसे ग्रपने साथ बडल मे बांधकर, बगल में दबाये घर लाया करता था। इस समय 'दुगरी' रसोईघर मे एक स्टूल पर पडी थी ग्रौर ल्यूतिकोव नाश्ता कर रहा था।

उसने पोलीना गेग्रोर्गियेव्ना का चेहरा देखकर ही समझ लिया था कि वह उसके लिए कोई ग्रच्छा समाचार लायी हे। दोनो साथ साथ ल्यूतिकोव के कमरे मे ग्राये ग्रौर पेलगेया इल्यीनिच्ना के साथ थोडा बहुत हंसी-मजाक भी करते रहे, जो सचमुच जरूरी नही था, क्योकि इन सभी महीनों में, जिनमे वह पेलगेया इल्यीनिच्ना के मकान मे रहा था, पेलगेया इल्यीनिच्ना ने सचमुच कभी यह सकेत भी नही किया था कि वह किसी बात की ग्रोर ध्यान देती रही हे।

"यह बात मैंने खास तौर से तुम्हारे लिए लिखी है. यह कल रात को ही प्रसारित हुई है," उसने बडी उत्तेजना के साथ कहा ग्रौर ग्रपनी चोली के नीचे से कागज का एक पुर्जा निकालकर उसे थमा दिया, जिसपर बारीक लिखावट मे कुछ लिखा हुग्रा था।

पिछले दिन सुबह को वह एक सोवियत सूचना केन्द्र का 'ताजा समाचार' लायी थी। उसमे लिखा था कि बीच के मोर्चे के वेलीकिये लूकी ग्रौर र्‌जेव इलाको पर सोवियत सेनाग्रो ने बडे पैमाने पर ग्राक्रमण किया है। इस समय खबर यह थी कि सोवियत सेनाए दोन के पूर्वी तट पर पहुच गयी है।

कुछ क्षणो तक तो ल्यूतिकोव वड़े ध्यान से कागज के टुकडे की ओर घूरता रहा, फिर अपनी कठोर आखे ऊपर उठायी और बोला—

"Kaputt .. हिटलर Kaputt ..."*

उसने उन्ही शव्दो का प्रयोग किया था, जिनका प्रयोग आत्मसमर्पण करते समय जर्मन सैनिक करते थे। यह उन लोगो का कहना था जिन्हो ने जर्मन सैनिको को आत्मसमर्पण करते देखा था। किन्तु ये शव्द उसने वड़ी गभीरता से कहे और पोलीना गेओर्गियेव्ना को छाती से लगा लिया। पोलीना गेओर्गियेव्ना की आखो मे भी खुशी के आंसू छलक आये थे।

"क्या हम इसकी और प्रतिया वना डाले?" उसने पूछा ।

पिछले कुछ समय से उन्होने परचे निकालना बन्द कर दिया था। उसके वजाय सोवियत सूचना केन्द्र की छपी हुई नोटिसे वाटने लगे थे। सोवियत विमान इन नोटिसो को उनके लिए निश्चित स्थानो पर फेक जाया करते थे। पिछली रात का समाचार इतना महत्त्वपूर्ण था कि ल्यूतिकोव ने उसे परचे के रूप मे छापने का निश्चय किया।

"दोनो समाचारो को एक मे कर दो। हम उन्हे आज रात मे चिपका देगे," उसने कहा। उसने जेव से लाइटर निकाला, एक राखदानी के ऊपर कागज के टुकड़े को जलाया, राख हाथ से मली और खिड़की खोलकर वगीचे मे पीछे की तरफ उड़ा दी। उसके चेहरे पर पालेदार हवा लग रही थी और उसकी आखे सव्जी के वगीचे मे उगती हुई सूरजमुखी और लौकी की पत्तियो पर जमे पाले पर टिकी हुई थी।

"वेहद पाला पड़ा है क्या?" उसने चिन्तित स्वर मे पूछा।

"कल ही के जैसा पाला पड़ा है। गड्ढे जम गये है और वर्फ अभी तक पिघलने का नाम नही ले रही है।"

---

*हिटलर वच नही सकता।

ल्यूतिकोव के माथे पर झुर्रिया पड गयी और वह अपने विचारो मे खोया हुआ क्षण भर खडा रहा। पोलीना गेओर्गियेव्ना आगे के निर्देशो की प्रतीक्षा करती रही किन्तु ल्यूतिकोव को तो जैसे उसकी उपस्थिति का ख्याल ही नही रहा।

"अब मै जा रही हूं," वह धीरे-से बोली।

"हा हा," जैसे वह होश मे आते हुए बोला और इतनी गहरी सास ली कि पोलीना गेओर्गियेव्ना ने सोचा कि शायद ल्यूतिकोव अस्वस्थ है।

सचमुच ल्यूतिकोव अस्वस्थ था। वह गठिया का रोगी था और उसकी सास भी फूलती थी। पर वह तो बहुत जमाने से अस्वस्थ था। परन्तु इस अस्वस्थता के कारण वह अपने विचारो मे नही खो गया था। ल्यूतिकोव जानता था कि उसकी जैसी स्थिति वाले लोगो पर मुसीबत प्राय उन जगहो से आती है, जहा से प्राय उसकी आशा नही की जाती।

खुफिया सघटन के नेता के रूप मे ल्यूतिकोव की स्थिति लाभकर थी, इस माने मे कि जर्मन प्रशासन के साथ उसका कोई सीधा सम्पर्क न था, अत वह बिना उत्तरदायी हुए, उनके खिलाफ कार्रवाइया कर सकता था। जर्मन प्रशासन के प्रति बराकोव जिम्मेदार था। और सिर्फ इसी कारण, उत्पादन पर प्रभाव डालनेवाले हर मामले मे, ल्यूतिकोव के निर्देशो पर, बराकोव यथासभव वही करता था जिससे वह जर्मन प्रशासन और श्रमिको की निगाह मे, जर्मनो का सबसे अधिक भला चाहनेवाला डाइरेक्टर बना रहे। वह सब कुछ करता था, सिर्फ एक बात को छोड़कर—ल्यूतिकोव जर्मनो के खिलाफ जो कुछ करता था, उसे बराकोव नजरअन्दाज़ कर देता था।

बाह्यत. स्थिति कुछ इस प्रकार की थी—उत्साही और योग्य बराकोव हर चीज का निर्माण करने के लिए यथासंभव सभी कुछ करता था, और उसके ये प्रयास सभी लोग देखते थे। और एक नगण्य और

विनम्र ल्यूतिकोव फिर हर चीज चौपट कर देता था और उसके इस काम को कोई न देख पाता था। क्या काम रुक जाता था? नही कुल मिलाकर काम चालू रहता था किन्तु उसकी गति अपेक्षित गति से कम थी। कारण? कारण यही थे—'न मजदूर है, न मशीनें, न औजार, न यातायात। जब कुछ है ही नही तो तोहमत लगाने की गुजाइश ही कहा!'

बराकोव और ल्यूतिकोव के बीच जो श्रमविभाजन था, उसके अनुसार बराकोव बड़ी विनम्रता से प्रशासन से ढेरो आदेश और निर्देश प्राप्त कर चुकने के बाद ल्यूतिकोव को आगाह करता और तब इन आदेशो और निर्देशो को कार्यान्वित करने के लिए पागलो जैसी भाग-दौड करने लगता किन्तु ल्यूतिकोव सबपर पानी फेर देता।

उत्पादन को पूर्व स्थिति पर लाने के लिए बराकोव के सारे प्रयास बिलकुल निष्फल रहते। किन्तु उसके ये प्रयास उसके दूसरे कामो पर परदा डालने के लिए बडे उपयोगी सिद्ध होते—वह क्रास्नोदोन और पास-पड़ोस के जिलो मे से जानेवाली सडको पर तोड-फोड़ के कामो और छापेमारो के आक्रमण जैसे कार्यो का सगठन-कर्त्ता और इन कार्यो को संपन्न करनेवाले व्यक्तियो का नेता था।

वाल्को की मृत्यु के बाद ल्यूतिकोव ने ही नगर और जिले की सभी कोयला-खानो तथा अन्य कारखानों और सबसे अधिक केन्द्रीय बिजली-मेकेनिकल शॉपो मे तोड़-फोड़ के कामो का सगठन किया था क्योकि अन्य किसी चीज की अपेक्षा, इन्ही पर, खानो तथा अन्य कारखानो की साधन-सामग्री का पुनरुद्धार निर्भर करता था।

ज़िले भर में कारखानो की सख्या बहुत अधिक थी। बेशक ऐसे लोगो की बहुत कमी थी जिनपर जर्मन प्रशासन को भरोसा हो सकता था, फलत उनपर जर्मन प्रशासन का कोई प्रभावकर नियत्रण न था।

सभी जगह, लोग काम से टाल-मटूल करते थे और वहा ऐसे लोग भी थे जो स्वत और अपनी पहलकदमी से काम टालनेवालो के नेता बने हुए थे।

मसलन निकोलाई निकोलायेविच का दोस्त वीक्तोर विस्त्रीनोव प्रशासन-कार्यालय मे एक ऐसे पद पर काम करता था जो मुनीम या क्लर्क के पद जैसा था। वह स्वय प्रशासन-कार्यालय मे कुछ भी न करता था। इसके अलावा उसने उन लोगो का एक दल भी बना लिया था जो खानो मे कुछ न करते थे प्रशिक्षण और पेशे से इंजीनियर होने के कारण उसने उन्हे सिखा रखा था कि खानो मे वाकी लोग भी कुछ न करे इसके लिए उन्हे कौन कौन-सी तिकडमे करनी चाहिए।

पिछले कुछ समय से बूढा कोन्द्रातोविच भी उससे मिलने आने लगा था। अपने साथियो—शेव्त्सोव, वाल्को और शुल्गा—की मौत के वाद से बूढा, नगी पहाडी पर खडे किसी एकाकी बलूत वृक्ष की भाति अकेला रह गया था। वूढे को यकीन था कि जर्मनो ने उसे इसी लिए नही छुआ था कि उसका वेटा वियर और अन्य शरावे वेचता था और पुलिस वालो, तथा सशस्त्र पुलिस मे अन्य छोटे छोटे पदो पर काम करनेवालो से उसकी अच्छी छनती थी।

एक दिन वेटे ने भी—जो स्वभावत. झूठ वोलने का आदी था—यह साफ साफ स्वीकार किया था कि खुद उसके लिए भी जर्मन शासन सोवियत शासन की अपेक्षा कम लाभकर है।

"लोग वेहद गरीव हो चुके है। किसी के पास पैसा नही रहा।" उसने दुखभरी आवाज मे यह स्वीकार किया था।

"जरा इन्तज़ार करो। मोर्चे से तुम्हारे भाई घर लौटेगे। तव तुम्हे आटे—दाल का भाव मालूम होगा," वूढे ने अपनी धीर, गभीर और रूखी आवाज में उत्तर दिया था।

अब भी कोन्द्रातोविच कोई कार्य न कर रहा था और दिन-ब-दिन छोटी छोटी खानो और खान-मजदूरो के घरो के चक्कर लगाया करता था। जर्मन प्रशासन खानो मे कैसी कैसी गलतिया, मूर्खता या गन्दे काम कर रहा था, इन सबका तो वह एक कोप ही था। बूढा एक घिसा हुआ और अनुभवी श्रमिक था। वह जर्मन प्रशासको से घृणा करता था और जितना ही उसका यह विश्वास दृढ होता जाता था कि जर्मन निकम्मे प्रशासक है उतनी ही उनके प्रति उसकी घृणा बढती जाती थी।

"तुम लोग युवा इजीनियर हो! तुम लोग तो खुद ही समझ सकते हो," उसने विस्त्रीनोव और मामा कोल्या से कहा। "हर चीज उनकी मुट्ठी मे है, पर उन्हे मिलता क्या है? सारे जिले से प्रतिदिन दो टन! तुम बता सकते हो कि यह पूजीवाद है, जबकि हम अपने लिए काम करने के आदी थे। पर उनके पीछे डेढ सौ वर्षों का अनुभव है। हमारा अनुभव तो कुल पच्चीस साल का है। उनको कुछ न कुछ ट्रेनिग मिली होगी। वे तो व्यवस्थापको और धन लगानेवालो के रूप मे दुनिया भर मे मशहूर है। वे दुनिया भर मे डकैती करते है। मै तो यही कहूगा कि उन्हे देखकर घिन उठती है!" बूढे ने अपनी बडी ही गभीर आवाज मे कहा और ज़मीन पर थूक दिया।

"ओछे लोग है। अपनी बीसवी शताब्दी की डकैतियो से कुछ भी तो उनके हाथ न लगेगा—१९१४ मे उन्हे मुह की खानी पड़ी थी और इस बार भी खानी पड़ेगी। वे हमेशा हथियाने के चक्कर मे ही रहते है, पर रचनात्मक कल्पना उन्हे छू तक नही गयी है। ओछे लोग है, अपनी दो दिन की कामयाबी पर इठला रहे है. उद्योगो का संचालन करने मे उन्हे कोई सफलता नही मिली। सारी दुनिया इसे देख सकती है!" विस्त्रीनोव ने घृणा से नाक चढाते हुए हंसकर कहा।

बूढा श्रमिक और दोनो युवक इजीनियर प्रतिदिन बिना किसी ख़ास

प्रयास के ऐसी ऐसी योजनाए बनाते कि कोयला प्राप्त करने के लिए श्वैदे जो थोड़ा-बहुत प्रयत्न करता भी था वह भी विफल हो जाता था।

इस प्रकार के बीसियों लोगो के प्रयासों से खुफिया जिला पार्टी कमिटी के प्रयासो को योग मिलता था।

कारखाने के जिन विभागो मे ल्यूतिकोव स्वयं काम करता था उनमे उसके लिए ऐसे ऐसे काम करना कठिन भी था और खतरनाक भी। उसने यह कायदा बना रखा था—वह छोटे छोटे आर्डरो से सम्बन्धित उन सभी निर्देशो का पूर्णतया पालन करेगा जिनका उत्पादन-प्रक्रिया मे कोई निश्चित महत्त्व न होगा। हा, बड़े बड़े आर्डरो को पूरा करने मे वह ज़रूर ढील डालेगा। जब से वे जर्मन प्रशासन के अधीन काम करने लगे थे तभी से बहुत-सी बडी बडी खानो की ढेरो प्रेसिग और पम्पिंग मशीनो की मरम्मत होती रही किन्तु न तो अभी तक उनकी मरम्मत ही हो सकी, न उन्हे उनकी पूर्वस्थिति मे ही लाया जा सका।

फिर भी डाइरेक्टर बराकोव को ऐसी स्थिति मे नही डाला जा सकता था कि उसके सभी उपाय निष्फल ही सिद्ध होते। इसी दृष्टि से कुछ काम पूरे, या करीब करीब पूरे कर लिये गये थे लेकिन किसी भी अप्रत्याशित टूट-फूट से सारी की सारी मशीन ठप्प हो जाती थी। मसलन अगर बालू के थोडे-से कण किसी बिजली के मोटर मे डाल दिये जाय तो मोटर ठप्प हो जायेगा। इधर इसकी मरम्मत होगी, उधर इजन बेकार हो जायेगा—बस, सिलेडर ज़रूरत से ज्यादा गर्म होता रहे और ऊपर से ठडा पानी चालू कर दिया जाय। ये छोटे छोटे काम करने के लिए ल्यूतिकोव के आदमी सभी विभागो मे मौजूद थे। औपचारिक रूप से ये लोग अपने ही विभाग के फोरमैनो की मातहती मे थे किन्तु वस्तुत. वे करते वही थे जो ल्यूतिकोव करने को कहता था।

पिछले कुछ समय से बराकोव ने ऐसे बहुत-से लोगो को काम पर

लगा रखा था जो पहले फौज मे थे। लाल सेना के दो अफसर लुहार की शॉप मे हथौडा चलाते थे। दोनो ही कम्युनिस्ट थे। वे रात मे छापेमारो के जत्थो के कमाडर बनकर सडको पर होनेवाले तोड-फोड के ढेरो कामो मे भाग लेते थे। बहुत-से लोग काम पर नही जाते थे क्योकि उन्हे दूसरे जिलो के कारखानो से औजार और सामान लाने के बहाने भेज दिया जाता हालाकि उनका वहा भेजा जाना आवश्यक न होता था। उनके साथ साथ उन लोगो को भी भेजा जाता था जो खुफिया सघटन मे नही होते थे ताकि लोगो को शक न हो। इस प्रकार श्रमिको को यह यकीन हो जाता कि औजार या सामान प्राप्त करना असभव है और प्रशासन को यह विश्वास हो जाता कि डाइरेक्टर और विभाग के फोरमैन यथाशक्ति सब कुछ कर रहे है। इस प्रकार काम मे कोई प्रगति न होती और साथ ही इस विफलता के लिए एक वैध कारण भी मिल जाता।

कारखाने, क्रास्नोदोन खुफिया सघटन के केन्द्र हो रहे थे। ऐसी ऐसी शक्तिया एक ही स्थान पर केन्द्रित हो रही थी जिन्हे कोई जानता तक न था। ये शक्तिया किसी भी समय उपलब्ध हो सकती थी। उनसे सम्पर्क बनाये रखना आसान भी था और सुगम थी। लेकिन इसमे खतरे भी थे।

बराकोव पूरी हिम्मत, आत्मनियत्रण और सुव्यवस्थित तरीके से काम करता था। सैनिक और इजीनियर होने के नाते वह ब्योरो पर बहुत ध्यान देता था।

"जानते हो मैंने हर चीज की व्यवस्था ऊपर से नीचे तक कर ली है," किसी मौके पर बराकोव ने ल्यूतिकोव से कहा, "और हम यह क्यो मान ले कि हम उनसे ज्यादा मूर्ख है," वह बोला। "इसी लिए, अधिक होशियार होने के कारण हम उन्हे मुह की खिलायेगे। निश्चय ही ऐसा करेंगे।"

फिलीप्प पेत्रोविच सिर झुकाकर बैठ गया जिससे उसका चेहरा और भी उतरा हुआ सा लगने लगा। यह इस बात की निशानी थी कि वह किसी बात से नाराज था।

"तुम यह सब बड़ा आसान समझते हो," वह बोला, "ये लोग जर्मन है, फासिस्ट है। हा, वे तुमसे ज्यादा न तो होशियार ही है, न योग्य ही, पर उन्हे इसकी चिन्ता नही रहती कि तुम ठीक कहते हो या गलत। जब वे देखेगे कि सब कुछ चौपट हो रहा है तो बिना सोचे-विचारे तुम्हारी गर्दन मरोड देगे। तब तुम्हारी जगह पर वे किसी शैतान को बिठा देगे जिसके माने यह होगे कि या तो हम सब का खात्मा हो जायेगा या हमे भागना पडेगा। और हमे भागने का अधिकार नही है। नही, मेरे दोस्त हम तलवार की धार पर चल रहे है। हो सकता है कि तुम पहले से ही सावधानी बरतते हो, पर अब तुम्हे तिगुनी सावधानी बरतनी होगी।"

जिस समय ल्यूतिकोव कमरे के अधकार मे करवटे बदल रहा था, उस समय उसके दिमाग मे यही सब विचार घूम रहे थे। नीद ने तो जैसे उसकी आखो मे प्रवेश करने से इन्कार ही कर दिया था। वह प्राय यह भी सोचा करता था कि समय बीतता जा रहा है.

जैसे ही जैसे आर्डर पूरा करने मे विलब होता गया और टेक्नीकल दोष, टूट-फूट और दुर्घटनाओ की सख्या बढती गयी, वैसे ही वैसे जर्मन प्रशासन के साथ बराकोव के सबध भी सदिग्ध और अनिश्चित होते गये। पर और भी खतरा इस बात से हुआ कि कालान्तर मे कारखाने के बहुत-से लोग, जिनमे बहुत-से अनुभवी कार्यकर्त्ता भी थे, इस निष्कर्ष पर पहुचते जाते, कि इस कारखाने मे कोई व्यक्ति ऐसा जरूर है जो कारखाने के कामो मे जान-बूझकर रोडा अटका रहा है।

बराकोव हमेशा ही जर्मनो के साथ दिखाई पडता था, उनकी भाषा बोलता था और कठोरता से काम लेता था, इसी लिए कामगार समझते कि वह जर्मनो से मिला हुआ है। वे उससे दूर रहते थे और जहा तक कारखाने के विभागो का सबध था लोग उसपर शक कर भी नही सकते थे। शक तो सिर्फ ल्यूतिकोव पर ही हो सकता था। फिर भी क्रास्नोदोन मे उन लोगो की सख्या बहुत थोडी थी जो यह समझते थे कि सचमुच ल्यूतिकोव जर्मनो के लिए काम करता है। वह उस ढग का रूसी श्रमिक था जिसे पुराने जमाने मे श्रमिक-वर्ग की अन्त.चेतना समझा जाता था। हर शख्स उसे जानता था, उसपर विश्वास करता था—और जनसमुदाय कभी गलती नही करता।

विभाग मे कई दर्जन लोग उसके अधीन काम करते थे। भले ही वह कितना भी थोड़ा क्यो न बोलता, कितनी ही विनम्रता का व्यवहार क्यो न करता, प्रर कामगार यह जरूर समझ लेते कि वह चलते-चलाते, कठिनाइयो के दौरान में जैसे खोया खोया-सा, अनिश्चित ढग से जो भी निर्देश देता वे उत्पादन के हितो के विरुद्ध होते।

उसकी तोड़-फोड़ की क्रियाशीलता के अन्तर्गत् छोटी छोटी बाते आती थी। यदि इन बातो को अलग अलग देखा जाये तो उनपर कोई ध्यान भी न देगा। किन्तु समय बीतने के साथ ही साथ ये छोटी छोटी बाते पुलिन्दा बन गयी और उन्होने जैसे एक बड़े पैमाने का रूप ले लिया। अब लोगो का ध्यान भी ल्यूतिकोव पर जाने लगा। उसके इर्द-गिर्द जो कामगार काम करते थे उनमे से बहुत-से ऐसे थे जिनपर वह विश्वास कर सकता था और वह यह अनुमान लगा सकता था कि बहुत-से ऐसे लोग भी है जिनका रुख उसकी मकान-मालिकिन, पेलगेया इल्यीनिच्ना, जसा है। वे हर चीज देखते थे, उसका पक्ष लेते थे, किन्तु न तो उससे ही कुछ कहते-सुनते थे, न दूसरो से, न स्वय अपने आपसे। पर

पर्दाफाश करने के लिए एक भी बदमाश काफी होता है। मौका पड़ने पर एक आदमी भी साहस खो बैठे तो सब काम चौपट हो सकता है।

कारखानो को सुपुर्द किया गया सबसे जरूरी कार्य था क्रास्नोदोन के उस बड़े पम्पिग स्टेशन का पुनरुद्धार, जो न सिर्फ थोडी-सी खानो को ही पानी सप्लाई करता था बल्कि नगर के केन्द्रीय भाग और केन्द्रीय वर्कशॉपो को भी। कोई दो महीने पहले यह कार्य बराकोव के सुपुर्द किया गया था और बराकोव ने उसे ल्यूतिकोव के सुपुर्द कर दिया था।

काम तो आसान था, पर अन्य सभी कार्यो की भाति व्यावहारिक ज्ञान के अनुरूप नही किया जाता था। फिर भी पम्पिग स्टेशन की बडी आवश्यकता थी। हर फेल्द्नेर काम की प्रगति की शिथिलता देखकर बडा क्रुद्ध हुआ था। वह कई बार इसकी जाच करने आया था पम्पिंग स्टेशन तैयार हो जाने के बाद भी ल्यूतिकोव उसे चालू नही कर रहा था। उसका कहना था कि पहले स्टेशन की जाच की जानी चाहिए। पम्पिग स्टेशन के नल और नालियां पानी से भरी थी उस वर्ष सुबह का पाला कुछ पहले ही पड़ने लगा था और सख्त पडता जा रहा था।

एक दिन शनिवार को, जब छुट्टी होनेवाली थी, प्राय: उसी समय ल्यूतिकोव पम्पिग स्टेशन का चार्ज लेने आया। वह रिसती हुई टकियो और पाइपो के बारे मे न जाने कब तक झीकता-बोलता रहा। उसने बड़ी सावधानी से पेचो और ढिबरियो को कसा। उसके पीछे फोरमैन भी आया। उसने देखा कि सब कुछ ठीक था, और कुछ न बोला। बाहर सड़क पर मज़दूर लोग इन्तजार कर रहे थे कि आगे क्या होगा।

आखिर ल्यूतिकोव और फोरमैन बाहर श्रमिको के पास आ गये। ल्यूतिकोव ने अपनी कोट की जेब से तम्बाकू का एक बटुआ और 'नोवे जीता' अखबार की सावधानी से कटी हुई कुछ पुर्जिया निकाली और बिना कुछ कहे-सुने मजदूरों को घर का उगा और जैसे-तैसे कटा

तंबाकू देने लगा। उत्सुक हाथो ने तम्बाकू ले लिया क्योंकि इस समय घर का उगा तम्बाकू भी दुर्लभ हो गया था। अभी जो वे तम्बाकू पीते थे वह बडी ही घटिया किस्म का होता था जिसमें आधी घास-पात मिली रहती थी। उसे आम तौर से 'मेरी दादी का गद्दा' कहा जाता था।

सभी लोग तम्बाकू पीते हुए चुपचाप पम्पिग स्टेशन के इर्द-गिर्द खडे हो गये। हा कभी कभी वे ल्यूतिकोव और फोरमैन पर एक प्रश्नसूचक दृष्टि जरूर डाल लेते थे। अन्तत ल्यूतिकोव ने अपनी सिगरेट का अधजला टुकडा जमीन पर फेका और उसे बूट से मसल दिया।

"अभी तो लगता है कि आखिर सारा काम खत्म हो गया," वह बोला। "पर आज हम काम किसी को सौप नही सकते काफी देर हो चुकी है। हम सोमवार तक इन्तजार करेगे।"

उसे लगा कि सभी उसकी ओर चकित दृष्टि से देख रहे है। हालाकि अभी अच्छी तरह शाम नही हुई थी, फिर भी जमीन जम रही थी।

"पानी खीच लेना चाहिए," फोरमैन ने अनिश्चय के साथ कहा।

"अभी जाडा तो है नही। क्यो?" ल्यूतिकोव ने सख्ती से कहा।

उसे फोरमैन से आख मिलाने की जरा भी इच्छा न थी, पर हुआ ऐसा कि उसे फोरमैन की ओर देखना ही पडा। ल्यूतिकोव ने देखते ही समझ लिया था कि फोरमैन सब कुछ जान गया है। और यदि वहा फैली हुई चुप्पी से अन्दाज लगाया जाता तो कह सकते थे कि शायद बाकी लोग भी समझ गये थे। तब बडे आत्मनियत्रण के साथ ल्यूतिकोव ने जैसे चलते-चलाते कहा—"अब हमे चलना चाहिए," और चुपचाप वे सब पम्पिग स्टेशन के बाहर चले गये ..

ल्यूतिकोव को यह सब उस समय याद आ रहा था जब वह खिड़की के बाहर, सूरजमुखी और लौकी की पत्तियो पर जमे हुए पाले

की मोटी परत देख रहा था। कडाके की सर्दी के कारण पत्तिया काली पड गयी थी।

जैसी कि उसने आशा की थी, काम करनेवालो की पूरी टोली पम्पिग स्टेशन पर उसका इन्तजार कर रही थी। उसे यह बताने की जरूरत नही रह गयी थी कि पाइप फूलकर फट गये थे और सारी मेहनत बेकार हो गयी थी तथा अब सब कुछ फिर से करने की जरूरत थी।

"अफसोस की बात है! किन्तु ऐसा हो जाने की आशा किसे थी? ऐसा कडाके का पाला!" ल्यूतिकोव बोला। "परवाह न करो, हिम्मत न हारो। हम पाइप बदल देगे। बेशक पाइप है तो कही नही, पर हम कुछ पाइपो का बन्दोबस्त करने की पूरी कोशिश करेगे।"

सभी ने उसकी ओर घबराकर देखा। वह जानता था कि वे लोग उसकी हिम्मत देखकर उसकी इज्जत करते थे और साथ ही जो कुछ उसने किया था उससे डर भी गये थे। उसके शान्त रवैये से तो वे और भी भयभीत हो उठे थे। हा, जिन लोगो के साथ ल्यूतिकोव काम करता था, उनका विश्वास किया जा सकता था। पर आखिर वह नियति को कब तक भुलावे मे रख सकता था।

किसी गुप्त समझौते के अनुसार बराकोव और ल्यूतिकोव एक दूसरे को आराम के घटो मे कभी न मिलते थे। यह व्यवस्था इसलिए की गयी थी कि किसी को उनकी दोस्ती का रत्ती भर भी सुराग न मिले और यह भी शक न हो कि सिवा अपने अपने काम के उनका परस्पर और भी कोई सबध है। जब कभी बराकोव को ल्यूतिकोव से बाते करना आवश्यक होता तो वह ल्यूतिकोव को अपने दफ्तर मे बुलाता और उसके आने से पहले और उसके चले जाने के बाद दूसरे विभागो के फोरमैनो को भी जरूर बुलाता।

इस समय बातचीत करना उनके लिए आवश्यक हो गया था।

ल्यूतिकोव शॉप मे अपने छोटे-से दफ्तर में आया, अपनी लपेटी हुई 'दुगरी' एक कुर्सी पर फेंकी, अपनी टोपी और ओवरकोट उतारकर खूटी पर टागा, अपने सफेद बाल ठीक किये, अपनी कटी-छटी मूछो पर कघी फेरी और बराकोव के पास चला गया।

कारखाने के दफ्तर अहाते में ही एक छोटी-सी ईंटों की बनी इमारत मे थे।

क्रास्नोदोन के अधिकाश दफ्तरों और मकानो के भीतर का तापमान सर्दी बढने के कारण सडको के तापमान से भी नीचे गिर गया था। किन्तु इस कारखाने के दफ्तर इतने ही गर्म थे जितने वे दफ्तर या मकान जिनमे जर्मन काम करते या रहते थे। बराकोव अपने गर्म दफ्तर मे नीले रग की कमीज के ऊपर सर्ज की ढीली जैकेट पहने और चमकते हुए रग की टाई लगाये बैठा था। जैकेट की कालर मुड़ी हुई थी। वह पहले से क्षीण और सावला हो गया था, अत. पहले से जवान भी लग रहा था। उसके सिर के बाल बढ गये थे और ललाट पर एक लट लहरा रही थी। माथे पर लहराती लट, उसकी ठुड्ढी का गड्ढा, उसकी बड़ी बड़ी आखो की स्पष्ट, सीधी और साहसपूर्ण दृष्टि, कसकर दबे हुए ओंठ, जिनसे उसकी शक्ति का पता चलता था, वर्तमान परिस्थितियो मे दो तरह का प्रभाव डाल रहे थे।

बराकोव दफ्तर में बैठा हुआ एक प्रकार से, कोई काम नही कर रहा था। वह ल्यूतिकोव को देखकर खिल उठा।

"तुम्हे पता चल गया?" उसके सामने बैठते हुए और भारी सास लेते हुए फिलीप्प पेत्रोविच ने पूछा।

"खूब बदला लिया!" बराकोव के मोटे मोटे होठो पर एक हल्की-सी मुस्कान बिखर गयी।

"नही मेरा मतलब सवाद से है।"

"मैं वह भी जानता हू।" बराकोव का एक अपना रेडियो भी था।

"तो इससे उक्रइन में हम सबपर क्या असर पडेगा?" दात निकालते हुए ल्यूतिकोव ने उक्रइनी भापा मे पूछा। वह था तो रूसी, किन्तु दोनबास मे पलकर बड़ा हुआ था, इसलिए कभी कभी उक्रइनी बोलने की छूट ले लेता था।

"असर पडेगा," बराकोव ने भी उक्रइनी मे उत्तर दिया, "हम आम विद्रोह की तैयारी करेगे।" उसने दोनो हाथो से एक चौड़ा-सा वृत्त बनाया और ल्यूतिकोव को यह बात अच्छी तरह समझ मे आ गयी कि बराकोव की तैयारिया किस तरह की होगी। "जैसे ही हमारी सेनाए नगर के पास आयेगी ." उसने हाथ मेज के उस पार तक बढाया और मुट्ठी बद कर ली।

"बिलकुल ठीक," ल्यूतिकोव अपने मित्र की इस बात से खिल उठा था।

"कल मै तुम्हे अपनी सारी योजना समझाऊगा। अड़गा बच्चो की कमी के कारण नही है बल्कि ढोल की डडियो और मिठाइयो की कमी के कारण है ." बराकोव के शब्दो मे अन्त्यानुप्रास की झलक मिलती थी जिससे वह खुद ही हस पडा। उसके कहन का मतलब था कि काम करने के इच्छुक व्यक्तियो की कमी न होगी बल्कि बन्दूको और गोला-बारूद की कमी पड़ेगी।

"मै छोकरो को इस काम पर लगा दूगा। वे यह सब बना डालेगे। यह पम्पिग स्टेशन का सवाल नही है," ल्यूतिकोव कहता रहा। सहसा उसने उस विपय की चर्चा की जो उसके मस्तिप्क पर छाया था। "सवाल यह नही है। बात तो बस. मेरा मतलब तो तुम समझ ही गये होगे।"

बराकोव की त्यौरियां चढ गयी।

"जानते हो मेरा क्या सुझाव है? मेरा सुझाव होगा कि मै तुम्हे नौकरी से बरखास्त कर दू," उसने दृढता से कहा, "मै यह शिकायत करूगा कि पम्पिग स्टेशन में पाइपो के जम जाने के दोषी तुम हो और तुम्हे बरखास्त कर दिया जाये।

ल्यूतिकोव ने क्षण भर सोचा—इससे शायद समस्या का कोई हल निकल आये।

"नही," कुछ रुककर उसने कहा, "मेरे छिपने की कोई जगह नही। और अगर होती भी तो हमे यह कदम नही उठाना चाहिए। वे लोग सब कुछ तुरत भाप लेगे। इसमे तुम तो बर्बाद होगे ही, दूसरे भी होगे। इस समय हमारा जो प्रभाव है वह भी खत्म हो जायेगा—नही इससे काम न चलेगा," ल्यूतिकोव ने निश्चय के साथ कहा, "नही, हम इन्तजार करेगे और मोर्चे की स्थिति का अध्ययन करेगे। अगर हमारी सेनाए तेज गति से आयेगी तो हम इतने जोश-खरोश के साथ जर्मनो के लिए काम करना शुरू करेगे कि अगर किसी को हमपर कोई शक भी रहा हो तो वह यह समझ लेगा कि वह गलती पर था, क्योकि हम पूरी ताकत लगाकर उनका काम उस समय करेगे जब मोर्चे पर उनके कदम उखड़ रहे होगे! और सबसे बडी बात यह है कि हमारी इस मेहनत का फल मिलेगा हमारे अपने लोगो को।"

एक क्षण के लिए बराकोव इस चाल की असाधारण सुगमता पर मुग्ध हो गया।

"पर अगर मोर्चा बहुत निकट आ गया तो वे हमे हथियारो की मरम्मत पर लगा देगे," वह बोला।

"अगर मोर्चा बहुत निकट आ ही गया तो हम सब कुछ छोड छाड़कर छापामार बन जायेगे।"

"बूढा वडा कर्मठ है," खुश होकर बराकोव ने सोचा।

"हमे नेतृत्व का एक दूसरा केन्द्र स्थापित करना चाहिए, एक तरह का रिजर्व," ल्यूतिकोव बोला, "कारखाने के बाहर, विना तुम्हारे विना मेरे।" वह कुछ दिलासे की वात, कुछ मजाक की बात कहने के मूड मे था, मसलन "वेशक हमे इसकी कोई आवश्यकता न पडेगी, किन्तु दुखी होने की अपेक्षा सुरक्षित होना वेहतर है," वगैरह, वगैरह। पर, तभी उसे लगा कि इस तरह की किसी वात की न उसे खुद ही कोई जरूरत है, न वराकोव को।

"अव हमारे पास कुछ अनुभवी लोग हो गये हैं और अगर कोई वात हो भी जायेगी तो वे विना हमारे भी सव कुछ सभाल लेगे। है न?" उसने कहा।

"हां यह तो ठीक है।"

"हमे जिला पार्टी कमिटी की एक वैठक वुलानी चाहिए। हमने पिछली वार वैठक की थी जर्मनो के आने से पहले। मै जानना चाहूगा कि हमारे अन्दरूनी-पार्टी लोकतन्त्र का क्या हुआ?" ल्यूतिकोव ने वराकोव की ओर सख्ती से देखा और आख मारी।

वराकोव हंस दिया। सचमुच उन्होने जिला पार्टी कमिटी की वैठक नही वुलायी थी क्योकि क्रास्नोदोन मे जैसी स्थिति थी उसे देखते हुए ऐसी वैठक वुलाना प्राय असभव हो गया था। किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण मामलो पर, जिले के अन्य प्रमुख लोगो की सलाह ले चुकने के वाद ही, कोई निर्णय किया जाता था।

विभाग से होकर अपने छोटे-से दफ्तर जाते वक्त ल्यूतिकोव का सामना मोश्कोव, वोलोद्या ओस्मूखिन और तोल्या ओर्लोव से हो गया। य लोग एक दूसरे की वगल की ही वेचो पर काम करते थे। वह फिटरो की वेचो से होकर गुजरा जो दीवार के आधे हिस्से तक फैले हुए थे और

ऐसा बन गया मानो काम की जाच कर रहा हो। जो छोकरे अभी अभी सिगरेट पी रहे थे और गप्प लडा रहे थे वे भी अब अपने अपने काम पर जुट जाने का बहाना करने लगे।

जब ल्यूतिकोव मोश्कोव की बेच से होकर गुजरा तो उसने उसकी ओर देखा, दात निकाले और बुदबुदाया—

"क्या उसने तुम्हे गाली दी है?"

ल्यूतिकोव ने अन्दाज लगा लिया था कि मोश्कोव पम्पिंग स्टेशन के बारे मे पहले से ही जानता था, और उसका मतलब बराकोव से था। दूसरे छोकरो की तरह मोश्कोव भी बराकोव की असलियत न जानता था और उसे जर्मनो का पिट्ठू समझता था।

"इसके बारे मे कुछ मत कहो," ल्यूतिकोव ने धीरे-से अपना सिर हिलाया मानो सचमुच गाली खाई हो, यह कैसा काम चल रहा है?" उसने ओस्मूखिन से पूछा और ऐसे झुक गया मानो उसके काम का मुआयना कर रहा हो, फिर मूछो के भीतर ही बुदबुदाया—

"ओलेग से कहना आज रात मै उससे मिलना चाहता हू। उसी जगह!"

यहा से भी क्रास्नोदोन के 'तरुण गार्ड' खुफिया सघटन को नुक्सान पहुच सकता था।

## अध्याय १७

न सिर्फ स्तालिनग्राद और दोन के किनारे किनारे ही बल्कि उत्तरी काकेशिया और वेलीकिये लूकी के क्षेत्र मे भी लाल सेना की सफलताएं अधिकाधिक प्रत्यक्ष होती जा रही थी। इन सफलताओ के साथ कदम से कदम मिलाये रखने के लिए 'तरुण गार्ड' की क्रियाशीलता भी बढ़ती जा रही थी और उसके कार्य अधिकाधिक साहसपूर्ण होते जा रहे थे।

इस समय तक 'तरुण गार्ड' वडा और सशक्त सघटन वन चुका था। उसके सौ से अधिक सदस्य हो चुके थे और जिले भर मे उसकी शाखाएं फैल गयी थी। 'तरुण गार्ड' के सहायको की सख्या भी बेहद बढ गयी थी।

अपनी क्रियाशीलता वढाने के साथ ही साथ सघटन नये नये सदस्यो की भी भरती करता था, क्योकि यह भी उसका एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। यह भी सच था कि युवक यह समझने लगे थे कि अपने कार्यारम्भ के पहले दिनो की अपेक्षा, वे उत्तरोत्तर अधिक प्रकाश मे आने लगे थे। पर, वे कर ही क्या सकते थे? कुछ हद तक यह अपरिहार्य था।

'तरुण गार्ड' के कार्य जितने ही अधिक विस्तृत होते जाते, गेस्टापो और पुलिस का 'जाल' उनके उतना ही पास आत जाता।

एक हेडक्वार्टर की वैठक मे सहसा ऊल्या ने पूछा था—

"हममे से कौन मोर्स कोड जानता है?"

इसपर किसी ने यह प्रश्न नही किया कि इसकी जरूरत क्या है, और न इस प्रश्न को किसी ने मजाक़ ही समझा। जब से हेडक्वार्टर के सदस्यो ने कधे से कंधा मिलाकर काम करना शुरू किया था तब से शायद अब पहली वार उन्हे यह विचार आया था कि शायद उन्हे गिरफ्तार किया जाये। किन्तु यह एक हवाई ख्याल भर था क्योकि फिलहाल उन्हे किसी तरह का खतरा नजर नही आ रहा था।

ठीक इसी अवधि मे ल्यूतिकोव ने व्यक्तिगत रूप से वातचीत करने के लिए ओलेग को वुलाया था।

अपनी पहली मुलाकात के वाद से दोनो एक दूसरे से नही मिले थे। प्रत्यक को लग रहा था कि दूसरा वहुत अधिक वदल गया है। फिलीप्प पेत्रोविच के वालो मे और अधिक सफेदी आ गयी थी और वह

पहले से अधिक भारी और मोटा हो गया था। उसे देखते ही समझा जा सकता था कि यह अच्छी सेहत की निशानी नही थी। वह अपनी बातचीत के दौरान मे बार बार उठकर कमरे मे चहलकदमी करने लगता था। ओलेग उसकी सासे सुनता था और उसे लगता था जैसे ल्यूतिकोव को अपना भारी शरीर घसीटना भी दूभर लग रहा है। केवल उसकी आखो मे अब भी कठोरता का भाव दिखाई दे रहा था। थकान तो उनमे लेशमात्र भी न थी।

ल्यूतिकोव ने इस बात पर गौर किया था कि ओलेग का शरीर स्वस्थ हो गया था। अब वह बड़ा हो गया था और अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्षों से होकर गुजर रहा था। उसका चेहरा और गालो की उभरी हुई हड्डियां अधिक मजबूत, अधिक स्पष्ट लगने लगी थी। अब सिर्फ उसकी बडी बड़ी आखो और उसके भरे हुए होठो की रेखा से ही, खासकर उसके मुस्कराते समय, यह पता चलता था कि उसमे स्कूली बच्चो जैसा भाव अब भी विद्यमान है। इस समय वह उदास लग रहा था और कधे झुकाये तथा कधो के बीच सिर नीचा किये बैठा था। उसके माथे पर गहरी झुर्रिया दिखाई पड़ने लगी थी।

ल्यूतिकोव कई बार अपने विषय पर आया और उसने पुराने और नवसघटित दोनो ही प्रकार के 'तरुण गार्ड' कार्यवाहक दलो के सबध मे पूरे विस्तार के साथ जानने की इच्छा प्रगट की। वह सदस्यो के नाम और उनके चरित्र की विशेषताओ के बारे मे जानना चाहता था। साफ ज़ाहिर था कि इस समय उसकी दिलचस्पी दल के बाहरी कामो मे उतनी न थी–जिसकी सारी सूचना उसे पोलीना गेओर्गियेव्ना से मिल जाती थी–जितनी सघटन के अन्दरूनी मामलो मे थी। खास तौर से वह दल के बारे मे, और उसके भीतरी मामलो के सबध मे स्वय ओलेग के विचार जानना चाहता था।

ल्यूतिकोव यह जानना चाहता था कि कितने प्रतिशत सदस्य एक दूसरे को जानते है, हेडक्वार्टर और दलो के बीच किस प्रकार सम्पर्क स्थापित किया जाता है, ढेरो दलो को एक दूसरे से जोड़नेवाली कौन कौन-सी कड़िया है और वे किस प्रकार अपने कामो का समन्वय करते है। उसने मवेशियो को छुडानेवाली घटना का भी उल्लेख किया। कुछ समय तक ल्यूतिकोव ओलेग से यही प्रश्न करता रहा कि किये जानेवाले किसी काम के सबध मे सूचना देने के निमित्त हेडक्वार्टर किन किन टेकनीकल साधनो का प्रयोग करता है। उसने यह भी पूछा कि दल के लीडरो ने सदस्यो को किस प्रकार सूचना दी थी और वे किस प्रकार मिले थे। उसे परचे चिपकाने जैसी छोटी छोटी बातो मे दिलचस्पी थी, विशेषकर सम्पर्क और नेतृत्व की दृष्टि से।

हम यह बात फिर से स्पष्ट कर देना चाहते है कि जब कभी ल्यूतिकोव किसी से बात करता तो वह उन्हे बराबर यह मौका दिया करता कि जो कुछ उन्हे कहना है, वे कह डाले। उसे अपनी राय जाहिर करने की कभी जल्दी न रहती। वह जिस किसी से भी बात करता उस-का अनुग्रह प्राप्त करने का कोई प्रयत्न न करता और बच्चे, बूढे सभी से, बराबरी के नाते, बड़े स्वाभाविक ढग से बातचीत करता।

ओलेग यह सब कुछ जानता था। ल्यूतिकोव उससे ऐसे बाते करता मानो वह कोई राजनैतिक नेता हो, और बड़े ध्यान से उसके विचार सुना करता। यदि कोई और अवसर होता तो ल्यूतिकोव का यह रुख देखकर उसका हृदय गर्व और खुशी से भर गया होता। किन्तु इस समय उसे लगा कि ल्यूतिकोव 'तरुण गार्ड' से बहुत प्रसन्न नही है।

ल्यूतिकोव ने उससे सवाल किये और सहसा खडे होकर कमरे मे चहलकदमी करने लगा। यह बात उसकी आदत से मेल न खाती थी। फिर उसने सवाल पूछने बन्द कर दिये और केवल कमरे मे चहलकदमी करता

रहा। ओलेग भी चुप हो गया था। आखिर ल्यूतिकोव ओलेग के सामने पडी हुई एक कुर्सी मे धस गया और अपनी कठोर आखें उसपर गड़ा दी।

"अब तुम वयस्क हो चुके हो। सघटन भी बड़ा है और खुद तुम भी," उसने कहना शुरू किया, "यह भी अच्छा ही है। तुम हमारे लिए बडे काम के सिद्ध हो रहे हो। लोग तुम्हारी सरगर्मियां महसूस करने लगे है। और वह समय आयेगा जब वे तुम्हे इसके लिए धन्यवाद देगे। लेकिन मैं तुमसे कहना चाहता हू—कही कुछ गडबड़ी जरूर है... अब बिना मेरी अनुमति के अपने दल मे किसी और को न लेना। तुम्हारे पास काफी सदस्य हैं। अब वह वक्त आ गया है जब सबसे बुजदिल और काहिल व्यक्ति भी, बिना किसी सघटन मे शामिल हुए, हमारी मदद करेगा। मेरी बात समझ रहे हो न?"

"समझ रहा हू," ओलेग धीरे-से बोला।

"तुम्हारा सपर्क .." ल्यूतिकोव कुछ देर तक खामोश रहा। "सम्पर्क का तुम्हारा इन्तजाम कच्चा है। तुम्हारे सदस्य, एक दूसरे के पास, एक दूसरे के घर बहुत अधिक आते जाते है, विशेष रूप से तुम्हारे और तुर्केनिच के घर। यह खतरनाक है। मसलन् अगर मैं ही उस सड़क पर रहता होता, जहा तुम रह रहे हो, तो मैं तुम्हारे यहा आने-जानेवालो को देखकर सोचता—'आखिर ये लड़के-लड़किया, दिन मे भी और रात मे भी, जब किसी को घर के बाहर निकलने की अनुमति नही दी जाती, बराबर तुम्हारे घर के चक्कर क्यो लगाते है?' यदि मैं तुम्हारी गली मे रहता होता तो यही समझता। यह मत भूलना कि जर्मन तुम्हारी टोह मे है और आखिर मे वे तुम्हारे घर मे लोगो के आने-जाने के क्रम को देखेगे अवश्य। तुम लोग जवान हो। मैं बड़ी हिम्मत के साथ कह सकता हू कि तुम राजनीतिक उद्देश्यो के अलावा

भी एक दूसरे से मिलते-जुलते होगे। है न? मसलन् मन-वहलाव के लिए?" ल्यूतिकोव ने सद्भावना से मुस्कराते हुए कहा।

ओलेग कुछ घवरा गया, फिर उसने दात निकाले और हामी भरते हुए सिर हिलाने लगा।

"इससे काम नही चलेगा। कुछ समय तक तुम्हे ऊव महसूस करना ही होगा। जव हमारी सेनाए आ जायेगी तो हम सभी खूव मौज करेगे," ल्यूतिकोव ने गभीरता से कहा, "और तुम्हारे हेडक्वार्टर की वैठके भी कम होनी चाहिए। इस समय सैनिक कार्रवाई करने का अवसर है। तुम्हारे पास एक कमांडर है ही, एक कमीसार भी इस मौके पर उसी तरह काम पर जुट जाओ जैसे युद्ध की स्थितियो मे मोर्चे पर जुटते है। तुम्हारे सम्पर्क-प्रवन्ध भी उसी स्तर पर आने चाहिए जिस स्तर पर तुम्हारा दल है। अच्छा तो यह होगा कि तुम लोग किसी ऐसे स्थान की व्यवस्था करो, जहां तुममे से हर व्यक्ति विना किसी रुकावट के आ-जा सके और किसी वाहरी आदमी को उसमे कोई असाधारण वात भी न जान पडे। इन दिनो गोर्की क्लव मे क्या हो रहा है?"

"वह खाली पडा है," ओलेग वोला। उसे उस रात की याद आ गयी जव उसने क्लव की दीवाल पर परचे चिपकाये थे और पुलिस वाले के हाथ मे पड़ने से वाल वाल वच गया था। "यह वहुत दिनो की वात है!" उसने मन ही मन कहा।

"न तो वह दफ्तरो के ही काम का है, न रहने के ही काम का। इसी लिए खाली पडा है," ओलेग ने समझाया।

"अच्छी वात है, फिर प्रशासन से अनुमति मागो और उसमे एक क्लव चालू कर दो!"

कुछ क्षणो तक ओलेग चुप रहा। उसके माथे पर वल पडते रहे। "यह वात मेरी समझ मे नही आती," वह वोला।

"इसमे समझने की कोई बात नही—युवको के लिए, समस्त जनता के लिए, क्लब। उन लडके-लडकियो का सगठन करो जिन्हे राजनीति मे कोई रुचि नही किन्तु जो मनोविनोद चाहते है, जो ऊब महसूस कर रहे है। कुछ लोगो को इकट्ठा करो और एक उद्घाटन-मडली बनाओ, फिर उस इमारत मे क्लब चालू करने के लिए बुर्गोमास्टर से प्रार्थना करो। उससे कहो कि तुम्हारा ख्याल है कि 'नयी व्यवस्था' के अनुरूप जनता को सास्कृतिक सुविधाए प्राप्त होनी चाहिए। उन्हे सुझाव दो कि बेकार की गप्पो से बचने और दिमागो मे खुराफाते न आने देने के लिए युवक-युवतियो को नाचने की सुविधाए दी जाये। वह गधा खुद तो कुछ निर्णय करता नही, वह अपने ऊपर वाले अधिकारियो से पूछेगा। वे शायद तुम्हे अनुमति दे देगे। वे खुद ऊब से मर रहे है," ल्यूतिकोव बोला।

ओलेग अपनी उम्र के लिहाज से काफी कुशाग्रबुद्धि और व्यवहार कुशल था। तुच्छ और लौकिक बातो मे उसकी कोई रुचि नही थी। उसने अपनी बुद्धि से तत्काल ही समझ लिया था कि वह हेडक्वार्टर के सदस्यो को क्लब मे रख सकेगा और उनकी मार्फत दलो के नेताओ से सम्पर्क स्थापित कर सकेगा। किन्तु इस पैशाचिक संसार मे खिच आना इस अनजाने ससार के घृणित मामलो मे, अप्रत्यक्ष रूप से भी, भाग लेना उसकी आत्मा के विरुद्ध था। भ्रष्टाचार को व्यक्तिगत रूप से स्वीकृति देना या अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, उसे बढावा देना . नही, नही, यह सब वह नही करेगा। उसने चुपचाप अपना सिर झुका लिया। ल्यूतिकोव की ओर देखने की भी उसकी हिम्मत न पड रही थी।

"मेरा अनुमान ठीक था," ल्यूतिकोव ने शाति से कहा, "तुमने मेरी बात समझी नही! अगर समझी होती तो मेरे लिए और सारे सघटन के लिए यह एक बहुत बडी चीज होती," वह उठा और कमरे मे चहलकदमी करने लगा, "बच्चे को डर लग रहा है... कि कही वह खुद

गन्दा न हो जाय. शुद्ध लोग अपने को अपवित्र नही होने देते! आखिर उनके भ्रष्ट प्रचार का असर होगा भी क्या? अगर वे लोग अपना लाउडस्पीकर क्लब मे लगा भी दे, तो भी क्या? यह सब तो हम जगह जगह सुन ही रहे है। क्लब हमारी मुट्ठी मे रहे, इसके लिए हमे यह सब बरदाश्त करना ही होगा। हमारा प्रचार ऊची आवाज मे नही होगा, पर उसका असर उनके प्रचार से ज्यादा होगा। मै तुम्हे यह साफ साफ बता दू कि तुम्हारे कार्यो मे हमारा भी कुछ हाथ होगा, जिसे तुम अधिक न देख सकोगे और इसके लिए तुम हमे क्षमा करोगे। किन्तु तुम्हारा कार्यक्रम तटस्थ होना चाहिए। इस तरह के कार्यो का सगठन मोश्कोव, जेम्नुख़ोव और ओस्मूख़िन, या उनसे भी अच्छे ढग से, ल्यूबा शेव्त्सोवा कर सकती है। यहा तुम्हे इस तरह के लोगो से काम लेना चाहिए।"

अन्तत ओलेग उसकी बात से सहमत हो गया, किन्तु बूढा ल्यूतिकोव फिर भी उसे बडी देर तक समझाता रहा। ओलेग अपने हृदय मे झूठी भावनाओ के प्रभाव मे आ गया था, अत वह बडा खिन्न था।

"यह सब मैं तुम्हे इसलिए समझा रहा हू कि तुम्हारे साथी तुमसे वही सब कुछ कहेगे जो तुमने अभी अभी मुझसे कहा है। और मै चाहता हूं कि तुम उन्हे ठीक ठीक जवाब दे सको," वह बोला और ओलेग को समझाता रहा।

खान १-बीस के व्यवस्थापको का समर्थन प्राप्त हो जाने के बाद वान्या जेम्नुख़ोव, मोश्कोव तथा दो लडकिया, जो 'तरुण गार्ड' से किसी भी प्रकार सबद्ध न थी, बुरगोमास्टर स्तात्सेको से मिलने गयी। सचमुच वे उन युवक-युवतियो के प्रतिनिधि थे, जो नये क्लब को सगठित करने के लिए एकत्र किये गये थे।

स्तात्सेको, हमेशा की भाति, नशे मे धुत्त था। वह उनसे नगर परिषद् के सर्द और गन्दे मकान मे मिला। उसने सूजी हुई अंगुलियोवाले

अपने छोटे छोटे हाथ, अपने सामने बिछे हुए मोटे हरे ऊनी मेजपोश पर रख दिये और स्थिर दृष्टि से वान्या की ओर देखने लगा। वान्या विनम्र, शिष्ट और सरल, सीग की कमानी वाला चश्मा लगाये, बुरगोमास्टर की ओर नही बल्कि हरे मेजपोश की ओर देखे जा रहा था।

"स्तालिनग्राद मे जर्मन फौज की हार हो रही है, ऐसी ऐसी झूठी खबरे नगर मे फैल रही है। इसकी वजह से, इसकी वजह से," वान्या की पतली पतली उगलिया हवा मे लहरा उठी, "हमारे युवक-युवतियो के दृष्टिकोण मे कुछ अस्थिरता आ गयी है। हमे मि० पॉल," उसने खान १-बीस के माइनिग बटालियन के कमिश्नर का नाम लिया, "और उस सज्जन का समर्थन मिल चुका है जो नगर परिषद् के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष है तथा इसके बारे मे आपको निश्चय ही सूचना मिल चुकी होगी। अन्तत , 'नयी व्यवस्था' के प्रति वफादार सभी युवक-युवतियो की ओर से, वसीली इल्लारिओनोविच, हम खुद आपसे प्रार्थना करते है, आप कितने उदार, कितने दयावान है! "

"सज्जनो और देवियो, प्यारे लडको! जहा तक मेरा सवाल है," सहसा स्तात्सेको बडे स्नेह से बोला, "नगर परिषद्..." उसकी आखो मे आसू छलछला आये।

स्तात्सेको, "वे सज्जन" और "प्यारे लडके" अच्छी तरह जानते थे कि नगर परिषद् स्वय किसी बात का निर्णय नही कर सकती थी, क्योकि सारे निर्णय किये जाते थे सशस्त्र पुलिस के सीनियर वाह्टमिस्टर द्वारा। किन्तु स्तात्सेको पूरी तरह से इस प्रस्ताव के पक्ष मे था। ल्यूतिकोव ने ठीक ही अनुमान लगाया था. स्तात्सेको खुद ऊब से घुट घुटकर मर रहा था।

हाप्तवाह्टमिस्टर ने अनुमति दे दी और १६ दिसम्बर १६४२ के दिन गोर्की क्लब मे पहला रगारग-प्रोग्राम प्रस्तुत किया गया।

इमारत को गर्म रखने की कोई व्यवस्था न थी। क्लब मे जितने लोगो के लिए स्थान था उससे कोई दूने दर्शक, ओवरकोट, फौजीकोट और फर-जैकेट पहने, वहा या तो खडे थे या बैठे थे। छत पर जो भाप ठडी होने लगती थी वह शीघ्र ही बूदो के रूप मे उनपर टपकने लगती थी।

सामने की कतारो में हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर, वाह्टमिस्टर बाल्डेर, लेफ्टिनेंट श्वैदे, उसका डिप्टी फेल्द्नेर, सोन्दरफ्यूरर साण्डेर्स, कृषि कमाडाटुर के सभी अफसर, ओवेरलेफ्टिनेट श्प्रीक और नेम्चीनोवा, बुरगोमास्टर स्तात्सेको, पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, उसकी पत्नी, और कुलेशोव बैठे थे। कुलेशोव परीक्षक-न्यायाधीश था जो पुलिस चीफ की सहायता के लिए अभी हाल ही मे नियुक्त हुआ था। यह शान्त और शिष्ट आदमी था। चित्तीदार गोल चेहरा, नीली आखे, छितरी हुई हल्की लाल भौहे, शरीर पर लम्बा काला ओवरकोट, सिर पर कज्जाक टोपी जिसकी लाल खोपडी पर सुनहरी डोरी लगी थी। वहा हेरेन पॉल, जूनर, वेकेर, ब्लोश्के, श्वार्त्स और माइनिग वटालियन के कई लान्स कारपोरल भी मौजूद थे। इनके अलावा वहां दुभाषिया शूर्का रैबन्द, हाप्तवाह्टमिस्टर का रसोइया और लेफ्टिनेट श्वैदे का मुख्य रसोइया भी था।

उनके बाद पुलिस-कर्मचारियो, और उन जर्मन और रूमानियाई सैनिकों की कतारे थी जो इधर से होकर मोर्चे पर जा रहे थे। उनके पीछे सशस्त्र जर्मन पुलिस के सिपाहियो की कतारे थी। इधर इन सैनिको की चमचमाती वर्दिया और उधर वाकी हॉल मे खडे और बैठे स्थानीय व्यक्तियो के गन्दे कपडे, फूहड टोपिया, सिर के रूमाल। वहा फेनबोंग उपस्थित न था। उसके पास बहुत काम था और उसे मनोरजन का शौक भी न था।

'प्रतिष्ठित मेहमानो' के सामने एक पुराना और भारी परदा टगा था जिसपर सोवियत सघ के राजचिह्न और हसिया-हथौडे का चित्र बना

था। जब घटी के साथ साथ परदा उठा तो रंगमच के पीछे, स्थानीय चित्रकारो द्वारा रचित फ्यूरर का एक बडा-सा रंगीन छवि चित्र दिखाई पडा। चित्र मे अनुपात-दोप तो था ही, पर चेहरा असली से बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

नाटक का आरभ एक पुराने मजाकिया प्रदर्शन से हुआ, जिसमे वान्या तुर्केनिच ने वधू के बूढे वाप की भूमिका मे काम किया। परम्परा, और कलात्मक सिद्धान्तो का अनुसरण करते हुए, साज-सज्जा से वह बूढे वागवान दनीलिच की तरह दिखाई पड रहा था। क्रास्नोदोन के लोगो ने तालिया वजा वजाकर अपने इस प्रिय पात्र का स्वागत किया और प्रदर्शन के अन्त तक उत्साह से भरे रहे। जर्मन नही हसे क्योकि हाप्तवाह्टमिस्टर ब्रूक्नेर के चेहरे पर गभीरता थी। जव प्रदर्शन समाप्त हुआ तो मिस्टर ब्रूक्नेर ने दो-एक बार अपनी हथेलिया सटायी और तव जर्मनो ने भी तालिया वजायी।

उसके वाद वाद्य-आर्केस्ट्रा ने 'शरद-स्वप्न' वाल्ज और 'जाऊ क्या मै नदी किनारे पर' गीत की धुन वजायी। इस आर्केस्ट्रा मे नगर के दो सर्वश्रेष्ठ गितारवादको—वीत्या पेत्रोव और सेर्गेई लेवाशोव—ने मुख्य भाग लिया।

तव क्लव-मैनेजर और कार्यक्रम-सचालक स्तखोविच मच पर आया। दुवला-पतला स्तखोविच काला सूट और चमचमाते हुए वूट पहने था।

"ल्युबोव शेव्त्सोवा, लुगास्क प्रादेशिक रगमच की अभिनेत्री!"

दर्शको ने तालिया बजानी शुरू की।

ल्यूबा अपनी नीली रेशमी पोशाक मे मच पर अवतरित हुई। उसके जूते भी पोशाक से मेल खा रहे थे। उसने पहले तो कुछ करुण गीत गाये और बाद मे खुशी के गीत भी। वाल्या बोर्त्स पियानो पर सगत कर रही थी, किन्तु पियानो को ठीक करने की सख्त जरूरत थी। ल्यूबा को अपने

प्रदर्शन मे बडी सफलता मिली और दर्शको ने तालिया बजा बजाकर उसे कई वार मच पर बुलाया। वह एक वार फिर फुदकती हुई मच पर आयी। इस वार वह अपनी भडकीली पोशाक और हल्के रंग के जूते पहने थी। वह मुहवाजा वजाती हुई एक जटिल नाच नाचने लगी। उसके सुघड पैर वडी तेजी से थिरक रहे थे। जर्मन खुशी से चीख उठे और तालिया वजा बजाकर अपनी प्रसन्नता प्रगट करने लगे।

स्तखोविच फिर मच के वीचोवीच आ गया।

"जिप्सी रोमासो की भडैत! व्लादीमिर ओस्मूखिन। गितार पर सगत कर रहे है सेर्गेई लेवाशोव।"

वोलोद्या मच पर आते ही बाहे झुला झुलाकर और सिर आगे को वढाये वडी फुर्ती से नाचने लगा। वह गा रहा था–'मेरी मा, मेरी मा, मैं कितना अकेला हू!" सेर्गेई लेवाशोव मुह लटकाये उसकी सगत कर रहा था। और शैतान की भाति उसके पीछे पीछे चल रहा था। दर्शकगण हस रहे थे। जर्मन भी हस रहे थे।

वोलोद्या ने और एक गीत गाया उसने बड़े अस्वाभाविक ढग से अपना सिर घुमाया और अपना चेहरा फ्यूरर के चित्र की ओर करके गाने लगा।

वतला, वतला, अरे छिछोरे वतला–
कहा कि तेरे सग-सघाती, और कहा से आया?
अभी-अभी सूरज की किरने आग बनेगी,
और, मिलेगा पुरस्कार जो तुझे चाहिए–
हा, हा, तू ऐसा सोयेगा, फिर न उठेगा सोकर!

दर्शकगण अपनी अपनी कुर्सियो पर से उछल पडे। सभी उत्साह से भरकर चिल्ला रहे थे और वोलोद्या को बार बार मच पर आना पड रहा था।

प्रदर्शन के अन्त मे कोवल्योव के नेतृत्व मे सरकस के खेल भी दिखाये गये।

इधर कसर्ट चल रहा था, उधर ओलेग और नीना 'ताजा समाचार' लिख रहे थे। समाचार मे कहा गया था कि मध्य दोन क्षेत्र मे सोवियत सेना ने बडा जोरदार हमला किया है और नोवया कलीत्वा, कन्तेमीरोव्का और बोगुचार पर फिर से कब्जा कर लिया है। ये वे स्थान थे जिनपर, जुलाई मे, दक्षिण मे प्रवेश करने के कुछ ही पहले, जर्मनो ने अधिकार कर लिया था।

ओलेग और नीना रात भर उस समाचार की प्रतिलिपिया बनाते रहे। सुबह के समय सहसा उन्हे अपने सिरो पर हवाई जहाजो के इजनो की भनभनाहट सुनाई दी। उनकी विशेष ध्वनि से चौककर वे बाहर अहाते मे आ गये। उन्होंने तुरन्त ही पहचान लिया कि स्वच्छ , पालेदार वायु का सीना चीरते हुए सोवियत बमवर्षक विमान नगर से होकर गुजर रहे है। वे मन्द गति से उड रहे थे। हवा मे उनके इजनो की भनभनाहट गूज रही थी। वे कही वोरोशीलोवग्राद के निकट बम गिरा रहे थे। विस्फोट की धमक क्रास्नोदोन मे भी सुनाई पड रही थी। दुश्मन के लडाकू विमानो ने सोवियत बमवर्षको का कोई मुकाबला नही किया था। विमानमार तोपो के मुह काफ़ी देर के बाद खुले थे क्योकि उस समय तक बमवर्षक विमान, उसी मद गति से एक बार फिर क्रास्नोदोन के ऊपर से उड़कर वापस जा रहे थे।

## अध्याय १८

१९४२ के नवम्बर और दिसम्बर के ऐतिहासिक महीनो मे सोवियत जन, खासकर वे जो जर्मन सेना के पिछवाड़े मे रह गये थे, उस घटना को पूरी तरह देख नही पाते थे, जिन्हे विश्व के इतिहास ने एकमात्र

प्रतीकात्मक शब्द 'स्तालिनग्राद' के रूप मे जनता के मस्तिष्क पर अंकित कर दिया था।

स्तालिनग्राद की ख्याति केवल इस कारण नही थी कि वोल्गा नदी के सकरे-से तट-वध की रक्षा अद्वितीय साहस के साथ की गयी थी, जिसकी मिसाल इतिहास मे नही मिलती। दुश्मन ने अपने असख्य सैनिक, सभी प्रकार के शस्त्रो से सज्जित सेनाए इस नगर के विरुद्ध लगा दी थी। नगर को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला गया था। मानव-इतिहास मे इतने वडे हमले की मिसाल ढूंढना मुश्किल है।

स्तालिनग्राद इस वात का प्रमाण था कि नयी सोवियत प्रणाली के अधीन प्रशिक्षित सेनानायको ने अपने अभूतपूर्व नेतृत्व का परिचय दिया था। छ· सप्ताह से भी कम समय मे सोवियत सेनाओ ने, तीन चरणो मे, एकीकृत और सोद्देश्य योजना पूरी कर ली थी। प्रत्येक चरण, सैन्य कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण था और वोल्गा एव दोन के वीच स्तेपी के विशाल क्षेत्रो में कार्यान्वित किया गया था। इस प्रकार सेनाओ ने दुश्मनो के २२ डिविजनो को घेर लिया था और ३६ के पाव उखाड दिये थे। और घिरे हुए दुश्मनो का सफाया करने अथवा उन्हे वदी वना लेने के लिए सिर्फ महीने भर की ज़रूरत और रह गयी थी।

स्तालिनग्राद नयी, सोवियत प्रणाली के अधीन पले हुए लोगो की सगठन-प्रतिभा का सब से अच्छा प्रमाण था। इसे समझने के लिए उस अथाह जन-शक्ति और सैन्य-सज्जा की कल्पना करने की जरूरत है, जिसे इस एकीकृत योजना, इस एकीकृत इच्छाशक्ति के अनुसार गतिशील वनाया गया; सामग्री और जन-शक्ति के उन विशाल सचयो की कल्पना कीजिये, जिन्हे इस योजना की क्रियान्विति के लिए सगृहीत तथा नव-निर्मित किया गया। विशाल स्तर पर जन समूह तथा सामग्री को मोर्चे तक पहुचाने के लिए सगठन के उन प्रयासो तथा भौतिक साधनो की कल्पना कीजिये,

जिनके अनुसार मोर्चे पर रसद, कपड़े, हथियार, ईंधन आदि जुटाये गये। और अन्ततः, इसके लिए, विश्व-ऐतिहासिक महत्त्व के शिक्षण एव प्रशिक्षण के उस कार्य की भी कल्पना कीजिये, जो इसलिए जरूरी था कि राजनीतिक ज्ञान और सैन्य अनुभव रखनेवाले, सर्जेंट से लेकर मार्शल तक सभी हजारो-हजार नेता और कमाडर इस महान कार्य का नेतृत्व कर सके और उसे करोडो सशस्त्र व्यक्तियो के एक सोद्देश्य आन्दोलन मे परिवर्तित कर सके।

स्तालिनग्राद, अराजकता से परिपूर्ण प्राचीन समाज पर नये समाज की अर्थव्यवस्था और उसकी एकीकृत योजना की श्रेष्ठता का उच्चतम द्योतक था। देश के अन्दर दुश्मन की करोडो आदमियो की सशस्त्र और सुसज्जित सेना घुस आयी थी। उसे यूरोप के अधिकाश देशो के उद्योगो और खेतीबारी की उपज उपलब्ध थी। इसपर वह डेढ साल तक अभूतपूर्व भौतिक विनाश और तबाही ढाती रही थी। प्राचीन किस्म के किसी भी राज्य के लिए आर्थिक दृष्टि से ऐसे आक्रमण की समस्या का हल कर पाना असम्भव होता। स्तालिनग्राद, पूजी की जजीरो से मुक्त हुई जनता की आध्यात्मिक शक्ति और ऐतिहासिक सूझ की अभिव्यक्ति था। इतिहास के पन्नो मे उसने इसी रूप मे प्रवेश किया था।

अन्य सोवियत जनो की भाति, इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको भी उस घटना के असली पैमाने से वाकिफ न हो सका था, जो उसने स्वय देखी थी, अथवा जिसमे उसने कोई भाग लिया था। किन्तु वह, रेडियो और लोगो की मार्फत, उक्रइनी छापामार हेडक्वार्टर और दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे की सैन्य परिषद् के सम्पर्क मे रहता था। इस परिषद् को उक्रइनी क्षेत्र मे सबसे पहले बढना था। इसी लिए वह, वोरोशीलोवग्राद क्षेत्र मे दुश्मन से लडनेवाले सोवियत जनो की अपेक्षा, सोवियत सेनाओ के आक्रमण के स्वरूप और परिमाण को कही अधिक समझता था।

वोरोशीलोवग्राद नगर मे चार खुफिया जिला पार्टी कमिटिया थी। प्रोत्सेको को उन्हे सक्रिय वनाना था। यह कार्य कर चुकने के वाद, वहा उसके रहने की कोई जरूरत न रह गयी थी। जिस समय यह खवर ग्रायी कि सोवियत सेना जर्मन मोर्चा तोडती हुई मध्य दोन मे घुस ग्रायी है, उस समय तक उसने ग्रपने ठिकाने कई वार वदले थे। नवम्वर के ग्रन्त से लेकर वह मुख्यतया वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी जिलो मे काम करने लगा था।

इवान फ्योदोरोविच को इस समय, विशेप तौर पर उत्तरी जिलो में काम करने के लिए किसी ने उकसाया नही था। उसने ग्रपनी सहज वुद्धि ग्रौर ग्रन्तश्चेतना के ग्राधार पर समझ लिया था कि उसकी उपस्थिति उस क्षेत्र मे ज्यादा जरूरी है जहा वढती हुई सोवियत सेनाए सवसे निकट पड़ती हो ग्रौर जहा, छापामार दस्तो ग्रौर नियमित सोवियत सेनाग्रो के वीच सैन्य समन्वय, ग्रन्य किसी स्थान की ग्रपेक्षा, ग्रधिक शीघ्र स्थापित हो सकता हो।

इवान फ्योदोरोविच ने जिस घड़ी की इतनी मुद्दत से प्रतीक्षा की थी, वह ग्रव पास ग्राती जा रही थी ग्रौर वह घडी थी जव कि एक वार फिर छोटे छोटे छापेमार दलो को ऐसे ऐसे दस्तो मे विलय कर देना सभव हो सकेगा जो वडे पैमाने पर कार्य कर सकेगे।

इस समय उसकी कार्रवाइयो का ग्रड्डा वेलोवोद्स्क जिले के एक गाव मे मार्फा कोर्नियेको के किसी रिश्तेदार के मकान मे था। वही मार्फा का पति, गार्ड्स सर्जेंट गोर्देई कोर्नियेको भी छिपा हुग्रा था। उसे ग्रभी हाल ही में दुश्मनो की कैंद से छुडाया गया था। कोर्नियेको ने उस गाव मे एक छापामार दल का सगठन किया था। यह दल ग्रपने सामान्य कार्यों के ग्रलावा, हर प्रकार के खतरो से भी इवान फ्योदोरोविच की रक्षा करता था। वेलोवोद्स्क जिले के सभी छापामार दल उस सरकारी फार्म के

डाइरेक्टर के कमान में थे, जहा गर्मियो मे क्रास्नोदोन के गोर्की स्कूल के विद्यार्थियो ने काम किया था। इसी व्यक्ति ने वच्चो को खतरनाक क्षेत्रो से हटाने के लिए मरीया अन्द्रेयेव्ना वोर्त्स को अपनी आखिरी लारी दे दी थी। प्रोत्सेको ने उसी को निर्देश दिया था कि वह वेलोवोद्स्क जिले की सभी टोलियो को इकट्ठा करे और दो सौ व्यक्तियो का एक दस्ता वनाये।

मध्य दोन क्षेत्र मे सोवियत सेनाओ के एक नये और वहुत वडे हमले के वारे मे दुनिया को खवर होने से पहले ही, प्रोत्सेको के रेडियो-आपरेटर को सकेतलिपि मे यह खवर मिली थी कि उत्तर-पूर्व से नोवया कलीत्वा–मोनस्तीर्श्चिना क्षेत्र पर, और पूर्व से चीर नदी पर वोकोव्स्कोये क्षेत्र मे, जर्मनो का मोर्चा तोड़ दिया गया है। उसी समय इवान फ्योदोरोविच के लिए भी यह आदेश दिया गया था उसे उत्तर मे कन्तेमीरोव्का और मार्कोव्का तथा पूर्व मे मील्लेरोवो, ग्लुबोकाया, कामेस्क और लिखाया मे दुश्मनो की सचार-लाइने नष्ट करने के लिए छापेमारो की समस्त उपलव्ध शक्ति का प्रयोग करना है। यह मोर्चे की सैन्य-परिषद् का आदेश था।

"हमारे भी दिन आ गये है," प्रोत्सेको ने विजयपूर्ण गर्व से कहा और रेडियो-आपरेटर को सीने से चिपका लिया।

उन्होने भाइयो की तरह एक दूसरे को चूमा। तव उसने रेडियो-आपरेटर को धीरे-से धक्का दिया और विना ओवरकोट पहने जल्दी से घर के वाहर निकल गया।

रात स्वच्छ थी। ठिठुरन भरी, तारो भरी। पिछले कुछ दिनो से काफी वर्फ गिरी थी और गांव की छते तथा दूरस्थ पहाडिया वर्फ की मोटी चादर ओढे ऊंघ रही थी। प्रोत्सेको मुह खोले हुए वर्फीली हवा मे सास ले रहा था। सर्दी तो जैसे उसे लग ही न रही थी। उसकी आखो से आंसू वह रहे थे जो गालो पर जमते जा रहे थे।

उसे घर पहुचने मे कोई एक घटा लग गया। वह अपने साथ रेडियो-आपरेटर और उसके सामान को भी लेता आया। वलवान गार्ड्समैन, गोर्देई कोर्नियेको अपनी कार्रवाइयो के वाद कुछ ही घटे पहले लौट आया था और सो रहा था। इन कार्रवाइयो के दौरान मे कई खेतिहर वस्तियो की पुलिस चौकियो का सफाया किया गया था। किन्तु जैसे ही इवान फ्योदोरोविच ने उसका कंधा छुआ और उसे खबरे सुनायी कि उसकी नीद काफूर हो गयी।

"मोनस्तीर्श्चिना के निकट!" वह चीख पडा और उसकी आखो मे चमक आ गयी, "मै उसी मोर्चे से तो आया हू। वही तो मुझे कैद किया गया था। तो फिर थोडे ही दिनो मे हमारी फौज यहा भी पहुच जायेगी। मेरी वात याद रखना।" वूढ़ा सैनिक उत्तेजना से भरकर सिसका और जल्दी जल्दी कपडे पहनने लगा।

गोर्देई कोर्नियेको को सभी उत्तरी छापेमार दलो का नायक वना दिया गया था। उसे तुरत ही मार्कोव्का–कान्तेमीरोव्का क्षेत्र मे कार्रवाई पर जाना था। प्रोत्सेको, रेडियो-आपरेटर और दो छापेमारो को गोरोदीश्ची पहुंचना था, जो फार्म डाइरेक्टर और उसके दस्ते की कार्रवाइयो का अड्डा था–अव प्रोत्सेको ने समझ लिया था कि समय आ गया है जव उसे स्थायी रूप से दस्ते के ही साथ रहना चाहिए।

प्रोत्सेको ने अपनी पत्नी की सहेली, माशा शूविना को भी वोरोशीलोवग्राद से अपने साथ ले लिया था। माशा ने प्रोत्सेको की एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा मे उसकी सदेशवाहिका का काम किया था। जैसे कि प्रोत्सेको ने आशा की थी, माशा वडी ही कर्त्तव्यनिष्ठ और पूरे लगन की औरत सावित हुई थी। वह उन कर्त्तव्यपरायण व्यक्तियो मे से थी जो अपने दैनिक जीवन मे इतने अलग-थलग रहते है कि जन्मजात सगठनकर्त्ता की अनुभवी आखे ही, दूसरो की भीड़ मे से, उन्हे चुन सकती

है। किन्तु एक वार चुन लिये लिये जाने पर ऐसे लोग काम कर सकने की इतनी अतिमानवीय सामर्थ्य का परिचय देते है, और साथ ही इतने निस्वार्थ होते है, कि उनके प्रधानो और नेताओं द्वारा दिये गये कार्यो को संपन्न करना मुख्यत उन्ही को सौपा जाता है। ऐसे लोगो की सहायता के विना सव से आवश्यक कार्य भी अधूरे और अपूर्ण रह जाते है।

माशा शूबिना काम मे इतनी फसी रहती थी कि उसके लिए रात और दिन एक बरावर हो गये थे। जिन लोगो के साथ उसने काम किया था, यदि वे यह समझने की कोशिश करते कि माशा के जीवन और कार्यो की सव से वडी विशेषता क्या थी तो उन्हे इस बात से जरूर आश्चर्य हुआ होता कि किसी को याद नही कि वह कभी सोयी थी। यदि वह कभी सोयी भी थी तो इतना कम कि लगता मानो वह कभी न सोती हो।

इस औरत के दिल मे काम के प्रति उत्साह कूट कूटकर भरा था। व्यक्तिगत रूप से उसके हृदय को जिस बात से राहत मिलती थी वह था इस वात का ज्ञान कि वह अकेली नही है। हा, अपनी सहेली कात्या के साथ उसका सीधा सम्पर्क न रह गया था, उसके साथ उसका सम्पर्क था मार्फा कोर्नियेको के जरिये। किन्तु माशा जानती थी कि उसकी सर्वोत्तम और सच्ची सहेली कही पास ही रह रही है और वे दोनो ही समान उद्देश्य की प्राप्ति मे लगी हुई है। माशा निस्वार्थ भाव से और पूर्णतया इवान फ्योदोरोविच के प्रति वफादार थी क्योकि उसने उसे बहुतो मे से चुना था और उसपर विश्वास करता था। इस विश्वास के बदले वह उसपर अपने प्राण तक निछावर कर सकती थी।

इस समय तरह तरह की महत्त्वपूर्ण घटनाए हो रही थी, जिनके विकास मे प्रोत्सेको ने अपनी योग्यता भर पूरा योग दिया था। उन्ही घटनाओ के बारे मे सोचते हुए वह रवाना होने से पहले माशा को आखिरी निर्देश दे रहा था।

"मार्फा के यहा तुम्हे मित्याकिन्स्काया दस्ते का कमाडर मिलेगा। उसका कार्यक्षेत्र उन सड़को पर पडता है जो ग्लुबोकाया और कामेस्क जाती है। उससे कहना कि तुरंत रवाना हो जाय और रात-दिन कार्रवाइया करता रहे ताकि दुश्मन को सास लेने का मौका तक न मिले। मार्फा से कहना कि वह कात्या से कहे कि वह अध्यापिका की नौकरी छोड-छाडकर यहा चली आये।"

"यहा, इस मकान मे?" माशा ने निश्चित तौर पर जानने के लिए पूछा।

"हा, इसी मकान मे। और तुम इसके बाद बिना समय बरबाद किये क्सेनिया कोतोवा से मिलना। तुम रास्ता तो मालूम कर लोगी न?"

"हा।"

जिस समय प्रोत्सेको ने माशा को उसकी ड्यूटी समझायी थी, उस समय उसने उसे एक पता दिया था—डाक्टर वलेन्तीना कोतोवा, प्रथम उपचार केन्द्र, ग्राम उस्पेका। वलेन्तीना की बहन, क्सेनिया, इस समय प्रोत्सेको की पत्नी कात्या और दोनेत्स के दक्षिण स्थित समस्त जिला पार्टी कमिटियो के बीच सदेशवाहिका के रूप मे काम कर रही थी।

"क्सेनिया से कहना अब कार्रवाई के इलाके लिखाया, शाख्ती, नोवोचेर्कास्क, रोस्तोव और तगनरोग जानेवाली सडके होगी," प्रोत्सेको कहता गया, "कार्रवाइया रात-दिन चलनी चाहिए ताकि दुश्मन को सास लेने का भी मौका न मिले। जिन क्षेत्रो मे मोर्चा निकट हो, वहा आबादी वाली जगहो पर कब्जा करके दुश्मन को उलझा लिया जाय। इस समय कात्या का मुख्य सम्पर्क-पता बदल गया है। अब से यह पता है—मार्फा का घर। अब नया सकेत शब्द है," उसने माशा के कान मे कुछ कहा। "भूलोगी तो नही?"

"नही।"

वह एक मिनट तक सोतना रहा और तव वोला :

"वस इतना ही।"

"तो अव ?" माशा ने आंखे उठाकर उसकी ओर देखा। उसके प्रश्न का असली अर्थ था, "और मेरे लिए भी कुछ?" किन्तु उसकी आखो मे कोई भी भाव न दिखाई दिया।

प्रोत्सेको की याद अच्छी थी। अत उसने मन ही मन सोचा कि कही उसने कोई वात छोड तो नही दी और तभी उसे याद आया कि उसने इस सबध मे तो कोई निर्देश दिया ही नही था कि खुद माशा को क्या करना है।

"हा .. जव तुम क्सेनिया के पास जाना तो जैसा वह कहे वैसा ही करना। तुम दोनो का मार्फा के साथ सम्पर्क रहेगा। हा उससे मेरी ओर से यह भी कह देना कि वह तुम्हे कही दूसरी जगह न भेजे।"

माशा ने आखे नीची कर ली। उसने कल्पना की कि वह अकेली जा रही है और उसके और उन जगहो के बीच की दूरी वढ गयी है जहा किसी भी दिन सोवियत सेना आ सकती है। हा, कुछ ही दिनो मे, जिस जगह वह प्रोत्सेको के साथ खड़ी है, वहा दुश्मन का एक भी सैनिक न रह जायेगा और वे जिस उज्जवल संसार की इतने दिनो से प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसके लिए उन्होने अपनी जिन्दगी की वाजी लगा दी थी, वह शीघ्र ही अवतरित होगा।

"अच्छा तो माशा," प्रोत्सेको बोला, "हममे से किसी के भी पास खोने के लिए वक्त नही। तुम्हे इन सब के लिए धन्यवाद .. "

उसने माशा को कसकर गले लगाया और उसके ओंठ चूम लिये। एक क्षण के लिए वह उसकी वाहो मे निश्चेप्ट पडी रही। वह जैसे उत्तर देने मे भी असमर्थ हो रही थी।

जब वह घर से बाहर निकली तो जर्मन अधिकृत प्रदेशो मे रहनेवाली गरीब से गरीब औरतो की तरह कपडे पहने और कन्धे पर सें थैला लटकाये थी। इवान फ्योदोरोविच उसे दरवाजे तक पहुचाने नही आया था। अभी भोर होने मे काफी देर थी। उसके पैरो के नीचे की बर्फ कडकडा रही थी। उसके वयस्क चेहरे पर तरुणाई झलक रही थी। यह मामूली-सी किन्तु दृढ-सकल्प वाली औरत अपने लम्बे और एकाकी रास्ते पर बढती जा रही थी।

जैसे ही हल्के कोहरे मे से जाडे का भोर छनता हुआ दिखाई दिया कि प्रोत्सेको अपनी छोटी-सी टोली के साथ बाहर निकल गया। सुबह शान्त थी और चारो ओर पाला पडा था। पृथ्वी और आकाश पर जीवन का जैसे कोई चिह्न तक न रह गया था—कोई आवाज तक नही, हवा की सरसराहट तक नही। जहा तक आख जाती थी, श्वेत शून्य और घाटियो के किनारे किनारे अथवा पहाडियो के ढलवानो पर हल्के, भूरे धब्बो की तरह झाडियो के झुरमुट दिखाई पडते थे। हर चीज बर्फ की मोटी-सी चादर के नीचे सो रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे तकलीफ, गरीबी और उदासी वहा खूटा गाडकर जम गयी है। इवान फ्योदोरोविच इस निस्सीम क्षेत्र को पार कर गया। उसका उफनता हुआ हृदय विजय के उल्लास से नाच रहा था।

जिस दिन भोर के समय प्रोत्सेको अपने दस्ते मे शामिल होने गया था, उसके कोई पाच दिन पहले एक छापामार, गहरी रात गये प्रोत्सेको की पत्नी कात्या को उस जगह लाया जहा प्रोत्सेको, गोरोदीश्ची के बाहर एक सुनसान और एकाकी घर मे उसका इन्तजार कर रहा था। छापामार ने नकली फर के अस्तर वाला जर्मन सिरपोश पहन रखा था। उस विशाल प्रदेश मे घमासान लडाइया हो रही थी जिनकी भयकर गरज से जमीन

और आसमान दोनो हिलने लगे थे। बारूद से काला हो गया प्रोत्सेको, बैठा बैठा अपनी पत्नी का सुन्दर मुखडा निहार रहा था।

चारो ओर जैसे खलबली, भाग-दौड़ और रोशनी की झिलमिलाहट-सी दिखाई पड रही थी। रात मे प्रकाश-राकेट की चमक और तोपो की धमक से निकलनेवाली आग आसपास कई कई मील तक दिखाई पडती थी। जमीन पर और वायुमडल मे एक गड़गडाहट-सी सुनाई पड़ती थी। कही पर विशालकाय टैको की और विमानो की लडाइया जोर-शोर से चल रही थी। प्रोत्सेको के दस्ते के कुछ लोगो को यह खबर मिली कि अभी गार्ड्स पदक प्राप्त टैको का एक दस्ता दुश्मनो का घेरा तोड़ता हुआ उनसे मिलने आ रहा है, अत. यह भ्रम उनके दिमाग से टूटता ही न था कि वे युद्ध मे भडभडाते हुए टैको की धमक सुन रहे है। आसमान मे बहुत ऊपर, सोवियत और जर्मन विमान सफेद धारिया बना गये थे जो पालेदार हवा मे घटो निश्चल लटकी रही।

जर्मन सेना की टुकडियो के पृष्ठवर्त्ती सैनिक, अस्त-व्यस्त दशा मे, पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम की ओर बडी सडको पर रेगते चले जा रहे थे। इधर देहातो की अनगिनत सडको पर प्रोत्सेको के आदमियो का अधिकार था। जैसा घोर पराजय के समय प्राय होता है अर्थात् उस समय जब कि विजेता निर्बाध बढता जाता है—जर्मनो की सभी सेनाएं, जिनमे मुकाबिला करने की कुछ भी शक्ति रह गयी थी, अपने सामने सब से बडे खतरे से जूझ रही थी। ऐसे नाजुक समय मे वे छापामारो से भला कैसे मोर्चा ले सकती थी।

छोटे-बडे, सभी आबादी वाले इलाको मे, और खासकर उत्तरी दोनेत्स मे गिरनेवाली कमीश्नाया, देर्कूल और येवसूग नदियो के किनारे के क्षेत्रो मे जर्मन टुकडिया छावनी डाले थी। इन सभी इलाको मे पहले ही स्थायी किलेबन्दी की जा चुकी थी और इस समय जल्दी जल्दी नयी किलेबन्दी

की जा रही थी। किलेबन्दी के इन सभी स्थानो मे, उस समय भी जव सोवियत सेनाएं उन्हे छोड़कर आगे वढ गयी थी, वे सव उनके पीछे रह गये थे, भयानक लडाइयां लडी जा रही थी। जर्मन फौजे आखिरी सैनिक तक लड़ती रही क्योकि उन्हे हिटलर का यह आदेश मिला था कि वे न तो पीछे हटे और न आत्मसमर्पण ही करे। खदेडी गयी या पहले पकडी गयी वची-खुची जर्मन टुकडिया, जो अव गावो की सड़को पर सैनिको और अफसरो के छोटे-वड़े दल वनाकर भाग रही थी छापेमारो का शिकार वन रही थी।

सोवियत सेना की वढती हुई रफ्तार का अन्दाज केवल इसी वात से लग जाता था कि जर्मनो के पृष्ठवर्त्ती हवाई अड्डे, जो कई महीनो से वेकार पडे थे, अव पाच दिनो के अन्दर अन्दर असाधारण रूप से सक्रिय हो उठे थे और सोवियत वायु-सेना की भयकर शक्ति का निशाना वन रहे थे। जर्मनो ने शीघ्र ही दूर तक गोला फेकनेवाले अपने वमवर्षको को काफी पीछे के अड्डो मे हटा लिया था।

वे उस सुनसान घर मे अकेले थे। वाहर पाले के कारण कात्या का चेहरा अव भी लाल था। उसने भेड की खाल वाला अपना किसानी कोट अलग फेक दिया था। कम सोने के कारण प्रोत्सेको का चेहरा भारी लग रहा था किन्तु उसकी आखो मे शरारत चमकने लगी जव उक्रइनी भाषा मे उसने कहा—

"हमे गार्ड्स टैक दस्ते के राजनीतिक विभाग द्वारा जो कुछ भी करने की सलाह दी गयी थी वह सव कुछ हम कर रहे है, और ठीक से कर रहे है," वह हंसा, "कात्या, मैने तुम्हे इसलिए वुलाया है कि इस काम मे मै सिर्फ तुम्हारा ही विश्वास कर सकता हू। तुम अनुमान लगा सकती हो कि काम कौन-सा होगा?"

वह अव भी उसके प्रथम उद्वेगपूर्ण आलिगन का और अपनी आखो पर

उसके चुम्बनो का अनुभव कर रही थी। कात्या की आखे अब भी भीगी थी और चमक रही थी क्योकि वे इवान फ्योदोरोविच पर जमी थी। किन्तु प्रोत्सेको तो सिर्फ एक ही बात कह सकता था, वह जो उसके दिमाग पर छायी हुई थी। कात्या ने तुरत ही, अपने बुलाये जाने के कारण का अनुमान लगा लिया था। वस्तुत अनुमान से काम लेने की कोई भी जरूरत न थी, वह तो उसी समय समझ गयी थी, जिस समय उसने अपने पति पर निगाह डाली थी। कुछ ही घटो में वह फिर उसे छोडकर चली जायेगी। कहा जायेगी, यह वह जानती थी। यह बात वह कैसे जानती थी, इसे वह स्वय समझने मे असमर्थ थी। वह उसे प्यार जो करती थी। अत येकतेरीना पाव्लोव्ना ने उत्तर मे, हामी भरते हुए अपना सिर हिला दिया और फिर अपनी गीली और चमचमाती हुई आखे उस पर गड़ा दी। कात्या के कठोर और मुर्झाये हुए किन्तु सुडौल चेहरे पर उसकी आखे बडी आकर्षक लग रही थी।

प्रोत्सेको उछलकर खडा हो गया। पहले यह देखा कि दरवाजा अच्छी तरह बद है या नही। उसके बाद नक्शो के बस्ते मे से, फुलस्केप पृष्ठ के चौथाई आकार के कुछ महीन कागज निकाल लिये।

"देखो", उसने ये पन्ने मेज पर बडी सावधानी से फैला दिये, "तुम देख रही हो न कि मैंने सब कुछ सकेतलिपि मे लिख दिया है। पर नक्शे को तो सकेतलिपि मे नही दिखाया जा सकता।"

हर कागज के दोनो ओर बहुत महीन पेंसिल से इतने छोटे छोटे अक्षर लिखे थे कि यह कल्पना करना कठिन था कि मनुष्य के हाथ ने इन्हे लिखा है। एक कागज पर वोरोशीलोवग्राद प्रदेश का बढिया नक्शा खिचा था, जिस पर वर्ग, छोटे वृत्त और त्रिकोण बने थे। इस काम मे कितना श्रम लगाया गया था इसका पता केवल इसी बात से लगता था कि लेख का सब से बडा चिह्न खटमल से बडा न था और सब से छोटा

पिन के सिरे जितना। इन पन्नो मे वह सारी सूचना सगृहीत थी जो पिछले पांच महीनो मे एकत्र की गयी थी और जिसकी अच्छी तरह जाच की जा चुकी थी। नयी सूचनाओ का व्योरा भी इनके साथ दिया गया था। इस लेख मे वे विवरण थे जो प्रतिरक्षा के मुख्य मोर्चो, किलेबन्दी के स्थानो, तोपे रखने की जगहो, हवाई अड्डो, विमानमार तोपे और लारिया रखने की जगहो तथा मरम्मत खानो के सबध मे थे। इनके अलावा उनमे, फौजी टुकडियो के सैनिको की सख्या और शस्त्रास्त्रो के परिमाण आदि के भी व्योरे थे।

"उनसे कह देना कि वोरोशीलोवग्राद मे और दोन के किनारे किनारे वहुत-से परिवर्तन हुए होगे जो दुश्मनो ने अपने को मजवूत वनाने के लिए किये होगे। दोनेत्स के सामने सव कुछ वैसा ही होगा जैसा मैने लिख दिया है। यह भी वता देना कि मिऊस नदी को वडी मजवूती से किलेबन्द किया जा रहा है। इन सवसे वे अपने निष्कर्ष स्वय ही निकाल लेगे। मै उन्हे क्या सिखाऊगा! हा, यह मै तुमसे जरूर कह सकता हू कि यदि वे मिऊस को किलेवद कर रहे है तो इसके माने यह है कि हिटलर को यह विश्वास नही कि उसकी फौज रोस्तोव को अपने हाथ मे रख सकेगी। समझी?"

इवान फ्योदोरोविच बडी खुशी से और ठहाका मारकर वैसे ही हस दिया जैसे वह अपने परिवार मे और खास तौर से वाल-बच्चो के वीच उस समय हसता था, जव वह काम मे व्यस्त न होता था। एक क्षण तक दोनो ही भूल गये कि उनके आगे कैसी कैसी मुसीबते है। प्रोत्सेको ने कात्या का मुह अपने हाथो मे ले लिया और तनिक पीछे को हटकर, अत्यन्त वात्सल्यपूर्ण आखो से उसकी ओर देखते हुए फुसफुसाता रहा—

"आह, मेरी प्यारी, मेरी वुलवुल हा, हा," वह खुशी से

झूम उठा, "सबसे जरूरी खबर तो मैंने तुम्हें सुनायी ही नहीं—हमारी सेना उक्रइन में घुस आयी है। देखो।"

अपने बस्ते में से उसने एक बड़ा-सा फौजी नक्शा निकाला जो कई टुकड़ों में गोंद से जुड़ा था। उसने नक्शा मेज पर फैला दिया। सब से पहले कात्या की निगाह कई आबादी वाले स्थानों पर पड़ी जिन्हें लाल, नीली पेंसिल से घेर दिया गया था। इन स्थानों को सोवियत सेनाओं ने, वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तर-पूर्व के सीमावर्ती भागों में, अपने अधिकार में कर लिया था। कात्या का दिल तेजी से धड़कने लगा क्योंकि इनमें से कुछ जगहें गोर्गेदोन्ची से बिलकुल निकट थीं।

प्रोत्सेंको और उसकी पत्नी एक दूसरे से उस समय मिले थे, जब महान स्तालिनग्राद मोर्चे का दूसरा और तीसरा चरण पूरे न हुए थे और स्तालिनग्राद में जर्मन सेनाओं के इर्द-गिर्द दूसरा घेरा पूरी तरह न डाला गया था। रात में इस आशय की खबर आयी थी कि स्तालिनग्राद की टुकड़ियों का भार कम करने के लिए कोतेल्निकोवो क्षेत्र में जर्मनों की जो नई टुकड़िया भेजी जा रही थीं, उन्हें बुरी तरह से परास्त किया जा चुका था और यह खबर भी सुनने को मिली थी कि उत्तरी काकेशिया में सोवियत सेना ने हमला कर दिया है।

"हमारी टुकड़ियों ने लिखाया से स्तालिनग्राद जानेवाली रेलवे लाइन को दो स्थानों पर काट दिया है—यहा चेर्निशेव्स्काया में और तत्सीस्काया में," प्रोत्सेंको बड़े उत्साह से बोल उठा, "किन्तु मोरोजोव्स्की अब भी जर्मनों के अधिकार में है। और यहा, कलीत्वा नदी के किनारे किनारे की सभी बस्तिया अब हमारे हाथों में हैं। हम मील्लेरोवो-वोरोनेज रेलवे लाइन को पार करते हुए, कन्तेमीरोव्का के उत्तर में यहा तक आ गये हैं, पर मील्लेरोवो अब भी जर्मनों के हाथ में है। और वहां उन्होंने बहुत जबर्दस्त किलेबन्दी की है। पर लगता है जैसे हमारी सेनाएं दूसरे रास्ते से होकर

निकल आयी है—देखो न टैंक कितनी दूर तक चले आये है।" वह नक्शे पर कमीग्नाया नदी के किनारे किनारे, उगली चलाते चलाते मील्लेरोवो के पश्चिम मे एक स्थान पर रुक गया और कात्या की ओर देखने लगा।

वह वडे ध्यान से नक्शे की ओर देख रही थी, यह जानने के लिए कि गोरोदीश्ची के सबसे निकट सोवियत सेनाए कहा कहा पर है। उसकी आखो मे वाज जैसा भाव झलक रहा था। इन क्षेत्रो को कात्या इतने ध्यान से क्यो देख रही थी, इसका कारण इवान फ्योदोरोविच जानता था, और उसने कुछ भी न कहा। कात्या ने नक्शे पर से अपनी आखे उठायी और एक क्षण के लिए शून्य मे ताकती रही। अब उसके चेहरे पर विवेक, चिन्ता और करुणा का सामान्य भाव झलक उठा था। इवान फ्योदोरोविच ने एक आह भरी और महीन कागज पर वना हुआ नक्शा वडे फौजी नक्शे पर रख दिया।

"इसे अच्छी तरह देख लो। तुम्हे यह सब याद रखना होगा, क्योकि अपने रास्ते पर निकल पडने के बाद यह नक्शा फिर तुम्हे देखने को न मिलेगा," वह वोला, "ये कागज अपने शरीर पर ही कही ऐसी जगह छिपा लेना कि किसी मुसीबत का सामना होने पर तुरत उन्हे निकाल कर निगल सको। और हा, अब अपना नया परिचय भी याद रखना। मसलन् शरणार्थी, चीर से भागी हुई अध्यापिका, लाल सैनिको से पीछा छुडाने के लिए भागी हुई एक अवला। जर्मनो और पुलिस वालो से तुम यही कहना। स्थानीय निवासियो को यह बताना कि तुम चीर की रहनेवाली हो और स्तारोवेल्स्क मे अपने रिश्तेदारो के पास जा रही हो क्योकि तुम अपने आप अपना पेट भरने मे असमर्थ हो। अच्छे लोग तुम्हारी दुर्दशा पर दुख प्रगट करेगें, तुम्हे पनाह देगे और वुरे लोग भी नही दुतकारेगे," प्रोत्सेंको ने अपनी पत्नी की ओर देखे विना, विनम्र स्वर मे कहा, "याद रखना, जिस अर्थ मे हम मोर्चे को समझते है वैसा कोई मोर्चा अव नही

है। हमारे टैंक इधर-उधर बढ रहे हैं। जर्मनो की सभी किलेबन्दियों के इर्द-गिर्द चक्कर काटकर जाओ ताकि किसी की आखो के सामने न पडो। किन्तु तुम्हे इधर-उधर कुछ छिटपुट जर्मन मिल सकते हैं जिनसे खास तौर से होशियार रहना है। जब तुम इस रेखा पर, यहा, पहुच जाओ तो रुककर हमारी फौज का इन्तजार करना। देखो मैंने यहा नक्शे मे कुछ भी नही दिखाया है क्योकि हमे इस क्षेत्र के बारे मे कोई सूचना नहीं मिली। और तुम किसी से पूछ भी नही सकोगी। ऐसा करना खतरनाक होगा। किसी अकेली बुढिया की टोह मे रहना और उसी के साथ टिक जाना। अगर लडाई बिलकुल सिर पर आ जाय तो बुढिया के साथ तहखाने मे घुसकर दुबकी हुई बैठी रहना ."

कात्या से यह सब कहने की कोई खास जरूरत न थी किन्तु वह उसकी सहायता करना चाहता था। वह केवल सलाह ही दे सकता था। अगर वह उसकी जगह खुद गया होता तो उसे कितनी प्रसन्नता हुई होती!

"जैसे ही तुम यहा से चल दोगी कि मै खबर दे दूगा कि तुम रास्ते मे हो। और यदि तुमसे कोई मिलने न आये तो जो भी लाल सेना का सैनिक तुम्हे मिले और होशियार जान पड़े उससे कहना कि वह तुम्हे टैंक दस्ते के राजनीतिक विभाग तक पहुचा दे।" उसकी आखो मे सहसा शरारत की चमक दिखाई दी और वह कहने लगा, "और जब तुम राजनीतिक विभाग मे पहुच जाना तो यह न भूलना कि तुम्हारा एक पति भी है। उनसे कहना कि मुझे इस बात की खबर कर दे कि तुम सुरक्षित पहुच गयी।"

"मै उनसे यह तो जरूर कहूगी, बल्कि यह भी कहूगी, 'या तो लोग अपनी रफ्तार बढाओ और मेरे पति की रक्षा करो या फिर मुझे ही जल्दी से उसके पास जाने दो,'" कात्या बोली और हस दी।

सहसा प्रोत्सेको खोया खोया सा दिखने लगा।

"मै इस प्रसग को उठाना ही नही चाहता था लेकिन अब देखता हू कि उठाना ही पडेगा," वह बोला। उसका चेहरा गभीर हो उठा था। "हमारी फौजे चाहे जिस गति से भी आगे क्यो न बढे। मै उनकी प्रतीक्षा न करूगा। हमारा कार्य, जर्मनो के साथ साथ, पीछे हटना है। हमारी सेनाए यहा आयेगी किन्तु हम तो भागते हुए जर्मनो के ही साथ रहेगे। जब तक आखिरी जर्मन हमारे वोरोगीलोवग्राद प्रदेश से नही भाग जाता तब तक मै उनसे लडता रहूगा। अन्यथा हमारे खुफिया लडाके और स्तारोबेल्स्क, वोरोशीलोवग्राद, क्रास्नोदोन, रुवेजान्स्क और क्रास्नी लूच के हमारे छापेमार मेरे बारे मे क्या कहेगे? और तुम्हारा मेरे पास यहा आना भी बेवकूफी होगी—उसकी कोई जरूरत नही। मेरी बात सुनो।" प्रोत्सेको ने कात्या की ओर झुककर, उसकी नाजुक उगलियो को अपने कडे हाथो मे लेकर दबाते हुए कहा

"दस्ते के साथ न रहना। वहा तुम्हारे लायक कोई काम नही। उनसे कहना कि वे तुम्हे मोर्चे की सैन्यपरिषद् मे भेज दे। तुम वहा साथी ख्रुश्चेव से मिलोगी। उनसे कहना कि वे तुम्हे बच्चो से मिला दे। इसमे शर्माने की कोई बात नही। यह अधिकार तुम पहले ही प्राप्त कर चुकी हो। वस्तुत हम यह नही जानते कि बच्चे है कहा—सरातोव मे या कही और, तथा वे जीवित और स्वस्थ भी है या नही।"

कात्या ने उसकी ओर देखा और कोई जवाब न दिया। रात मे दूर पर होती हुई लडाई उस छोटे-से अलग-थलग मकान को हिलाये दे रही थी।

प्रोत्सेको का हृदय अपनी सखा, अपनी प्रिय पत्नी के प्रति प्रेम और सहानुभूति से विभोर हो उठा था। अकेला वही जानता था कि कात्या कितनी विनम्र, कितनी सुकुमार थी, कितने अतिमानवीय चरित्रबल से वह सभी, खतरो, कष्टो और अपमानो पर विजय प्राप्त करती थी, किस प्रकार अपने निकट से निकट साथियो की मृत्यु को सहन करती थी। वह

चाहता तो यही था कि कात्या दूर, वहा रहे जहा लोग आजादी से रहते हो, जहा सुख हो, सद्भावना हो, बच्चे हो। पर कात्या तो दूसरी ही बात सोच रही थी।

वह अपने पति के चेहरे पर से अपनी आखे न हटा सकी। उसने अपना हाथ छुडाया और धीरे धीरे अपनी अगुलियां पति के सुनहरी बालो मे फेरने लगी। पिछले कुछ महीनो मे उसके बाल कनपटियो के और भी पीछे हट गये थे, फलत. उसका ललाट और भी ऊचा लगने लगा था। वह उसके कोमल, सुनहरी बालो को धीरे धीरे थपथपाते हुए बोली·

"बोलो मत, कुछ मत कहो। मै सब कुछ खुद जानती हू। वे जैसा उचित समझे, मुझसे काम ले क्योकि मै यह कभी न कहूगी कि मुझे कही भेज दिया जाय। जब तक तुम यहा हो तब तक मै तुम्हारे इतने निकट रहूगी, जितना वे मुझे रहने देगे।"

उसने कुछ आपत्ति करनी चाही किन्तु सहसा उसके चेहरे का तनाव दूर हो गया, उसने उसके दोनो हाथ पकड़े और उनसे अपना चेहरा ढाप लिया।

कुछ क्षणो बाद उसने अपनी नीली आखे उसकी आखो मे डालते हुए धीरे-से बोला—

"कात्या"

"हा, समय हो गया," उसने कहा और उठ बैठी।

## अध्याय १९

कात्या को जो व्यक्ति पहुचाने गया था वह पडोस के गाव का एक बूढा था। लोग उसे "बूढा फोमा" कहते थे। वह झबरे भालू की तरह विशालकाय था। यात्रा के आरंभ मे कात्या और बूढे फोमा ने आपस

मे कुछ वातचीत की थी, जिससे कात्या को पता चल गया था कि उसका नाम कोर्नियेको था। वह इन क्षेत्रो मे पुराने वसनेवाले उक्रइनी कुटुम्बों से ही एक कुटुम्ब का चिराग था, और गोर्देई कोर्नियेको का एक दूर का रिश्तेदार।

आगे चलकर कोई वातचीत न हुई।

दोनो रातभर देहात की सडको पर अथवा खुली हुई स्तेपी मे चलते रहे। जमीन पर पड़ी हुई वर्फ गहरी न थी अत चलना-फिरना आसान था। समय समय पर, क्षितिज के ऊपर से, उत्तर या दक्षिण मे लारियो-मोटरो की वत्तियो का प्रकाश पडता था, क्योकि उधर बडी बडी सडके थी। सड़के दूर थी, फिर भी ये दोनो यात्री उनपर दौड़ती हुई कारो की भनभनाहट सुन सकते थे। मील्लेरोवो क्षेत्र मे परास्त की गयी जर्मन टुकडिया दक्षिण की ओर भाग रही थी। और उत्तर मे वरान्निकोव्का क्षेत्र से अन्य जर्मन फौजे भाग रही थी। वरान्निकोव्का वह पहला गाव था जिसपर वोरोशीलोवग्राद प्रदेश मे सोवियत सेना ने पुन अधिकार किया था।

कात्या और वूढा फोमा पूर्व की ओर वढ रहे थे, किन्तु प्राय उन्हे मजबूरन, गावो और स्तेपी के किलेवन्दी वाले इलाको से घूमकर ही जाना पडता था। कात्या को लग रहा था जैसे यह सडक समाप्त ही न होगी, फिर भी दोनो युद्धरत टुकडियो के निकट पहुच रहे थे–तोपो के धमाके अब जोरो से सुनाई पडने लगे थे और छूटते हुए गोलो से निकलनेवाली आग आसानी से दीख पड रही थी। प्रात काल वर्फ गिरने लगी जिससे सभी ध्वनियो के मुह वन्द-से हो गये थे और हर चीज निगाह से छिप गयी थी।

कात्या की पीठ पर सफरी झोला लटक रहा था और सारा वदन वर्फ से ढक गया था। वह शरणार्थियो-वाले फेल्ट के जर्जर वूट पहने अपने

रास्ते पर बढती जा रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसके आसपास की हर चीज अवास्तविक है, हर चीज मायावी — रोये की टोपी पहने और टोपी के कनपट खोले हुए बूढे फोमा की विशाल आकृति भी, उनके पैरो के नीचे बर्फ की चर्र चर्र भी, और उनकी आखो के आगे गिरती हुई मुलायम बर्फ भी। उसका मस्तिष्क शिथिल हो रहा था, वह कुछ कुछ स्वप्नावस्था मे पहुच गयी थी।

सहसा उसे अपने नीचे की जमीन सख्त लगने लगी। बूढा फोमा रुक गया। कात्या ने अपना चेहरा उसके चेहरे से सटाया और उसने तत्काल समझ लिया कि इसी जगह उन्हे एक दूसरे से अलग होना है।

बूढे फोमा ने उसे चिन्ता और सहानुभूति की दृष्टि से देखा और अपने जर्जर और सावले हाथ से गाव को जानेवाली उस सडक की ओर इशारा किया जिस तक अब वे पहुच चुके थे। कात्या उसी दिशा मे देखती रही जिधर फोमा ने इशारा किया था। सुबह का उजाला फैलने लगा था। बूढे ने अपने बडे बडे हाथ कात्या के कधो पर रखे, कुछ आगे उसके पास बढा और उसकी दाढी-मूछे उसके गालो से रगड खाने लगी। तब वह फुसफुसाते हुए बोला

"सिर्फ पाच सौ गज। समझी?"

"अच्छा तो विदा," वह फुसफुसायी।

वह कुछ कदम चली और मुडकर देखने लगी। फोमा कोर्नियेको अब भी सडक पर खडा था। कात्या ने समझ लिया कि वह तब तक वहा खडा रहेगा जब तक वह उसकी आखो से ओझल न हो जायेगी। पचास गज आगे बढने के बाद भी वह उस बूढे की बर्फ से ढंकी आकृति देख रही थी। बूढा इस समय 'सान्ता क्लॉस' जैसा दीख रहा था। किन्तु जब वह तीसरी बार मुडी तो बूढा फ़ोमा आखो से ओझल हो चुका था।

यह अन्तिम गाव था जहा कात्या किसी की मदद की आशा कर सकती थी। जहा यह गाव पार किया कि उसे पूर्णत अपने ऊपर ही निर्भर रहना होगा। गाव, अपने पूर्व मे स्थित ऊची ऊची किलेवन्दियो के पीछे था। जर्मनो ने यह किलेवन्दी जल्दी जल्दी मे की थी और वह उनकी प्रतिरक्षा का एक अग थी। प्रोत्सेको ने कात्या को पहले ही वता दिया था कि गाव के सवसे आरामदेह मकानो पर किलेवन्दी का सचालन करनेवाले छोटे छोटे दस्तो के जर्मन अफसरो तथा हेडक्वार्टरो ने कब्जा कर रखा है। उसने अपनी पत्नी को आगाह कर दिया था कि यदि गाव मे, कमीश्नाया नदी के किनारे किनारे की प्रतिरक्षा-स्थलो से मजवूरन भागी हुई टुकड़ियो ने पनाह ले रखी होगी तो कात्या के लिए स्थिति जटिल भी हो सकती है। यह नदी दोनेत्स की एक सहायक नदी देर्कूल मे गिरती थी। यह नदी रोस्तोव प्रदेश की सीमा के पास उत्तर से दक्षिण की ओर और कन्तेमीरोव्का-मील्लेरोवो रेलमार्ग के समानान्तर वहती थी। कात्या को कमीश्नाया के किनारे स्थित एक गाव मे जाकर वहा सोवियत फौज के आने का इन्तजार करना था।

उसे अब गिरती हुई वर्फ के आवरण मे से गाव के पहले मकान की धूमिल आकृति-सी दिखाई देने लगी थी। वह मकानो की छतो पर निगाह रखे रखे, सडक से हटकर गाव मे पिछवाडे से होकर पहुचने के लिए खेतो से होकर जाने लगी। उसे वताया गया था कि उसे तीसरे मकान मे जाना है। जिस समय वह उस छोटे-से मकान मे पहुची उस समय दिन निकल आया था। उसने खिडकी की झिलमिली से कान सटाकर कुछ सुनने की कोशिश की। भीतर सन्नाटा था। उसने खिडकी को नही खटखटाया जैसे उसे निर्देश दिया गया था उसे केवल हाथ से खुरचा।

काफी देर तक उसे कोई उत्तर न मिला। उसका दिल जोरो से धडकने लगा। कुछ क्षणो के वाद उसे भीतर से कोई धीमी-सी आवाज,

जो शायद किसी छोटे बालक की रही होगी, सुनाई दी। वह फिर हाथ से खिडकी को खुरचने लगी। मिट्टी के फर्श पर चलते दो छोटे छोटे पैरो की आहट आयी। और दरवाजा खुला। कात्या अन्दर चली गयी। कमरे मे घुप अधेरा था।

"कहा से आ रही हो तुम?" एक बच्चे ने धीरे-से उक्रइनी मे पूछा।

कात्या ने वही शब्द कहे जो पहले से तय हो चुके थे।

"मा, सुन रही हो न?" बालक बोला।

"चुप..." एक औरत की फुसफुसाहट सुनाई दी। "तुम जरा भी रूसी नही जानते क्या? तुम यह भी नही सुन सकते कि वह रूसी है? मेहरबानी करके अन्दर आये और यहा बिस्तर पर बैठे। साशा, इन्हे अन्दर ले आओ।"

बालक की ठढी उगलियो ने कात्या का हाथ थामा और उसे कमरे से होकर ले आया। कात्या का हाथ गर्म था क्योकि वह दस्ताना पहने रही थी। तब उस औरत ने कात्या का हाथ पकडा और बालक ने छोड दिया।

"जरा ठहरो," कात्या बोली, "मै अपनी जैकेट उतार लूं"।

किन्तु उस स्त्री के हाथ ने कात्या का हाथ पकडा और उसे बिस्तर के पास खीच लिया।

"जैसी हो वैसी ही बैठ जाओ। यहा सर्दी है। तुमने किसी जर्मन गश्तीपुलिस को तो नही देखा?" उस औरत ने पूछा।

"नही।"

कात्या ने अपना सफरी झोला उतारा, सिर पर से शाल खोला और बर्फ झाडी। तब उसने भेड की खाल वाली अपनी जैकेट के बटन खोले, उसके पल्ले पकड़कर उसे झाडा और उस औरत की बगल मे

विस्तर पर वैठ गयी। वालक भी विस्तर पर चढकर अपनी मा से सट गया और कात्या ने, मातृ-सुलभ चेतना से, समझ लिया कि वालक अपनी मा के शरीर से सटकर गरमाहट का सुख लेने उसके पास पहुच गया था।

"गांव मे वहुत-से जर्मन हैं क्या?" कात्या ने पूछा।

"दरअसल वहुत तो नही है। अव ज्यादातर जर्मन गाव मे नही सोते, वल्कि दूर के तहखानो मे सोते हैं।"

"तहखानो मे," वालक ने दात निकाले, "तुम्हारा मतलव है खाइयों में"।

"एक ही वात है। उनका कहना है कि उन्हे यहा कुमक पहुचायी जायेगी क्योकि वे यहां के मोर्चे पर जमे रहेगे।"

"कृपया मुझे वताओ–तुम्हारा नाम गलीना अलेक्सेयेव्ना है?" कात्या ने उससे पूछा।

"मुझे सिर्फ गाल्या कहो। मै कोई वुढ़िया नही हू। मेरा नाम है गाल्या कोर्नियेको।"

कात्या को वताया गया था कि उसकी भेट एक और कोर्नियेको से होगी।

"क्या तुम मोर्चा पार करके हमारे लोगो से मिलने जा रही हो?" धीरे-से वच्चे ने पूछा।

"हां। यह सभव तो है न?"

लडके ने तुरत कोई जवाव न दिया। तव जैसे गूढ भाव से वोला–

"लोगो ने यह किया था"

"अभी-हाल-ही मे?"

लडके ने कोई जवाव न दिया।

"मै तुम्हे क्या कहकर पुकारू?" उस औरत ने पूछा।

"पासपोर्ट मे तो मेरा नाम वेरा लिखा है।"

"तो वेरा ही बुलाऊगी। यहा के लोगो पर विश्वास किया जा सकता है। वे तुम्हारा विश्वास करेगे। और यदि कोई नही करता तो वह तुम्हे कुछ कहेगा भी नही। उनमे कोई न कोई वदमाश भी हो सकता है जो तुम्हारे साथ गद्दारी कर सकता है, लेकिन अव वैसा करने की हिम्मत किसे होगी?" वह औरत बोली और धीरे-से हस दी। "सभी जानते है कि शीघ्र ही हमारी फौज आ धमकेगी। अव कपडे उतारकर विस्तर पर लेट रहो। मै तुम्हे कुछ ओढा दूगी और तुममे गरमाहट आ जायेगी। मै अपने वेटे के साथ सोती हू, इस तरह कुछ गरमाहट मिल जाती है।"

"मै तुम्हारा ओढना-बिस्तर नही छीन सकती! नही, नही," कात्या जोश मे आकर बोली। "मै वेच या फर्श पर पड़ रहूगी। आखिर मुझे सोना भी तो नही है।"

"तुम सो जाओ। अब तो हमारे उठने का वक्त हो गया है।"

उस घर मे सचमुच वहुत सर्दी थी। सर्दी के आरभ से ही उसे एक वार भी गर्म नही किया गया था। यह विलकुल स्पष्ट था। अब चूकि जर्मन यहा थे, अत कात्या पहले से ही समझती थी कि जर्मनो के कारण घरो मे गर्मी की व्यवस्था न होगी। वह तो इस विचार की जैसे आदी हो चुकी थी। गाव वाले लकडी की चैलियो या घास-फूस पर, जो भी उनके हाथ लग जाता था, सीधा-सादा भोजन वना लेते थे जई का दलिया या आलू पका लेते थे।

कात्या ने अपनी जैकेट और फैल्ट के बूट उतारे और पड रही। औरत ने उसके ऊपर एक गर्म रजाई डाल दी और ऊपर से भेड की खाल की जैकेट भी। कात्या को तुरत नीद आ गयी।

उसकी आखे तेज और भयानक धमाके से खुल गयी। यह धमाका उसने अपनी नींद मे उतना न सुना था जितना अपने सारे शरीर मे

महसूस किया था। वह अधनींदी मे विस्तर से उठी और तभी उसे और भी कई भयानक विस्फोटो के धमाके सुनाई दिये। उसने इजनो की भनभनाहट भी सुनी। विमान एक के बाद एक गाव के ऊपर निचाई तक आते और फिर झुकते हुए आसमान मे उड जाते। कात्या ने विमानो की भनभनाहट से ही समझ लिया था कि वे 'इल्यूशिन' विमान थे।

"ये हमारे विमान है," वह बोली।

"हां, हमारे ही," खिडकी के पास बेच पर बैठते हुए, लडके ने सक्षिप्त रूप में कहा।

"साशा अपने कपड़े पहन लो, और वेरा तुम भी। यहां मत बैठो। हा, हमारे ही है, ये विमान बेशक हमारे ही हैं। लेकिन अगर वे यहा बम बरसाने लगे तो फिर तुम बिस्तर से कभी न उठ सकोगी," गाल्या बोली। वह कमरे के बीचोबीच, हाथ मे एक झाड़ू लिये खडी थी। हालाकि भीतर ठडक थी, फिर भी वह मिट्टी के फर्श पर नगे पैर खडी थी। उसकी बाहे भी नगी थी। लडके ने भी बहुत कम कपडे पहन रखे थे।

"वे यहा कुछ नही गिरायेगे," लडका बोला। वह जैसे औरतो की तुलना मे अपने को ज्यादा समझदार समझता था। "वे किलेबदी वाली जगहो पर बमबारी कर रहे है।" वह बेच के नीचे पैर पर पैर रखे टागे लटकाये बैठा, छोकरा-सा दीख रहा था। उसकी आखे गभीर और बड़ो जैसी थी।

"हमारे 'इल्यूशिन' विमान और इस भयानक मौसम मे!" कात्या चिन्तित स्वर मे बोली।

"नही खराब मौसम तो कल रात को था," लडके ने कात्या को खिडकी के सर्द पल्ले पर आखे गडाये देखकर कहा। "इस समय तो मौसम अच्छा है। बेशक धूप नही है, पर बर्फ भी नही पड रही है।"

अध्यापिका के रूप मे कात्या को जिन्दगी भर उसी की उम्र वाले बच्चो से साबिका पडा था। उसने समझ लिया था कि बालक उसमे दिलचस्पी ले रहा है और चाहता है कि कात्या भी उसकी ओर ध्यान दे। लडका अपनी प्रतिष्ठा के प्रति स्वाभाविक तौर पर सचेष्ट था। वह किसी भी भाव अथवा लहजे से ऐसी कोई बात व्यक्त न करना चाहता था, जो किसी भी प्रकार उसकी शिष्टता के अभाव की सूचक होती।

कात्या ने गाव के बाहर कही विमानमार मशीनगनो की भी भयानक गड़गड़ाहट सुनी। मानसिक उत्तेजना के बावजूद वह यह समझे बिना न रह सकी कि पास-पडोस मे जर्मनो के पास विमानमार तोपो का कोई बड़ा तोपखाना नही था, जिसका अर्थ यह था कि किलेबन्दियो के इस स्थल ने अभी हाल ही मे गभीर प्रतिरक्षा-मोर्चे का महत्त्व प्राप्त किया था।

"काश हमारे लोग और जल्द आ जाते," गाल्या बोली, "हमारे यहा तो कोई तहखाना तक नही। जब हमारी फौजे भाग रही थी तो जर्मनों के हवाई हमलो के समय हम या तो पडोसियो के तहखाने मे छिपते थे या खुले मैदान मे निकल जाते थे। हम ऊची ऊची घास मे या खाइयो मे पट पड जाते, कानो को हाथ से कसकर बन्द कर लेते और बस इन्तजार करते रहते "

एक, दो, तीन, कई बम गिरे। छोटा-सा मकान हिल उठा। एक बार फिर सोवियत विमान निचाई पर आये और फिर कोण बनाते हुए सीधे आसमान से जा लगे।

"हाय, हमारे अपने, हमारे प्यारे!" गाल्या चीखी और अपने कानों पर दोनो हाथ रखकर फर्श पर उकडू होकर बैठ गयी।

विमानो की आवाज से फर्श पर उकडू बैठ जानेवाली यह औरत, ज़िले के मुख्य छापामार सपर्क-केन्द्र की गृहप्रबन्धिका थी। उसके घर से

होकर लाल सेना के वे सैनिक गुजरा करते थे जो कैद से भाग निकलते थे या दुश्मनो का घेरा तोड़कर निकल जाते थे। कात्या जानती थी कि गाल्या का पति लड़ाई के शुरु शुरू मे ही मारा गया था और उसके दो बच्चे जर्मनो के आधिपत्य-काल मे रक्तातिसार की बीमारी से मरे थे। खतरे से बचने के लिए यह औरत झट से फर्श पर बैठ गयी थी और कान बन्द कर लिये थे। उसका ख्याल था कि शोर न सुनेगी तो खतरा टल जायेगा। उसकी इस सादगी और सहज मानवीयता को देखकर कात्या बड़ी प्रभावित हुई और भागकर उसकी कमर मे बाहे डाल दी।

"डरो मत, डरो मत," कात्या ने द्रवित होकर कहा।

"मै डरती नही, मै तो वही कर रही हू जिसे करने की उम्मीद किसी भी स्त्री से की जाती है।" गाल्या ने अपना शान्त चेहरा कात्या की ओर उठाया और मुस्करा दी। उसके चेहरे पर बहुत से काले तिल थे।

कात्या ने सारा दिन घर मे ही बिताया। अधेरा होने तक प्रतीक्षा करने मे उसे जैसे अपनी सारी मन शक्ति लगा देनी पडी—वह जाकर सोवियत सेना से मिलने के लिए इतनी उत्सुक जो थी। दिन भर सोवियत बमवर्षक और लडाकू विमान गाव के बाहर की किलेबन्दी पर बम बरसाते रहे। सभी चिह्नो से पता चलता था कि बमवर्षको की सख्या अधिक न थी—शायद उनके दो या तीन दल रहे होगे। वे दो-तीन बार आये और बम गिरा चुकने के बाद फिर से पेट्रोल और बम भरने के लिए लौट गये और पुन बम बरसाने नजर आये। तडके सुबह से, जब से इनके कारण कात्या की आखे खुली थी, रात होने तक उनका यही रवैया बना रहा।

गाव के ऊपर, काफी ऊचाई पर, सोवियत लडाकू विमानो और जर्मन 'मेस्सेर' विमानो के बीच हवाई लडाइया चला करती। जब तब सोवियन बमवर्षक, बहुत ऊचाई पर भनभनाते हुए जर्मनो की दूरस्थ

प्रतिरक्षा पक्तियो पर हमला करने के लिए, निकल जाया करते। शायद वे दोनेत्स मे गिरनेवाली देर्कूल नदी के किनारे किनारे के उन स्थलो पर वम वरसा रहे थे जो मित्याकिन्स्काया दस्ते के अड्डे से दूर न थे। यही पर, एक कन्दरा मे, प्रोत्सेको की 'गाजिक' मोटर छिपाकर रखी गयी थी।

दिन मे कई बार जर्मन आक्रामक-विमान भी कही पास ही—शायद कमीश्नाया नदी के उस ओर वम गिराने के लिए गुजरा करते थे। उसी दिशा से तोपो की गडगडाहट वरावर सुनाई पडती थी।

एक वार, जर्मन किलेवन्दियो के उस पार के क्षेत्र मे सहसा तोपो की गोलावारी शुरू हो गयी। इसी क्षेत्र से होकर तो कात्या को जाना था। गोलावारी पहले कुछ दूरी से, फिर और भी पास आती हुई लगी, और ठीक जिस समय वह अपनी चरम सीमा पर थी कि सहसा वन्द हो गयी। शाम के समय गोलावारी फिर शुरू हुई और गोले गाव की सीमा पर भी फटने लगे। कुछ मिनटो तक जवाव मे जर्मन तोपो की गडगडाहट इतने जोरो से सुनाई दी कि खुद मकान तक मे वातचीत करना असभव हो गया।

कात्या और गाल्या ने एक दूसरे पर सारगर्भित दृष्टि डाली, पर नन्हा साशा वरावर शून्य मे देखता रहा और उसके चेहरे पर रहस्यपूर्ण भाव झलक रहा था।

हवाई लडाइयो और विमानमार तोपो की गडगडाहट के कारण स्थानीय लोग या तो अपने अपने घरो मे दुवके रहे या तहखानो मे। इनकी वजह से कात्या की घर आनेवाले आकस्मिक मुलाकातियो से भेंट न हुई। प्रत्यक्षत जर्मन फौज अपने सर्वाधिक आवश्यक कार्यो मे फंसी थी। सिवा इस छोटे-से घर मे, जहा इस समय दो औरते और एक छोटा-सा वालक थे, गाव मे अन्यत्र जैसे कोई जीवन न रह गया था।

कात्या को फिर से सडक पकडने के लिए जितना ही कम समय बाकी रहता जा रहा था, अपनी अनुभूतियो पर नियत्रण रख सकना उसके लिए उतना ही कठिन हो रहा था। यह घडी उसके जीवन मे निर्णायक थी और सभवत प्राणनाशक सिद्ध हो। उसे जिस रास्ते पर जाना था उसके बारे मे उसने गाल्या से पूछा और यह भी जानना चाहा कि कोई उसे वह रास्ता दिखा सकता है, किन्तु गाल्या ने केवल यही कहा—

"तुम परेशान मत हो, अच्छी तरह आराम करो। बाद मे चिन्ता करने के लिए तुम्हारे पास बहुत समय होगा।"

सभवत गाल्या स्वय कुछ भी न जानती थी। उसे केवल कात्या के लिए खेद हो रहा था। इससे कात्या की मानसिक व्यग्रता ही बढी। फिर भी यदि उस समय घर मे आकर किसी ने कात्या से बातचीत की होती तो उसे यह पता कभी न चलता कि कात्या के मन मे कौन कौन से विचार उठ रहे थे।

साझ घिरती आ रही थी। सोवियत बमवर्षकों ने अपना अन्तिम आक्रमण पूरा कर लिया था और विमानमार तोपों के मुह बन्द हो गये थे। चारो ओर नीरवता छा गयी थी पर उस विशाल भूप्रदेश के उस पार युद्ध और सहार की ज्वाला धधक रही थी।

नन्हे साशा ने बेच के नीचे से अपने पैर हटाये। उसने दिन मे किसी समय पैरो मे फेल्ट के बूट पहन लिये थे। अब वह दरवाजे के पास गया और चुपचाप भेड की खाल की अपने पैबद लगी जैकेट से जूझने लगा। इस जैकेट की खाल कभी सफेद रही होगी पर अब वह बहुत गदी हो गयी थी।

"वेरा, यही समय है," गाल्या बोली, "ठीक यही समय। सब

शैतान आराम कर रहे है। इस वक्त हमारे कुछ लोग यहा आयेंगे। अच्छा हो यदि तुम उनके सामने न पडो।"

झुटपुटे मे उसके चेहरे पर का भाव पढना मुश्किल था। उसकी आवाज रुखी थी।

"यह लडका कहा जा रहा है?" कात्या ने पूछा। उसका हृदय आशका से भर उठा।

"कोई फिक्र न करो, कोई फिक्र न करो," गाल्या ने शीघ्रता से कहा। वह घर मे इधर-उधर दौडी और अपने बेटे और कात्या को कोट पहनने मे मदद देने लगी।

एक क्षण तक कात्या उस बालक के पीले पडे हुए चेहरे को बडी ममता के साथ देखती रही। तो यही है वह मशहूर पथप्रदर्शक, जो जर्मनो के आधिपत्य के पाच महीनो मे लोगो को दुश्मनो की किलेबन्दी की गहराइयो मे से निकाल निकालकर ले जाता रहा है, जिसने सैकडो और शायद हजारो सोवियत जनो को—भले ही वह एक एक करके आये हो या दलो मे, अथवा टुकडियो मे उनकी मजिल तक सुरक्षित पहुचाया है। इस समय वह कात्या की ओर नही देख रहा था। वह अपनी जैकेट पहन रहा था और उनकी एक एक गतिविधि मानो कह रही थी—"तुम्हे मेरी ओर देखने का काफी मौका मिला था, फिर भी तुम एक बार भी अनुमान न लगा सकी। और अब अच्छा हो यदि तुम मेरे काम मे बाधा न पहुचाओ।"

"तुम जरा ठहरो। मै इधर-उधर निगाह डालकर इतमीनान कर लू, फिर आकर तुमसे कहूगी।" गाल्या ने कात्या का झोला उसकी बाहो मे डालकर उसे पीठ पर रखने मे उसकी सहायता की और फिर उसे कायदे से जमा दिया। "अभी एक-दूसरी से विदा हो ले बाद मे शायद समय न मिले। भगवान तुम्हारी यात्रा मगलमय करे।"

दोनो ने एक दूसरे को चूमा और तब गाल्या वाहर चली गयी। कात्या को इस वात पर कोई आश्चर्य न हुआ कि मा ने वेटे को प्यार नही किया, उससे विदाई का अभिवादन भी नही कहा। कात्या को अब किसी भी वात पर कोई आश्चर्य न होता था। वह जानती थी कि ये शब्द कि "वे इसके आदी हो गये है," यहा ठीक नही वैठते थे। यदि स्वय उसे अपने वेटे को इस प्रकार के सांघातिक एव खतरनाक काम के लिए भेजना पड़ता तो वह विना उसे चूमे या उसके लिए आसू वहाये न रहती। साथ ही उसे यह भी मन ही मन स्वीकार करना पडा कि गाल्या इस समय ठीक ही व्यवहार कर रही है। नन्हे साशा ने शायद मा के प्यार-दुलार को स्वीकार करने से भी इन्कार कर दिया होता, शायद वह उसका विरोध भी करता, क्योंकि इस ममता से उसके काम मे वाधा जो पड़ती थी।

कात्या को उसके साथ अकेले जाना वडा अटपटा लग रहा था। उसे लगा कि वह चाहे जो भी वात कहे वह वनावटी ही प्रतीत होगी। फिर भी वह यह वात साफ साफ कहे विना न रह सकी—

"मेरे साथ वहुत दूर तक जाने की ज़रूरत नही। वस मुझे यह वता दो कि उस किलेवदी से होकर किधर जाना है। उसके वाद की सडक मैं जानती हू।"

साशा ने कोई उत्तर न दिया और न उसकी ओर देखा ही। ठीक उसी समय गाल्या ने थोड़ा दरवाज़ा खोला और फुसफुसाती हुई वोली—"कोई नही है। निकल आओ।"

रात वादलो से भरी और शात थी। न वहुत सर्द, न वहुत काली। जाड़े की धुध के पीछे आकाश मे शायद चाद रहा होगा। वर्फ के कारण उसकी रोशनी और भी वढ गयी थी। साशा फेल्ट के जूते पहने और रोयेदार टोपी की जगह एक गुडी-मुडी चोंचदार टोपी लगाये, जो उसे

बहुत बडी लग रही थी, अपने चारो ओर निगाह दौडाये बिना, खेतो को पार करता हुआ चलने लगा। इस सर्दी मे उसके हाथो मे दस्ताने तक न थे। प्रत्यक्षत वह जानता था कि उसकी मा गलती न करेगी–यदि उसने कह दिया है कि आस-पास कोई नही तो इसके माने है कि सचमुच आस-पास कोई नही।

उन्हे पहाडियो की टूटी हुई शृखला पार करनी थी। उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई ये पहाडिया देर्कूल और उसकी सहायक नदी कमीश्नाया के बीच एक वाटरशेड बनाये हुए थी। गाव पहाड़ियो से होकर देर्कूल की ओर फैले हुए दो टीलो के बीच बसा था। ये टीले धीरे धीरे ढालवा होकर स्तेपी मे मिल गये थे। आगे आगे चलता हुआ साशा इनमे से एक टीला पार करने के लिए, गाव से दूर, ठीक खेतो के बीच से होकर जाने लगा। साशा ने यह रास्ता क्यो पकडा था, यह बात कात्या की समझ मे आ चुकी थी–हालाकि टीला नीचा था फिर भी उसे पार कर चुकने के बाद वे गाव की निगाहो के बाहर हो गये थे। जैसे ही वे टीले के ऊपर पहुचे कि साशा मुडा और टीले के समानान्तर, पूर्व की ओर चलने लगा। अब वे पहाडियो की उस शृखला की दिशा मे बढने लगे जहा जर्मनो की किलेबन्दी थी।

जब से दोनो घर से निकले थे तब से एक बार भी साशा यह देखने के लिए नही मुडा था कि कात्या उसके पीछे आ भी रही है या नही। वह चुपचाप आज्ञानुकूल उसके पीछे चलती आ रही थी। यहा गाव की तरह ही नीची ज़मीन पर बर्फ की चादर मे से इधर-उधर कुछ गेहू की खूटिया निकली दिखाई दे रही थी। दोनो इन्ही खूटियो के बीच से अपने रास्ते पर बढते रहे। पिछली रात की तरह उन्हे इस समय भी उनके उत्तर और दक्षिण मे सडको पर, किसी स्थान को भागती हुई जर्मन फोज का शोर सुनाई पड रहा था। तोपो की आवाज भी अब देर देर के बाद सुनाई

पडने लगी थी। हा, दक्षिण-पूर्व मे, मील्लेरोवो के निकट, तोपो की गरज तेज और जोरदार हो चुकी थी। काफी दूर पर, शायद कमीश्नाया नदी के पार, जर्मन फ्लेयरो की आग की दमक आसमान मे वत्तियो की तरह लटकी हुई थी। वे इतनी दूर थी कि उनका धूमिल प्रकाश किसी तरह दिखाई भर पडता था। उसमे इतनी शक्ति न थी कि वह आस-पास के झुटपुटे को दूर कर सके। यदि ऐसी कोई वत्ती इन दोनो के सामने की किसी पहाडी पर लटकी होती तो उन्हे आसानी से देखा जा सकता था।

उनके पैर नि शब्द नर्म वर्फ मे धस जाते। वस वहा एक ही आवाज हो रही थी—खरखराहट की आवाज, और वह भी उस समय जव उनके वूट खूटियो से रगड खाते थे। इसके वाद वहा खूटिया भी नही रह गयी। साशा ने अपने पीछे देखा और कात्या को और निकट आ जाने का सकेत किया। जव वह उसके पास आयी तो साशा उकड़ू वैठ गया और उसे भी वैसे ही वैठ जाने का सकेत किया। वह भी भेड की खाल वाली जैकेट पहने वही वर्फ पर वैठ गयी। साशा ने पहले उसकी ओर, फिर अपनी ओर सकेत किया और वर्फ मे पूर्व की ओर जाती हुई एक लकीर खीच दी। साशा ने अपनी जैकेट की लम्वी लम्वी आस्तीनो से अपने हाथ निकाले और जो लकीर खीची थी उसपर मुट्ठी भर वर्फ डाल दी। कात्या ने समझ लिया था कि साशा उनकी यात्रा का मार्ग वना रहा था और उस अवरोध का सकेत कर रहा था जो उन्हे पार करना होगा। तव उसने मुट्ठी भर वर्फ पहले एक छोटे टीले की दिशा से फिर दूसरे की दिशा से उठायी मानो यह वताना चाहता हो कि टीले के आर-पार दो दर्रे है। उसने उगली के पोर से दर्रो के दोनो ओर की किलेवदी वाली जगहे चिह्नित की और पहले एक दर्रे से, फिर दूसरे से, जाती हुई एक लकीर खीच दी।

कात्या ने उसकी वात समझ ली। साशा उसे दो सम्भावित मार्ग

दिखा रहा था। कात्या को सुवोरोव का यह सिद्धान्त याद आ रहा था कि हर सैनिक को अपनी चालो की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। यह स्मरण आते ही वह मुस्करा दी। जहा तक इस दस वर्षीय सुवोरोव की बात थी, कात्या ही उसकी एकमात्र सैनिक थी। कात्या ने यह सकेत करते हुए सिर हिलाया कि उसे 'अपनी चाल' की जानकारी है और वे फिर अपनी राह पर चल पडे।

अब वे उत्तर-पूर्व की दिशा मे चक्कर काटकर जाने लगे और कटीले मोटे तारो के बाडे के पास तक पहुच गये। लडके ने कात्या को इशारा किया कि वह पट लेट जाये और खुद तार के किनारे किनारे चलकर शीघ्र ही आखो से ओझल हो गया।

कात्या के सामने कटीले तार कोई एक दर्जन पक्तियो मे, एक के पीछे एक फैले हुए थे। वे वहां काफी अरसे से लगाये गये लग रहे थे क्योकि कात्या ने जब तार को छुआ तो उसके हाथो को जग लग गया। इन क्षेत्रो मे सोवियत बमवर्षको के हमलो का कोई चिह्न नजर न आ रहा था और लग रहा था जैसे जर्मनो ने ये तार छापामारो से बचने के लिए लगाये है क्योकि ये कटीले तार पीछे से पहाडी की रक्षा करते थे और मुख्य किलेबदी की जगहो से काफी दूर थे।

एक लम्बे अरसे से कात्या को इस तरह की व्यग्रता की अनुभूति कभी न हुई थी। समय सरकता गया लेकिन साशा न लौटा। एक घंटा बीता, फिर दूसरा बीता, लेकिन बालक का अब भी पता न था। किन्तु कात्या को उसकी चिन्ता न थी—वह एक सच्चा तरुण सैनिक था और उसपर भरोसा किया जा सकता था।

वह इतनी देर तक निश्चेष्ट लेटी रही कि ठिठुरने लगी। उसने पहले इधर-उधर करवटे बदली, लेकिन अन्तत अधिक बर्दाश्त न कर सकी और उठ बैठी। नही, नन्हा सुवोरोव इसके लिए उसकी भर्त्सना करेगा।

किन्तु उसे गये बहुत देर हो चुकी थी, और कम से कम कात्या इस बात की जाच तो करना चाहती थी कि वह किस इलाके मे आयी है। बालक खडा होकर गया है, रेगकर नही, इसलिए वह बिलकुल सीधी न भी खडी हो तो झुककर तो जा ही सकती है।

वह मुश्किल से पचास कदम चली होगी कि उसने कोई ऐसी चीज देखी जिससे उसे खुशी भी हुई और आश्चर्य भी—उसके आगे एक नया बना, किन्तु टेढा-मेढा गड्ढा था। कोई गोला यहा हाल ही मे फूटा था, जिसने काली मिट्टी जमीन के गर्भ में से निकाल बर्फ पर बिखेर दी थी। निश्चय ही यह किसी गोले द्वारा बना हुआ गड्ढा था, न कि बम द्वारा। इसका पता इस बात से चलता था कि सारी मिट्टी मुख्यत गड्ढे के एक ओर गिरी थी, उस ओर जिधर से साशा और कात्या आये थे। प्रत्यक्षत. साशा ने भी यह लक्ष्य किया था क्योकि बर्फ मे बने पैरो के निशानो से पता चलता था कि उस गड्ढे के इर्द-गिर्द घूम चुकने के बाद ही वह अपने रास्ते पर बढा होगा।

कात्या ने इस प्रकार के और गड्ढो का पता चलाने के लिए बर्फ पर दूर तक निगाह दौडायी, किन्तु कम से कम उसके आस-पास तो वैसे दूसरे गड्ढे न थे। उसका मन उत्तेजना से भर गया—ऐसा गड्ढा सोवियत सेना के गोले से ही बन सकता है। और यह गड्ढा, भारी और बहुत दूर तक गोला फेकनेवाली तोपो से नही, बल्कि औसत दर्जे की तोपो से बना था। इसके माने थे कि सोवियत सेना ने कही आस-पास से ही गोला फेका था। पिछली शाम गाल्या के मकान मे इन तीनो ने जो भयकर गोलाबारी सुनी थी, यह गड्ढा उसी का एक चिह्न था अथवा उसके बहुत-से चिह्नो मे से एक।

हमारी सेना कही पास ही है! कही बिलकुल निकट! बेशक इस नारी ने पूरे पाच महीनो तक, बच्चो से दूर रहकर, दुश्मन से अविराम

मोर्चा लिया है और अपने मन मे उस क्षण के सपने सजाये है जब खून से सना, लम्बा फौजी कोट पहने वह वीर सैनिक शत्रु-कलुषित अपनी धरती पर फिर से पाव रखेगा और कात्या को भ्रातृ-आलिंगन मे कस लेगा। सचमुच इस नारी की अनुभूतिया शब्दो मे नही पिरोयी जा सकती। कात्या की व्यथित आत्मा इस समय 'लम्बा फौजी कोट पहने उस वीर सैनिक' की ओर भागने लगी जो इस समय उसे अपने पति, अपने भाई से भी अधिक प्यारा लग रहा था।

कात्या को वर्फ मे जूतो की चरमराहट सुनाई दी और साशा उसके पास आ गया। पहले तो उसने इस वात पर ध्यान न दिया कि भेड की खाल की उसकी जैकेट के सामने का भाग, उसके घुटने और उसके फेल्ट के वूट वर्फ से नही, मिट्टी से सने है। उसने अपने हाथ अपनी जैकेट की आस्तीनो मे डाल लिये थे। शायद उसे वहुत समय तक रेगना पड़ा था जिसके कारण उसके हाथ-पैर वेहद ठढे हो गये थे। तो वह उसे कौन-सी खवर सुनायेगा? कात्या ने वडी व्यग्रता से उसके चेहरे की ओर देखा। वालक के कानो तक खिसकी हुई उसकी ऊची चोचदार टोपी के नीचे दिखनेवाले उसके चेहरे पर निराशा के चिह्न न थे। उसने अपनी आस्तीनो मे से हाथ निकालकर हिलाये और निषेधात्मक सकेत करने लगा जिसका मतलव था—"हम यहा से होकर नही निकल सकते।"

कात्या इस सकेत से द्रवित हो गयी। लडके ने गोले वाला गड्ढा देखा और फिर आखे कात्या की ओर उठा दी। दोनो की आखे चार हुई और वालक सहसा मुस्करा दिया। सभवत गड्ढा देखकर वालक को भी वही धारणा वधी थी जो कात्या को वधी थी। वह जानता था कि कात्या के दिमाग मे क्या क्या घूम रहा था। उसकी मुस्कराहट मानो कह रही थी—"कोई वात नही, यदि हम इधर से होकर नही जा सकते तो कही और से होकर चलेगे।"

उनके सवध ने एक नया रूप ले लिया था—अब वे एक दूसरे को समझते थे। उन्होने एक दूसरे को कुछ न कहा था, किन्तु दोनो गहरे मित्र बन गये थे।

कात्या की कल्पना के आगे साशा की वह मूर्ति घूम गयी जब वह अपने दुबले-पतले हाथ वर्फ से जमी हुई भूमि से सटाये शरीर के वल रेंगता हुआ आगे बढ रहा था। वालक ने एक मिनट आराम करना भी ठीक न समझा और कात्या को अपने पीछे पीछे आने का सकेत करते हुए पहले रास्ते पर वापस घूम पडा।

कात्या के मन मे वालक के प्रति कौन कौन-सी भावनाए उठ रही थी इसका चित्रण करना आसान नही। ये भावनाए थी—दोस्ती, विश्वास, अधीनता और सम्मान की। साथ ही उनमे ममता का भाव था। ये सारी भावनाए ममता मे मिलकर एकाकार हो गयी थी।

कात्या ने उससे इस बारे मे कोई पूछ-ताछ न की कि कौन-सी चीज उन्हे यहा से होकर गुजरने मे वाधक वन रही है। वेशक, उसे एक क्षण के लिए भी यह सन्देह न हुआ था कि वह उसे वापस घर ले जाने के लिए नही वल्कि इसलिए मुडा है कि वह चक्कर काटकर उसे दूसरे दर्रे से और किलेवन्दी के वीच से होकर ले जायेगा। कात्या ने उसे हाथ गर्माने के लिए अपने दस्ताने भी नही दिये थे, क्योकि वह जानती थी कि वह उन्हे न लेगा।

कुछ समय वाद वे उत्तर की ओर, तव उत्तर-पूर्व की ओर मुडे और अन्तत उन कटीले तारो तक पहुच गये जो एक दूसरी ही पहाडी की तलहटी को घेरे हुए थे। साशा फिर अकेला निकल गया और फिर कात्या को उसका वडी देर तक इतजार करना पडा। आखिर वह फिर दिखाई दिया। टोपी से उसने अपने कानो को भी ढक रखा था। उसके हाथ आस्तीनो मे घुसे थे और उसके शरीर पर और भी अधिक मिट्टी जमी

थी। कात्या वर्फ पर वैठी उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह अपना चेहरा उसके मुह के पास लाया, आख मारी और दात निकाल दिये।

आखिर कात्या, अपने निश्चय के प्रतिकूल जबरदस्ती अपने दस्ताने उसे देने लगी, पर उसने न लिये।

जैसा प्राय होता है, कात्या ने जिस वात को सबसे मुश्किल समझ रखा था, वह बहुत ही आसान निकली। आसान ही नही, उसे पार करते हुए उसे पता तक नही चला। उसे मालूम ही न था कि वे दोनो दो किलेबन्द स्थलो के बीच से गुजर रहे है। अपनी सारी यात्रा मे, उसे सिर्फ यही यात्रा सबसे सीधी और आसान सिद्ध हुई थी, किन्तु इसका कारण उसे तुरत नही, वाद मे ही समझ मे आया था। वे कितनी दूर तक चलते रहे और फिर कब रेगने लगे उसे कुछ भी याद न रहा। उसे बस इतना ही याद रह गया था कि दिन मे 'इल्यूशिन' बमवर्षको के हमले के कारण जमीन की अतडी तक निकल गयी थी और यह वात उसे तब याद आयी जब खुले खेतो मे पहुचकर उसने देखा कि उसकी भेड की खाल वाली जैकेट, फेल्ट के बूट और दस्ताने साशा की ही तरह मिट्टी मे सन गये है।

कुछ समय तक वे खुले मे और कुछ कुछ ऊचे-नीचे मैदानो की साफ बर्फ पर चलते रहे। अन्तत साशा रुक गया और मुडकर कात्या की प्रतीक्षा करने लगा।

"उधर एक सड़क है। देख रही हो न?" उसने फुसफुसाकर कहा और दूर पर सकेत कर दिया।

साशा ने उसे बताया कि वह देहात की उस सडक पर किस प्रकार पहुच सकती है। सडक उस गाव से, जिसे वे छोड चुके है, उस फ़ार्म तक जाती है, जहा से उसकी यात्रा का दूसरा चरण शुरू होगा। वह अब उस इलाके मे पहुच गयी थी जहा, प्रोत्सेको के नक्शे के अनुसार,

जर्मनों की प्रतिरक्षा-पक्तिया तो अधिक नही थी लेकिन अस्तव्यस्त दशा में थी क्योकि जर्मन वहा से होकर इधर-उधर भाग रहे थे। वेशक इस वात की सभावना वनी हुई थी कि भागते हुए जर्मन दस्तों ने उस इलाके मे अस्थायी मोर्चा कायम कर लिया होगा और पिछले दस्ते लडाई लड रहे होगे। कौन जाने, भागते हुए जर्मनो के दस्ते या छिटपुट सैनिक कही मडरा रहे हो और आवादी वाले क्षेत्र, अप्रत्याशित रूप से, जर्मनो की अगली प्रतिरक्षा-पक्ति का अग वन गये हो। प्रोत्सेको ने यात्रा के इस भाग को सवसे खतरनाक वताया था।

किन्तु यदि पक्की सडको पर से सुन पडनेवाली जर्मनो की भाग-दौड और दक्षिण-पूर्व मे मील्लेरोवो की दिशा से आनेवाली गोलेबारी की अविराम गड़गडाहट पर ध्यान न दिया जाता, तो उस क्षेत्र मे ऐसी कोई चीज़ न निकलती जिससे प्रोत्सेको की वतायी हुई वात सत्य प्रतीत होती।

"तुम्हारी यात्रा सफल हो!" हाथ नीचे गिराते हुए साशा वोला।

इस क्षण कात्या का हृदय उसके प्रति ममता से भर गया। वह उसे अपनी वाहो मे भरकर, अपने सीने से लगा लेना चाहती थी, मानो सारी दुनिया के ख़तरो से उसे वचाना चाहती हो। किन्तु इस समय ऐसा करने से उनके सवध एकदम विगड सकते थे।

"विदा! धन्यवाद," हाथ से दस्ताना उतारकर साशा से हाथ मिलाती हुई कात्या वोली।

"तुम्हारी यात्रा सफल हो," उसने फिर कहा।

"अरे, मै तो पूछना ही भूल गयी थी," कात्या ने कहा और उसके ओठो पर एक हल्की-सी मुस्कराहट विखर गयी। "दूसरे दर्रे से होकर गुज़रना क्यों सभव नही था?"

साशा ने आखे नीची की। उसके चेहरे पर कठोरता झलक उठी।

"जर्मन वहा अपने मुर्दो को दफना रहे थे। उन्होने वही पास मे एक बडा-सा गड्ढा खोदा था।"

कात्या चल पडी। थोडी थोडी देर बाद वह बराबर पीछे देखती रही ताकि अधिक से अधिक समय तक के लिए बालक को देखती रहे। किन्तु साशा ने एक बार भी पीछे मुडकर न देखा और शीघ्र ही अधेरे मे गायब हो गया।

इसी अवसर पर कात्या को इतना बडा धक्का लगा, जिसे भुलाना उसके लिए जिन्दगी भर सभव न था। कोई दो सौ गज चल चुकने के बाद जब उसे लग रहा था कि किसी भी समय वह सडक पर पहुच सकती है सहसा, टीले के सिरे पर पहुचते ही, उसे अपनी आखो के सामने एक बहुत बडा टैक दिखाई दिया। तोप की नली उसका रास्ता रोके खड़ी थी। सहसा उसे बुर्जी के ऊपर उठी हुई कोई गेद जैसी विचित्र वस्तु दिखाई दी। सहसा उस चीज मे हरकत हुई और उसे पता चल गया कि बुर्जी मे से सिर निकाले लोहे की टोपी पहने, टैकचालक खडा था।

उसने कात्या पर अपनी टामी-गन का निशाना इतनी तेजी से साधा कि कात्या को लगा मानो वह उसी का शिकार करने के लिए उसका इन्तजार कर रहा था।

"रुक जाओ!"

यह शब्द स्थिरता के साथ, किन्तु ऊची आवाज मे बोला गया था। लहजे मे दृढता किन्तु नम्रता थी, क्योकि बोलनेवाला एक नारी को सबोधित कर रहा था। पर सबसे बडी बात यह थी कि यह शब्द उसने शुद्ध रूसी मे कहा था।

इस समय तक कात्या को उत्तर देने की भी सामर्थ्य न रह गयी थी। उसकी आखो से आसुओ की अविरल वर्षा हो रही थी।

# अध्याय २०

ये दोनो टैक, एक अग्रगामी टैक-दस्ते के अग्रणी, गश्ती टैक थे। कात्या ने तत्काल दूसरे टैक को देखा भी न था क्योकि वह सड़क के उस पार एक टीले के पीछे खड़ा था। जिस टैकमैन ने उसे रोका था वह टैक का कमांडर और अग्रणी गश्त का कमाडिग अफसर था। इस बात का अनुमान कोई न लगा सकता था क्योकि वह मामूली-सा लबादा डाले हुए था। ये सारी वाते कात्या को वाद मे मालूम हुई थी।

अफसर ने उसे आगे आने का हुक्म दिया और टैक से कूद पडा। उसके साथ ही एक और व्यक्ति भी कूदा। इधर अफसर कात्या से उसके बारे मे पूछ-ताछ कर रहा था, उधर वह उसके चेहरे का अध्ययन कर रही थी।

वह जवान आदमी था और वेहद थका हुआ। वह इतना जगा था कि उसकी पलके भारी हो रही थी और आखे खोले रखना उसे वहुत ही मुश्किल लग रहा था।

कात्या ने अपना परिचय दिया और वताया कि इस सडक पर क्यो जा रही है। अफसर के चेहरे से इस वात का कोई पता न चल रहा था कि उसे उसकी कहानी पर विश्वास है या नही, किन्तु कात्या ने इसपर ध्यान न दिया। उसने एक युवक के चेहरे को इतना थका हुआ, और उसकी पलके इतनी सूजी हुई देखी कि एक वार फिर उसकी आखो में आसू भर आये।

अधेरे मे से एक मोटर-साइकिल सडक पर आकर टैक के पास रुक गयी।

"क्या मामला है?" मोटर-साइकिल पर वैठे आदमी ने सामान्य लहजे मे सवाल किया।

इस प्रश्न से कात्या को यह पता चल गया कि उस मोटर-साइकिल वाले को उसी के कारण बुलाया गया था। दुश्मनो की सेना के पीछे पाच महीनो तक काम कर चुकने के कारण उसमे छोटी छोटी बातो पर भी ध्यान देने की आदत-सी पड़ गयी थी। सामान्य स्थितियो मे ऐसी बातो पर किसी का ध्यान नही जाता। यदि मोटर-साइकिल वाले को रेडियो द्वारा भी बुलाया जाता तो भी इतनी जल्द न आ पाता। तो फिर उसे बुलाया कैसे गया था?

इस समय तक दूसरे टैंक का कमाडर भी उनके पास आ चुका था। उसने कात्या पर एक उड़ती-सी नजर डाली और पहले कमाडर और मोटर-साइकिल सवार के साथ कुछ कदम पीछे हटकर उनसे बातचीत करने लगा। इसके बाद मोटर-साइकिल सवार फिर अपनी मोटर-साइकिल पर अधेरे मे गायब हो गया।

टैंक-कमांडर फिर कात्या के पास आये और सीनियर कमाडर ने कुछ संकोच के साथ कात्या से कागजात मागे। कात्या ने बताया कि सिवा सुप्रीम कमांड के अन्य किसी को भी ये कागजात देने का उसे अधिकार नही है।

वे कुछ क्षणो तक चुप रहे, फिर दूसरे कमांडर ने, जो पहले कमाडर से कम उम्र का था, गहरी आवाज़ मे पूछा:

"तुम किधर से निकलकर आयी हो? क्या जर्मनो की किलेबन्दी बहुत मज़बूत है?"

कात्या किलेबन्दी के बारे मे जो कुछ जानती थी वह सभी उसने उन्हे बता दिया और यह भी कह डाला कि किस प्रकार एक दस साल का बालक उसे इन किलेबदियो के बीच से लाया था। उसने मरे हुए जर्मनो को दफनाये जाने के सबंध में भी सूचना दी और यह भी बताया कि उसने सोवियत गोले द्वारा बना एक गड्ढा भी देखा था।

"तो वहा गिरा था वह! सुन रहे हो?" छोटा कमाडर बोला। वह दूसरे कमाडर की ओर देखकर बच्चो की तरह दांत निकाल रहा था।

इसी समय कात्या को पता चला कि गाल्या के मकान मे, दिन को कभी दूर, कभी नजदीक, और वाद मे, अंधेरा होने से पहले, उसने गोलावारी की जो आवाज सुनी थी वह दुश्मनो की किलेबन्दी पर हमला करनेवाले इन्ही सोवियत अग्रणी टैको की ही आवाज थी।

इसके वाद से कात्या और टैक कमाडरो के सवध अधिक अच्छे हो गये। उसने गश्ती कमाडर से यह पूछने की हिम्मत भी की कि उसने किस प्रकार मोटर-साइकिल वाले को इतनी जल्दी वुला लिया था। कमाडर ने बताया कि टैक के पीछे एक वत्ती लगी रहती है, जिससे उसे वुलाने का सकेत किया गया था।

वे अभी वातचीत कर ही रहे थे कि एक मोटर-साइकिल, जिसमे एक साइड-कार लगी थी, उनके पास आयी। सवार ने कात्या को फौजी सलामी भी दागी जिससे कात्या ने समझ लिया कि वह न केवल उसे मित्र ही समझ रहा है वल्कि एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी मान रहा है।

जिस क्षण से वह साइड-कार मे वैठी थी उसे एक विलक्षण और नयी अनुभूति हो रही थी जो सोवियत फौज के वीच उसके पहुचने के कई दिनो वाद तक बनी रही। उसने अनुमान लगा लिया था कि वह सयोग से टैक के उस दस्ते के हाथ लग गयी थी जो किसी प्रकार जर्मन अधिकृत प्रदेश मे घुस आया था। किन्तु उसने अब दुश्मन की ताकत को कोई महत्त्व न दिया। दुश्मन, और उसके पाच महीनो का सारा जीवन, और साथ ही यात्रा के कष्ट, न सिर्फ पीछे ही छूट गये थे, वल्कि उसके मस्तिष्क के किसी सुदूर कोने में विलीन-से हो गये थे।

कोई महान नैतिक सीमा उसे उसके सन्निकट विगतकाल के वातावरण से अलग-सी कर रही थी। अव वह उन लोगो की दुनिया मे रह रही थी, जिनकी अनुभूतिया, अनुभव, सोचने-विचारने के ढग और मत उसके अपने जैसे ही थे। यह दुनिया इतनी विशाल थी कि उस दूसरी दुनिया की तुलना

मे, जिसमे मे वह निकलकर यहां आयी थी, अनन्त लग रही थी। इस मोटर-साइकिल पर वह पूरे दिन, पूरे साल सफर कर सकती थी, और हर जगह उसे अपनी जैसी दुनिया दिखाई पड सकती थी। इस दुनिया मे उसे कुछ भी छिपाने, झूठ बोलने और नैतिक एव शारीरिक स्तर पर अस्वाभाविक प्रयासो की कोई आवश्यकता न थी। अव कात्या एक बार फिर, और हमेशा के लिए, मानसिक रूप से स्वस्थ हो गयी थी।

सर्द हवा उसके चेहरे को जैसे काटे दे रही थी, पर उसका जी गाने को हो रहा था।

मोटर-साइकिल उसे लेकर दिन भर या घटे भर भी न चली। वह ज्यादा से ज्यादा दो मिनट तक दौडी होगी। जब वह एक छोटे-से पुल पर से, वर्फ पर होकर जा रही थी, तभी चालक ने ब्रेक लगाये। पुल एक छोटी-सी नदी पर बना था जो शायद गर्मी के मौसम मे सूख गयी थी। कात्या ने, नदी की ढालो द्वारा बने निचले खड्ड मे खड़े कोई एक दर्जन टैंक और कुछ दूर सड़क पर खडी कई लारिया देखी। मोटर वाली पैदल सेना के टामी-गन चालक इन लारियो के इर्द-गिर्द खड़े या उनमे बैठे थे। ये साधारण-से टामी-गन चालक जाडे की टोपिया और रूईदार जैकेटे पहने थे।

यहा कात्या का पहले से ही इन्तजार हो रहा था। मोटर-साइकिल पुल से उतरी और रुक गयी। लवादा पहने दो टैंकमैन उसके पास आये और अपने बाजुओ का सहारा देकर साइड-कार से उतरने मे उसकी मदद करने लगे।

"कामरेड, माफ करना " एक बुजुर्ग से दिखनेवाले टैंकमैन ने उसे सलाम करते हुए कहा और उसे चीर गांव की अध्यापिका के नाम से सबोधित करने लगा, जो उसके नकली पासपोर्ट मे दर्ज था। "माफ कीजिये, पर यह औपचारिकता हमे निभानी ही पडती है ."

उसने उसके पासपोर्ट को एक जेबी टार्च की रोशनी मे देखा और फिर उसे वापस कर दिया।

"सब ठीक है, कामरेड कप्तान!" उसने दूसरे टैंकमैन को सूचना दी। इस टैंकमैन के माथे से लेकर नाक के ऊपरी भाग और बाये गाल तक एक ताज़े घाव का निशान था।

"शायद आपको ठड लग रही है!" कप्तान बोला और उसकी विनम्र, सदय, और शिष्ट आवाज, तथा सीधे, सरल किन्तु साहस और अधिकारपूर्ण व्यक्तित्व से कात्या ने समझ लिया कि वह टैंक दस्ते का कमाडिंग अफसर है। "इतना समय नही है कि आपके लिए गर्मी की व्यवस्था की जाये–हम बढे जा रहे है। मगर यदि आपको कोई एतराज न हो तो " उसने झेपते हुए अपना हाथ उठाकर कधे पर बधी हुई एक पेटी से झूलता हुआ एक फ्लास्क उतारा और उसकी डाट खोली।

कात्या ने फ्लास्क दोनो हाथो मे पकडा और एक बडा-सा घूट भर लिया।

"धन्यवाद।"

"थोडा और लीजिये!"

"नही, धन्यवाद!"

"हमे आदेश मिला है कि हम आपको दस्ते के हेडक्वार्टर तक पहुचाये और टैंक मे बिठाकर ले जाये," मुस्कराते हुए कप्तान बोला, "यद्यपि हमने सडक के किनारे किनारे दुश्मनो की टुकडियो का सफाया कर दिया है, पर यह एक ऐसा इलाका है कि शैतान तक नही बता सकता कि यहा कब क्या हो सकता है!"

"आपको मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?" कात्या ने पूछा। एक घूंट शराब उसके पेट मे आग की तरह गर्मी पैदा कर रही थी।

"आपका इन्तजार हो रहा है।"

इसके माने थे कि इवान फ्योदोरोविच, यानी उसके अपने वान्या ने, सारा इन्तजाम पहले से ही कर दिया था। उसके वदन मे गर्मी आ गयी थी।

एक वार फिर कात्या को गाव के वाहर की, दुश्मनो की, प्रतिरक्षा-पक्तियो के वारे मे जो कुछ वह जानती थी, वताना पड़ा। उसे लगा कि ऊचाइयो पर जमे दुश्मनो पर हमला करने के लिए टैंको को अभी भेजा जा रहा था। और ठीक जिस समय उसे एक टैंक के भीतर वैठाया जा रहा था कि सभी टैंक तेजी से गडगडा उठे और टामी-गन चलानेवाले अपनी अपनी लारियो की ओर भाग गये। कात्या इस टैंक की विशालता का तव तक अन्दाज न लगा सकी थी जव तक वह उसके विलकुल पास न आ गया था। उसे पहले टैंक की वुर्जी पर चढाया गया और वहा से वह अन्दर उतर गयी। टैंक के भीतर वड़ी ठण्ड थी।

जिस टैंक मे उसे अपनी यात्रा पूरी करनी थी उसमे चार व्यक्ति काम करते थे। हर एक के वैठने की अपनी अपनी जगह थी। कात्या 'ऐक्शन डेक' के फर्श पर कमाडर के पैरो के पास वैठी थी। टैंक के भीतर जगह तग थी। चारो सैनिको मे से अकेला टैंक चालक ही घायल नही हुआ था।

टैंक कमाडर के सिर पर चोट लगी थी। उसके सिर के चारों ओर, मोटी रुई रखकर एक पट्टी वाध दी गयी थी, अत लोहे की टोपी पहनना उसके लिए असंभव हो गया था। इसी लिए वह सैनिकोवाली एक साधारण टोपी लगाये था। उसकी वाह भी घायल थी और गले से लटकती हुई एक पट्टी में सधी थी। वह इस बात का ध्यान रखता था कि वांह मे किसी चीज़ से धक्का न लग जाये। जव कभी टैंक मे झटके लगते थे तो उसके माथे पर वल पड जाते थे।

अपने साथियो का साथ छोड़ना इस कमाडर को और उसके साथियों को वुरा लगा था। इमी लिए पहले-पहल उन्होने कात्या के प्रति रुखाई

वरती – आखिर उसी के कारण तो उन्हे पीछे लौटना पड रहा था। वाद मे पता चला कि इस टैंक के मूल कर्मचारियो मे से केवल ड्राइवर और कमाडर ही यहां पर मौजूद थे। वाकी दोनो को दूसरे टैंको से तवदील करके इस टैंक पर भेजा गया था। इस तवादले का इन लोगो ने काफी विरोध किया था। इस टैंक के दो स्वस्थ लोगो को इनकी जगह दूसरे टैंको पर भेज दिया गया था। जिस क्षण कात्या को टैंक पर लाया गया था, उस समय, टैंक कमाडर और कप्तान के वीच विवाद चल रहा था। दोनो वडी शिष्ट भाषा मे झगड़ रहे थे, परन्तु दोनो के चेहरो पर भयानकता झलक -रही थी। कप्तान – जिसके चेहरे पर ताजा घाव लगा था – अपनी ही मनमानी करने पर तुला हुआ था। उसे कात्या की यात्रा से अपने दस्ते से घायलो को हटा देनें का मौका मिल गया था।

जव टैंक चल पड़ा और सैनिको ने देखा कि उनके साथ एक जवान औरत सफर कर रही है तो उन्होनें उसके प्रति अपना रुख बदल दिया। फिर, शीघ्र ही उन्हे पता चल गया कि कात्या उन्ही प्रतिरक्षा-पक्तियो से होकर आयी है जिनपर टैंक दस्ता अधिकार करनेवाला था। सभी की वाछें खिल गयी। सभी युवक थे, कात्या से यही कोई पाच-सात साल छोटे।

इसी मौके पर कमाडर ने 'दूसरा मोर्चा' खोलने का हुक्म दिया, अर्थात् अमरीकी शूकर-मास के टीन खोलने को कहा। गनर-रेडियो-आपरेटर ने गोली की रफ़्तार से 'दूसरा मोर्चा' खोल डाला और रोटी के कुछ वड़े वड़े टुकड़े काट लिये। कमांडर ने वायें हाथ से अपना मदिरा पात्र कात्या को देना चाहा, किन्तु उसे लेने से कात्या ने इन्कार कर दिया। हां, रोटी और मास के साथ उसने कोई मुरौवत न दिखायी। कमाडर के पात्र मे से एक एक घूट चढाने के लिए टैंक वाले घूमे और टैंक के भीतर मैत्रीपूर्ण सवंधो का दरिया वहने लगा।

वे पूरी गति से चले जा रहे थे। कात्या को वरावर झटके लग रहे

थे। सहसा उनके ऊपर, खुली हुई छोटी बुर्जी पर खड़ा तोपची कुछ झुका और कमाडर के कान के पास ओठ लाकर बोला—

"सुन रहे हो, कामरेड सीनियर लेफ्टिनेंट?"

"उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया है न?" कमाडर ने भारी आवाज़ मे कहा और उसका पैर ड्राइवर के कधे से छू गया। ड्राइवर ने टैंक रोक दिया और तब चारो ओर के सन्नाटे मे उन्हे गोलेबारी की तेज धमक सुनाई दी। यह आवाज़ उसी दिशा से आ रही थी जिस दिशा से कात्या आयी थी।

"हा-हा! जर्मन शैतानो के पास आसमान मे रोशनी करनेवाले फ्लेयर नही है!" तोपची ने, फिर झुकते हुए, सतोष के साथ कहा, "हमारे साथी उन्हे मजा चखा रहे है। मै फटते हुए गोलो की आग भी देख रहा हू।"

"जरा देखने तो दो!"

सीनियर लेफ्टिनेंट तोपची की जगह खडा हुआ और बडी सावधानी से अपना जख्मी सिर ऊपर निकाला। इधर वह गोलावारी देख रहा था और उधर टैंक वाले, कात्या की उपस्थिति भूलकर, आक्रमण की प्रगति के संबंध मे तरह तरह की कल्पनाए कर रहे थे। उन्हे इस बात पर फिर क्रोध आ रहा था कि वे अपने टैंकों के साथ नही है।

कमाडर ने अपना घायल सिर फिर टैंक के भीतर कर लिया और उसके चेहरे पर रोगी जैसा भाव छा गया। इसी समय उसे कात्या की उपस्थिति का ध्यान आया और उसने सारी बातचीत बन्द कर दी। फिर भी कात्या उसका चेहरा देखकर ही बता सकती थी कि युद्ध मे भाग न ले सकने के कारण उसे कितना बुरा लग रहा था। युद्ध मे क्या हो रहा था इसे देखने का मौका कमाडर ने हर व्यक्ति को दिया। इसके बाद कही उनकी आगे की यात्रा शुरू हुई।

इसके वाद उनपर उदासी-सी छा गयी। कात्या समझदार औरत थी। उसने उनसे सैनिक कार्यों के सवध मे प्रश्न करने शुरू कर दिये। इजनो की गडगडाहट के कारण वातचीत करना वडा कठिन हो रहा था। उन्हे वरावर चीखना पडता था। फिर भी उन्हे जो जो वाते याद आयी वे वडे उत्साह से सुनाने लगे और यद्यपि प्राय उनकी वाते परस्पर-विरोधी पडती थी, फिर भी कात्या को उस क्षेत्र की, जहा इस समय वह थी, सैनिक कार्रवाइयों के सवध मे वहुत कुछ ज्ञान हो गया।

सोवियत टैंक दस्तो ने रोस्सोग और मील्लेरोवो के वीच वोरोनेज-रोस्तोव रेलवे के एक वडे भाग को पार कर लिया था, कमीश्नाया नदी के किनारे किनारे जर्मनो को उनकी प्रतिरक्षा-पक्तियो से खदेड दिया था, और अव उत्तर की ओर नोवोमार्कोव्का गाव के निकट देर्कूल नदी के ऊपरी क्षेत्रो तक पहुच गये थे। भागती हुई जर्मन फौज ने कमीश्नाया और देर्कूल के वीच के वाटरशेड को जल्दी एक अग्रणी प्रतिरक्षा-क्षेत्र का रूप दे दिया था। इसी क्षेत्र मे वे टीले भी शामिल थे जिन्हे पार कर कात्या यहा पहुची थी। यह नयी पक्ति लिमरेव्का, वेलोवोद्स्क और गोरोदीश्ची से होकर — इन सभी जगहो मे प्रोत्सेको के छापामार दस्ते काम कर रहे थे — दोनेत्स पर उस स्थान तक जाती थी जिसके निकट मित्याकिन्स्काया छापामार दस्ते का अड्डा था। कात्या इन सभी स्थानो को अच्छी तरह जानती थी, और साथ ही वढती हुई लाल सेना की शक्ति का भी अनुमान लगा सकती थी। इसके अलावा वह उन सभी कठिनाइयो को भी देख सकती थी जो इस सडक पर सोवियत सेना के सामने आ सकती थी — उनको देर्कूल, येव्सूग, ऐदार और वोरोवाया नदियो के किनारे किनारे की किलेवदिया, स्तारोवेल्स्क और स्तनीच्नो-लुगांस्काया के वीच की रेलवे लाइन और अन्तत· स्वयं दोनेत्स नदी को भी पार करना था।

जिस अग्रगामी टैंक दस्ते से कात्या मिली थी वह अपनी टुकडी से

दो दिन पहले अलग हो चुका था। उसकी पूरी टुकडी कोई दस मील पीछे थी। इस दस्ते ने पश्चिम की ओर बढ़कर, अपने रास्ते पर पडनेवाली दुश्मन की सभी प्रतिरक्षा-पक्तियों का सफाया कर दिया था और कई गावो और फार्मों पर कब्जा कर लिया था। इसमे वह गाव भी शामिल था, जहा प्रोत्सेको के निर्देशो के अनुसार कात्या को जाना था।

जिस टैंक में कात्या सफर कर रही थी वह दिन के समय सब से आगे गश्त पर निकला था और उसने उन टीलो पर हमला किया था जिनसे वह वाकिफ हो चुकी थी। गश्ती टैंक ऐसे स्थलो पर जा पहुचा था जहा दुश्मन की किलेवन्दी बडी मजबूत थी, उसने भारी भारी तोपो और मशीनगनो से गोले बरसाये जिससे दुश्मन पूरे जोर से उसपर गोले बरसाने लगे। टैंक को नुक्सान पहुचा और कमाडर को सिर और बांह में चोट लगी थी।

इस समय वे युद्धक्षेत्र से दूर जा रहे थे और इसका पता इस बात से चल रहा था कि कात्या और ड्राइवर के अलावा सभी बुरी तरह थक चुके थे और उन्हे वैसी ही नीद आ रही थी जैसी सख्त लडाई कर चुकने के बाद आराम करते हुए सैनिको को आती है। कात्या का दिल उनके प्रति सहानुभूति से भर गया।

वे कई बस्तियो से होकर गुजर चुके थे कि सहसा ड्राइवर कात्या की ओर मुडा और चिल्लाकर बोल उठा—

"ये रहे हमारे लोग, ये रहे!"

टैंक बराबर सडक पर ही चलता जा रहा था किन्तु इस समय ड्राइवर ने टैंक खेतो में मोडा और रोक दिया।

रात अधेरी थी। रात का सन्नाटा पास और दूर पर होनेवाली उसी युद्ध ध्वनि से भंग होता था, जिससे लडाकुओ के कान पक चुके थे। और इस नीरवता मे झनझनाती हुई धातु की आवाज भी उनकी ओर बढती चली आ

रही थी। यह आवाज बराबर तेज होती जा रही थी। ड्राइवर ने अपनी धूमिल हेडलाइट से संकेत किया। कमाडर और तोपची नीचे जमीन पर आ गये। कात्या वही टैंक में, बुर्जी मे से बाहर सिर निकालकर सीधी खडी हो गयी।

कई मोटर-साइकिले सर्र से गुजर गयी। उनके पीछे टैंक और बख्तरबद मोटरे थी जो सडक और स्तेपी से होकर चली आ रही थी। उनकी तेज आवाज रात के सन्नाटे मे गूज रही थी। कात्या ने दोनो हाथ अपने कानो पर पडी हुई शाल के ऊपर रख लिये। टैंक भडभडाते हुए आगे निकल गये। आगे निकली हुई उनकी तोपे तथा उनके लम्बे-चौडे आकार बडा ही आतंकपूर्ण प्रभाव डाल रहे थे। यह प्रभाव अंधेरे के कारण और भी गहरा हो उठा था।

एक छोटी-सी बख्तरबन्द मोटर उनके एकाकी टैंक के पास आकर रुक गयी। कार मे से दो सैनिक अफसर निकले। वे लम्बे लम्बे ओवरकोट पहने थे। कुछ क्षणो तक वे टैंक कमाडर से ज़ोर जोर से बाते करते रहे और टैंक पर खडी हुई कात्या की ओर जब तब देखते रहे। फिर वे अपनी कार पर चढे और अपने टैंको का साथ पकडने के लिए स्तेपी में अपनी कार दौडा दी।

टैंको के बाद लारियां थी फिर टैंक, फिर लारियां, इसी क्रम से सेना आगे बढ रही थी लारियो मे पैदल सैनिक भरे थे। लारियो मे बैठे टामी-गन वाले सैनिक स्तेपी में खडे उस एकाकी टैंक को घूरते जा रहे थे, जिसपर, कानों पर दस्ताने वाले हाथ रखे एक औरत खडी थी।

कात्या इस विशाल जन समूह और वृहत् परिमाण में शस्त्रास्त्रो को देखकर चकित रह गयी थी। लग रहा था जैसे यह जन समूह शस्त्रास्त्रों की धातु के साथ मिलकर एकाकार हो गया था। सभवत इन्ही क्षणो में आन्तरिक मुक्ति की उसकी अनुभूति मे एक नयी अनुभूति और जुड गयी थी,

जो वहुत समय तक उसके साथ बनी रही। उसे लगा कि वह स्वय यह सब देख सुनकर इसका अनुभव नही कर रही थी, वल्कि कोई दूसरा उसका अनुभव कर रहा था। वह अपने को उसी प्रकार बाहर से देख रही थी जैसे कि कोई अपने को स्वप्न मे देखता है। उसे प्रथम बार ऐसा लग रहा था कि वह उस ससार की अनभ्यस्त हो गयी है जिसका प्रचड रूप वह अपनी आखो के सामने देख रही है। और वहुत समय तक तो वह इन असख्य चेहरो, घटनाओ, वातचीत और अन्तत मानवीय धारणाओ के वीच अपना स्थान ही न पा सकी, जिनमे से कुछ तो उसके लिए विलकुल ही नयी थी और वहुत-सी ऐसी, जिनसे उसका वहुत समय तक कोई वास्ता न पडा था।

उसे अपने पति को देखने और उसकी निकटता का अनुभव करने की उत्कट इच्छा होने लगी। पति की चिन्ता उसके लिए कष्टदायक बनने लगी थी। प्रेम और विछोह के कारण उसका हृदय तडप रहा था, खासकर इसलिए कि वह वहुत समय पहले ही यह भूल चुकी थी कि रोने से भी आदमी को सन्तोप मिलता है।

जिस समय कात्या ने लाल सेना को देखा था, उस समय सभी सैनिक यह जानते थे कि वे विजयी होगे।

युद्ध के अठारह महीनो मे भी यह विजयी सेना साज-सामान की दृष्टि से विपन्न न हुई थी। वस्तुत, कात्या ने देखा कि लाल सेना के पास शस्त्रास्त्रो की असीम शक्ति है। यह शक्ति दुश्मन की उन दिनों की शक्ति से भी अधिक थी जव उसे यूरोप के अधिकृत देशो के सर्वोत्तम कारखानो के हथियार उपलब्ध थे, और जव उसकी फौजे बाढ़ की तरह जलती दोनेत्स स्तेपी के ऊपर फैलती जा रही थी। वे अपमानजनक दिन किसी को भुलाये न भूल सकते थे। पर जिन लोगो के साथ भाग्य ने कात्या को अव मिला दिया था उन्हे देखकर वह और भी दग रह गयी

थी। हा, जिन लोगो के साथ वह समय समय पर सपर्क मे आयी थी, वे नयी किस्म के लोग थे। ये लोग न सिर्फ अपने नये और शक्तिशाली शस्त्रास्त्रो पर ही नियत्रण रख सकते थे वल्कि लगता था जैसे मानसिक रूप से भी वे मानवता के इतिहास मे एक नये और विशाल दौर मे प्रवेश कर चुके थे।

कात्या को लगता था कि य लोग उससे इतने वढ़े-चढे है कि वह कभी उनकी वरावरी नही कर सकती।

टैंक मे सभी तरह के विलक्षण कर्मचारी वैठे थे। इसकी कमान एक सीनियर लेफ्टिनेट के हाथ में थी जिसके सिर और वाह दोनो घायल हो चुके थे। इस टैंक मे वैठकर कात्या टैंक-ब्रिगेड के हेडक्वार्टर मे पहुची। वस्तुत. यह उनके रास्ते मे था। सच कहा जाय तो यह हेडक्वार्टर न था। वहा मोर्चे पर काम करनेवाले कुछ फौजी अफसरो के साथ केवल एक ब्रिगेड कमांडर रहता था। ये लोग एक छोटी-सी वस्ती मे जमे हुए थे जिसे अभी पिछली सुवह को ही दुश्मन से मोर्चा लेने के कारण काफी क्षति उठानी पडी थी। वहा रहनेवाले युवक कर्नल की आखे जलते हुए अगारो जैसी हो रही थी और चेहरा अपने ही स्टाफ-अफसरो की भाति नीद की कमी के कारण मुरझाया हुआ सा। कर्नल कात्या से इस छोटे-से मकान में मिला। वस्तुत. वस्ती मे यही एक मकान था जिसपर कोई आच न आयी थी। उसने उससे इस वात की क्षमा मागी कि वह उसकी अच्छी तरह खातिर न कर सका क्योकि वह वस एक ही मिनट के लिए आया है और उसे तुरत लौट जाना है। फिर भी उसने सुझाव दिया कि कात्या को यहा रुककर कुछ देर सो लेना चाहिए।

"हमारी दूसरी टुकडी शीघ्र ही यहा आयेगी। उनमें से कोई न कोई तुम्हारी जरूरतो का ध्यान रखेगा और तुम्हारी देख-रेख करेगा," वह वोला।

इस छोटे-से मकान मे गर्मी की अच्छी व्यवस्था थी। अफसरो ने

कात्या से भेड़ की खाल वाला कोट उतार डालने और कुछ गर्म हो लेने का अनुरोध किया।

गाव को बुरी तरह नष्ट किया गया था किन्तु अब भी वहा बहुत-से गाव वाले टिके हुए थे, जिनमे से अधिकाश स्त्रिया, बच्चे और बूढे थे। उनके लिए सोवियत सैनिको को विशेषकर टैंक चालको को देखना, नयी बात थी। और वे बेहद खुश थे। भीड़े सैनिको और खासकर अफसरों के इर्द-गिर्द जमा हो जाती थी। कर्मचारियो की सुविधा आदि के लिए सिगनलर उस छोटे-से मकान तथा पास-पडोस के कम टूटे-फूटे मकानो मे टेलीफोन के तार दौडा रहे थे।

कात्या ने एक प्याली चाय ली—बहुत बढिया चाय थी। कोई आध घटे बाद कमाडर की बन्द जीपगाड़ी उसे तेजी के साथ कोर हेडक्वार्टर की ओर लिये जा रही थी। इस समय वह टामी-गन से लैस एक सर्जेंट के साथ थी। बंधे हुए सिर वाले सीनियर टैंक लेफ्टिनेट, अगारे जैसी आंखो और थके हुए चेहरे वाले कर्नल और दर्जनो दूसरे लोगो के चेहरे कात्या की स्मृति से उतर चुके थे।

प्रातकाल कसकर पाला पड़ा और कोहरे ने सभी चीजे आंखो से ओझल कर दी। कोहरे के उस पार कही सूरज निकल रहा था और कात्या ठीक उसी की ओर बढ रही थी।

वे एक पक्की सड़क पर जा रहे थे, जिसपर उन्हे विपरीत दिशा मे फौजी टुकडिया मार्च करती हुई मिली। कात्या की जीप बार बार सड़क पर से उतरकर सीधी स्तेपी मे वर्फ की पतली चादर रौदती हुई बराबर आगे बढती जा रही थी। यदि वह जीप मे न होती तो उसे अपनी मजिल तक पहुचने मे बहुत समय लग गया होता। शीघ्र ही कार कमीश्नाया नदी के छिछले, गदले पानी को पार करने लगी। नदी क्या थी मानो वर्फ, हिम और बालू का मिश्रण थी। उसपर निरन्तर, और जगह जगह पर, तोपे

और टैंक चलते रहने के कारण बर्फ, हिम और बालू पिसकर एकाकार हो गये थे।

कोहरा छितरने लगा और सूर्य क्षितिज के कुछ ही ऊपर नजर आने लगा। इस समय सूर्य की ओर देखने से आखे चुधियाती नही थी। इस छोटी-सी नदी के दोनो ओर कात्या ने जर्मनो की वह किलेवन्दी देखी जो अब सोवियत सेना के अधिकार मे आ चुकी थी। सारी धरती को गोलो, टैंको और भारी भारी तोपे ले जानेवाले ट्रैक्टरो ने मथ डाला था।

नदी की दूसरी ओर तो आगे वढ़ना और भी मुश्किल हो गया था, क्योकि असंख्य सैनिक दक्षिण-पश्चिम की ओर वढ रहे थे और गिरफ्तार शत्रु-सैनिक विपरीत दिशा मे ले जाये जा रहे थे। ये वन्दी सैनिक छोटे छोटे दलो और वडे वडे दस्तो के रूप में पहरे मे चल रहे थे। गन्दे, और वढी हुई दाढी वाले ये लोग, मैले-कुचैले ओवरकोट पहने कीचड मे से होकर, सडक पर या स्तेपी पार करते हुए चले जा रहे थे। पराजय और कैद की लाज ने जैसे उनकी कमर तोड़ दी थी। जिस क्षेत्र से होकर उन्हे ले जाया जा रहा था उसपर उनके अपने विध्वस और सहार के चिह्न थे। जो उपजाऊ स्तेपी शताब्दियो से अन्न का भडार रही थी, उसकी अब बुरी हालत थी। गाव जलकर राख हो चुके थे। जहा तहा जले हुए टैंको या टूटी-फूटी लारियो के ढाचे, बेकार तोपो की नलिया और काले स्वस्तिका चिह्न से अकित हवाई जहाज़ो के डैने, जमीन चाट रहे थे। दुश्मन की अनगिनत लाशे स्तेपी मे और सड़क पर विकृत और पाले से जमी हुई पडी थी। उन्हे उठा ले जाने के लिए न कोई था वहा, और न ही किसी को समय मिला था। टैंको और भारी तोपो ने उनके ऊपर से निकलकर उनका भुरता बना दिया था।

बढती हुई पक्तियो मे मार्च करते या टैंको और लारियो मे बैठे हुए

में शिक्षा विभाग की एक साधारण कर्मचारिणी के रूप मे अपने कार्यों का चित्र खड़ा कर दिया था।

"अन्द्रेई येफीमोविच ! तुम!" यह चीख जैसे उसके मुह से अनायास निकल गयी और उसने दौडकर उसके गले मे बाहे डाल दी।

वह उक्रइनी छापामार हेड्क्वार्टर का एक नेता था जिसने पाच महीने पहले अपनी खुफिया कार्रवाइया शुरू करने के पूर्व, प्रोत्सेको को निर्देश दिये थे।

"अब तुम्हे चाहिए कि हम सभी को सीने से लगाओ," अपनी लम्बी लम्बी बरौनिओ के पीछे से शात, भूरी आखो से देखते हुए एक दुबले-पतले युवक जनरल ने कहा।

कात्या ने इस जनरल पर एक निगाह डाली। उसका चेहरा तपा हुआ और रूखा था। दाढ़ी बड़ी सावधानी से बनायी गयी थी। कनपटी पर उसके बाल सफेद पड़ रहे थे। सहसा कात्या झेंप गयी। उसने दोनो हाथो से अपना चेहरा ढक लिया और अपने गर्म किसानी शॉल मे मुह दुबका लिया। इसी मुद्रा मे—भेड की खाल की जैकेट पहने और पैरो मे फैल्ट बूट लगाये, दोनो हाथो से मुह ढापे—कात्या खडी रही। उसके आस-पास चुस्त-दुरुस्त सैनिक खड़े थे।

"देखो न, तुमने उसे आते ही परेशानी मे डाल दिया। तुम्हे यह भी नही मालूम कि औरतो के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए?" मुस्कराते हुए अन्द्रेई येफीमोविच ने कहा। सभी अफसर हस दिये।

"माफ कीजिये," जनरल बोला और अपने पतले हाथ से धीरे-से कात्या का कन्धा छू दिया। कात्या ने भी अपने चेहरे पर से हाथ हटा लिये। उसकी आखे चमक रही थी।

"नही, नही, कोई बात नही," वह बोली और जनरल कात्या की जैकेट उतारने में उसकी मदद करने लगा।

उन दिनो के अधिकाश सोवियत अफसरो की भाति, कोर-कमाडर भी, अपने पद और कर्त्तव्य को देखते हुए, अभी तरुण ही था। परिस्थितियो के बावजूद वह स्वाभाविक रूप से शात, गभीर, विश्वस्त, व्यवहार कुशल विनोदप्रिय और शिष्ट था। उसके साथ के सभी सैनिको पर भी उसी स्थिरता, शिष्टता और करीने की छाप थी।

इधर प्रोत्सेको की रिपोर्ट की सकेतभाषा का रूपान्तर किया जा रहा था और उधर जनरल ने महीन कागज पर बने वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के छोटे-से नक्शे को मेज पर फैले हुए एक बडे-से फौजी नक्शे पर रख दिया। यही काम प्रोत्सेको ने कात्या की आखो के सामने केवल दो राते पहले किया था। हा, केवल दो राते पहले! अब यह सोचना भी कठिन था! जनरल की पतली अगुलियो ने महीन कागज को सीधा किया।

"यह काम कितना अच्छा और नाजुक है!" वह खुशी से भरकर बोल उठा, "भाड मे जाये! जरा देखना तो अन्द्रेई येफीमोविच, ये फिर मिऊस पर किलेबदी कर रहे है।"

अन्द्रेई येफीमोविच नक्शे पर झुक गया। उसके चेहरे की अनगिनत झुर्रिया गहराने लगी और वह अपनी उम्र से अधिक बड़ा लगने लगा। दूसरे अधिकारी भी महीन कागज के नक्शे के इर्द-गिर्द खडे हो गये।

"बात यह है कि मिऊस के किनारे किनारे हमारा उनका सामना न होगा, पर जानते हो इसके माने क्या है?" अन्द्रेई येफीमोविच पर एक प्रसन्नतापूर्ण दृष्टि डालते हुए जनरल बोला, "वे इतने बेवकूफ नही कि यह भी न समझे कि उन्हे उत्तरी काकेशिया और कुबान से हटना होगा!"

जनरल हस दिया। कात्या का चेहरा खुशी से लाल हो गया क्योकि जनरल के शब्दो और उसके पति की भविष्यवाणी का अर्थ एक ही था।

"अच्छा अब हम यह देखे कि यहा हमारे लिए नयी कौन-सी वात है।" जनरल ने नक्शे पर पडा हुआ एक वडा-सा आतशी शीशा उठाया और छोटे-से नक्शे पर प्रोत्सेको के कुशल हाथ से वने चिह्नो और वृत्तो की जाच करने लगा। "यह हम पहले से ही जानते है, हूह, यह भी जानते है हूह तो " उसने टिप्पणिया देखे विना ही प्रोत्सेको के सकेत-चिह्न समझ लिये थे। टिप्पणियो को अभी तक सकेत भापा मे रूपान्तरित नही किया गया था। "इसके माने है कि हमारे वसीली प्रोखोरोविच का काम वुरा नही है, फिर भी तुम हमेशा यही कहते रहे–'खुफिया विभाग वाले अच्छा काम नही करते,'" जनरल ने हल्के व्यग्य से अपनी वात समाप्त की। वह अपनी वगल मे खडे हुए कोर के स्टाफ-चीफ, कर्नल को सवोधित करते हुए कह रहा था जिसका डील-डौल भारी और मूछे काली थी।

एक गजे मोटे और नाटे अधिकारी ने, जिसकी पीली किन्तु सजीव-सी आंखो मे चतुराई झलक रही थी, कर्नल के उत्तर का अनुमान पहले से ही लगा लिया था।

"कामरेड कमाडर, यह सूचना भी हमे ठीक उसी सूत्र से मिली थी," उसने विना किसी झेप के कहा। वस्तुत यही अधिकारी, कोर-हेडक्वार्टर का खुफिया चीफ, वसीली प्रोखोरोविच था।

"अरे! और मैंने समझा था कि यह सूचना तुमने खुद मालूम की है," निराश होकर जनरल वोला।

अफसर हस पडे। किन्तु वसीली प्रोखोरोविच ने न तो जनरल के ताने पर ही ध्यान दिया था और न अपने साथियो की हसी पर ही। प्रत्यक्षत वह इन वातो का आदी हो चुका था।

"नही, कामरेड जनरल, आप उन सूचनाओ की ओर विशेप ध्यान दीजिये जो उन्होने देर्कूल के आस-पास के इलाके के वारे मे भेजी

है," वह आश्वस्त लहजे मे बोला। "मैं सोचता हू, इस इलाके के बारे मे हम अधिक जानकारी रखते हैं।"

कात्या को लगा जैसे वसीली प्रोखोरोविच की बातो से उस सूचना का महत्त्व कम हो गया था जो प्रोत्सेको ने भेजी है और जिसके लिए उसने स्वयं भी इतना लम्बा सफर तय किया है।

"जिस साथी ने मुझे यह रिपोर्ट दी है," उसने तीखेपन से कहना शुरू किया, "उसने मुझे इस बात के लिए आगाह कर देने को कहा है कि वह आपको दुश्मन के भागने के सबध मे और भी विस्तृत सूचना देगा। मुझे आशा है कि वह इसी क्षण यह सूचना भेज रहा होगा। टिप्पणियो सहित इस नक्शे से तो प्रदेश की सामान्य स्थिति का ही पता चलता है।"

"ठीक है," जनरल बोला, "इस सूचना की जरूरत कामरेड वतूतिन और कामरेड ख्रुश्चेव को अधिक होगी। हम यह नक्शे उन्ही को भेज देगे। इसमे जिस सूचना का सबध सीधे हमसे है, हम उसी का इस्तेमाल करेगे।"

रात मे काफी विलब से, कात्या को अन्द्रेई येफीमोविच से अलग बातचीत करने का मौका मिला।

वे बैठे नही, बल्कि उस गर्म और खाली कमरे मे अकेले खड़े थे। कमरे मे, जर्मनो से हाथ लगी हुई बत्तियां जल रही थी। कात्या पूछ रही थी·

"यह तुम यहा कैसे आ पड़े, अन्द्रेई येफीमोविच ?"

"इससे तुम्हे ताज्जुब क्यो होता है? हम फिर अपनी उक्रइनी धरती पर लौट आये। अभी इसके अधिकाश भाग पर हमारा अधिकार नही हुआ है पर जिस जमीन पर भी हो चुका है वह हमारी है, अपनी है। हमारी मातृभूमि मे सोवियत सत्ता फिर से लौट रही है और वहां

सोवियत व्यवस्था की पुन स्थापना होने लगी है।" अन्द्रेई येफीमोविच मुस्कराया और उसके मजबूत और कुछ कुछ झुर्रियोवाले चेहरे पर सहसा तरुणाई झलकने लगी। "तुम तो जानती ही हो कि हमारी सेना उक्रइनी छापामारो के साथ कधे से कंधा मिलाकर ही आगे बढ रही है। बिना हमारे वे कर भी तो क्या सकते थे!" उसने कात्या पर एक निगाह डाली। उसकी आखो मे पहले चमक आयी और तब उसका चेहरा गभीर हो गया। "मै चाहता था कि तुम कुछ आराम कर लेती और कल बातचीत करते। पर तुम बडी बहादुर हो," उसने कुछ शर्माते हुए कहा, किन्तु उसकी आखे कात्या की आखो मे गडी थी। "हम तुम्हे फिर वोरोशीलोवग्राद भेजना चाहेगे। हमे बहुत कुछ जानने की जरूरत है और यह सूचना केवल तुम्ही एकत्र कर सकती हो।" वह रुका और तब प्रश्नसूचक मुद्रा मे, धीरे-से बोला, "हा, यदि तुम बहुत अधिक थक गयी हो .."

किन्तु कात्या ने उसे अपनी बात पूरी न करने दी। उसका हृदय गर्व और आभार से दबा जा रहा था।

"धन्यवाद," वह फुसफुसायी, "धन्यवाद, अन्द्रेई येफीमोविच! आगे कुछ मत कहो। इससे अधिक प्रसन्नता की बात मेरे लिए और कोई भी नही हो सकती," उसके शब्दो मे उत्तेजना थी और उसका सुनहरी बालोवाला धूप मे तपा, सुन्दर चेहरा और भी खूबसूरत लगने लगा था—"मै तुमसे केवल एक प्रश्न पूछना चाहती हू—कल मुझे जाने दो, मुझे मोर्चे के राजनीतिक विभाग मे मत भेजो। मुझे आराम नही चाहिए।"

अन्द्रेई येफीमोविच ने एक क्षण तक सोचा, सिर हिलाया और मुस्करा दिया।

"हम इतनी जल्दी मे नही है," वह बोला, "जो इलाके हमने ले

लिये है उन्हे ठीक करेगे। देर्कूल और खास तौर से दोनेत्स पर हम आसानी से विजय न प्राप्त कर सकेगे—मील्लेरोवो और कामेस्क जो हमे रोके हुए है। और तुम्हे राजनीतिक विभाग को बहुत कुछ बताना है। इसलिए हमे कोई खास जल्दी नही है। तुम दो-तीन दिनो मे जा सकती हो।"

"पर कल क्यो नही?" कात्या बोली। उसके हृदय मे अभिलाषा और प्रेम उमड-घुमड रहे थे।

तीन दिन बाद, रात के समय कात्या फिर गाल्या के मकान मे आ गयी। वह भेड की खाल वाली वही जैकेट और काली शॉल डाले थी। उसके पास वही पासपोर्ट था जिसमे वह चीर की अध्यापिका के रूप मे दर्ज थी।

सोवियत सेना उस छोटे-से गाव मे छावनी डाले थी, किन्तु उत्तर और दक्षिण की पहाडिया अभी तक दुश्मनो के हाथ मे थी। जर्मन प्रतिरक्षा-पंक्तिया कमीश्नाया और देर्कूल के बीच वाटरशेड के साथ साथ तथा देर्कूल पर दूर पश्चिम तक चली गयी थी।

रात मे नन्हा साशा, पहले की ही तरह गुप-चुप्प और आश्वस्त कात्या को उसी सडक पर ले गया, जिसपर वह पहले बूढे फोमा के साथ आयी थी। और अन्तत वह उस मकान मे भी पहुच गयी जहा से कुछ दिन पहले प्रोत्सेको ने उसे उसकी महान यात्रा पर भेजा था।

वहा कोर्नियेको नाम के अनेक लोगो मे से एक ने बताया कि उसके पति को उसकी वापसी की सूचना दे दी गयी है और उसका पति सुरक्षित है किन्तु अभी उससे मिल न सकेगा।

इसके पश्चात् कात्या ने मार्फा कोर्नियेको के पास जाने की तैयारी की, और बिल्कुल अकेली, रात-दिन चलती रही। चौबीस घटो मे वह मुश्किल मे दो-तीन घटे आराम करती। किन्तु अपनी मजिल पर पहुचने

पर उसे यह हृदयविदारक समाचार सुनने को मिला कि माशा शूविना को मार डाला गया है।

जर्मनो को उस्पेस्कोये गाव के प्रथम उपचार-केन्द्र पर सम्पर्क-पते का पता चल गया था। इस वात की सूचना जर्मन पुलिस मे काम करनेवाले अपने ही एक आदमी ने कोतोवा वहनो को दी जिन्होने किसी प्रकार वहा से निकलकर इसकी इत्तिला उन खुफिया सघटनो को दी जिनके सम्पर्क मे वे थी। किन्तु माशा के उस्पेस्कोये की ओर रवाना होने तक यह खबर मार्फा कोर्नियेको को न मिल सकी थी। सडक पर भी माशा का पता चलाने की सारी कोशिशे बेकार सिद्ध हुई थी। माशा जर्मन सशस्त्र पुलिस के हाथ मे पड़ गयी थी और उस्पेस्कोये मे उसपर बडे वडे जुल्म किये गये थे। पुलिस के उसी अपने आदमी से वाद मे यह पता भी चला कि माशा शूविना बरावर यही कहती रही कि उसका सवध किसी भी खुफिया सघटन से नही है। उसने किसी के साथ विश्वासघात नही किया।

सचमुच यह हृदयविदारक समाचार था। किन्तु कात्या को दुखी होने का कोई अधिकार न था—उसे अपनी सारी ताकत से काम लेना होगा।

दो दिन वाद वह वोरोशीलोवग्राद पहुच गयी।

## अध्याय २१

इस समय तक जर्मन अधिकृत क्षेत्र के उन लोगो तक को, जो समाचारो से अनभिज्ञ थे, और सैनिक कार्रवाइयो के वारे मे तनिक भी न जानते थे, यह पता चल गया था कि हिटलरवादियो का अन्त निकट है।

क्रास्नोदोन जैसे स्थानो मे भी जो मोर्चे से वहुत दूर थे, इस वात का पता यह देखकर चल रहा था कि हिटलरवादियो के लूट के साथी—

हगेरियन और इतालवी भाड़े के टट्टू और अन्तोनेस्कू की सेना के बचे-खुचे लोग जान बचा बचाकर भाग रहे थे।

रूमानियाई अफसर और सैनिक तक, बिना मोटर की सवारी या शस्त्रास्त्रो के, सभी सडको पर भागते नजर आते थे। रातदिन अपनी बग्घियो पर, जिनमे मरियल घोड़े जुते होते थे, या पैदल, अपने जर्जर ओवरकोटो की आस्तीनो मे हाथ डाले, फौजी टोपिया या बकरे की खाल के हैट लगाये, पाले से सुन्न हुए चेहरो पर तौलिये या औरतो के भीतर पहनने के ऊनी कपड़े लपेटे, भागते नजर आते थे।

इस तरह की एक बग्घी कोशेवोई के घर के दरवाजे पर आकर खडी हो गयी। उसमे से एक परिचित अफसर कूदा और घर मे घुस गया। उसके पीछे उसका अर्दली था जो अपना और अपने अफसर का सूटकेस लिये था। अफसर का सूटकेस बडा और अर्दली का छोटा था। अर्दली का चेहरा एक ओर घूमा हुआ था और लग रहा था जैसे वह पाले से मारा हुआ अपना कान छिपा रहा हो।

अफसर का चेहरा दान्तो मे दर्द के कारण सूजा हुआ था। वह कधो पर सुनहरी रग की पट्टिया भी नही लगाये था। वह दौडता हुआ रसोईघर मे गया और स्टोव पर तुरन्त अपने हाथ सेकने लगा।

"हा, तो क्या मामला है?" मामा कोल्या ने उससे पूछा।

अफसर के चेहरे पर वही भाव आया, जिसके साथ ही साथ उसकी नाक की चोच भी हमेशा हिलने लगती थी, किन्तु इस समय तो उसकी नाक को पाला मार गया था। इसी लिए उसका हिलना बन्द हो गया था। उसने सहसा हिटलर की नकल करते हुए अपना मुह बनाया। वह उसमे कामयाब भी हुआ। क्योकि उसकी मूछ छोटी छोटी और आंखो मे पागलो का सा भाव था। फिर वह अपने पजो पर खड़ा हुआ और

भागने का स्वाग करने लगा। उसके चेहरे पर कोई मुस्कराहट न थी क्योंकि वस्तुत वह मज़ाक न कर रहा था।

"हम अपनी पत्नी के पास घर जा रहे हैं," अर्दली ने मौज मे आकर कहा और अफसर पर एक सतर्क निगाह डालते हुए मामा कोल्या को आख मारी।

उन्होंने कुछ आग तापी, कुछ पेट मे डाला और अपने सूटकेस लेकर घर से निकले ही थे कि, जैसे अन्तर्प्रेरणावश, नानी ने येलेना निकोलायेव्ना के पलग के कम्बल पलटे और देखा कि पलंग की दोनो चादरे गायब हैं।

नानी को इतना ताव आ गया था मानो उसकी जवानी ही लौट आयी हो। वह मेहमानो के पीछे पीछे दौड़ी और दरवाजे पर आकर उन पर इस बुरी तरह बरस पडी कि अफसर ने समझ लिया था कि किसी भी समय चिल्लपो करती हुई औरतों का झुड का झुड वहा इकट्ठा हो सकता है। उसने अर्दली को अपना छोटा सूटकेस खोलने का हुक्म दिया। एक चादर सूटकेस मे से निकली। नानी ने उसे हाथो मे लिया और चीखने लगी।

"दूसरी कहा है?"

अर्दली ने अपने मालिक की दिशा मे आखे मिचकायी, किन्तु मालिक ने अपना सूटकेस छीन लिया था और बग्घी मे चढने लगा था। तो सचमुच वह उस चादर को रूमानिया लेता गया था, पर कौन जाने रास्ते मे किसी उक्रइनी या मोल्दावान छापामार ने प्राचीन रोमनो के इस वारिस और उसके अर्दली को दूसरी दुनिया का टिकट कटाकर खुद चादर वापिस ले ली हो।

कभी कभी कई घटनाए सहसा घट जाती है और उनसे कई जोखम के काम सर हो जाते है। दूसरी तरफ कई बार ऐसे कामो मे

अधिक सफलता नहीं मिल पाती जिनके लिए बड़ी तैयारी की गयी होती है। और प्राय यह होता है कि एक भी गलत कदम उठ जाने से बडे से बडे कामो का भयकर परिणाम निकलता है।

३० दिसम्वर की शाम को, सेर्गेई, वाल्या और कुछ अन्य साथी क्लव को जा रहे थे कि उन्होने देखा कि वोरो से लदी एक जर्मन लारी एक मकान के सामने खडी है। लारी पर न ड्राइवर था और न कोई पहरेदार ही।

सेर्गेई और वाल्या लारी पर चढे, वोरे टटोले और इस निष्कर्ष पर पहुचे कि उनमे नव वर्ष के उपहार भरे हुए है। पिछली रात थोडी-सी वर्फ पडी थी, और वह जम गयी थी। और वर्फ ने जैसे प्रकाश का दान किया था। लोग अभी तक सडको पर घूम रहे थे, फिर भी इन जवानो ने मौका पाकर कई वोरे लारी से नीचे गिराये और उन्हे घसीटते हुए पडोस के अहातो और सायवानो मे ले आये।

क्लव डाइरेक्टर जेन्या मोश्कोव और आर्ट मैनेजर वान्या जेम्नुखोव ने यह सुझाव दिया था कि जैसे ही रात मे क्लव से सभी लोग चले जाय कि वोरो को वही पहुचा दिया जाय, क्योकि क्लव के तहखाने मे चीजे छिपाये जाने के लिए सभी तरह की जगहे मौजूद थी।

जर्मन सिपाही लारी के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये और नशे मे गालिया वकने लगे। खास कर कुत्ते की खाल के कालर वाला कोट और वनावटी फेल्ट के वूट पहने हुए एक कार्पोरल तो जामे से वाहर हुआ जा रहा था। घर की मालिकिन वहा विना कोट पहने खडी थी और जर्मनो से वार वार कह रही थी कि वह कुछ भी नही जानती। वेशक जर्मन यह देख सकते थे कि उसका इस मामले से कोई सवध नही। आखिर जर्मन कूदकर लारी पर वैठे, वह औरत घर मे भागी और लारी खड्ड की ओर वढती हुई सशस्त्र पुलिस के थाने को चल दी।

इसके बाद छोकरे बोरे खींच कर क्लब मे लाये और तहखाने मे छिपा दिये।

सुबह वान्या जेम्तुखोव और मोश्कोव क्लब मे मिले। उन्होने उपहारो के एक भाग, खास कर सिगरेटो को तुरन्त ही बाजार मे बेच डालने का निश्चय किया। दूसरे दिन नववर्ष दिवस था और सघटन को पैसे की ज़रूरत थी। स्तर्गोविच भी क्लब मे था। उसने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

बाजार मे जर्मन चीजो के सौदे लुक-छिपकर खूब हुआ करते थे। दूसरो से अधिक यह काम जर्मन सिपाही करते थे। वे वोद्का, गर्म कपडे और खाने की चीजो के बदले मे सिगरेटे, तम्बाकू, मोमबत्तिया और पेट्रोल दिया करते थे। जर्मन सामान हाथो हाथ बिकते रहते और पुलिस वाले उसे अनदेखा कर देते। मोश्कोव के पास ऐसे बहुत-से लडके थे, जो कुछ कमीशन लेकर सिगरेटे बेचने को तैयार हो गये।

उस दिन पुलिस वालो ने घटनास्थल के पास-पडोस के मकानो की तलाशी ली थी किन्तु उन्हे नववर्ष के उपहारो का कोई सुराग न लगा था। अब वे उन व्यापारियो पर निगाह रख रहे थे। आखिर खुद पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की ने एक लडके को पकड लिया जिसके पास सिगरेटे थी।

जब उससे पूछ-ताछ की गयी तो उसने बताया कि मैने एक बूढे को कुछ रोटी देकर यह सिगरेटे प्राप्त की है। उस लडके पर कोडे बरसाये गये। किन्तु उसे तो जिन्दगी मे एक से अधिक बार कोडे पड चुके थे—उसने अपने साथियो के साथ कभी गद्दारी नही की थी। मारपीट कर, उस रोते हुए लडके को रात तक जेल की एक कोठरी मे रखा गया।

दूसरे कामो के सिलसिले मे बताते हुए पुलिस चीफ ने मिस्टर ब्रूक्नेर को उस लडके की गिरफ्तारी की भी बात बतायी जिसके पास से

जर्मन सिगरेटे निकली थी। उसने इस घटना का सबध लॉरियो से हुई दूसरी चोरियो से भी जोड दिया था। मिस्टर ब्रूक्नेर ने स्वय ही उस बालक से पूछ-ताछ करने का निश्चय किया।

बालक कोठरी मे ही सो गया था। रात काफी हो चुकी थी जब उसे जगाया गया और ब्रूक्नेर के कमरे मे लाया गया। वहा दो जर्मन और भी खडे थे—एक था पुलिस चीफ और दूसरा दुभाषिया।

उस लडके ने नकियाते हुए सारी कहानी दुहरा दी।

मिस्टर ब्रूक्नेर को क्रोध आ गया। उसने लडके का कान पकडा और उसे दालान से खीचते हुए ले गया।

लड़के को एक कोठरी मे डाल दिया गया, जहा ऊचे ऊचे पायोवाले खून से सने दो तख्त रखे थे। छत पर से रस्सिया लटक रही थी। एक लम्बे मेज पर लोहे की छडे बरमे, बिजली के तारो के बल पडे हुए कोडे, एक कुल्हाडी और जाने क्या क्या भयकर चीजे रखी थी। लोहे के एक स्टोव मे आग जल रही थी। एक कोने मे बाल्टी मे पानी रखा था। कमरे के दो ओर वैसी ही नालिया बनी थी जैसी हमामो मे देखने को मिलती है।

एक मोटा और गंजा जर्मन सिपाही एक मेज के पास बैठा सिगरेट पी रहा था। उसके हाथो पर उजले रोये थे, हाथ बडे बडे और लाल थे। वह काली पोशाक पहने था और सीग वाले हल्के फ़्रेम का चश्मा लगाये था।

छोटे लडके ने उसकी ओर देखा और डर से कापते हुए बता दिया कि ये सिगरेटे उसे मोश्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच ने दी थी।

उसी दिन पेर्वोमाइका की वीरिकोवा नामक एक लडकी की बाजार मे अपनी एक सहेली ल्यादस्काया से अचानक मुलाकात हो गयी। दोनो एक ही स्कूल में, एक ही कक्षा की एक ही बेच पर बैठकर पढ़ा करती

थी। किन्तु लडाई के आरम्भ में, जब से ल्यादूस्काया के पिता का तबादला क्रास्नोदोन बस्ती मे किसी पद पर हुआ था, दोनो एक दूसरे से बिछुड गयी थीं।

उनकी आपसी मित्रता उतनी अधिक नही थी। दोनो ऐसे माहौल मे पली थी कि उन्होने मौके का महत्त्व समझना सीख लिया था। और इस प्रकार की शिक्षा से दोस्ती को बल नही मिलता। दोनो एक दूसरी को जानती-समझती थी, दोनो की रुचिया एक-सी थी, और दोनो इस सम्बन्ध से लाभ उठाती थी। दोनो ही को अपने बचपन से ही, अपने माता-पिता और उनसे सबद्ध लोगो से दुनिया की जो जानकारी हुई थी उससे उनका यह विश्वास जमने लगा था कि सभी लोग स्वार्थ के लिए जीते है, और ज़िन्दगी का लक्ष्य और उद्देश्य नुक्सान उठाना नही बल्कि दूसरो के मत्थे फलना-फूलना है।

स्कूल मे वीरिकोवा और ल्यादूस्काया भिन्न भिन्न सामाजिक कार्यो में लगी रहती थी और अभ्यासवश और निर्बाध रूप से ऐसी ऐसी शब्दावली का प्रयोग करती थी जिसमे समसामयिक सभी सामाजिक और नैतिक धारणाओ का समावेश हो जाता था। किन्तु उन्हें यह विश्वास था कि उनका फर्ज़, उनके द्वारा प्रयुक्त की जानेवाली शब्दावली और स्कूल मे प्राप्त उनका ज्ञान—इन सब की व्यवस्था लोगो ने इसलिए की है कि वे अपने स्वार्थ-प्रयासो पर, और अपना मतलब गाठने के लिए दूसरो का इस्तेमाल करने पर, परदा डाल सके।

जब दोनो एक दूसरे से मिलती तो कोई ख़ास उत्साह न दिखाती, फिर भी उन्हे एक दूसरे से मिलकर प्रसन्नता होती। दोनो एक दूसरे से अपने कडे हाथ मिलाती। छोटी वीरिकोवा कनफटी वाली टोपी पहनती और उसकी छोटी छोटी चोटिया उसके कोट के भारी कालर पर लहराया करती। ल्यादूस्काया का कद लम्बा, हड्डिया बड़ी, बाल लाल और

उगलियो के नाखून रगे हुए थे। वे बातचीत करने के लिए बाजार की भीड से एक ओर हट आयी।

"जर्मन! वाह! हमे आजाद करवाने आये थे!" ल्याद्स्काया बोली। "तहजीब तहजीब की रट लगाये रहते है, लेकिन वे एक ही बात सोच सकते है—अपना पेट कैसे भरा जाय और मुफ्त मे मौज कैसे उडायी जाय। नही, मै यह जरूर कहूगी कि मुझे उनसे यह आशा न थी। तुम काम कहा करती हो?"

"वहा जहा कभी मवेशी कार्यालय हुआ करता था।" वीरिकोवा के चेहरे पर क्षोभ और क्रोध का भाव झलक उठा। आखिर वह किसी ऐसे से बातचीत कर सकती थी जो सही दृष्टिकोण से जर्मनो की आलोचना करना जानता था। "मुझे सिर्फ रोटी और २०० मार्क मिलते है, बस! वे गधे है। यदि कोई स्वत उनके लिए काम करने आता भी है तो भी वे जैसे आखे मूदे रहते है। अब मेरा भ्रम दूर हो गया है," वीरिकोवा बोली।

"मैने तुरन्त समझ लिया था कि इस काम से कोई लाभ नही। इसी लिए तो मैने कोई काम हाथ मे नही लिया," ल्याद्स्काया बोली, "पहले मेरी जिन्दगी कोई बुरी नही कटती थी। हम थोडे-से लोग थे जो एक ही तरह से सोचते-विचारते थे और मै चीजे खरीदने-बेचने के लिए गावो का दौरा कर लेती थी। किसी लडकी ने यह रिपोर्ट कर दी कि मै श्रम-केन्द्र मे रजिस्टर नही हू। बडी शिकायत करने चली थी! मै श्रम-केन्द्र के एक पुराने आदमी को जानती थी। बडा मजेदार आदमी था। वह जर्मन न था, लोरेन या ऐसी ही किसी जगह का रहनेवाला था। मै कुछ समय तक उसके साथ घूमती-फिरती रही। अन्त मे वह मुझे पीने को शराब और सिगरेटे देता था। इसके बाद वह बीमार पड गया और उसकी जगह काम करने के लिए एक मूर्ख आ गया। उसने मुझे आनन-फानन खान के काम पर भेज दिया। मुझे दिन भर बोझ,

उठानेवाली मशीन का हैंडिल घुमाना पडता था। यह मजाक नही है इसी लिए मै यहा आयी हू, शायद श्रम-केन्द्र वाले मुझे किसी अच्छे काम पर लगा दे। तुम्हारी वहा कोई सिफारिश लड सकती है?"

वीरिकोवा ने घृणा से ओठ फुला लिये।

"मुझे इससे क्या लाभ होगा?" पर मै तुम्हे यह वता दू–फौजियो के साथ रहने मे वडा लाभ है। वे यहा थोडे समय के लिए है। आगे-पीछे उन्हे जाना ही होगा। फिर तुम्हे उनसे कुछ लेना-देना नही, कोई जिम्मेदारी नही। और वे कजूस भी नही है। वे जानते है कि किसी दिन भी वे मौत के मुह मे जा सकते है, इसलिए कुछ मौज मजा कर लेना उन्हे बुरा नही लगता। कभी आओ न!"

"कैसे आ सकती हू? नगर मे और फिर सारे रास्ते तुम्हारे पेर्वोमाइका तक आना–पन्द्रह मील का सफर है यह!"

"मेरा पेर्वोमाइका! कुछ दिन पहले यह तुम्हारा भी तो था न! किसी तरह कोशिश करके आ ही जाओ। फिर तुम मुझे अपने नये काम के वारे मे भी बताना। मै तुम्हे कुछ दिखाऊगी, शायद दूगी भी। मेरा मतलव समझ गयी न। तो आने की कोशिश करना," और वीरिकोवा ने अपना छोटा-सा कडा हाथ वढा दिया।

शाम को एक पडोसिन ने, जो उस दिन श्रम-केन्द्र मे गयी थी, वीरिकोवा को एक पत्र थमा दिया–"श्रम-केन्द्र मे तुम्हारे मूर्ख, वस्ती के हमारे मूर्खो से ज्यादा गधे है।" ल्याद्स्काया ने यह भी लिखा था कि उसकी योजनाए पूरी नही हुई और वह 'निराश' घर जा रही है।

नववर्ष के एक दिन पहले पेर्वोमाइका के चुने हुए घरो और नगर भर मे अन्यत्र तलाशियां ली गयी। वीरिकोवा के घर मे पुलिस को ल्याद्स्काया का पत्र मिल गया, जो उसने स्कूल की किसी पुरानी कापी मे असावधानी

से डाल दिया था। परीक्षण-जज कुलेशोव को, वीरिकोवा से उसकी सहेली के नाम का पता चलाने में कोई तकलीफ़ न हुई। वीरिकोवा ने, डरकर, ल्यादस्काया की 'जर्मन विरोधी' भावनाओ का मनगढ़न्त वर्णन करना शुरू किया।

कुलेशोव ने वीरिकोवा से, छुट्टी के बाद, थाने पर आने को कहा। उसने पत्र अपने पास रख लिया था।

मोश्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच की गिरफ़्तारी की खबर सबसे पहले सेर्गेई त्युलेनिन को मिली। उसने यह बात अपनी बहनो, नाद्या और दाशा से कही, अपने मित्र वीत्का लुक्यांचेको को आगाह किया और भागा भागा ओलेग से मिलने गया। वहा उसे वाल्या और इवान्त्सोवा बहने मिल गयी। वे दिन भर का काम समझने के लिए प्रतिदिन सुबह ओलेग के घर आती थी।

पिछली रात, ओलेग और मामा कोल्या ने सोवियत सूचना-केन्द्र की विज्ञप्ति लिख ली थी। विज्ञप्ति मे स्तालिनग्राद क्षेत्र मे लाल सेना के छ. सप्ताह के आक्रमण के परिणाम बताये गये थे और यह भी बताया गया था कि स्तालिनग्राद के प्रवेश-मार्गो पर बड़ी बड़ी जर्मन सेनाओ पर दुहरा घेरा डाल दिया गया है।

लडकियो ने हसते हुए, सेर्गेई के हाथ पकड़ लिये और यह समाचार सुनाने के लिए सेर्गेई पर झपट पडी। बेशक सेर्गेई पक्के दिल का आदमी था फिर भी जब उसने उन्हे गिरफ़्तारी की भयानक खबर सुनायी तो उसके ओठ काप गये।

कुछ क्षणो तक ओलेग निश्चेष्ट बैठा रहा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था, उसके बड़े बड़े हाथो की लम्बी लम्बी उंगलिया बंध गयी थी और उसके माथे पर गहरी रेखाए उभर आयी थी।

आखिर वह उठ खड़ा हुआ और उसके चेहरे पर जैसे व्यवहारोचित भाव छा गया।

"सुनो लड़कियो," वह धीरे-से बोला, "तुर्केनिच और ऊल्या का पता चलाओ। फिर 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर के निकट सम्पर्क मे आनेवाले लोगो के पास जाकर कहो कि वे सभी चीजे छिपा ले और जो कुछ न छिपा सके उन्हे नष्ट कर डाले। उनसे यह भी कहना कि आगे क्या करना है यह हम उन्हे दो घटे के भीतर ही बता देगे। अपने रिश्तेदारो को भी आगाह कर देना। और हा, ल्यूबा की मा को मत भूलना," वह बोला (ल्यूबा वोरोशीलोवग्राद मे थी), "अब कुछ देर के लिए मुझे भी जाना होगा।"

सेर्गेई ने अपनी रुई की जैकेट और टोपी पहन ली। कडी सर्दी के बावजूद सिर पर वह एक मामूली टोपी पहने था।

"कहा जा रहे हो?" ओलेग ने पूछा।

वाल्या को सहसा यह सोचकर शर्म आयी कि सेर्गेई उसके साथ जाने की तैयारी कर रहा है।

"मै सड़क पर निगाह रखने के लिए बाहर निकल रहा हू। इस बीच तुम सब तैयार हो जाओ," वह बोला।

और फिर पहली बार उन सब को लगा कि जो घटना वान्या, मोश्कोव और स्तखोविच के साथ घटी है वह किसी भी समय, खुद इस समय उनके साथ भी घट सकती है।

लडकिया परस्पर यह निश्चय करने के बाद कि कौन किस घर में जायेगा, घर से बाहर निकल पडी।

जब वाल्या अहाता पार कर रही थी तो सेर्गेई ने उसे रोककर कहा—

"अब से होशियारी बरतना। अगर हम तुम्हे यहा न मिले, तो अस्पताल मे नताल्या अलेक्सेयेव्ना से मिलना। फिर मै वही तुमसे मिल

जाऊगा। तुम्हारे विना मै कही न जाऊगा।" वाल्या ने चुपचाप सिर हिलाया और तुर्केनिच के पास दौड गयी।

ओलेग अपनी सामान्य चाल से चलते रहने का प्रयत्न करता हुआ पोलीना गेओर्गियेव्ना के पास गया, जो श्रम-केन्द्र के निकट एक सड़क पर रहती थी।

जिस समय उसने उसके घर मे प्रवेश किया वह आलू छील छीलकर उन्हे, स्टोव पर चढी एक कढाई मे, डाल रही थी। जब ओलेग ने उसे अपने साथियो की गिरफ्तारी की बात बतायी तो उसके चेहरे का रग उड़ गया। औरत मे स्वभावत बडा धैर्य और अनुशासन था। परन्तु इस समय उसके हाथ से चाकू छूट पडा और कुछ क्षणो के लिए वह मूक-सी बनी रह गयी। फिर उसने अपने को सभाला।

उस दिन नववर्ष की छुट्टी थी, अत. कोई भी काम पर न गया था। सचमुच ल्यूतिकोव घर ही मे होगा, पर सुबह दूध दे आने के बाद अब दिन मे वहा जाना ठीक नही—उसने सोचा। साथ ही देर् करना भी उचित नही। बहुत-सी चीजे ऐसी है जो घटो मे नही, मिनटो मे तय होती है, मिनटो मे।

अगरचे पोलीना गेओर्गियेव्ना 'तरुण गार्ड' के मामलो से अवगत थी, फिर भी उसने ओलेग से यह दरियाफ़्त किया कि क्या गिरफ़्तार व्यक्तियो मे से कोई यह भी जानता है कि ओलेग और तुर्केनिच का सबध जिला पार्टी कमिटी से भी है। बेशक वे सभी इस सबध के बारे मे तो जानते थे किन्तु यह सबध व्यक्तिगत रूप से किस किस के साथ था यह कोई न जानता था। मोश्कोव स्वय जिला पार्टी कमिटी के सम्पर्क मे रहता था लेकिन उसपर हर दशा मे भरोसा किया जा सकता था। जेम्नुख़ोव केवल पोलीना गेओर्गियेव्ना की मार्फत जिला पार्टी कमिटी के सम्पर्क मे था। वह वान्या को इतनी अच्छी तरह जानती थी कि वह ख़ुद भी किसी ख़तरे मे पड़ सकती है इसका उसे विचार भी न आया।

बेशक यह दुर्भाग्य की बात थी कि स्तखोविच को 'तरुण गार्ड' दल की इतनी अधिक जानकारी थी। ओलेग का कहना था कि वह ईमानदार तो है किन्तु कमजोर है।

पोलीना गेओर्गियेव्ना ओलेग को अपने घर पर बिठाकर बाहर चली गयी और यह समझाती गयी कि यदि कोई उसे पूछने आये तो वह क्या उत्तर दे।

यह कल्पना करना कठिन नही है कि ओलेग के लिए वह घटा कितना पहाड हो गया था। सौभाग्य से कोई पोलीना गेओर्गियेव्ना को पूछने न आया। वह दीवाल के दूसरी ओर पडोसियो के इधर-उधर आने-जाने की खटपट सुन रहा था। इस बीच कोई ख़ास बात न हुई।

आखिर पोलीना गेओर्गियेव्ना लौट आयी। बाहर की ठडक से उसके गाल फिर लाल हो गये थे। ल्यूतिकोव ने प्रत्यक्षत अपनी बातो से उसके हृदय मे आशाए भर दी थी।

"अब सुनो!" उसने अपना शॉल उतारा और कोट के बटन तक खोले बिना ओलेग के सामने बैठ गयी। "उसने कहा है कि मै तुम्हे समझा दू कि तुम निराश न हो। और उसने तुम सब को यह निर्देश दिया है कि तुम सब फौरन नगर छोड़कर चले जाओ। यह बात 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के सभी सदस्यो और दल अथवा गिरफ्तार लोगो से सम्पर्क रखनेवाले सभी लोगो के लिए है। दो तीन भरोसे के आदमियो को सघटन का चार्ज दे दो, उसके लीडर को मेरे सम्पर्क मे कर दो और चले जाओ। अगर तुममे से किसी को यहा से कुछ दूर के किसी नगर या गाव मे पनाह मिल सके तो वह वही छिप रहे। वह हेडक्वार्टर के सदस्यो और उनसे सम्पर्क रखनेवालो को उत्तरी जिलो मे, दोनेत्स के दूसरी ओर चले जाने की राय देता है। शायद वहां से वे प्रतिरक्षा-पक्तियो के उस पार जा सकेगे या फिर लाल सेना के आने तक प्रतीक्षा करेगे। ठहरो, इतना ही

नही," वह बोली। वह ओलेग से किसी प्रश्न की आशा कर रही थी। "उसने तुम्हारे लिए मुझे एक पता दिया है। अब ध्यान से सुनो," पोलीना गेओर्गियेव्ना के चेहरे पर कठोरता झलक उठी। "यह पता तुम अकेले तुर्केनिच को ही देना। और देखो, अकेले तुम दोनो ही इसका इस्तेमाल कर सकते हो। और यह किसी दूसरे के हाथ मे न पड़ने पाये, भले ही वह व्यक्ति तुम्हे जान से ज्यादा प्यारा क्यो न हो। समझ गये न मेरी बात?" पोलीना गेओर्गियेव्ना धीमी आवाज मे बोली और निकट से उसके चेहरे का अध्ययन करने लगी। ओलेग जानता था कि वह किस व्यक्ति की ओर सकेत कर रही है।

ओलेग कुछ क्षणो तक निश्चेष्ट-सा उकडू होकर बैठा रहा। उसके माथे पर प्रौढ़ो जैसी लम्बी लम्बी झुर्रिया झलक गयी।

"क्या मुझे और तुर्केनिच को हर हालत मे इस पते पर जाना चाहिए, चाहे जो कुछ भी क्यो न हो?" उसने शान्ति से पूछा।

"नही, बिलकुल नही। पर यह पूर्णत भरोसे का पता है। वहा तुम न सिर्फ छिपकर रह सकोगे, अपितु तुम्हे करने के लिए कुछ काम भी दिया जायेगा।"

ओलेग के मस्तिष्क मे जो पीडाजनक सघर्ष चल रहा था, उस का आभास पोलीना गेओर्गियेव्ना को भी हो रहा था। किन्तु उस समय उसने जो प्रश्न पूछा था उसकी आशा उसने न की थी।

"और हमारे जो साथी जेल मे है? उन्हे छुडाने का प्रयत्न तक किये बिना हम कैसे जा सकते है?"

"उनकी मदद अब तुम लोग नहीं करोगे," सहसा कठोर पडती हुई पोलीना गेओर्गियेव्ना बोली, "जिला पार्टी कमिटी से जो कुछ हो सकेगा वह करेगी। और तुम जिन तरुणो को यहा छोड जाओगे वे भी मदद करेगे। तो तुम चार्ज किसे दोगे?"

"अनातोली पोपोव यहा रहेगा," एक क्षण विचार करने के बाद ओलेग बोला, "यदि उसे कुछ हो गया तो फिर कोल्या सुम्स्कोई काम करेगा। उसे जानती हो?"

दोनो कुछ मिनटो तक चुपचाप बैठे रहे। अब उसे अपने रास्ते चल देना चाहिए।

"कहा जाने की सोच रहे हो?" पोलीना गेओर्गियेव्ना ने धीरे-से पूछा। वह उसके और उसके परिवार के हितैषी के नाते पूछ रही थी। ओलेग भी यह अच्छी तरह समझ रहा था कि वह कितनी अधिक परेशान हो उठी है।

ओलेग का चेहरा इतना उतर गया और उदास हो उठा कि उसको अपने प्रश्न पर पछतावा होने लगा। फिर जैसे बड़ी कठिनाई से वह धीरे-से बोला—

"तुम तो जानती हो मै इस पते का इस्तेमाल क्यों नही कर सकता।"

बेशक वह जानती थी—नीना! वह बिना नीना के नही जा सकता था।

"हम मोर्चा साथ साथ पार करने का प्रयत्न करेंगे," ओलेग बोला, "अच्छा नमस्ते।"

दोनो एक दूसरे से गले मिले।

ओलेग घर पर नही था जब वान्या तुर्केनिच उसके घर आया। कुछ समय बाद स्त्योपा सफोनोव और सेर्गेई लेवाशोव भी आये यद्यपि उन्हें नही बुलाया गया था। तत्पश्चात जोरा अरुत्युन्यान्त्स आया, पर बिना ओस्मूखिन को लिये हुए। नये वर्ष के दिन वोलोद्या ओस्मूखिन की अठारहवी वर्षगाठ पडती थी। इस अवसर पर उसकी बहन लुद्मीला ने उसे उपहार मे एक जोड़ी बने हुए ऊनी मोज़े दिये थे। इसके बाद वे अपने बाबा से मिलने गाव चले गये थे।

तुर्केनिच ने घर के इर्द-गिर्द निगरानी रखने के लिए कुछ छोकरो को वाहर भेज दिया था। फिर वह और सेर्गेई, विना ऊल्या की प्रतीक्षा किये हुए, आपस मे परामर्श करने लगे। ऊल्या को अभी वहुत दूर से आना था।

उनका अगला कदम क्या हो? इस प्रश्न का उत्तर उन्हें फौरन ढूढना था। उन्होने समझ लिया था कि इसमे न सिर्फ उनके गिरफ्तार साथियो का ही, वल्कि सारे सघटन का भाग्य वधा है। तो क्या उन्हे यह देखने तक इन्तजार करना चाहिए कि आगे क्या होता है। उन्हे किसी भी क्षण गिरफ्तार किया जा सकता है। तो वे छिप जायं क्या? किन्तु उन्हे छिपने की भी तो कोई जगह न थी। सभी तो उन्हे जानते थे।

वाल्या लौट आयी, फिर ओल्या इवान्त्सोवा ऊल्या के साथ और नीना भी आ गयी। नीना उन्हे रास्ते मे मिल गयी थी। नीना ने आकर खवर दी कि इस समय क्लव पर जर्मन सशस्त्र पुलिस और पुलिस वालो का पहरा है और किसी को भी अन्दर नही जाने दिया जा रहा है। पास-पडोस के सभी लोगो को क्लव लीडरो की गिरफ़्तारी और इस वात का पता चल गया है कि जर्मनो के नववर्ष के उपहर क्लव के तहखाने से वरामद हुए थे।

तुर्केनिच और नीना ने यह मत जाहिर किया कि छोकरो के पकड़े जाने का सिवा इसके और कोई कारण नही। वेशक घटना गम्भीर थी किन्तु इसका यह अर्थ न था कि सारे सघटन का दयनीय अन्त सन्निकट है।

"वे लोग हमारे साथ गद्दारी नही करेगे," तुर्केनिच उसी विश्वास के साथ वोला, जो उसके स्वभाव का अग वन गया था।

इसी समय ओलेग आ गया और विना कुछ कहे-सुने मेज के पास वैठ गया। उसके चेहरे की मुद्रा गम्भीर थी। उसने तुर्केनिच को अपनी नानी के कमरे मे वुलाया और उसे पोलीना गेओर्गियेव्ना का दिया हुआ पता थमा दिया। उन्होने थोडी-सी वातचीत की, फिर सेर्गेई और लडकियो

के पास लौट आये। सभी चुपचाप उनका इन्तजार कर रहे थे। सभी के मन आशा और दुख से भर गये थे। वे प्रश्नसूचक मुद्रा मे ओलेग की ओर टकटकी लगाये थे।

वोलते समय ओलेग के चेहरे पर कठोरता झलकने लगी।

"हमे समझ लेना च   चाहिए कि हमारे लिए सुरक्षा की कोई आशा नही," उनकी ओर सीधा और साहस के साथ देखते हुए उसने कहना शुरू किया। "भले ही इससे हमे कितनी ही चोट क्यो न पहुचे, भले ही यह हमारे लिए कितना ही कड़ुवा घूट क्यो न हो, हमे यह विचार तर्क कर देना चाहिए  कि हम यहा ल  . लाल सेना के आने तक ठहरे रहेगे, पीछे से उसकी म  . मदद करेगे, या वे काम ही कर सकेगे जिनकी योजना हमने कल के लिए वनायी है। वरना यह हमारी और हमारे लोगो की आखिरी घडी होगी।" वह मुश्किल से ही अपने को सभाल पा रहा था। सब के सव, मूक, उसकी वात सुनते रहे। उनके चेहरे कठोर पड गये थे और रग उड चुके थे। "पिछले कई महीनो से जर्मन हमारी तलाश मे है। वे जानते है कि हम जिन्दा है। अचानक ही उनका हाथ सीधा हमारे सगठन के केन्द्र पर पड गया है। अगर उन्हे इन उपहारो के अतिरिक्त कुछ मालूम न हो और आगे भी किसी वात का पता न चले," उसने जोर देकर कहा, "तो भी वे उन लोगो पर झपटेगे जिनका किसी न किसी रूप मे क्लव से सम्पर्क था। वे दर्जनो निरपराध लोगो को भी गिरफ्तार कर लेगे। तो किया क्या जाय?" उसने कुछ सोचा और वोला—"हमे जरूर चले जाना चाहिए। नगर से चले जाना चाहिए वेशक हम सवो को नही। क्रास्नोदोन वस्ती के लोगो को इस आघात से कोई खास चोट नही पहुची है। यही वात पेर्वोमाइका के साथियो के लिए कही जा सकती है। वे अपना काम चालू रख सकते है।" सहसा उसने ऊल्या पर एक गम्भीर दृष्टि डाली, "ऊल्या को छोडकर क्योकि हमारे

हेडक्वार्टर की सदस्या होने के नाते उसे किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता है। हमने अपनी लड़ाई इज्जत के साथ लडी है," वह कहता गया। "और हम इस भावना से एक दूसरे से अलग हो सकते है कि हमने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। हमे अपने तीन साथियो से हाथ धोना पडा, जिनमे हमारा सबसे अच्छा साथी, वान्या जेम्नुख़ोव भी शामिल था। किन्तु हमें, निराशा के आगे घुटने टेके बिना अपने रास्ते पर चलना चाहिए। हमसे जो भी हो सकता था वह हमने किया।"

उसने अपनी बात पूरी की। दूसरे लोग न कुछ कहना ही चाहते थे, न कहने के काबिल ही लग रहे थे।

उन्होने पाच महीनो तक एक दूसरे से कधे से कधा भिडाकर सामजस्य के साथ काम किया था। जर्मन शासन के अधीन पाच महीनो तक। इन महीनो का प्रत्येक दिन, शारीरिक और नैतिक अत्याचार से दबकर, सप्ताह के सामान्य दिवस की अपेक्षा कही अधिक भारी हो गया था। पाच लम्बे लम्बे महीने—वे कितनी जल्दी बीत गये थे। और इस बीच वे सब के सब खुद कितने बदल गये थे। इन पांच महीनो मे उन्होने अच्छे, बुरे का महान और वीभत्स का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सब के हितो के लिए तथा एक दूसरे के हित के लिए इन महीनों मे उन्होने कितने विलक्षण प्रयास किये थे, कितना कुछ सोचा, विचारा था। अब उन्हे पता चला था कि यह 'तरुण गार्ड' सघटन उनके लिए कितने महत्त्व की चीज़ है, कि वे उसके कितने ऋणी है। फिर भी, उन्हे इस संघटन से नाता तोड़ना पड़ रहा था।

वाल्या, नीना और ओल्या चुपचाप रो उठी। ऊल्या बाहर से शान्त लग रही थी, किन्तु उसकी आखो मे एक शक्तिशाली और भयंकर चमक थी। सेर्गेई का सिर मेज पर झुक गया और उसकी उंगली का नाखून मेजपोश पर कुछ रेखाए खीचने लगा। तुर्केनिच की स्वच्छ आखे सीधा

अपने सामने की ओर देखे जा रही थी—उसके सुन्दर ओठो के इर्द-गिर्द की रेखाए, जिनसे दृढता झलकती थी, गहरा गयी थी।

"कोई और सु-सुझाव?" ओलेग ने पूछा।

किसी को कोई सुझाव न देने थे। किन्तु तभी ऊल्या बोल उठी।

"इस समय मै अपने जाने की जरूरत नही समझती। पेर्वोमाइस्की वस्ती मे हमे क्लब से वहुत कम काम करना पडता था। मै यहा कुछ ठहरूगी, शायद कुछ और काम कर सकू यहा। मै सतर्क रहूगी।"

"तुम्हे ज़रूर चली जाना चाहिए," ओलेग ने कहा और उसपर फिर वड़ी गम्भीर निगाह डाली।

सेर्गेई बरावर चुप रहा था। अव वोला—

"उसे निश्चय ही जाना होगा!"

"मै सतर्क रहूंगी," ऊल्या ने एक बार फिर कहा।

उन्होने भारी दिल से, और एक दूसरे की आखे वचाते हुए, हेडक्वार्टर के तीन सदस्यो को छोड जाने का निश्चय किया—अनातोली पोपोव, सुम्स्कोई और यदि ऊल्या न जाय तो वह भी। यदि ल्यूवा लौट आये और यह पता चले कि वह ठहर सकती है तो वह चौथी होगी। उन्होने एक प्रस्ताव पास किया—हर शख्स जल्द से जल्द यहा से निकल जाय। ओलेग ने वताया कि वह और सदेशवाहिकाए तब तक रहेगी जव तक सव को आगाह नही कर दिया जाता और जव तक पोपोव और सुम्स्कोई से सम्पर्क स्थापित नही हो जाता। किन्तु 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर का कोई भी सदस्य और हेडक्वार्टर से निकट से सवंधित कोई भी व्यक्ति रात अपने घर पर न वितायेगा।

उन्होने जोरा, सेर्गेई लेवाशोव और स्त्योपा सफोनोव को वुलाया और उन्हे हेडक्वार्टर के निश्चयो की सूचना दी।

अव विदा लेने की वारी आयी। ऊल्या ने ओलेग को गले लगाया।

"ध-धन्यवाद," ओलेग बोला, "इस बात के लिए कि तुम मौजूद थी और अब भी मौजूद हो।"

ऊल्या उसके बाल सहलाने लगी।

किन्तु जब लडकिया ऊल्या से विदा होने लगी तो ओलेग का मन भारी हो गया और वह बाहर अहाते मे निकल आया। उसके पीछे पीछे सेर्गेई त्युलेनिन भी चला गया। दोनो १९४३ के पाले और चौंधिया देनेवाली धूप मे, बिना कोट पहने हुए बाहर जा खडे हुए।

"सब कुछ समझ लिया?" ओलेग ने धीरे-से पूछा।

सेर्गेई ने हामी भरी। "सब साफ है। तो स्तखोविच शायद कमजोर साबित हो। है न?"

"हा। पर इसका जिक्र करना ठीक न होगा। जब हम असलियत जानते ही नही, तो विश्वास न करना भी गलती ही होगी। शायद जर्मन उसपर अत्याचार कर रहे है और हम अब भी आजाद है।"

दोनो कुछ क्षणो तक मौन रहे।

"तुम कहा जाने की सोच रहे हो?"

"मोर्चा लाघकर जाने का प्रयत्न करूगा।"

"वही मै भी करना चाहता हू। चलो हम सब साथ चले।"

"अच्छी बात है। सिर्फ मेरे साथ नीना और ओल्या रहेगी।"

"मै समझता हू वाल्या भी हमारे ही साथ चलेगी," सेर्गेई बोला।

इस बीच सेर्गेई लेवाशोव, तुर्केनिच से विदा ले रहा था। उसके चेहरे पर झेप और उदासी का भाव था।

"ठहरो! तुम क्या सोच रहे हो?" उसके चेहरे की ओर घूरते हुए तुर्केनिच ने पूछा।

"मै कुछ समय यहां ठहरूगा," लेवाशोव ने दुखी होकर उत्तर दिया।

"ऐसा करना अक्लमदी न होगी," तुर्केनिच ने धीरे-से कहा,

"तुम उसकी सहायता या रक्षा न कर सकोगे। और इधर तुम उसकी प्रतीक्षा करोगे, उधर वे तुम्हे धर लेगे। वह होशियार लडकी है—या तो भाग निकलेगी, या उन्हे वेवकूफ बनायेगी।"

"मै नही जाऊगा," लेवाशोव ने कहा।

"तुम्हे लाल सेना से मिलने के लिए मोर्चा लाघकर जाना ही पड़ेगा।" तुर्केनिच की आवाज मे तीखापन झलक उठा। "अभी मुझे मेरे पद से नही हटाया गया है! मै तुम्हे हुक्म देता हू।"

लेवाशोव ने कोई उत्तर नही दिया।

"तो, साथी कमीसार, तुम मोर्चा पार करने जा रहे हो। यह निश्चित है न?" ओलेग के फिर कमरे मे आ जाने पर तुर्केनिच ने उससे पूछा। ओलेग ने उस पते का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया था जो उन दोनो को दिया गया था। इससे तुर्केनिच चिडचिडा उठा किन्तु वह जानता था कि ओलेग के निश्चय को वदलना सम्भव नही। जव उसने सुना कि ओलेग के दल मे पाच लोग रहेगे तो सिर हिलाता हुआ वोला—

"यह तो वहुत लोग हो गये। हमे तो लगता है जव तक हम यहा फिर एक वार मिलेगे तव तक हम सब के सव लाल सेना में होगे!"

दोनो ने हाथ मिलाये और गले लगने ही वाले थे कि सहसा तुर्केनिच एक ओर हटा, और अपने दोनो हाथ झुलाता हुआ मकान के वाहर निकल गया। सेर्गेई लेवाशोव ने ओलेग को गले लगाया और तुर्केनिच के पीछे चल दिया।

स्त्योपा सफोनोव के रिश्तेदार कामेस्क मे रहते थे। उसने उनके पास जाने और वही लाल सेना के आने तक इन्तजार करते रहने का निश्चय किया। जोरा के दिमाग मे एक सघर्ष चल रहा था जिसे वह किसी को भी वताने मे असमर्थ था। पर वह जानता था कि उसे ठहरना न चाहिए। शायद उसे नोवोचेर्कास्क मे अपने उसी चाचा के पास जाना

पडे, जिसके पास पिछले अवसर पर वह और वान्या जेम्नुखोव न पहुच सके थे। जब जोरा को वान्या के साथ अपने उस सफ़र की याद आयी तो उसकी आखो मे आसू छलछला आये और वह सडक पर निकल आया।

इसके बाद कुछ मिनटो तक पांचो कमरे मे बैठे रहे—ओलेग, सेर्गेई त्युलेनिन तथा सदेशवाहिकाए। उन्होने यह निश्चय किया कि अच्छा हो यदि सेर्गेई घर न जाय और ओल्या, वीत्या लुक्याचेको की मार्फ़त, उसके घर वालो को आगाह कर दे। इसके बाद वाल्या, नीना और ओल्या सबधित लोगो को अपने निश्चयो की सूचना देने के लिए कमरे से निकल गयी। इधर सेर्गेई ने अपना ओवरकोट पहना और निगरानी रखने बाहर चला गया। वह समझ गया कि ओलेग को कुछ देर के लिए अपने परिवार वालो के साथ बैठना जरूरी है।

ओलेग के घर वाले जेम्नुखोव तथा दूसरे लोगो की गिरफ़्तारी की बात जानते थे। उन्हे यह भी मालूम था कि खाने के कमरे और नानी के कमरे मे होनेवाली बैठक मे तरुण लोग इसी मामले पर विचार कर रहे है।

येलेना निकोलायेव्ना और मामा कोल्या ने घर मे रखी हुई बन्दूके, परचे और झडे बनाने का लाल कपड़ा पहले से ही छिपा या जला दिये थे। मामा कोल्या ने अपना रेडियो-सेट रसोईघर के फ़र्श के नीचे छिपा दिया था और उसके ऊपर मिट्टी हमवार कर के खट्टी बन्दगोभी का पीपा रख दिया था।

यह सब कर चुकने के बाद सारा परिवार मामा कोल्या के कमरे में एकत्र हुआ और हमेशा की तरह, मरीना के तीन साल के बेटे की चटर चटर सुनता रहा और खेल से मन बहलाता रहा था। किन्तु, सभी जैसे बदहवास थे और अभिशप्तो की भाति बैठक के परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे।

आखिरी साथी के बाहर चले जाने के बाद दरवाजा वन्द हुआ और ओलेग कमरे में दाखिल हुआ। सभी उसकी ओर मुखातिव हुए। इस समय उसके चेहरे पर मानसिक द्वन्द्व और सघर्ष के कोई चिह्न न थे, साथ ही वह वाल-सुलभ भाव भी न रह गया था, जो प्राय उसके मुह पर खेला करता था। हा चेहरे पर दुख की छाया जरूर मडरा रही थी।

"मा," वह वोला, "नानी, तुम, कोल्या, मरीना।" वच्चा भागता हुआ उसके पास पहुचा और खुशी से चीखता हुआ उसकी टागो से चिपट गया। ओलेग ने अपना हाथ वच्चे के सिर पर रख दिया। "मै तुम सब से विदा लेने आया हू। कुछ चीजे इकट्ठा करने मे मेरी मदद करो। इसके वाद हम कुछ क्षण साथ साथ बैठेंगे, जैसे उस रोज वैठे थे... बहुत दिन पहले।" और उसकी आखो मे और ओठो पर एक हल्की-सी मृदु मुस्कान विखर गयी।

सव लोग उसके इर्द-गिर्द खड़े हो गये ..

मा के हाथ हमेशा व्यस्त रहते है। उसके हाथ चहचहाती चिडियो की भाति नन्हे नन्हे कपडो पर दौड़ते है और तब जव उन्हे पहननेवाला अभी ससार मे प्रकट भी नही हुआ होता और मा के शरीर मे हिल-डुल रहा होता है। जब वच्चा पहली वार हवाखोरी के लिए भेजा जाता है, तब, जब पहली वार स्कूल जाता है, तव .. हा, तव भी यही हाथ उसे संवारते है। और तव भी जव वह पहली वार घर से बिछुडकर दूर देशों की यात्रा करता है, जिन्दगी भर के लिए विछुडता है, फिर मिलता है और इसी तरह विछुडने और मिलने का क्रम वरसो तक चलता रहता है। जव हृदय मे सुख नही समाता, जव वह दुख से फटने लगता है। ये हाथ व्यस्त रहते है, उस समय जव मा का लाडला मा के सामने होता है, या मा के दिल मे आशाए हिलोरती है, और तव भी जव वह उसे कब्र मे रखती है कब्र मे।

हरेक को कुछ न कुछ काम मिल ही गया था। मामा कोल्या को कागजात छाटने थे, डायरी को आग मे झोकना था। किसी ने उसका कोमसोमोल का कार्ड और सदस्यता के कुछ अस्थायी कार्ड उसकी जैकेट मे सी दिये।

उसे एक अतिरिक्त जांघिया, और वनियाइन साथ ले जानी थी— उनमे सिलाई की आवश्यकता थी। सभी जरूरी सामान उसके थैले मे भरा जा चुका था—खाना, साबुन, ब्रुश, सूई, काला-सफेद धागा। सेर्गेई त्युलेनिन के लिए भी कनपटियोवाली फर की एक पुरानी टोपी मिल गयी थी। सेर्गेई के साथ एक दूसरे थैले मे भी खाना रख दिया गया था—आखिर पाच लोग एक साथ जा रहे थे न।

पर पहले की तरह वे मिल-जुलकर कुछ मिनटो के लिए भी एक साथ न वैठ सके। सेर्गेई बरावर अन्दर-वाहर चक्कर लगाता रहा। फिर वाल्या, नीना और ओल्या आयी, रात पड़ चुकी थी। अब उन्हे विदा लेनी थी।

उस समय आंसू नही वहाये गये। नानी वेरा ने उनपर एक निगाह डाली, किसी का वटन टाका, किसी का थैला ठीक किया। फिर भावावेग मे उसने एक एक को गले लगाया। पर ओलेग को वह देर तक छाती से चिपकाये रही। उसकी नुकीली ठुड्डी ओलेग की टोपी से सटी थी।

ओलेग ने मा का हाथ पकड़ा और दोनो बगल वाले कमरे मे चले गये।

"मुझे माफ करना, मा," वह वोला।

ओलेग की मा दौड़कर अहाते मे आ गयी। पाला उसके चेहरे और पैरो मे तीर की तरह घुस रहा था। अब वह युवको को देख न पा रही थी। उसे तो वर्फ पर कटर कटर चलते उनके वूटो की आवाज भर सुन पडती थी। धीरे धीरे यह आवाज भी हल्की पड़कर विलीन हो गयी। पर वह वहुत समय तक अधेरे और ताराच्छादित आकाश के नीचे खडी रही।

भोर हो चुकी थी पर येलेना निकोलायेव्ना की आख न लगी थी। उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी। फिर जल्दी-से कपडे पहने और पूछने लगी – "कौन ?"

बाहर चार आदमी थे – पुलिस चीफ सोलिकोव्स्की, एन० सी० ओ० फेनबोग और दो सिपाही। आते ही उन्होने ओलेग के बारे मे पूछा। येलेना निकोलायेव्ना ने बताया कि वह खाने की कुछ चीजो का सौदा करने गाव मे गया है।

उन्होने मकान की तलाशी ली और वहा रहनेवाले सभी लोगो को गिरफ्तार कर लिया – नानी वेरा, मरीना और उसके नन्हे बेटे को भी। नानी को मुश्किल से इतना भर मौका मिल सका कि वह पडोसियो से यह कह पायी कि वे घर पर निगाह रखें।

जेल मे उन्हे अलग अलग कोठरियो मे रखा गया। मरीना और उसके नन्हे को उस कोठरी मे डाला गया जहा 'तरुण गार्ड' दल से असबद्ध बहुत-सी औरते भरी थी। उनमे मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स और सेर्गेई त्युलेनिन की बहन फेन्या भी थी, जो माता-पिता से अलग अपने निजी मकान मे बच्चो के साथ रहती थी। मरीना को उससे पता चला कि फेन्या की बूढी मां अलेक्सान्द्रा वसील्येव्ना और उसके बूढे बाप तक को, मय उसकी बैसाखी के, गिरफ्तार कर लिया गया है। सेर्गेई की बहने, नाद्या और दाशा, समय रहते निकल भागी थी।

## अध्याय २२

वान्या जेम्नुखोव को प्रभात के समय गिरफ्तार किया गया था। वह क्लावा से मिलने के लिए नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की जाना चाहता था और मुह-अधेरे ही उठ पडा था। उसने अपने साथ रोटी का एक टुकडा

कुलेशोव और एक सिपाही ने तुरन्त उसके हाथ पकड़े और कुलेशोव उसके ओवरकोट की और ओवरकोट के नीचे, पतलून की जेबो पर हाथ फेरने लगा। खिडकी की ऊपर वाली छोटी-सी ताकी खुली और वान्या की बहन बाहर देखने लगी। उसके चेहरे पर क्या भाव था, यह वान्या न देख सका।

"मा और पिता जी से कह देना मुझे थाने पर बुलाया है और वे मेरे लिए परेशान न हो। मुझे देर न लगेगी," वह बोला।

कुलेशोव हिनहिनाया, अपना सिर हिलाया और एक सशस्त्र सिपाही के साथ घर की ड्योढी तक चला गया। उन्हे तलाशी लेनी थी। जर्मन सर्जेंट और दूसरा सिपाही वान्या को लेकर, बाहर आ गये और सड़क पर चलते हुए मकानो की पक्ति के सामने से होकर जाने लगे। इस सडक पर बहुत कम लोग आते-जाते थे। सडक पर बरफ की चादर बिछी थी, केवल बीचोबीच लोगो के चलने से एक पगडण्डी-सी बन गयी थी। उसी पर वे चलते जा रहे थे। बर्फ पर लडखडाने से बचने के लिए सर्जेंट और सिपाही ने वान्या को छोड़ दिया और उसके ठीक पीछे पीछे चलने लगे।

सिपाहियों ने उसे एक छोटी-सी अधेरी कोठरी मे डाल दिया, जिस दशा मे था उसी दशा मे—शरीर पर ओवरकोट, सिर पर फर की टोपी और पैरो में घिसी हुई एडी वाले फटे हुए जूते। कोठरी की दीवालो पर पाला जम रहा था और फर्श लसलसा रहा था। दरवाजा खट से बन्द कर दिया गया और उसपर ताला चढा दिया गया। वह वहा बिलकुल अकेला था।

छत के नीचे की एक संकरी-सी दरार से प्रातकाल का प्रकाश कोठरी मे आने का प्रयास कर रहा था। कोठरी मे न कोई तख्ता था, न बेच। एक कोने मे रखी हुई एक बाल्टी मे से बदबू निकल रही थी।

वह अपनी गिरफ्तारी के कारणो की उधेड़-बुन मे पडा था – क्या उन्हे उसके कामो का पता चल गया है, या सिर्फ शक ही है, अथवा किसी ने गद्दारी की है। उसे बार बार क्लावा, अपने माता-पिता और साथियो का ख्याल आने लगा। फिर पूरी दृढता के साथ, जो उसके चरित्र की विशेषता थी, मानो मन ही मन कह रहा हो – "वान्या, शान्त रहो, स्थिर रहो," वान्या ने अपना सारा ध्यान एक ही बात पर केन्द्रित कर दिया जो इस समय उसके लिए महत्त्वपूर्ण थी – "इस समय धीरज रखो! देखो, आगे क्या होता है।"

वान्या के हाथ सरदी से जकडे जा रहे थे। उसने उन्हे अपने ओवरकोट की जेबो मे डाल लिया। और दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया। फर की टोपी पहने उसका सिर आगे की ओर झुका हुआ था। वह बडे धैर्य के साथ बडी देर तक खडा रहा। कितनी देर तक यह वह स्वय न जानता था, शायद कई घटे।

सारा वक्त गलियारे मे कभी एक आदमी के, कभी कई लोगो के, पैरो की आहट, बराबर सुनाई पडती रही। फिर कोठरियो के दरवाजे जोर से खुलने-मुदने की आवाजे आयी। दूर और पास से आती हुई बातचीत की ध्वनियां उसकी कोठरी मे प्रवेश करने लगी।

उसकी कोठरी के बाहर कई लोग आकर रुक गये और एक भारी-सी आवाज सुनाई पड़ी।

"इसी कोठरी मे? उसे मिस्टर के पास भेजो!"

एक आदमी आगे बढा और ताले में एक चाभी कुडमुडायी।

वान्या दीवाल से हटकर खड़ा हो गया और उसने घूमकर देखा। एक जर्मन सिपाही भीतर आया। यह वह आदमी नही था जिसके पहरे मे वान्या यहां आया था। उसके हाथ मे एक चाभी थी और शायद वह इस गलियारे मे कोठरियो का पहरा दे रहा था। उसके साथ एक

पुलिस का सिपाही भी था जिसके चेहरे से वान्या परिचित था। सभी पुलिस वालो के चेहरो को याद रखना वान्या और उसके साथियो का एक काम था। वह वान्या को मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ्तर के प्रतीक्षा-कक्ष मे ले गया। वहां वान्या ने उन लडको मे से एक लड़के को देखा जिसे उसने और उसके साथियो ने सिगरेटे बेचने बाजार भेजा था। एक पुलिस वाला अकेले उसी पर पहरा दे रहा था।

वह लडका गन्दा और दुबला-पतला-सा लग रहा था। उसने वान्या को क्षण भर देखा, फिर कन्धे झटके, नाक बजायी और मुह फेर लिया।

वान्या को कुछ राहत मिली। फिर भी उसे सभी बातो से इनकार करना होगा। अगर वह यह मान भी लेगा कि उसने अपनी आमदनी मे कुछ वृद्धि करने के लिए जर्मनो के नये वर्ष के उपहार चुराये थे तो उसे अपने साथियो के नाम बताने का हुक्म दिया जायेगा। नही, यह सोचना बेकार है कि यह घटना उसके लिए अनुकूल सिद्ध होगी।

मिस्टर ब्रूक्नेर के दफ्तर से एक जर्मन क्लर्क बाहर आया और एक ओर खड़े होकर दरवाजा खोल दिया।

"चलो, चलो, अन्दर चलो," पुलिस वाला जल्दी जल्दी बोला और वान्या को दरवाजे की ओर ढकेला। पुलिस वाले के चेहरे पर भय की छाप थी। दूसरे सिपाही ने उस लडके की गरदन पकडी और उसे भी दरवाजे की ओर ढकेला। दोनो प्राय एक ही समय दफ्तर मे दाखिल हुए। उनके पीछे दरवाजा बन्द हो गया। वान्या ने अपनी टोपी उतार ली।

दफ्तर मे कई लोग थे। वान्या ने मिस्टर ब्रूक्नेर को पहचान लिया जो मेज़ के पीछे कुर्सी पर टेक लगाये बैठा था। उसकी गर्दन की मोटी मोटी परते उसकी वर्दी के कालर पर गिर रही थी। उसकी गोल और उल्लू जैसी आखे सीधे वान्या पर लगी थी।

"आगे बढो! इस वक्त कैसे सीधे दिख रहे हो," खरखराहट जैसी आवाज मे, मानो गले में कुछ फस गया हो, सोलिकोव्स्की बोला। वह मिस्टर की मेज के एक ओर खडा था। उसकी बडी-सी मुट्ठी में घोडे का चाबुक था।

परीक्षण-जज कुलेशोव सोलिकोव्स्की के ठीक सामने खडा था। अपनी लम्बी-सी बाह आगे बढाकर, उसने उस लड़के की कोहनी पकड़ी और झटके से उसे मेज के पास खीच लिया।

"यही है वह आदमी?" कुलेशोव ने दात दिखाते हुए पूछा और वान्या की ओर इशारा करके आख मिचकायी।

"हा," उस लडके ने एक सास मे कहा, फिर नाक बजायी और जमीन पर जड-वत् खडा हो गया।

कुलेशोव ने खुश होकर पहले मिस्टर की ओर फिर सोलिकोव्स्की की ओर देखा। मेज के पीछे दुभाषिया सिर नीचा किये, बड़ी विनम्रता के साथ मिस्टर को जर्मन भाषा मे कुछ समझा रहा था। वान्या ने शूर्का रैबन्द को भी पहचाना। क्रास्नोदोन मे रहनेवाले दूसरे लोगो ही की तरह वान्या उसे भी अच्छी तरह जानता था।

"सुन लिया?" सोलिकोव्स्की ने आखे सिकोडते हुए वान्या की ओर घूरकर देखा। उसकी आखे उसकी गालो की हड्डियो से छिप-सी गयी थी और पहाड की चोटी के ऊपर झांकती-सी लग रही थी। "हर मिस्टर को बताओ कि तुम्हारे साथ कौन काम कर रहा था। जल्दी करो।"

"आप किस बारे मे बाते कर रहे है मै नही जानता," वान्या अपनी धीर-गम्भीर आवाज मे बोला और आखे सीधी सोलिकोव्स्की के चेहरे पर गडा दी।

"तुम देखते हो न?" सोलिकोव्स्की कुलेशोव की ओर घूमा।

क्रोध से उसका चेहरा तमतमा रहा था। "सोवियत राज्य में इन्हे यही शिक्षा मिली!"

जेम्नुखोव का उत्तर सुनकर वह लडका घबराकर उसकी ओर देखने लगा और ऐसे सिकुड गया मानो सर्दी से बचना चाहता हो।

"तुम्हे शर्म नही आती? इस लडके का तो कुछ ख्याल करना चाहिए! वह कष्ट झेल रहा है तुम्हारी वजह से," कुलेशोव ने थोडी भर्त्सना करते हुए कहा, "जरा इधर देखो—इसे तुम क्या कहोगे?"

वान्या कुलेशोव की दृष्टि की दिशा मे देखने लगा। दीवाल के सहारे उपहारो का एक खुला हुआ बोरा पडा था—उसकी कुछ चीजे फर्श पर भी बिखरी पडी थी।

"इस सबसे मुझे क्या लेना-देना, मै नही समझ पाया। मैने इस लडके को पहले कभी नही देखा," वान्या बोला। प्रतिक्षण वह अधिकाधिक शान्त और स्थिर महसूस कर रहा था।

मिस्टर ब्रूक्नेर ने दुभाषिये शूर्का रैवन्द की मार्फत वान्या के सभी उत्तर सुन-समझ लिय थे और इन सब से प्रत्यक्षत उकता गया था। उसने रैवन्द पर एक सरसरी निगाह डाली और कुछ बुदबुदाया। कुलेशोव, बडे अदब से, चुप हो गया। सोलिकोव्स्की सीधा तनकर खडा हो गया। उसके हाथ पतलून की सीवन के साथ लगे हुए थे।

"हर मिस्टर चाहते है कि तुम उन्हे बताओ कि तुमने कितनी बार लारियो को लूटा है, और किस लिए। तुम्हारी मदद किसने की, और इसके अलावा तुम और क्या क्या करते रहे—वह सब कुछ जानना चाहते है," शूर्का ने, वान्या से आखे चुराते हुए, रुखाई से कहा।

"मै लारियो को कैसे लूट सकता हू? मै तुमको वहा खडे हुए तो देख नही सकता। तुम यह अच्छी तरह जानते हो!" वान्या बोला।

"हर मिस्टर के सवाल का जवाब दो!"

किन्तु हर मिस्टर मामले की तह तक पहुंच चुका था। उसने उगलियां दिखाते हुए कहा—

"फेनवोग के पास!"

पलक मारते सभी कुछ वदल गया। सोलिकोव्स्की की वडी वडी मुट्ठियो ने वान्या का कालर पकडा, उसे वहशियाना ढंग से झंझोडते हुए प्रतीक्षा-कक्ष मे लाया, फिर उसे घुमाते हुए अपने सामने किया, फिर उसके दोनो गालो पर कसकर हटर जमाये। वान्या के चेहरे पर लाल वरते पड गयी। एक चोट तो उसकी वाई आख के कोने पर पड़ी, जिससे वह तेजी से वन्द होती जा रही थी। जो पुलिस वाला उसे लाया था उसने उसका कालर पकड़ा और सोलिकोव्स्की के ही साथ उसे गलियारे में खीचने और लतियाने लगा।

एन० सी० ओ० फ़ेनवोग और एस० एस० के दो आदमी उसी कमरे मे जमे था जहा वान्या को वसीटकर लाया गया। उनके चेहरे थके हुए थे और वे सिगरेट पी रहे थे।

"वदमाश, अगर तू मुझे तुरन्त यह नही वताता कि तेरे साथ दूसरे कौन कौन लोग थे तो . " सोलिकोव्स्की चीखा। वह वड़े भयानक ढग से फूकार रहा था। उसके वड़े-से हाथ के फौलादी पजे वान्या का चेहरा नोच रहे थे।

सिपाहियो ने सिगरेट खत्म की, बूटो से सिगरेट के टुकडे मसल दिये और फिर जैसे सधे हुए हाथो से वान्या का ओवरकोट और उसके वाकी कपडे उतारने लगे। फिर वे, उसे नंगा कर उसे खून से सने तख्त पर घसीट ले गये।

फेनवोग के लाल लाल और वालदार हाथ ने मेज पर से विजली के तारोवाले दो हंटर उठाये, एक सोलिकोव्स्की को थमाया और दूसरा, रवानी देखने के लिए हवा मे आजमाया। अव दोनो वारी वारी से

वान्या पर हंटर बरसाने लगे, साथ ही प्रत्येक चोट के बाद वे हंटर को उसके शरीर पर से खीचकर हटाते। दोनो सिपाही कसकर उसके पैर और सिर पकड़े हुए थे। खून तो पहले ही प्रहार मे बहने लगा था।

जैसे ही वान्या पर हंटर बरसने शुरू हुए थे कि उसने एक भी प्रश्न का उत्तर न देने और एक भी आह न निकालने की जैसे कसम खा ली।

और सचमुच वह सारा वक्त चुप रहा। कभी कभी दोनो जल्लाद दम लेने के लिए रुक जाते और सोलिकोव्स्की पूछता—

"अभी होश ठिकाने नही आया?" वान्या न कोई जवाब ही देता, न सिर ही उठाता, और हंटरबाजी फिर शुरू हो जाती।

इसी तख्त पर कोई आधा घंटा पहले मोश्कोव को भी इसी तरह पीटा गया था। वान्या की तरह मोश्कोव ने भी उपहारो की चोरी मे भाग लेने से साफ इनकार कर दिया था।

स्तखोविच का मकान नगर से दूर के इलाके मे था। उसे बाद में गिरफ्तार किया गया।

अपने ढंग के अन्य युवको की तरह, जिनके जीवन की चालक शक्ति स्वाभिमान होता है, स्तखोविच कम-ज्यादा स्थिर भी बना रह सकता था और वीरता के बड़े बडे काम भी कर सकता था, बशर्ते कि उसे लोगों की, और खासकर अपने हल्के के लोगो की, अथवा अपने ऊपर नैतिक प्रभाव डालनेवाले लोगो की प्रशंसा मिलती रहे। पर अकेले रहने पर, जब उसे खतरे या कठिनाई का सामना करना पडता तो वह निरा बुज़दिल साबित होता था।

जैसे ही उसे गिरफ्तार किया गया कि उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। किन्तु उसमे कोई न कोई ऐसी बात सोच लेने की अद्भुत् सूझ थी कि वह अपनी स्थिति को सुगम बनाने के लिए, मिनटो मे, दसियो क्या सैकडों नैतिक औचित्य सोच सकता था।

जिस समय उसका सामना सिगरेट बेचनेवाले लड़के से हुआ कि उसने तुरन्त समझ लिया कि नये वर्ष के उपहार ही वे प्रमाण थे जो उसके और उसके साथियो के खिलाफ़ रखे जा सकते थे। उसका अनुमान था कि उसके साथी भी गिरफ्तार होने से न बचे होगे। एक ही क्षण मे उसने सारे मामले को एक साधारण अपराध का रूप देने और साफ साफ यह स्वीकार कर लेने का निश्चय कर लिया था कि इस चोरी मे तीन आदमी शरीक थे, कि वह अपनी गरीबी और भूख का रोना रोयेगा, और यह कहेगा कि अब से वह ईमानदारी से काम करके अपने पापो का प्रायश्चित करेगा। और सचमुच जिस सच्चाई के साथ उसने मिस्टर ब्रूक्नेर और दूसरे जर्मनो के सामने ये बाते कही उससे उन्हे फौरन पता चल गया कि उनका सामना कैसे आदमी से पडा है। उन्होने उसे दफ्तर ही मे पटका और उसके साथियो का नाम जानना चाहा। उनका कहना था कि शाम का वक्त उन तीनो ने क्लब मे बिताया इसलिए वे स्वय, कैसे लारी लूट सकते थे।

उसके भाग्य से मिस्टर ब्रूक्नेर और वाह्टमिस्टर बाल्डेर के दोपहर के खाने का वक्त हो गया। अतएव उसे शाम तक के लिए शान्ति से रहने दिया गया।

शाम के समय पहले तो लोगो ने उसके साथ नरमी का बरताव किया और वादा किया कि जैसे ही वह अपने उन साथियो के नाम बता देगा जिन्होने उपहारो की चोरी मे भाग लिया था, वैसे ही वे उसे छोड देगे। उसने फिर वही बात दुहरायी—चोरी मैने और मेरे दो साथियो ने की है। फिर उसे फेनबोग के सुपुर्द किया गया और उसकी तब तक मरम्मत हुई जब तक उसने त्युलेनिन का नाम न बता दिया। इसके बाद उसने बताया कि अधेरे के कारण वह दूसरे लोगो के चेहरे न पहचान सका था।

वह नीच न जानता था कि त्युलेनिन का नाम लेकर उसने अपने को और भी मुसीवत मे डाल लिया था, और उसे अब और भी जुल्मो का सामना करना पड़ेगा, क्योकि वह जिन लोगो के हाथ मे था वे जानते थे कि जब उसने कमजोरी दिखायी ही है तो वे उससे कबुलवा कर ही छोड़ेगे।

उन्होने उसे बुरी तरह मारा, फिर उसपर पानी उड़ेला और फिर मारा। और सुबह होने के पहले पहले, उसकी मर्दानगी खत्म हो गयी और उसने उनसे दया की भीख मागी। कहने लगा कि वह इस सारी यातना का पात्र न था, कि वह दूसरो के हाथ की कठपुतली ही बना रहा, दूसरो ने उसे चोरी करने का हुक्म दिया था अत खबर उनकी ली जानी चाहिए। और इस प्रकार उसने 'तरुण गार्ड' के हेडक्वार्टर के सभी सदस्यो और सदेशवाहिकाओ के साथ गद्दारी की और उनके नाम बता दिये। न जाने क्यो अकेले उल्याना ग्रोमोवा का ही नाम उसने न लिया। शायद पल भर के लिए उसे उसकी खूबसूरत काली काली आखे याद आ गयी थी, इसी लिए यह नाम उसके मुह पर न आया।

इसी काल मे किसी दिन ल्यादस्काया को भी क्रास्नोदोन की खनिज बस्ती से सशस्त्र पुलिस-कार्यालय लाया गया, जहा उसका सामना वीरिकोवा से हो गया। दोनो ही अपने अपने दुर्भाग्य के लिए एक दूसरे को दोष देने लगी। दोनो ही वाल्डेर और कुलेशोव के सामने एक दूसरे पर दोपारोपण करती हुई कुजडिनो की तरह लड रही थी और एक दूसरी के भेद बता रही थी। वाल्डेर सारा वक्त गभीर बना बैठा रहा, पर कुलेशोव की बाछे खिल रही थी।

"अरी चुडैल! तू ही तो थी आस्तीन की साप। तू ही तो पायोनियरो की लीडर थी।" ल्यादस्काया खौखियाई। उत्तेजना से उसका चेहरा इतना लाल हो गया था कि उसके दाग तक न दिखाई दे रहे थे।

"... तुम! सारा पेर्वोमाइका जानता है कि तुम ओसोविअखिम* के लिए चन्दा मांगा करती थी," मुट्ठिया भींचती हुई वीरिकोवा गुर्रायी। उसकी चोटिया भी इस जवानी लडाई मे भाग ले रही थी।

वे तो हाथापाई पर भी उतर आती किन्तु उन्हे छुड़ा दिया गया और दिन भर के लिए हिरासत मे रखा गया। फिर उन्हे वाह्‌टमिस्टर बाल्डेर के सामने एक एक कर लाया गया। कुलेशोव पहले वीरिकोवा से निपटा (और बाद मे वैसे ही ल्याद्‌स्काया से)। उसने उसका हाथ पकडा और फुकारकर बोला—"बहुत भोली बनने की कोशिश मत करो। सघटन के सदस्यो के नाम बताओ।"

पहले वीरिकोवा, और बाद मे ल्याद्‌स्काया, फूट फूटकर रोयी और कसमे खा खाकर बोली कि संघटन की सदस्या होने की बात तो दूर हम तो जिन्दगी भर बोल्‌शेविको से वैसे ही नफरत करती रही जैसी वे हमसे करते थे। उन्होने पेर्वोमाइका और क्रास्नोदोन खनिक बस्ती मे रहनेवाले सभी कोमसोमोल-मेम्बरो और सक्रिय काम करनेवाले तरुणो के नाम गिना डाले। बेशक वे जिस स्कूल मे पढती थी वहा की अपनी सभी सहेलियो को जानती थीं। कौन किस विचार की थी और किसने कौन-सा सामाजिक कार्य किया था—यह सब भी वे जानती थी। दोनो ने कोई बीस बीस नाम बताये। और इस प्रकार, 'तरुण गार्ड' दल से सम्बंधित तरुणो की सूची काफी बडी हो गयी।

वाह्‌टमिस्टर बाल्डेर ने भयानक ढग से आखे नचाते हुए, दोनो से साफ साफ कह दिया कि वह उनके सघटन मे न होने की बात नही मानता। वस्तुत उन्हे भी वैसी ही सख्त सजा मिलनी चाहिए जैसी कि उन अपराधियो को मिलेगी जिनके नाम उन्होने लिये है। पर उसने कहा,

---

*हवाई और रसायन प्रतिरक्षा का स्वय सेवी समाज

"मुझे तुम्हारे लिए अफसोस है। हा, बचने का एक रास्ता जरूर है . "

वीरिकोवा और ल्याद्स्काया को जेल से एक साथ ही छोडा गया। यद्यपि दोनो मे से किसी को भी कुछ मालूम न था, फिर भी अपनी अपनी जगह वे यह समझ रही थी कि दूसरी वहा से निर्दोष नही जा रही है। प्रत्येक को तेईस मार्क माहवार का वेतन बांध दिया गया था। बिछुडते समय उन्होंने एक दूसरे के साथ उपेक्षा से हाथ मिलाये, मानो उनके बीच कुछ हुआ ही न हो।

"सस्ते छूटे," वीरिकोवा बोली, "किसी समय आओ न"।

"हां सस्ते छूटे। मिलूगी तुमसे," ल्याद्स्काया ने उत्तर दिया।

फिर दोनो अपने अपने रास्ते हो ली।

## अध्याय २३

जिस ढंग से गिरफ्तारियां की गयी थी उसमे विचित्र क्रमबद्धता थी। इन गिरफ्तारियो की खबर नगर भर मे दावाग्नि की तरह फैल गयी थी। पहले 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर के उन सदस्यो के माता-पिताओ को गिरफ्तार किया गया था, जो शहर छोडकर भाग चुके थे। फिर अरुत्युन्यान्त्स, सफोनोव और लेवाशोव के माता-पिताओ को गिरफ्तार किया गया, अर्थात् उन युवको के माता-पिताओ को जो हेडक्वार्टर के निकट सम्पर्क मे रहते थे और नगर छोडकर जा चुके थे।

फिर सहसा तोस्या माश्चेको और 'तरुण गार्ड' दल के अन्य साधारण सदस्य गिरफ्तार किये गये। पर खास तौर पर इन लोगो को ही क्यो पकडा गया, और दूसरे लोगो को क्यो नही पकडा गया?

जो लोग अभी तक आजाद थे उन्हे यह अनुमान तक न हुआ था कि जिस क्रम से गिरफ्तारिया हो रही थी—कभी कम, कभी ज्यादा—

उनके पीछे स्तखोविच की गद्दारी है। वात थी कि जैसे ही वह किसी एक आदमी का नाम वताता कि वे उसे कुछ सुस्ताने का मौका देते, और फिर उसपर अत्याचार करने लगते, और वह फिर कुछ नाम वता देता।

मोश्कोव, जेम्नुखोव और स्तखोविच को गिरफ्तार हुए कई दिन वीत चुके थे, फिर भी ल्यूतिकोव और वराकोव के नेतृत्व मे काम करनेवाले खुफिया सघटन का एक भी आदमी गिरफ्तार न हुआ था। केन्द्रीय वर्कशॉप मे सारा काम वही पुराने ढग से होता रहा।

वोलोद्या ओस्मूखिन ने नये साल के पहले तीन दिन गाव मे अपने वावा के साथ विताये थे। चार जनवरी को वह वापस काम पर आया था। पिछली रात को घर आते ही उसकी मा ने उसे गिरफ्तारियो के वारे मे वताया और यह सूचना दी थी कि 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर ने आदेश दिया है कि वह फौरन नगर छोडकर निकल जाय। उसने जाने से इनकार कर दिया।

"कोई भी दोस्त गद्दारी नही करेगा," उसने मां को समझाया। अव मा से कोई वात छिपानी वेकार थी।

वोलोद्या क्यो नही जाना चाहता था इसके अनेक कारण थे। उसे अपनी मां और वहन को अकेले छोडने मे दुख हो रहा था, खासकर यह याद करके कि उन्हे उसी की वीमारी के कारण अन्यत्र न जाकर यही रह जाना पड़ा था। किन्तु खास कारण यह था कि ओलेग के घर मे होनेवाली वैठक मे उपस्थित न होने के कारण वोलोद्या न सिर्फ अपने सिर पर मडराते हुए खतरे को ही न देख पा रहा था वल्कि अपने दिल मे यह भी समझ रहा था कि हेडक्वार्टर के सदस्यो ने अपने निर्णयों मे जल्दवाजी की थी। जो तीन छोकरे गिरफ्तार हुए थे वे वोलोद्या के गहरे दोस्त थे और वोलोद्या को उनपर पूरा विश्वास था। वह वहादुर था इसी

लिए उनके दिमाग मे उन्हे छुडाने के लिए तरह तरह की योजनाए चल रही थी। प्रत्येक योजना पिछली से अधिक काल्पनिक होती।

वोलोद्या ने कारखाने मे कदम रखा ही था कि किसी बहाने ल्यूतिकोव ने उसे अपने दफ्तर में बुलाया।

ओस्मूखिन परिवार के साथ उसकी पुरानी दोस्ती थी। वह दूसरे किसी भी तरुण व्यक्ति की अपेक्षा वोलोद्या को अधिक जानता था, उसे बहुत चाहता था। बूढे के न केवल तर्क और विवेक ने ही बल्कि उसके दिल तक ने उसे यह बता दिया था कि उसके इस तरुण मित्र और शिष्य पर कितना जबरदस्त खतरा मडरा रहा है। उसने वोलोद्या को सुझाव दिया कि वह तुरन्त ही नगर छोडकर चला जाय। वह इतना कठोर और निष्ठुर हो रहा था कि वोलोद्या की बात न सुनना चाहता था। वह उसे सलाह नही, हुक्म दे रहा था।

पर, इस समय तक काफी देर हो चुकी थी। इसके पहले कि वोलोद्या सोचे कि वह कब और कहा जाय, उसे उसी के कारखाने मे, उसकी अपनी बेंच पर, गिरफ्तार कर लिया गया।

स्तखोविच पर जोर-जुल्म करनेवाले उससे केवल 'तरुण गार्ड' के सदस्यो के नाम ही नही कबुलवा रहे थे, वे कोई ऐसा सूत्र भी जान लेना चाहते थे जिससे उन्हे नगर मे काम करनेवाले खुफिया कम्युनिस्ट सघटन का पता चल जाय। अनेको तथ्यो, और स्वय अपनी सूझ-बूझ से भी, जर्मन पुलिस के सीनियर और जूनियर अफसरो को यह अनुमान हो रहा था कि तरुण लोग प्रौढो के नेतृत्व मे काम कर रहे थे और इसी लिए क्रास्नोदोन साजिश का केन्द्र था—बोल्शेविक खुफिया सघटन।

किन्तु स्तखोविच को सचमुच यह पता न था कि ओलेग किस प्रकार जिला पार्टी कमिटी से सम्पर्क स्थापित किये हुए था। वह सिर्फ यही कह सकता था कि इस प्रकार का सम्पर्क था जरूर। जब उन्होने

उससे यह जानना चाहा कि कोशेवोई परिवार में कौन कौन-से प्रौढ लोग आते जाते थे तो बहुत सोच-विचारने के बाद आख़िर उसे सोकोलोवा का नाम सूझा। यह ठीक था कि उसने वहा दूसरो की अपेक्षा पोलीना गेओर्गियेव्ना को अधिकतर आते जाते देखा था, शुरू शुरू के उन दिनों मे ही नही जब वह 'तरुण गार्ड' हेडक्वार्टर का सदस्य था, किन्तु बाद मे भी जब वह सघटन से सबधित मामलो को लेकर ओलेग से मिलने आता था। उस समय उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना के आने-जाने से यह न समझा था कि उसका 'तरुण गार्ड' दल से कोई संबंध भी होगा। पर इस समय उसे याद आ रहा था कि ओलेग उसके साथ प्रायः एक कोने में जाकर फुसफुसाया करता था। इसी लिए उसने पोलीना गेओर्गियेव्ना का नाम ले दिया।

सोकोलोवा की गिरफ्तारी से प्रायः शान्त रहस्यपूर्ण और चुप रहनेवाले ल्यूतिकोव का भी सीधा सूत्र मिल गया। मिस्टर ब्रूक्नेर ने यह देखकर, कि कैदी मोश्कोव और ओस्मूखिन, ल्यूतिकोव की मातहती में, एक ही मशीन-शाप मे काम करते थे, इतना जरूर समझ लिया था कि यह बात सयोग मात्र नही है। उन्होंने ल्यूतिकोव के सारे पिछले जीवन के व्योरो की जाच की और कारख़ाने मे होनेवाली पिछली सभी टूट-फूटो की असली परिस्थितियो पर गौर किया।

५ जनवरी को सुबह पोलीना गेओर्गियेव्ना हमेशा की तरह ल्यूतिकोव को दूध देने गयी और लौटते समय अपनी ब्लाउज़ मे एक परचा छिपाकर लेती आयी। परचा 'तरुण गार्ड' के नाम से स्वय ल्यूतिकोव ने लिखा था। परचे मे तरुणो की गिरफ्तारी के बारे मे एक शब्द भी न कहा गया था। परचे द्वारा ल्यूतिकोव यह दिखाना चाहता था कि दुश्मन निशाना चूक गया है और 'तरुण गार्ड' अब भी जिन्दा और सक्रिय है।

जब वह शाम को काम पर से घर लौटा, तो उसकी पत्नी और

बेटी, राया, रसोईघर मे पेलगेया इल्यीनिच्ना के साथ बैठी थी। वे वस्तुत. फार्म से जहा वे रहती थी उसे मिलने नगर मे आयी थी। यह ल्यूतिकोव के लिए कितनी प्रसन्नता की बात थी। उसन काम वाले कपड़े उतारे, धुली हुई सफेद कमीज पहनी, भूरी धारी वाली नीले रग की टाई लगायी और सबसे अच्छा सूट डाट लिया, जिसे पेलगेया इल्यीनिच्ना ने उसके लिए धोकर साफ किया था। इस प्रकार छुट्टी के कपडे पहनकर इस शान्त, स्थिर और विनम्र स्वभाव वाले व्यक्ति ने यह शाम अपने सबसे प्रिय जनो के मध्य बितायी और उनसे इस प्रकार हसी-मज़ाक करता रहा मानो कुछ हुआ ही न हो।

क्या फिलीप्प पेत्रोविच को पता था कि उसके सिर पर घोर विपत्ति मडरा रही है? नही, और न उसे पता चल ही सकता था। किन्तु इसकी सम्भावना उसे बराबर बनी रहती थी, वह हमेशा उसका सामना करने को तैयार रहता था और पिछले कुछ दिनो से तो वह यह भी समझ रहा था कि यह खतरा बढ गया है।

श्वैदे अब बार बार बराकोव की कटु आलोचना करने लगा था। एक बार तो आपे से बाहर होकर वह उसपर तोड-फोड का दोप लगाने लगा। यही श्वैदे पहले बहुत कम बोला करता था। इस बात की क्या गारंटी थी कि अनजाने मे ही उसे हमारा सुराग नही मिलने लग गया?

कुछ दिन पहले कोयले की चार गाडिया अनाज के एवज मे कोयले का सौदा करने के बहाने पड़ोस के गावो मे भेजी गयी थी। केन्द्रीय कारखाने की जमीनो से कोयले का हटाया जाना ही 'नयी व्यवस्था' का अभूतपूर्व उल्लघन था। किन्तु ल्यूतिकोव और बराकोव के आगे और कोई रास्ता न था, फिर उन्हे और अधिक प्रतीक्षा करने का अधिकार भी न था। कोयले के नीचे बन्दूके छिपाकर भेजी गयी थी। ये बन्दूके क्रास्नोदोन के छापामार दल के लिए थी। इस दल को

मित्याकिन्स्काया दस्ते के साथ मिलकर काम करना था। और इस बात की भी क्या गारटी हो सकती थी कि उस जोखम भरी कार्रवाही की ओर किसी का ध्यान ही न गया हो?

दुश्मन 'तरुण गार्ड' दल के, एक के वाद एक, कई सदस्यों को गिरफ्तार कर चुका था। कौन जाने कि छिपे हुए सूत्र ने एक ही झटके में सघटन के सभी दलो को मुसीवत मे झोक दिया हो।

वूढा फिलीप्प पेत्रोविच स्थिति जानता था, समझता था। किन्तु उसके लिए पीछे हटने का कोई कारण अथवा कोई सम्भावना न थी। वस्तुत. उसकी महान आत्मा वहा न थी, वह तो नदियो और स्तेपी, वर्फ और हिम को पार करती हुई मुक्ति की विशाल सेना के साथ मार्च कर रही थी। और भले ही वह अपनी पत्नी और वेटी के साथ किसी भी विपय पर कोई भी वात क्यो न करता रहा हो, वह घूम-फिरकर एक ही विपय पर आ जाता था—सोवियत सेनाओ ने कितना जवरदस्त हमला किया है। वह केवल कल्पनाओ के आधार पर ही अपना स्थान कैसे छोड़ सकता था और ऐसे समय, जब उसे अपनी पूरी ताकत से काम लेना था! कुछ ही हफ्तो के भीतर शायद कुछ ही दिनो मे, वह अन्तत अपना झूठा वाना उतारकर जनता के सामने अपने असली रूप मे आयेगा और हा, अगर उसके भाग्य मे उस दिन का सुख देखना वदा ही नही है तो, उसके बिना भी, उसके काम को पूरा करने के लिए दूसरे लोग मौजूद है। वराकोव के दफ्तर मे हुई उस स्मरणीय वातचीत के बाद से एक दूसरी अर्थात् 'रिजर्व' जिला पार्टी कमिटी का निर्माण हुआ था जिसके पास सम्प्रति सभी गुप्त पते और सम्पर्क-ठिकाने थे।

फिलीप्प पेत्रोविच अपने छुट्टी के कपडे पहने वडा खुश और अपने स्वभाव से कुछ अधिक विनम्र और वातूनी मूड मे बैठा था। उसकी वटी, आखो म हसी वटोरे, अपने पिता को देख रही थी। किन्तु उसकी

पत्नी येव्दोकीया फेदोतोव्ना ने तो उसके साथ जिन्दगी का सफर किया था। वह उसके मूड के छोटे-से छोटे परिवर्तन तक को समझती थी। वह अब तब उसपर एक पैनी और चिन्तित-सी दृष्टि डालती मानो कह रही हो—"यह भडकीली पोशाक, ये मीठी मीठी बाते—मुझे ये सब कुछ अच्छा नही लगता।"

उसकी पत्नी पेलगेया इल्यीनिच्ना से बात करने रसोईघर मे गयी ही थी कि फिलीप्प पेत्रोविच को कुछ क्षणो का मौका मिला और उसने अपनी बेटी से 'तरुण गार्ड' दल की गिरफ्तारियो के बारे मे बताया। राया सिर्फ तेरह बरस की ही थी। उसने 'तरुण गार्ड' दल के अस्तित्व की कहानियां सुनी थी। उसे अपने पिता के कामो का भी थोडा थोडा पता था। वह उनकी मदद करने के सपने भी देखती थी, किन्तु उसे उसके बारे मे कुछ कहने का साहस न होता था।

"सुन रही हो, यहा ज्यादा मत ठहरो! मै तुम लोगो को यहा रात में नहीं रहने दूगा। तुम यहा से सीधे स्तेपी मे चली जाओ। अधेरे मे तुम्हे कोई न देख सकेगा," आवाज धीमी करता हुआ फिलीप्प पेत्रोविच बोला, "मा से कहना यही ठीक होगा। उसके सामने लम्बी-चौडी व्याख्या नही की जा सकती। तुम तो खुद ही सब कुछ समझती हो न," उसने जैसे मजाक मे मुस्कराते हुए कहा।

"तो तुम खतरे मे हो?" राया ने पूछा और उसका चेहरा उतर गया।

"कोई ठीक नही। हम जैसे लोग हमेशा खतरे मे रहते है। फिर मै तो उसका आदी हो चुका हू। मैने तो अपनी जिन्दगी ऐसे कामो मे लगा दी। मै चाहता हू तुम भी वैसी ही बनो," वह धीरे-से बोला।

लडकी सोच मे पड गयी, फिर अपनी पतली पतली बाहे उसके गले मे डालकर अपना चेहरा उसके चेहरे से सटा दिया। मा आयी और

उन्हे साश्चर्य देखने लगी। ल्यूतिकोव हंसी-मजाक करते हुए, उन्हे वहा से रवाना करने की कोशिश करने लगा। जब से जर्मन आये थे, तब से उन दोनो ने एक दूसरे को भी काफी देखा समझा था। जब कभी ल्यूतिकोव के कार्यो मे घरेलू मामले बाधक बनते तो वह कर्कश हो उठता था और येव्दोकीया फेदोतोव्ना इन सबकी आदी हो चुकी थी। और चूकि वह यह नही जानती थी कि वह गलती पर है या ठीक काम कर रहा है, वह चुप हो जाती हालाकि इससे कभी कभी उसे क्लेश होता था।

अब उसे लग रहा था मानो वह, अपने सामने खडे हुए अपने पति को नयी दृष्टि से देख रही है। उसकी साफ और इस्त्री की हुई जैकेट उसके शरीर पर खूब फबती थी। सहसा उसने पति का मुह चूम लिया—पति ने अभी अभी तो हजामत बनायी थी, फिर भी उसके मुह पर ठूठ गड रहे थे। उसने कही उसकी टाई के पास उसे चूमा और फिर सिर उसकी छाती से सटा दिया। ल्यूतिकोव के भारी जबड़ो मे हल्का-सा कपन हुआ, उसने धीरे-से उसे एक ओर हटाया और हसी-मजाक करने लगा। उसकी बेटी की आखो मे आसू आ गये। वह एक ओर हटी और मा की आस्तीन खीचने लगी।

उस रात पोलीना गेओर्गियेव्ना को गिरफ्तार किया गया। ल्यूतिकोव और बराकोव को अगले दिन यानी छ जनवरी को, उनके कार्यस्थल पर गिरफ्तार किया गया। और भी कई दर्जन लोग कारखाने मे पकडे गये। जैसी कि ल्यूतिकोव ने पहले ही से भविष्यवाणी कर दी थी, दुश्मन के लिए साक्ष्य का कोई महत्त्व न रह गया था—गिरफ्तार हुए बहुत-से लोगो का सघटन से कोई भी सबध न था।

जिस समय वोलोद्या को ले जाया गया उस समय भी 'घर्घरक' तोल्या को गिरफ्तार न किया गया था। बाद मे कारखाने मे इतने बडे पैमाने पर गिरफ्तारिया हुई, फिर भी उसे नही पकडा गया। वह सारे दिन

भौंचक्का-सा वना रहा और जैसे ही काम से छूटा कि सीधे ओस्मूखिन के घर पहुचा। उन्हे पहले से ही यह खवर सुनने को मिल गयी थी।

"अभी तक तुम यहा कर क्या रहे हो? दुश्मन तुम्हे कही का न छोडेगे। भागो यहा से, जल्दी करो!" ममता और निराशा की भावना से भरकर येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना वोल उठी।

"मै नही जाऊगा," तोल्या ने धीरे-से कहा, "मै क्यो जाऊ?" उसने अपनी टोपी झुलाते हुए कहा।

नही, जव तक वोलोद्या जेल मे है सम्भवत वह नही जा सकता।

उन्होने तोल्या को रात मे रह जाने को कहा, पहले तो वह मान गया लेकिन फिर निकल भागा और सीधा वीत्या लुक्याचेको के पास जा पहुचा। वह अपने साथियो को जेल से छुडाने के लिए कुछ न कुछ किये जाने के सवध मे वातचीत करना चाहता था। जिस समय वह गया, अधेरा हो चुका था। हमेशा की तरह वह पुलिस की गश्ती चौकियो से दूर, चक्कर काटकर गया। उसे वोलोद्या, जेम्नुखोव, मोश्कोव, जोरा अरुत्युन्यान्त्स तथा दूसरे साथियो के अभाव मे अपने ही नगर मे कितना अकेलापन महसूस हो रहा था। उसके मस्तिष्क मे निराशा और प्रतिकार की भावनाए भर गयी थी।

दूसरे दिन सुवह ओस्मूखिन परिवार के दरवाजे पर भी जोरो की खटखट हुई। येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने स्वभावानुसार, विना किसी डर के, और विना यह पूछे कि कौन है, दरवाजा खोल दिया। वह तो तोल्या ओर्लोव को देखते ही भौचक्की-सी रह गयी। वह इतना थका-मादा, सर्दी से इतना जकडा हुआ था और उसकी आखे इतनी जल-सी रही थी कि उसे पहचानना तक प्राय असम्भव हो रहा था।

"इसे पढो," एक गुडा-मुडा कागज येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूस्या को थमाते हुए वह वोला।

वह बडा उत्तेजित हो रहा था और जैसे ही उन्होंने वह कागज़ पढना शुरू किया कि वह बोला—

"अब मैं तुम्हे सारी सच्ची बात बता सकता हू और मुझे बताना भी है। यह कागज़ एक सिपाही ने वीत्या को दिया था। जिस समय इस सिपाही के घाव भर रहे थे, वीत्या ने उसके छिपने का ठिकाना ढूढकर कभी उसकी मदद की थी। मैं और वीत्या सारी रात इन कागज़ो को नगर भर मे चिपकाते रहे। यह जिला पार्टी कमिटी का निर्देश है। पिछली रात दर्जनो लोगो ने उन्हे जगह जगह चिपकाया है। इस समय तक सारे शहर, सारे फार्म और गावो के लोग इसे पढ़ रहे होगे।" ये शब्द तोल्या के मुह से झरते से चले जा रहे थे, क्योंकि हर समय तोल्या को यही लग रहा था कि उसने उन्हे सबसे जरूरी बात अभी तक नही बतायी।

किन्तु येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्यूस्या उसकी बातो पर कोई ध्यान न देकर परचा पढने मे लगी थी।

"क्रास्नोदोन के नागरिको! खनिज श्रमिको, सामूहिक किसानो, दफ्तर के कर्मचारियो! सोवियत लोगो! भाइयो और बहनो!

"शक्तिशाली लाल सेना ने दुश्मन को मसलकर रख दिया है। दुश्मन भाग रहा है। वह अपने नपुसक एव पाशविक क्रोध मे निरीह, निरपराध लोगो पर झपट रहा है। उनपर अमानुषिक अत्याचार कर रहा है। ये राक्षस इस बात का ध्यान रखे कि हम अभी तक यही मौजूद है! उन्हे सोवियत खून की एक एक बूद की कीमत अपनी नापाक ज़िन्दगी से चुकानी पडेगी। हमारे प्रतिकार के डर से दुश्मन के कलेजे हिल जायेगे। दुश्मन पर कोई दया मत दिखाओ, जहा पाओ उसका सफाया करो! खून का बदला खून! मौत का बदला मौत!

"हमारी सेना आ रही है! हमारी सेना आ रही है! वह रास्ते मे है!

"सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की क्रास्नोदोन खुफिया जिला कमिटी (बोल्शेविक)।"

## अध्याय २४

गिरफ्तारिया शुरु होने के बाद कुछ रातो तक ऊल्या घर से बाहर रहती रही। किन्तु, जसी ओलेग ने भविष्यवाणी की थी, इन गिरफ्तारियो से न तो पेर्वोमाइका पर ही कोई प्रभाव पड़ा था, न क्रास्नोदोन की खनिक बस्ती पर ही। इसी लिए ऊल्या घर लौट आयी।

इतनी रातो तक घर से बाहर रहकर, ऊल्या एक बार फिर अपने ही बिस्तर पर जगी। उसकी इच्छा हुई कि वह अपने दिमाग से उन सारे विचारो को निकाल फेके जो उसे भीतर ही भीतर घोट रहे थे। अतएव वह पूरे उत्साह के साथ घरेलू कामो मे जुट गयी—उसने फर्श साफ किया, नाश्ता तैयार किया। उसकी मा, उसकी उपस्थिति से फूली न समा रही थी। वह अपने बिस्तर से उठी और नाश्ते के लिए मेज पर बैठ गयी। उसके पिता चिडचिडे हो उठे थे, पर चुप थे। इन दिनो ऊल्या प्राय गायब रहती थी। हा कभी कभी दो एक घटे के लिए अपने माता-पिता से मिलने-जुलने अथवा कुछ लेने आ जाया करती। उसकी अनुपस्थिति मे मत्वेई मक्सीमोविच और मत्र्योना सवेल्येव्ना सिवा गिरफ्तारियो के और किसी विषय पर प्राय कोई बात न करते। किन्तु ऐसी बाते करते समय उन्हे एक दूसरे से आखे मिलाने की हिम्मत न होती।

नाश्ते के समय ऊल्या ने कुछ इधर-उधर की बाते करने का प्रयत्न किया और उसकी मा ने अटपटे ढग से उसकी हा मे हा मिलायी, किन्तु

ये बाते कुछ इतनी बनावटी-सी लग रही थीं कि दोनो चुप हो गयी। ऊल्या विचारो मे खो चुकी थी। उसे मेज साफ करने और बर्तन धोने तक की भी याद न रही। उसके पिता अपना काम करने लगे।

ऊल्या, सफेद बुन्दियोवाला अपना प्रिय नीले रग का हाउस-कोट पहने खिड़की के पास खडी हो गयी। उसकी पीठ अपनी मा की तरफ थी। उसकी भारी, लहराती हुई चोटिया उसकी पीठ से होकर उसकी सुडौल कमर तक आ गयी थी। चमचमाती हुई धूप खिडकी से होकर कमरे मे प्रवेश कर रही थी। खिडकी पर पडी बर्फ पिघल रही थी और लडकी के घुघराले बाल चमक रहे थे।

ऊल्या खिडकी पर खडी हुई बाहर स्तेपी की ओर देख रही थी और धीरे धीरे गीत गा रही थी। जर्मनो के आने के बाद से एक बार भी उसके मुह से गाना नही फूटा था। उसकी मा बिस्तर पर बैठी कुछ रफू कर रही थी। उसे अपनी बेटी का गाना सुनकर इतना आश्चर्य हुआ कि उसने अपना काम एक तरफ रख दिया। बेटी अपनी मीठी गहरी आवाज मे कोई ऐसी चीज गा रही थी, जिससे वह बिलकुल अपरिचित थी।

> जूझे तुम स्वदेश के हित औ' तुम्हे वीर-गति मिली—
> यश कि तुम्हारा अजर-अमर है, अविनश्वर है।

उसकी मा ने ये बोल कभी न सुने थे। उसकी बेटी के गाने मे करुणा और उदासी की झलक थी—

> प्रतिशोधी उठ रहा कि ममता नही जानता—
> शक्तिवान है वह तुमसे भी औ' मुझसे भी।

ऊल्या ने गाना बन्द कर दिया और स्तेपी की ओर ताकती हुई खिड़की के पास खडी रही।

"तुम क्या गा रही थी?" उसकी मां ने पूछा।

"बस, जो मुह मे आया गाने लगी मुझे इस गीत के बोल याद थे और गाने लगी," बिना घूमे हुए ऊल्या ने उत्तर दिया।

दरवाज़ा खुला और हाफते हुए ऊल्या की बडी बहन कमरे में आ गयी। वह ऊल्या से गठीली थी। लाल लाल गाल। खूबसूरत चेहरा। वह अपने पिता पर पड़ी थी, पर उस समय उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

"जर्मन सिपाही पोपोव के यहा आ धमके है!" उसने इतने फुसफुसाते हुए कहा कि कही उसकी आवाज पोपोव के घर न सुनाई पड जाय।

ऊल्या घूम पडी।

"सचमुच? और इन्ही लोगो से अलग रहना बेहतर है," ऊल्या ने स्थिरता से कहा। उसके चेहरे पर किसी भी तरह का परिवर्तन नही आया। वह दरवाज़े के पास गयी, धीरे-से कोट पहना और शाल से अपने बाल ढक लिये। किन्तु उसने ड्योढी की सीढियो की ओर आते हुए भारी भारी बूटो की आवाज पहले ही सुन ली थी। वह कुछ कदम पीछे हटकर उस फूलदार परदे से सटी जिसके पीछे परिवार भर के कोट टंगे थे और दरवाजे की ओर घूम पड़ी।

उसकी मां अपनी बेटी की उस समय की शक्ल-सूरत जिन्दगी भर न भूली—फूलदार परदे की पृष्ठभूमि मे तीखे नाक-नक्श वह खड़ी थी—कापते हुए नथुन, अधमुदी लम्बी लम्बी बरौनिया जो मानो उसकी आखो की जलती हुई लपटे बुझाने की कोशिश कर रही हो, सफेद शाल, जो वह बांध न पायी थी और जो ढीला-ढाला उसके कन्धो पर पडा था।

पुलिस-चीफ सोलिकोव्स्की, एन० सी० ओ० फेनबोग तथा एक सिपाही ने कमरे मे प्रवेश किया। सिपाही के हाथ मे बन्दूक थी।

"वह रही नन्ही-सी मासूम!" मोलिकोव्स्की चीख पड़ा, "तुम्हे देर हो गयी है, मेरी नन्ही", उसके सुगठित शरीर को घूरता हुआ वह बोला। ऊल्या अभी तक उसी कोट मे थी। उसके सिर पर वैसा ही ढीला-ढाला शाल पडा था।

"दया करो, हमपर दया करो . " मा गिडगिडायी और पलग से उठने का प्रयत्न करने लगी। ऊल्या ने मा को क्रोधपूर्ण नजरो से देखा। मा की जबान रुक गयी और वह आगे कुछ भी न कह सकी। उसका जबड़ा कांपने लगा।

तलाशी शुरू हो गयी। ऊल्या का पिता दरवाजे की ओर बढ़ा किन्तु सैनिक ने उसे भीतर न आने दिया।

उसी समय अनातोली के मकान मे भी तलाशी हो रही थी। तलाशी लेनेवाला था—परीक्षण-जज कुलेशोव।

अनातोली के सिर पर टोपी न थी, उसके बटन खुले थे और वह कमरे के बीचोबीच खडा था। एक जर्मन सिपाही उसकी पीठ पीछे उसके हाथ पकडे हुए था। एक पुलिसमैन ताईस्या प्रोकोफ्येव्ना की ओर बढा और चिल्लाकर बोला—

"तुमने सुना नही मैने क्या कहा! रस्सा लाओ!"

लम्बे कद की ताईस्या प्रोकोफ़्येव्ना का मुह क्रोध से तमतमा उठा। वह सिपाही पर खौखिया पडी।

"तुम्हारा दिमाग तो नही फिर गया? मै तुम्हे रस्सा दू कि तुम मेरे ही बेटे को बाधो, ऐ!"

"इसकी बकवास बन्द करने के लिए इसे रस्सा दे दो, मां," अनातोली बोला। उसके नथुने फैल गये थे। "ये बेचारे छ. तो आदमी है। अगर मुझे बाधा न गया तो ये मुझे सभाल कैसे पायेगे?"

ताईस्या प्रोकोफ्येव्ना के आसू निकल पडे, वह गलियारे मे से

एक रस्सा उठा लायी और उसे अपने वेटे के पैरो के पास फर्श पर पटक दिया।

ऊल्या को उस कोठरी मे डाल दिया गया था, जिसमे मरीना और उसका नन्हा वेटा, मरीया अन्द्रेयेव्ना वोर्त्स और त्युलेनिन की वहन फेन्या तथा 'तरुण गार्ड' दल की एक सदस्या थी, जो स्तखोविच के पाच के दल मे काम करती थी। वह पीले रग की, फूले हुए गालो और उभरे वक्ष वाली लडकी थी। उसका नाम था—आन्ना सोपोवा। उसकी इस बुरी तरह से मरम्मत की गयी थी कि वेचारी लेट तक न सकती थी। उस कोठरी से वाकी सभी कैदी हटा दिये गये थे। और दिन के समय वहा पेर्वोमाइका की लड़किया भर दी गयी थी जिनमे माया पेग्लिवानोवा, साशा वोन्दरेवा, शूरा दुव्रोविना, वहने लील्या और तोन्या इवानीखिना—आदि भी थी।

इस कोठरी मे न वेचे थी, न तख्त। औरते तथा लडकिया या तो खडी रहती थी या फर्श पर वैठती थी। कोठरी मे इतने लोग भरे थे कि वहा का तापमान पानी जमने के तापमान से अधिक हो गया था और छत से वरावर पानी की वूदे चू रही थी।

पास की कोठरी भी काफी वडी थी। वह शायद लडको के लिए रिजर्व कर दी गयी थी। वरावर नये नये लोग आते जा रहे थे। ऊल्या ने सकेत भाषा मे खटखट की—"उधर कौन है?" और उसे तुरन्त उत्तर मिला—"कौन यह वात जानना चाहता है?" ऊल्या ने अपना नाम वताया। उसे अनातोली का उत्तर मिला। पेर्वोमाइका के वहुत-से छोकरे पास के कमरे मे थे—वीक्तोर पेत्रोव, वोर्या ग्लवान, रगोजिन, जेन्या शेपेल्योव और वास्या वोन्दरेव जिसे उसी काल मे गिरफ्तार किया गया था जव उसकी वहन साशा को किया गया था। चूकि यह घटना अनिवार्य थी, अतएव लडकियो को एक यही सन्तोष था कि पेर्वोमाइका के लड़के उनके नजदीक ही है।

"मुझे मार-पिटाई से बेहद डर लगता है," तोन्या इवानीग्निना न स्वीकार किया। वह लम्बी टागो और बच्चो की सी सूरत-शक्ल वाली लडकी थी। वह खडी खडी उन लडकियो को देखे जा रही थी जो दीवाल के सहारे फर्श पर बैठी थी। "बेशक मुझे मार भी डालेगे तो भी मै उन्हे कुछ नही बताऊगी, पर मुझे बेहद डर लग रहा है।"

"डरने की कोई जरूरत नही। हमारी सेनाए दूर नही है और शायद अब भी यहा से निकल भागने का मौका हाथ लग जाय," साशा बोन्दरेवा बोली।

"तुम लडकियो के साथ एक मुसीबत तो यह है कि तुम द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का एक अक्षर नही जानती " सहसा माया ने कहना शुरु किया और भले ही मन ही मन सभी लडकिया दुखी थी फिर भी सभी ठहाका मारकर हस पडी। क्योकि ऐसी बात यहा जेल मे बडी अजीब लग रही थी। पर माया जरा भी न चिचकी, "बेशक ऐसी कोई पीडा नही जिसका आदमी अभ्यस्त न हो सकता हो!"

शाम होते होते कोठरी मे सन्नाटा छा गया। छत से, तार के सहारे एक छोटी-सी जालीदार बत्ती लटक रही थी जिससे थोडा-सा प्रकाश झरता था। कोठरी के कोने फिर भी अधकार मे पडते थे। किसी किसी वक्त दूर से किसी आदमी की ऊची, कडी आवाज सुनाई देती। वह जर्मन भाषा मे कोई आदेश दे रहा होता। जवाब मे कोठरी के बाहर भागते कदमो की आवाज आती। कभी कभी कई पैर खटपटाते हुए हथियारो की लय पर गलियारे मे कदम-ब-कदम आगे-पीछे बढ रहे थे। सहसा उनके कानो मे पशु जैसी एक भयकर चीख सुनाई पडी और वे उछल पडी—सचमुच कोई आदमी बुरी तरह चीख पडा था। आदमी की चीख होने के कारण वह और भी भयानक लग रही थी।

ऊल्या ने दीवाल खटखटाकर सकेत भाषा मे पूछा—

"यह ग्रावाज तुम्हारी कोठरी की थी?"

और उत्तर मिला—

"नही। वडो की " प्रौढ खुफिया कार्यकर्त्ताग्रो के लिए वे इसी गुप्त नाम का प्रयोग करते थे।

फिर वगल वाली कोठरी से किसी को ले जाया गया। लडकिया यह ग्रावाज सुन सकती थी। तुरन्त खटखट सुनाई दी—

"ऊल्या . . ऊल्या "

ऊल्या ने जवाव दिया।

"यह वीक्तोर वोल रहा है . वे तोल्या को ले गये है "

ऊल्या की कल्पना के समक्ष ग्रनातोली का चेहरा घूम गया और उसकी वे ग्राखे भी जो हमेगा गम्भीर रहने के साथ ही साथ सहसा चमक उठती थी और गक्ति का प्रदर्शन करने लगती थी। यह सोचकर कि ग्रव उसे किस मुसीवत का सामना करना पडेगा, वह सिर से पैर तक काप उठी। पर, तभी ताले मे एक चाभी घूमी, कोठरी का दरवाजा खुला और एक थकी-सी ग्रावाज सुनाई दी—

"ग्रोमोवा! "

उसके मस्तिष्क मे वाद की घटनाग्रो की केवल यही स्मृति रह गयी थी।

कुछ समय तक उसे सोलिकोव्स्की के प्रतीक्षालय मे खडा रखा गया। दफ्तर मे किसी की पिटाई हो रही थी। प्रतीक्षालय के सोफे पर वैठी हुई सोलिकोव्स्की की पत्नी ग्रपने पति की प्रतीक्षा करती हुई जम्भाइया ले रही थी। उसके लहरदार वाल सन के रग के थे। उसकी गोद मे एक वडल था और पास मे एक नन्ही-सी लड़की थी जिसकी ग्राखे उनीदी थी, जिसके वाल ग्रपनी मा जैसे थे और वह सेब का मुरव्वे वाला समोसा खा रही थी। दरवाजा खुला और वान्या जेम्नुखोव को वाहर निकाला

गया। उसका चेहरा इतना मूजा हुआ था कि पहचाना तक न जा रहा था। गुजरते समय वह ऊल्या से टकराते टकराते वचा। ऊल्या तो चीखते रह गयी।

इसके वाद वह स्वय मिस्टर ब्रूक्नेर के ठीक सामने सोलिकोव्स्की के साथ खडी थी। सिस्टर ब्रूक्नेर ने उससे एक प्रश्न पूछा। और उसका तटस्थ रुख देखकर कहा जा सकता था कि वह प्रश्न वह पहली वार नही पूछ रहा है। शूर्का रैवन्द वही खडा था। लडाई पूर्व के दिनो मे शूर्का रैवन्द के साथ वह क्लव मे नाची थी और शूर्का ने उसपर डोरे डालने का भी प्रयत्न किया था, पर इस समय वह भी ऐसा वन गया था मानो उसे जानता ही न हो। उसने सवाल का सीधा सीधा रूसी मे अनुवाद कर दिया। किन्तु शूर्का ने क्या कहा यह ऊल्या ने न सुना क्योकि अपनी गिरफ्तारी से पहले उसने निश्चय कर लिया था कि अगर उसे गिरफ्तार किया गया तो वह एक ही वात कहेगी। उसने चेहरे पर रुखाई का भाव लाते हुए कहा –

"मै तुम्हारे एक भी सवाल का जवाव न दूगी, क्योकि मैं तुम्हारे इस अधिकार को नही मानती कि तुम मेरा फैसला करो। मेरे साथ तुम जो कार्रवाई करना चाहो कर सकते हो, पर मेरे मुह से दूसरा शव्द तुम न सुन सकोगे।"

पिछले कुछ दिनो मे मिस्टर ब्रूक्नेर को सम्भवत इस प्रकार के वाक्य कई वार सुनने को मिले थे। उसे क्रोध नही आया, पर उगलिया चटकाता हुआ वोला –

"इसे फेनवोग के हवाले करो।"

वेशक जुल्म की पीडा भयानक थी। हर तरह की पीडा किस प्रकार कैसे सहन करनी चाहिए यह वह जानती थी। उसे तो यह भी याद न रही कि उसे कव पटका गया था। नही, सवसे वुरी वात उस समय हुई

जब वे उसके कपडे नोचने के लिए झपटे और उनके हाथों में पडने से बचने के लिए उसे उन्ही के सामने कपडे उतारने पडे।

जब उसे वापस कोठरी मे ले जाया जा रहा था तो अनातोली पोपोव को भी, उसी के पास से होकर, घसीटकर ले जाया गया। उसका सुनहरे बालोवाला सिर पीछे लटका था, उसके हाथ फर्श पर घसिट रहे थे, उसके मुह के एक कोने से खून बह रहा था।

फिर भी, ऊल्या को याद आयी कि कोठरी मे जाते समय उसे अपनी अनुभूतियो पर नियत्रण करना होगा और सम्भवत. वह इसमे सफल भी हुई। वह कोठरी मे घुसी और पुलिस वाला चिल्ला उठा—

"अन्तोनीना इवानीखिना! ."

ऊल्या दरवाजे पर तोन्या के पास से होकर गुजर गयी। तोन्या की भयग्रस्त आखे एक क्षण के लिए उसपर टिकी और ऊल्या के पीछे दरवाजा बन्द हो गया! ठीक उसी समय जेल मे एक बच्चे की चीख़ गूज गयी। यह तोन्या की नही, एक नन्ही बच्ची की आवाज थी।

"ले गये वे मेरी नन्ही बच्ची को," मरीया अन्द्रेयेव्ना बोर्त्स चीख़ उठी और शेरनी की भाति दरवाजे तक दौडी और उसे पटपटा पटपटाकर चिल्लाने लगी—"ल्यूस्या! वे तुम्हे ले गये है, मेरी बेटी! उसे छोड़ दो, उसे छोड दो!"

मरीना का नन्हा बच्चा जग पडा और रोने लगा।

## अध्याय २५

इस बीच ल्यूबा वोरोशीलोवग्राद मे, फिर कामेंस्क और रोवेन्की मे और एक अवसर पर मील्लेरोवो मे भी रही। मील्लेरोवो के इर्द-गिर्द तो दुश्मन घेरा डाले हुए था। शत्रु अफसरो के बीच उसकी जान-पहचान का

दायरा भी काफी वढ गया था। उसकी जेबे सदा विस्कुट, मिठाइयो श्रौर चाकलेटो से भरी रहती थी। ये चीजे उसे इन अफसरो से मिलती थी और वह उन्हे सभी मिलनेवालो मे वाटती रहती थी।

वडी निडरता और लापरवाही से वह जैसे तलवार की धार पर चल रही थी। उसके अधरो पर एक निष्कपट मुस्कराहट खेलती रहती और उसकी आखे, जिनमे कभी कभी निर्दयता भी झलक उटती थीं, सिकुडी-सी रहती थी।

वोरोशीलोवग्राद मे अन्तिम वार रुकने के समय उसने एक वार फिर उस व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित किया जो उसका सवसे निकटस्थ चीफ था। चीफ ने उसे वताया कि जर्मन नगर के लोगो के साथ ज्यादा पाशविक व्यवहार कर रहे है। चीफ प्राय प्रतिदिन ही अपने रहने की जगह वदलता रहता था। नीद की कमी के कारण उसकी आखे सुर्ख रहती थी। दाढी वढी हुई, कपडे गन्दे। फिर भी मोर्चे से आनेवाली खवरो के कारण वह वडा उत्साहित रहता था। सवसे निकट क्षेत्र मे जर्मन रिजर्व, कितनी सख्या मे है, उनकी सप्लाई-लाइनो की स्थिति कैसी है, कौन कौन-से जर्मन यूनिट छावनी डाले हुए है—मतलव यह कि उसे वहुत-सी वातो के वारे मे सूचना एकत्र करने की आवश्यकता थी।

ल्यूवा को एक बार फिर क्वार्टरमास्टर कर्नल के साथ सम्पर्क स्थापित करना पडा। और एक मौके पर तो ऐसा लगा कि वह उनके वीच से निर्वाध निकल भी न सकेगी। क्वार्टरमास्टर का सारा का सारा विभाग और उसका चीफ—पिलपिले और लटके हुए गालोवाला कर्नल वोरोशीलोवग्राद छोडकर भागे जा रहे थे। फलत सभी अफसरों के हसी-मजाक मे भी एक तरह की उद्दण्डता आ गयी थी। पियक्कड कर्नल शराव के हर जाम के वाद अधिकाधिक निश्चेष्ट होता जा रहा था।

ल्यूवा इसी लिए वहा से वचकर निकल सकी कि वहा वहुत-से लोग

थे। वे उसे लेकर एक दूसरे से झगडने लगते थे। अन्तत वह उस मकान मे फिर आ गयी जहा गोल-मटोल, फूले हुए गालोवाली लडकी रहती थी। ल्यूबा अपने साथ लेफ्टिनेंट द्वारा भेंट मे दिया गया बढिया जैम का डिब्बा भी लेती आयी थी—लेफ्टिनेंट अब भी ल्यूबा को पा जाने की आशा लगाये बैठा था।

ल्यूबा ने कपडे उतारे और सर्द और ऊची छत वाले कमरे मे बिस्तर पर लेट रही। सहसा कोई सामने वाला दरवाजा गुस्से से खटखटाने लगा। ल्यूबा ने सिर उठाया। उसके बगल वाले कमरे मे लडकी और उसकी मा के चलने-फिरने की आवाज़े आ रही थी। दरवाजे पर बराबर घूसे पड़ रहे थे मानो कोई उसे तोड़ देना चाहता हो। ल्यूबा ने कम्बल उतार फेके, अपनी चोली और लम्बे मोजो के ऊपर—सर्दी के कारण वह यह दोनो चीजे पहने ही लेट गयी थी—अपनी ड्रेस डाली और पैरो मे जूते पहन लिये। कमरे मे घुप अधेरा था। हाल मे से मकान मालिकिन की डरी हुई आवाज सुनाई पड रही थी। वह पूछ रही थी—"कौन है?" कई रुखी-सी आवाजे उसका उत्तर दे रही थी। जर्मन आ गये थे। ल्यूबा ने समझ लिया था कि नशे मे धुत्त अफसर उससे मिलने आये होगे और उसकी सुध-बुध जाती रही।

इससे पहले कि वह यह सोचे कि उसे क्या करना चाहिए, भारी और मोटे तले वाले बूटो की आहट उसके दरवाजे तक पहुच गयी। तीन आदमियो ने कमरे मे प्रवेश किया। उनमे से एक उसपर टार्च की रोशनी फेक रहा था।

"Licht!"* कोई चिल्लाया और ल्यूबा ने लेफ्टिनेंट की आवाज पहचान ली।

---

* रोशनी

के मुताविक शहर मे गिरफ्तारियां चल रही थी। उसकी दशा उस जानवर की सी हो गयी थी जिसपर वरावर जुल्म होते रहे हो। उसे तभी थोडा आराम दिया जाता जव वह अपने किसी न किसी साथी का नाम वता देता। पर, प्रत्येक गद्दारी के साथ उसपर होनेवाले जुल्मो की सम्भावना वढती ही जाती, कम होने को न आती। कभी उसे कोवल्योव और पिरोज्होक की सारी कहानी याद आती, फिर उसे यह याद आता कि त्युलेनिन का एक दोस्त था—वेशक वह उसका नाम न जानता था, हा उसका हुलिया जरूर वता सकता था और यह भी उसको याद था कि उसका घर शाघाई मुहल्ले मे है।

तभी सहसा स्तखोविच को याद आया कि ओस्मूखिन का भी एक मित्र हुआ करता था—तोल्या ओर्लोव। इसके कुछ ही समय वाद वोलोद्या के सामने—जिसपर वेहद जुल्म किये जा चुके थे—वाह्टमिस्टर वाल्डेर के दफ्तर मे 'घर्घरक' तोल्या को लाकर खड़ा किया गया।

"नही मैंने इसे पहले कभी नही देखा," तोल्या धीरे-से वोला।

"नही, मै इसे विलकुल नही जानता," वोलोद्या वोला।

स्तखोविच को याद आया कि जेम्नुखोव की प्रेमिका नीज्नी अलेक्सान्द्रोव्स्की मे रहती है, और एक ही दो दिन वाद जेम्नुखोव और क्लावा, मिस्टर व्रूक्नेर के सामने, एक दूसरे के आमने-सामने खडे हुए। जेम्नुखोव को पहचानना मुश्किल हो रहा था। क्लावा की आखे टेढी हो रही थी। करीव करीव फुसफुसाहट की आवाज मे क्लावा वोली—

"नही हम एक ही स्कूल मे पढते जरूर थे। पर लडाई शुरू होने के वाद से मैंने उसे कभी नही देखा। मै तो देहात मे रहती रही हू।

जेम्नुखोव कुछ न वोला।

क्रास्नोदोन खनिक वस्ती के सारे के सारे दल को स्थानीय जेल मे रखा गया था। उनके साथ गद्दारी की थी ल्यादस्काया ने, पर वह स्वय

न जानती थी कि संघटन मे कौन सदस्य क्या काम करता था। पर वह यह जानती थी कि लीदा ग्रन्द्रोसोवा, कोल्या सुम्स्कोई को प्यार करती थी।

लीदा ग्रन्द्रोसोवा एक खूवसूरत लडकी थी, ठुड्डी नुकीली ग्रौर ग्राकृति लोमड़ी के वच्चे जैसी। उसे इसलिए बन्दूक के पट्टो से पीटा गया था कि वह सघटन मे सुम्स्कोई के कामो के वारे मे सभी कुछ वता दे। जव उसपर मार पडती तो वह जोर जोर से कोडो की गिनती गिनने लगती, किन्तु उसने कुछ भी वताने से साफ इनकार कर दिया।

प्रौढो को तरुणो से ग्रलग रखा गया था ताकि वे तरुणो पर कोई प्रभाव न डाल सके ग्रौर इस वात की सख्त निगरानी रहती थी कि उनके वीच किसी प्रकार का सम्पर्क स्थापित न हो सके।

किन्तु हद तो जल्लादो के जुल्मो की भी होती है। ग्रनुभव की ग्राग मे तपकर निकले हुए वोल्शेविको ग्रथवा गिरफ्तार 'तरुण गार्ड' के सदस्यो ने न तो ग्रपने साथियो के साथ गद्दारी ही की ग्रौर न यही माना कि वे सघटन के सदस्य है। कोई सौ लडके-लडकियो की यह दृढता – इन्हे वच्चे ही कहना चाहिए – इतिहास के लिए एक ग्रभूतपूर्व चीज थी। उनकी इस दृढ़ता के कारण धीरे धीरे उन्हे उनके माता-पिता ग्रौर रिश्तेदारो तथा निरपराध गिरफ्तार हुए लोगो से ग्रलग करना ग्रासान हो गया। ग्रपना काम ग्रासान वनाने के निमित्त जर्मन धीरे धीरे उन सभी को छोड़ने लगे जो इत्तिफाक से गिरफ्तार हुए थे। उन्होने उन रिश्तेदारो को भी छोड़ दिया जो एक प्रकार से जामिनो के रूप मे पकड रखे गये थे। इस प्रकार कोशेवोई, त्युलेनिन, ग्ररुत्युन्यान्त्स तथा कुछ ग्रन्य व्यक्तियो के सवधियो को, जिनमे मरीया ग्रन्द्रेयेव्ना वोर्त्स भी थी, रिहा कर दिया गया। नन्ही ल्यूस्या को उसकी मा की रिहाई के एक दिन पहले मुक्त कर दिया गया था। जव मरीया ग्रन्द्रेयेव्ना घर पर ग्रायी तो उसे पता चला कि उसकी नन्ही वेटी सचमुच जेल मे रखी गयी थी, कि मा के कानो ने धोखा नही खाया था।

हां वह लेफ्टिनेंट ही था। उसके साथ जर्मन सशस्त्र पुलिस के दो सिपाही और थे। उसने ल्यूबा को उस मोमवत्ती की रोशनी मे देखा जो मकान मालिकिन ने उसे दरवाजे के पीछे से थमा दी थी। लेफ्टिनेट का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। उसने मोमवत्ती एक सिपाही को थमायी और ल्यूबा के गालो पर कसकर तमाचा जड दिया। फिर वह किसी चीज की तलाश मे ल्यूबा का तेल-पाउडर वगैरह इधर-उधर फेकने लगा। एक रूमाल के नीचे पडा हुआ, मुह से बजानेवाला बाजा, फर्श पर गिरा। उसने क्रोध मे आकर उसपर पैर रखा और उसे मसल डाला।

फिर वह सिपाहियो को सारे फ्लैट की तलाशी लेने के लिए छोड़ वहा से चला गया। ल्यूबा ने समझ लिया था कि वह स्वय इन पुलिस वालो को न लाया था किन्तु उन्होने लेफ्टिनेट की मार्फत उसका पता चलाया था। कही किसी वात का पता चल गया होगा। पर किस वात का—यह वह न जान सकी।

मकान मालिकिन और फूले हुए गोल गालोवाली लडकी ने कपडे पहन लिये थे और सर्दी से कापती हुई, इस तलाशी को देख रही थी, या यह कहना चाहिए कि मकान मालिकिन देख रही थी और लड़की अत्यधिक उत्सुकता और रुचि के साथ ल्यूबा पर नजर गड़ाये थी। आखिरी क्षणो मे, ल्यूबा ने उस लडकी को गले से लगाया और उसके गुलावी गाल चूम लिये।

ल्यूबा को वोरोशीलोवग्राद मे सशस्त्र पुलिस के थाने मे ले जाया गया। वहा एक अधिकारी ने उसके कागजो की जाच की और, एक दुभापिये की मार्फत उससे पूछा—"तुम्ही ल्युवोव शेव्त्सोवा हो, तुम किस नगर मे रहती थी?" उससे सवाल-जवाब के समय वहा एक युवक भी मौजूद था। वह एक कोने मे वैठा था जिससे ल्यूबा उसका चेहरा न देख सकी। वह सारा वक्त घवराहट से कापता रहा। ल्यूबा के पास से

उसकी सन्दूकची, उसके सारे कपडे और निजी चीजे ले ली गयी। हा छोटी छोटी चीजे, जैम का एक टीन और एक अच्छा रगीन स्कार्फ जरूर नही हथियाया गया था। यह स्कार्फ वह कभी कभी पहना करती थी। यह स्कार्फ उसने खुशामद करके उनसे माग लिया था, यह कहकर कि जो छोटी छोटी चीजे उन्होने उसके लिए छोड दी है, वह उन्हे उसी मे बाध लेगी।

इस प्रकार रंगीन चीनी क्रेप की अकेली एक फ्राक पहने और साबुन-तेल वगैरह का बंडल और जैम का डिब्बा लिये हुए वह उसी कोठरी मे लायी गयी जहा पेर्वोमाइका की लडकिया बन्द थी। दिन का वक्त था और जेल मे पूछ-ताछ चल रही थी।

पुलिस वाले ने कोठरी का दरवाजा खोला, उसे भीतर ढकेला और बोला –

"यह रही तुम्हारी वोरोशीलोवग्राद की अभिनेत्री।"

बाहर के पाले से ल्यूबा के गाल लाल हो रहे थे। उसने यह देखने के लिए कि कोठरी मे कौन कौन है, आखे सिकोडे, कोठरी मे चारो ओर निगाह डाली। उसकी आखे चमक रही थी। वहा उसने ऊल्या, मरीना और उसके बेटे और साशा बोन्दरेवा को देखा। सभी उसकी सहेलिया यही पर थी। उसन हाथ गिरा लिये। बडल अब भी उसके हाथो मे था, पर उसके चेहरे का रग उड़ गया था।

ल्यूबा के क्रास्नोदोन जेल मे आते आते, सारी जेल प्रौढो और 'तरुण गार्ड' के सदस्यो और उनके सबधियो से भर चुकी थी। यहा तक कि जगह न रह जाने से कुछ लोगो और बच्चो को गलियारे मे भी रख दिया गया था। अभी क्रास्नोदोन की खनिज बस्ती के कैदियो के लिए भी जगह का इन्तजाम किया जाना था।

स्तखोविच के जुर्म-इकबाल मे जैसी ही कमी-बेशी होती रहती, उसी

जो आवाज उसने जेल मे सुनी थी वह सचमुच ल्यूस्या की ही थी। अब कसाइयो की कैद मे खुफिया सघर्षकारी प्रौढ, उनके नेता ल्यूतिकोव और वराकोव और 'तरुण गार्ड' दल के सदस्य रह गये थे।

सुबह से लेकर रात तक इन कैदियो के रिश्तेदार जेल के वाहर मजमा लगाये रहते, और भीतर जाने या वाहर आनेवाले पुलिस वालो और जर्मन सिपाहियो का हाथ पकड पकडकर उनसे चिरौरी करते कि वे उन्हे कैदियो की खवर दे या उन्हे पार्सल पकडा दे। सैनिक इन लोगो को ढकेलकर पीछे हटा देते किन्तु वे फिर वहां जमा हो जाते और उन्ही मे कुछ राहगीर या तमाशाई भी एकत्र हो जाते। कभी कभी उन कैदियो की चीख़-पुकार भी लकड़ी की दीवाल के पीछे से सुनाई पड़ती जिन्हे पीटा जा रहा होता। जेल के भीतर दिन भर एक ग्रामोफोन इसलिए वजा करता था कि कैदियो की चीख़-पुकार वाहर न सुनाई पडे। सारे नगर मे सनसनी थी और वहा रहनेवाला एक भी व्यक्ति ऐसा न था जो दिन का कुछ हिस्सा जेल के पास खडे होकर न विताता हो। आखिर मिस्टर ब्रूक्नेर ने कैदियो को पार्सल दिये जाने की अनुमति दी और इस प्रकार ल्यूतिकोव और वराकोव को यह सदेश भेजना सभव हो सका कि जिस जिला पार्टी कमिटी को वे वाहर छोड आये हैं वह काम कर रही है और वह 'बडो' और 'छोटो' सभी को मुक्त कराने के उपाय खोज रही है।

इस समय तक तरुण लोग कोई दो हफ्तो तक जेल मे रह चुके थे। जर्मन अधिकृत प्रदेश की निर्मम कारावास-दशाओ मे उनकी जिन्दगी वडी अस्वाभाविक थी, पर धीरे धीरे इसमे भी उसकी दिन-चर्या निश्चित-सी हो गयी। इसमें उनके शरीर और मस्तिष्क पर होनेवाली निर्मम हिसा, और साथ ही मानव सवध—प्रेम, मित्रता और अपने को खुश रखने के उनके पुराने तरीके—साथ साथ चल रहे थे।

"लड़कियो, मुरब्वा खाओगी?" ल्यूवा ने कोठरी के वीचोवीच फर्श

पर पालथी मारकर वठते हुए तथा अपनी गठरी खोलते हुए पूछा। "वदमाश ने मेरा मुह-बाजा तोड़ डाला। यहा उसके बिना, मैं रह भी कैसे सकती हूं।"

"कुछ इन्तजार करो, वे तुम्हारी पीठ पर ऐसा वाजा वजायेंगे कि मुह का वाजा भूल जाओगी," शूरा दुब्रोविना ने गर्म होते हुए कहा।

"तुम अपनी ल्यूवा को नही जानती। तुम्हारा ख्याल है कि जव वे मुझे पीटेंगे तो मै चुप रहूगी, वोलूगी नही कुछ? मै उनपर चीखूगी, उन्हे गालियां दूगी। इस तरह–'ओ-ओ-ओ। अरे मूर्खो! ल्यूबा को क्यो मार रहे हो?'" वह चिल्लायी और लडकिया हंस दी।

"पर सहेलियो, सच वात तो यह है कि हम शिकायत भी किस वात की करे? हमसे कही ज्यादा मुसीवत तो हमारे माता-पिता को उठानी पड रही है। वे वेचारे तो यह भी नही जानते कि हमारा वना क्या है। और कौन जाने उन्हे क्या देखना वदा हो!" लील्या इवानीखिना वोली।

गोल चेहरे और सुनहरी वालोवाली लील्या, वन्दी-शिविरो की कठिनाइया वरदाश्त कर चुकी थी। वह किसी वात की शिकायत न करती, हर व्यक्ति का ध्यान रखती। वह तो कोठरी मे कैद लडकियो के लिए फरिश्ते के समान हो रही थी।

शाम को ल्यूवा को भी सवाल-जवाव के लिए मिस्टर ब्रूक्नेर के आगे पेश किया गया। प्रत्यक्षत यह एक असाधारण मौका था, क्योकि वहा जर्मन सशस्त्र पुलिस के सभी अफसर मौजूद थे। उन्होने उसे मारा-पीटा नही। वस्तुत. उसके साथ नर्मी का व्यवहार किया। ल्यूवा ने उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा वह हमेशा जर्मनो के साथ करती थी–उसने वडे नाज-नखरे से वातचीत की, हंसती-चहकती रही और जो कुछ वे जानना चाहते थे उसके प्रति पूर्णत अनभिज्ञ वन गयी। उन्होने यह भी संकेत किया कि यदि वह उन्हे वायरलेस ट्रान्समिटर और उसके साथ

ही कोड दे दे तो उसका अपना बडा लाभ होगा। सारा वक्त ल्यूबा का मन शान्त और स्थिर बना रहा।

यह तो केवल अधेरे मे निशानेबाजी की गयी थी, क्योकि उनके पास इस बात का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न था। किन्तु उन्हे इस बात मे कोई सदेह भी न रह गया था कि ऐसी चीजे उसके पास थी जरूर। उनकी यह सूचना कि वह सघटन की सदस्या थी, भिन्न भिन्न नगरो मे आती-जाती थी, और साथ ही जर्मनो के साथ उसके अच्छे संबध थे, इस बात की ओर सकेत कर रही थी कि उसकी ये यात्राए निरुद्देश्य नही रही होगी। बेशक जर्मन जवाबी-जासूसो ने इस बात का पता चला लिया था कि इस इलाके मे कई गुप्त ट्रान्समिटर काम कर रहे थे। वोरोशीलोवग्राद पुलिस कार्यालय मे ल्यूबा से पूछ-ताछ के समय जो युवक मौजूद था, वह पहले कभी वोर्का दुबीन्स्की के साथ रहा था। वोर्या वायरलेस स्कूल मे ल्यूबा का एक मित्र था। उस युवक ने इस बात की पुष्टि की थी कि वह गुप्त-वायरलेस कोर्स मे पढती थी।

ल्यूबा से कहा गया था कि वह इस बात पर विचार करे कि क्या सब कुछ स्वीकार कर लेना उसके लिए हितकर नही होगा। इसके बाद उसे अपनी कोठरी मे वापस भेज दिया गया था।

उसकी मा ने उसके लिए एक थैले मे खाने का सामान भेज दिया था। ल्यूबा थैला घुटनो के बीच दबाये, फर्श पर बैठी हुई, कभी उसमे से कोई रस्क निकालती, कभी कोई अण्डा और सिर झुलाती हुई गाती जाती

ल्यूबा, ल्यूबा, प्यारी बडी दुलारी ल्यूबा,
लगता है अब बहुत समय तक चल न सकेगा—
मुझसे पेट तुम्हारा अब यह पल न सकेगा!

जो पुलिस वाला उसके लिए थैला लाया था, उससे ल्यूबा ने कहा—

"मा से कह देना ल्यूवा जिन्दा है, ठीक है, पर वह कुछ और 'वोर्श्च'* चाहती है।"

वह लड़कियो की ओर घूमी और चिल्ला पडी. "आओ लडकियो, आओ। लूट ले जाओ यह सब।"

आखिर उसकी मरम्मत करने के लिए उसे फेनवोग के सुपुर्द कर दिया गया। उसे वुरी तरह पीटा गया। पर वह अपनी वात की पक्की निकली—इधर उसपर मार पड रही थी और उधर उसकी गालिया सारे कैदखाने मे गूजती हुई वाहर के खुले मैदान तक सुनाई पड रही थी।

"वदमाश! उल्लू का पट्ठा! सुअर की औलाद!" वह इन्ही गालियो से फेनवोग का स्वागत कर रही थी।

दूसरी वार फेनवोग ने उसे मिस्टर व्रूक्नेर और सोलिकोव्स्की के सामने गिरहदार विजली के तारो से वने कोडे से पीटा। ल्यूवा ने कसकर अपने ओठ भीच लिये किन्तु वह अपने आसू न रोक सकी। वह वापस अपनी कोठरी मे आयी और पेट के वल फर्श पर लुढक गयी। उसने अपना चेहरा, दूसरो की नजर से दूर रखने के लिए, अपनी दोनो वाहो मे छिपा लिया था।

ऊल्या एक कोने मे वैठी थी। उसने अपने घर से आया हुआ एक रगीन जम्पर पहन रखा था जो उसकी काली काली आखो और काले वालो के साथ खूव जच रहा था। दूसरी लडकिया उसके इर्द-गिर्द वैठी थी। उसकी आखो मे एक अद्भुत तेज था और वह लड़कियो को 'संत मगदालेन मठ के रहस्य' की कहानी सुना रही थी। वह प्रतिदिन ही उन्हे किसी न किसी रुचिकर कहानी का कोई न कोई अश सुनाया करती थी। 'जहरीली मक्खी,' 'हिम-गृह' तथा 'रानी मार्गोत' की कहानिया वे पहले ही उससे सुन चुकी थी।

कोठरी की हवा साफ करने के लिए गलियारे मे खुलनेवाला दरवाजा

---

*चुकन्दर और गोभी का शोरवा।

खोल दिया गया था। दरवाजे के ठीक सामने एक स्टूल पर एक रूसी सिपाही बैठा हुआ था। वह भी 'संत मगदालेन मठ के रहस्य' की कहानी सुन रहा था।

ल्यूबा की तबीअत कुछ सुधरने लगी। वह उठ बैठी। उसके भी कान कुछ कुछ इस कहानी की ओर लगने लगे। उसने माया पेग्लिवानोवा की ओर देखा जो कई दिनो तक बिना हिले-डुले पडी हुई थी। वीरिकोवा ने बताया था कि माया कभी स्कूल के कोमसोमोल दल की सेक्रेटरी थी, इसी लिए उसपर दूसरो से अधिक जुल्म किये जा रहे थे। जब ल्यूबा ने माया को देखा तो उसके हृदय मे अत्याचारियो के खिलाफ प्रतिकार की अदम्य भावना उठी और क्रियात्मक रूप लेने के लिए मचलने लगी।

"साशा . . साशा . ." उसने धीरे-से साशा बोन्दरेवा को पुकारा, जो ऊल्या के इर्द-गिर्द बैठी लडकियो मे थी, "न जाने क्यो लड़के बिलकुल चुप हो गये है।"

"ठीक कहती हो!"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या उनकी हिम्मत टूट गयी है?"

"तुम जानती हो, उनपर हमसे ज्यादा जुल्म हो रहे है," साशा बोली और आह भरी।

यो तो साशा के तौर-तरीके और आवाज लडको जैसी और रूखी थी, पर इधर जेल मे उसमे लडकियो जैसे कोमल गुण उभरने लगे थे। पर ये नारी-सुलभ गुण उसमे इतनी देर से उभरे थे कि उसे स्वयं ही उनके लिए लज्जा होती थी।

"चलो, उनका मनोरजन ही किया जाय," ल्यूबा चहक उठी। "आओ, उनका व्यग्य-चित्र बनाये।"

उसने अपनी गठरी मे से एक कागज और लाल-नीली पेंसिल निकाल ली। फिर दोनो ही एक दूसरे के पास पास पेट के बल लेटी और व्यग्य-

चित्र के भाव के बारे में फुसफुसाने लगी। तब एक दूसरे से पेंसिल झपटते हुए, उन्होंने एक दुबले-पतले सिकिया से जवान की तस्वीर खींची जिसका सिर लटका था और जिसकी बडी-सी नाक जमीन छू रही थी। उन्होंने उसे नीली पेंसिल से रग दिया लेकिन चेहरा सफेद छोड दिया। उसकी नाक उन्होंने लाल पेंसिल से रग दी। चित्र के नीचे उन्होंने लिख दिया:

ऐसी भी क्या बात कि लडको, ऐसी भी क्या बात—
लटके हुए तुम्हारे चेहरो पर बजते है सात!

ऊल्या अपनी कहानी की किश्त पूरी कर चुकी थी। लडकिया उठी, कमर सीधी की और अपने अपने कोनो मे चली गयी। कुछेक ल्यूबा और साशा के पास आ गयी। व्यंग्य-चित्र हाथो हाथ घूमने लगा। लडकिया हस पडी—"तुम अपनी प्रतिभा नष्ट करती रही हो।"

"यह चित्र हम उन तक कैसे पहुचाये?"

ल्यूबा ने कागज लिया और दरवाजे तक चली आयी।

"दवीदोव! इन छोकरो की तस्वीर तो जरा उन्हे दे आओ!" उसने पुलिस वाले को जैसे पानी पर चढाते हुए कहा।

"तुम्हे यह कागज-पेन्सिल कहा से मिले? भगवान कसम मैं चीफ से तुम सब की तलाशी लेने को कहूगा!" वह क्रोध-से भौहे चढाते हुए बोला।

शुर्का रैवन्द गलियारे से होकर गुज़र रहा था। उसने ल्यूबा को दरवाजे पर खडे देखा।

"हलो ल्यूबा! मेरे साथ वोरोशीलोवग्राद की सैर को कब चलोगी?" उसने मजाक किया।

"तुम्हारे साथ? कभी नही! पर अगर तुम यह कागज उन छोकरो को दे दोगे तो चलूगी तुम्हारे साथ—हमने यह उनकी तस्वीर खींची है।

रैवन्द ने चित्र पर एक निगाह डाली, उसके मुरझाये जैसे चेहरे पर हसी दौड गयी और उसने कागज दवीदोव को थमा दिया।

"दे दो, इसमे कोई नुक्सान नही," उसने लापरवाही से कहा और गलियारे मे निकल गया।

दवीदोव, चीफ के साथ रैवन्द के अच्छे सबधो को जानता था, साथ ही वह यह भी जानता था कि दूसरे सभी पुलिस वालो की तरह वह भी एक पिट्ठू है। फलत उसने बिना कुछ कहे-सुने वह कागज लिया, छोकरोवाली कोठरी का दरवाजा थोडा-सा खोला और कागज अन्दर फेक दिया। कोठरी से हा-हा हू-हू की आवाजे आने लगी और कुछ ही क्षणो के बाद दीवाल पर दस्तक सुनाई दी—

"यह तुम लडकियो की खाम-ख्याली है। हमारे सभी बाशिन्दे कायदे का बरताव कर रहे है यह वास्या वोन्दरेव है। मेरी नन्ही बहन को शुभकामनाए।"

साशा जिस बडल को तकिये की जगह इस्तेमाल कर रही थी उसमे से उसने शीशे का एक खाली डिब्बा निकाला, जिसमे उसकी मा ने उसे दूध भेजा था, और दीवाल के पास जाकर खटखटाने लगी—

"वास्या, मेरी बात सुन रहे हो न?"

फिर उसने डिब्बे का पेदा दीवाल से सटाया, अपने ओठ उसके मुह पर रखे और अपने भाई का प्रिय गान—'सुलिको'—गाने लगी।

किन्तु कुछ ही पक्तियो बाद गाने के शब्दो ने उसके सामने अतीत के ऐसे ऐसे चित्र खड़े कर दिये कि उसकी आवाज लडखडाने लगी। लील्या उसके पास गयी, उसका हाथ थपथपाया और विनम्र और मृदु आवाज मे बोली—

"नही, मेरी सखी, नही! शान्त हो जाओ!"

"जब आंसू गिरते है तो मै अपने आप से घृणा करने लगती हू," साशा बोली। उसके ओठो पर मुस्कराहट काप रही थी।

"स्तखोविच!" सोलिकोव्स्की की भारी आवाज गलियारे भर मे गूज गयी।

"फिर शुरू हुआ," ऊल्या बोली।

पुलिस-वाले ने दरवाजा वन्द किया और चाभी घूम गयी।

"अच्छा हो हम सुने ही नही," लील्या बोली, "प्यारी ऊल्या, तुम तो मेरी प्रिय कविता जानती ही हो। तुमने पहले भी 'राक्षस' कविता सुनायी थी न! याद है? वैसे ही फिर सुनाओ!"

ऊल्या ने एक हाथ उठाया और कविता-पाठ करने लगी–

उफ, आखिर यह जीवन क्या है,
क्या है इसकी दुःख-यातना
इसके क्षणिक कुटेव, कुकरनी?
क्या अब आशा शेष नही है?
क्या अब यह विश्वास नही है–
भले विचार करे न्यायालय क्षमा कि फिर भी मिल सकती है?
नही, वात मेरी कुछ और है–
मेरे ताप-शाप का कोई अत न होगा, कभी न होगा–
मेरे मन की पीर-वेदना को न कभी कोई हर सकता–
उफ कि अत यह नही जानती,
ज्योकि अत यह नही जानता मेरा जीवन!
यह कि नाग है मार कुडली घेरघारकर सारा अन्तर बैठ गया है–
यह कि नाग है जिससे कोई शक्ति नही लोहा ले सकती–
और, वरावर मेरी मनसा-वाचा यो दवती जाती है,
जैसे कोई भारी पत्थर वोझ डालता हो ऊपर से–
यह मेरी भग्नाशा की जलती समाधि है!!

किस प्रकार इन पक्तियों ने लडकियो के दिलो को झिंझोडा। लगता था वे साफ साफ उन्हे कह रही हो—"यह तुम्हारे बारे मे है! तुम्हारी कुछ कुछ जगी हुई उत्तेजना के बारे मे! तुम्हारी चूर आशाओ के बारे मे!"

फिर ऊल्या ने वे पक्तिया पढी जिनमे इस बात का उल्लेख था कि देवदूत, तमारा की पापी आत्मा लिये जा रहा है। तोन्या इवानीखिना बोली—

"तुम्ही देखो न! आखिर देवदूत ने आकर तमारा को बचाया या नही! कितना अच्छा रहा!"

"नही!" ऊल्या बोली। उसकी आखो मे वही स्थिर भाव था जैसे उस समय था जब वह पढ रही थी। "नही मै तो उस राक्षस के ही साथ जाती, जरा सोचो राक्षस ने खुद भगवान के खिलाफ विद्रोह किया था!"

"ठीक कहती हो! हमारे लोगो के सकल्प को तोड़ सकनेवाला कोई पैदा नही हुआ!" सहसा ल्यूबा बोली। उसकी आखो से चिनगारिया छूट रही थी। "क्या हमारे जैसे लोग कही और है दुनिया मे? जिनकी आत्मा इतनी अच्छी हो? जिनकी सहन-शक्ति इतनी अदम्य हो? हो सकता है मौत हमारे कदम चूमे—मूझे उसका भी डर नही। जरा भी डर नही।" उसने यह बात इतने उत्साह से कही कि उसका सारा शरीर हिलने लगा। "पर मै मरना नही चाहती .. मै अपना हिसाब उनसे चुकाना चाहती हू, उन बदमाशो से जो वहा बैठे है। मै गीत गाऊंगी . . उन इलाको मे जहा दुश्मन के मनहूस कदम नही पहुंचे है, जरूर इस बीच अच्छे अच्छे गीतो की रचना हुई है! जरा सोचो। हमने छ महीने जर्मनो की मातहती मे बिताये है। हम तो जैसे कब्र मे पडे रहे—न गाना, न हसी! सिर्फ आसू, रोना-धोना, खून!" ल्यूबा ने जोर देते हुए कहा—

"हम इसी समय एक गाना गायेगी! भाड मे जाये ये सब!"

सागा वोन्दरेवा वोली और अपने पतले, धूप से तपे हाथ से ताल देती हुई गान लगी—

फौजी कमाने सटी एक-दूसरे से आगे वढती गई—
कभी मैदानो के वीच से गुजरी तो कभी ढूहो-टीलो के
सिर पर चढती गई।*

लडकिया अपनी अपनी जगहो से उठी, उन्होंने गीत की लड़ी पकडी और सागा के इर्द-गिर्द खड़ी हो गयी। सभी कठो से निकला हुआ यह गीत कैदखाने की इमारत भर मे गूज उठा। लडकियो ने सुना कि पास की कोठरी के लड़को ने भी उसमे अपना कठ-स्वर मिलाया।

कोठरी का दरवाजा भडभडाकर खुला। सिपाही ने क्रोध और भय से सिर अन्दर किया और वुदवुदाया।

"यह क्या हो रहा है? तुम सब पागल हो गयी हो क्या? चुप हो जाओ।"

आन थे पराक्रम की, वीरता की शान थे—
लाल-सूरमा थे सभी, सभी पार्टीजान थे—
उनका सुकृत्य दुनिया के लिए वह रहा—
उनका सुयश जैसे अजर-अमर रहा।
धस आये अन्दर औ' अद्भुत जादू किया—
पूरा नगर अपने हाथो मे ले लिया!

पुलिस वाले ने दरवाजा जोर से वन्द किया और जल्दी जल्दी वहा से निकल गया।

कुछ ही समय वाद गलियारे मे भारी भारी कदमो की आवाज सुनाई दी। दरवाज़े पर मिस्टर ब्रूक्नेर खडा था—लम्वा कद, कसा हुआ पर नीचे

---

*देशभक्त छापामारो का गाना।

लटकता-सा तोंद, पीला चेहरा, आखो के नीचे काले काले गूमड, गरदन पर कालर तक आती हुई मास की परते। हाथ मे पकडे सिगार का धुआ छल्लो के रूप मे ऊपर उठ रहा था।

"Platz nehmen! Ruhe! [1]" उसकी तेज आवाज सुनाई दी! कानो के परदे तक फाड देने वाली यह ध्वनि मानो नकली पिस्तौल दागकर निकाली गयी थी।

वोलोच्येव्स्क नगर की राते औ' वे अद्भुत से दिन—
कौन भूल पायेगा उनको, अजर-अमर है छिन-छिन—
जैसे चिर उन्नत माथा हो—
जैसे कोई जय-गाथा हो!

लड़किया बराबर गाती जा रही थी।

जर्मन सिपाही और पुलिस वाले कोठरी मे घुस आये। लडको की पास वाली कोठरी मे भी हलचल मच गयी। लडकियो को फर्श पर दीवाल के साथ पटका जाने लगा।

अकेली ल्यूबा कोठरी के बीचोबीच खडी रही। उसके छोटे छोटे हाथ उसकी कमर पर थे और उसकी नफरतभरी आखे अपने सामने घूर रही थी। वह अपनी एडिया पटपटाकर नाचने लगी और सीधी ब्रूक्नेर की ओर बढने लगी।

"अरी दुष्टा!" वह चीख़ पडा। उसका सास फूल रहा था। अपने चौडे हाथ से उसने ल्यूबा की बाह पकडी, और उसे मरोड़ते हुए गलियारे मे घसीटने लगा।

ल्यूबा ने फुफकार भरी, सिर निकाला और उसके हाथ का पीला मास कसकर काट लिया।

---

[1] अपनी अपनी जगह पर खडे हो जाओ! चुप रहो!

"Verdammt noch mal!"* ब्रूक्नेर गरजा और अपनी दूसरी मुट्ठी से ल्यूबा के सिर पर घूसे मारने लगा। पर वह बराबर उसका हाथ काटे जा रही थी।

सिपाहियो ने वडी कठिनाई से उसे अलग किया और फिर स्वय ब्रूक्नेर की सहायता से, जो हवा मे मुट्ठी नचा रहा था, वे उसे गलियारे मे से घसीटते हुए ले गये।

सिपाही उसे कसकर पकडे हुए थे और ब्रूक्नेर और फेनबोग उसपर विजली के वटे हुए तारोवाले हटर वरसाने लगे। हटर उसकी पीठ के उन घावो पर पड रहे थे, जो कुछ कुछ भरने लगे थे। ल्यूबा ने कसकर अपने ओठ भीच लिये पर मुह से एक शब्द भी न निकाला। सहसा कैदखाने से ऊपर कही उसे हवाई जहाजो के इजनो की भनभनाहट सुनाई दी। उसने यह आवाज पहचानी और उसका दिल जोश से भर गया।

"शैतान की औलाद! पीट लो मुझे, मन भरकर पीट लो! ऊपर हमारे साथियो की ललकार सुनाई देने लगी है!" वह चीख पडी।

एक हवाई जहाज ने गोता लगाया। उसकी आवाज कमरे मे गूज गयी। ब्रूक्नेर और फेनबोग ने उसे मारना-पीटना वन्द कर दिया। किसी ने तुरन्त रोशनी वुझा दी। सिपाहियो ने ल्यूबा को छोड़ दिया।

"अरे वदमाशो! वुजदिलो! तुम्हारी घडी आ गयी है। अरे राक्षसो. आहा हा ," ल्यूबा चीखी। वह करवट तक लेने मे असमर्थ हो रही थी। खून से सने तख्त पर उसके पैर क्रोध से काप रहे थे।

एक विस्फोट से होनेवाली धमक ने कैदखाने की इमारत तक हिला दी थी। हवाई जहाज नगर पर वम वरसा रहा था।

वह दिन 'तरुण गार्ड' दल के सदस्यो के वन्दी जीवन मे एक नये

---

*लानत है!

मोड का दिन था। अब से उन्होने संघटन की अपनी सदस्यता को छिपाना छोड दिया और अपने अत्याचारियो का खुलकर विरोध करने लगे। वे उनसे रुखाई के साथ पेश आते, उनका उपहास करते। वे अपनी कोठरियो मे क्रान्तिकारी गीत गाते और जब कभी किसी पर जुल्म करने के लिए उसे कोठरी से घसीटते हुए ले जाया जाता, तो वे नाचते और जोरो का होहल्ला मचाते।

और इस समय उनपर जिस प्रकार के जुल्म होते थे उनकी मानव-मस्तिष्क कल्पना तक नही कर सकता। मानव-विवेक और अन्त करण कभी इन भयकर अत्याचारो के बारे मे सोच भी न सकता था।

## अध्याय २६

अपने साथियो मे ओलेग मोर्चे की गतिविधि को सब से बेहतर जानता था। जमी हुई उत्तरी दोनेत्स को पार करने की दृष्टि से वह अपने दल को उत्तर की ओर गुन्दोरोव्स्काया क्षेत्र मे ले गया। वह चाहता था कि वोरोनेज-रोस्तोव रेलवे पर स्थित ग्लुबोकाया स्टेशन तक पहुच जाय।

सभी अपने परिवार और साथियो के लिए चिन्तित थे। वे रात भर चलते रहे और परस्पर एक शब्द भी न बोले।

गुन्दोरोव्स्काया का चक्कर काटकर उन्होने सुबह के समय, निर्बाध, दोनेत्स पार की। फिर एक पुरानी देहाती पगडडी पर बनायी हुई एक चिकनी सैनिक सड़क पर चलते हुए दुबोवोई खेतिहर-बस्ती की दिशा मे जाने लगे। उनकी आखे स्तेपी मे किसी ऐसी बस्ती की खोज मे लगी थी जहा वे थोड़ी गर्मी का सुख लेते, और पेट भरते।

हवा बंद थी। सूर्य चढता जा रहा था। धूप मे गर्मी बढ रही थी। ओलेग और उसके साथियो के इर्द-गिर्द ऊचा-नीचा स्तेपी दूर दूर तक

चमचमा रहा था। सडक पर पड़ी हुई बर्फ़ की पतली परत पिघल रही थी। सडक से भाप उठ उठकर हवा मे मिल रही थी और मिट्टी की सोधी सोधी महक तेज़ होती जा रही थी।

प्राय: उन्हें जर्मन पैदलसेना, तोपखाने, आर्मी सर्विस और सप्लाई यूनिटो के आदमी जहा-तहा दिखाई पड जाते। उनकी टुकडिया स्तालिनग्राद के घेरे से किसी प्रकार निकल भागी थी और वाद के मुकावले मे वुरी तरह कुचल दी गयी थी। उन्हे इन जर्मन टुकडियो के सैनिक न सिर्फ फौजी सडक पर ही वल्कि पास-पडोस की देहाती सडको पर और दूर की सड़को पर भी दिखाई पडते थे। ये सडके उन्हे विशेपकर उस समय साफ साफ दिखाई पड़ती थी जव वे अपने मार्ग से होकर किसी टीले की चोटी पर पहुच जाते थे। इस समय के जर्मन कोई साढे पाच महीने पहले के जर्मनो से विलकुल भिन्न थे। उस समय वे इन्ही इलाको से होकर हजारो लारियो पर शान से निकलते थे। पर, आज के जर्मनो के ओवरकोट चिथड़े चिथड़े हो गये थे। उन्होने ठढ से वचने के लिए अपने सिर और पैरो मे कपडे लपेट रखे थे। उनके हाथ और वढी हुई दाढी वाले चेहरे इतने काले हो गये थे मानों वे सीधे चिमनी से निकलकर आ रहे हो।

एक जगह उन्होने अपने आगे इतालवी सैनिको का एक जत्था भी देखा। यह जत्था पूर्व से होकर पश्चिम जानेवाली सड़क पर चला जा रहा था। यह सडक उसी फौजी सडक को काटती थी जिसपर ओलेग और उसके साथी चल रहे थे।

कई इतालवी सैनिक कन्धो पर उल्टी वन्दूके रखे चले जा रहे थे। वे वन्दूको को उनकी नलियो के सहारे पकडे हुए थे। वहुतो के पास तो वन्दूके भी न थी। गर्मी का लवादा पहने हुए एक अफसर सिर पर कोई ऐसी चीज पहने था जो न फोरेज-टोपी थी, न चोटीदार फौजी टोपी। इसे उसने वच्चो के पाजामे से सिर पर वाध रखा था। वह एक गधे पर

विना जीन के वैठा था और उसके वडे वडे वूट जमीन को छू रहे थे। गर्म और दक्षिणी जलवायु के उस निवासी की नाक से टपकनेवाली बूदें ऊपरी ओठ तक पहुचते पहुचते जम गयी थी। यह एक ऐसा मजेदार प्रतीकवादी तमाशा था कि ओलेग और उसके साथी एक दूसरे की ओर देखकर ठहाका मारकर हस पडे।

युद्ध ने वहुत-से नागरिको को गृहविहीन कर दिया था। वे सड़कों पर दिखाई पड़ जाते थे। अत पीठ पर सफरी थैले वाघे उन दो लड़को और तीन लडकियो की ओर किसी का भी ध्यान न गया। वे वरावर अपने रास्ते पर वढते रहे।

ये सव दृश्य और तमाशे देखकर उनका मूड वढिया हो गया था। यौवन को खतरे की परवाह नही रहती। ये साहसी युवक-युवतिया अपनी कल्पना मे अभी से मोर्चे की पक्तियो के उस ओर पहुच चुके थे।

नीना फेल्ट के जूते पहने थी। अपने सिर पर उसने कनटोप पहन रखा था, जिसके अन्दर से उसके घुघराले वालो की भारी भारी लटे उसके गर्म कोट के कालर पर गिर रही थी। चलने से उसके गालो पर लाली आ गयी थी। ओलेग निरन्तर उसकी ओर देखता रहता था और जब दोनो की आखे चार होती थी तो वे मुस्करा देते थे। सेर्गेई और वाल्या तो एक मौके पर वर्फ के गोले वना वनाकर एक दूसरे पर फेकने लगे थे और एक दूसरे के पीछे भागते हुए इतनी दूर निकल गये थे कि उनके साथी वहुत पीछे छूट गये थे। उस दल मे ओल्या ही सबसे वड़ी थी। वह गहरे रंग के कपड़ो मे थी और चुपचाप चल रही थी। उन दो जोडो के बीच वह एक सरलहृदया मा जैसा व्यवहार कर रही थी।

वे एक दिन और एक रात तक दुवोवोई की खेतिहर वस्ती मे रहे। उन्होने मोर्चे की गतिविधि के सवध मे भी वड़ी सतर्कता से पूछ-ताछ की। युद्ध मे अपग हुआ एक व्यक्ति—उसका एक वाजू कट गया था—अपनी

टुकडी से विछुड जाने के बाद पडोस मे वस गया था। उसने उन्हे यह सलाह दी कि वे और भी उत्तर मे दूयाच्किनो गाव की ओर चले जायं।

इस गाव तथा पास-पडोस की खेतिहर वस्तियो मे रहकर उन्होने कुछ दिन काटे। इस अवधि में वे जर्मनो के फौजी अड्डो, और तहखानो मे छिपकर रहनेवाले ग्रामीणो के वीच घूमे-फिरे। इस समय वे मोर्चे के विलकुल निकट थे। गोलो की धमक वरावर उनके कानो मे पडती रहती थी। रात मे वे तोपो के मुह से निकलती आग भी देख सकते थे। जर्मन अड्डो पर वरावर वमवारी हो रही थी और यह साफ दिखाई पडता था कि सोवियत सेना के दवाव से मोर्चा भरभरा रहा था क्योकि इस समय इस इलाके मे जहां कही भी जर्मन फौज की टुकडिया नजर आती, सभी का मुह पश्चिम की ओर ही होता।

हर सैनिक ओलेग और उसके साथियो को कनखियो से देखता था। गाव वाले भी, विना यह जाने-समझे कि वे कैसे लोग है, उन्हे अपने घरो मे ठहराने से डरते थे। इस क्षेत्र मे घूमते रहना या यही रह जाना खतरनाक था। फिर पाच लोगो के दल के लिए मोर्चा पार करने का तो सवाल ही न उठता था। एक वस्ती मे एक किसान औरत ने उन्हे इस तरह घूरा मानो वह उनकी दुश्मन हो। और जव रात हुई तो गर्म कपडे पहनकर वाहर निकल गयी। ओलेग जग रहा था। उसने अपने साथियो को जगाया और सव के सव वस्ती से निकलकर खुली स्तेपी की ओर चल दिये। नीद के मारे उनकी आखे उठती नही थी, किन्तु कही पड रहने का भी ठिकाना न था। इसके अलावा हहराती हवा का मुकावला करना भी उनके लिए वड़ा कठिन लग रहा था। पिछले रोज से ही तेज हवा चलने लगी थी। उन्होने अपने को इतना निस्सहाय, इतना परित्यक्त कभी भी न अनुभव किया था। अन्तत. ओल्या वोल उठी जो उम्र मे सब से बड़ी थी—

"मैं जो कुछ कहने जा रही हू, उसका तुम लोग बुरा न मानना," वह बोली। उसने ग्राखे उनकी ग्रोर से हटायी ग्रौर गाल को हवा से बचाने के लिए एक हाथ की ग्रास्तीन उस पर रख ली। "हमारे जैसे इतने वडे दल के लिए मोर्चा पार करना ग्रसभव है। ग्रौर एक लडकी या ग्रौरत के लिए तो यह बिलकुल ही नामुमकिन है .." उसने इस ग्राशा से ग्रोलेग ग्रौर सेर्गेई की ग्रोर देखा कि वे कुछ ग्रापत्ति करेंगे, किन्तु वे न बोले। वह ठीक ही कह रही थी। "हम लडकियो को चाहिए कि वे लडको को स्वतत्र रूप से काम करने दे," उसने दृढता से कहा। नीना ग्रौर वाल्या समझ गयी कि वह उन्ही के बारे मे कह रही है। "नीना ग्रापत्ति कर सकती है। पर याद रखना नीना, तुम्हारी मा ने तुम्हे मेरे सुपुर्द किया है। हम फोकिनो गाव मे चली जायेगी। वहा स्कूल के दिनो की मेरी एक सहेली रहती है। वह हमे ठहरा लेगी, ग्रौर हम वहा इन्तजार कर सकती है।"

यह पहला मौका था जब ग्रोलेग कुछ न कह सका। सेर्गेई ग्रौर वाल्या भी चुप रहे।

"मैं क्यो ग्रापत्ति करूगी? नही, मैं ग्रापत्ति न करूगी," नीना ने कहा ग्रौर उसकी ग्राखो मे ग्रासू छलछला ग्राये।

पाचो जने बिना कुछ कहे-सुने, वहा काफी देर तक खड़े रहे। वे उदास थे, ग्रौर ग्राखिरी कदम उठाने मे झिझक रहे थे।

"ग्रोल्या ठीक कहती है," ग्राखिर ग्रोलेग बोला, "ग्राखिर जब लड़कियो के लिए ग्रासान रास्ता है तो वे जोखिम क्यो उठाये। ग्रौर यह भी ठीक है कि इस तरह हमारा काम भी ग्रासान हो जायेगा। त-तो तुम ग्रपने रास्ते ज जाग्रो," सहसा हकलाते हुए वह बोला। उसने ग्रोल्या को गले से लगा लिया।

फिर वह नीना के पास गया ग्रौर बाकी सब ने मुह फेर लिये।

नीना उसकी छाती से चिपट गयी और उसके चेहरे पर चुम्बनो की वर्षा करने लगी। ओलेग ने भी उसे गले लगाया और उसके ओठ चूम लिये।

"तु-तुम्हे याद है, मैंने इस वात के लिए तुम्हे कितना तग किया था कि तुम मुझे अपना गाल ही चूमने दो। याद है मैंने कहा था—'सिर्फ गाल पर, सिर्फ गाल पर?' तो अव, यहा एक दूसरे को चूमना हमारे भाग्य में वदा था," वह फुसफुसाया और उसके चेहरे पर प्रसन्नता का वाल-सुलभ भाव छा गया।

"मुझे याद है। मुझे सव याद है, जितना तुम समझ रहे हो उस से भी ज्यादा मुझे याद है ... मै हमेशा तुम्हे याद रखूगी ... मै तुम्हारा इतजार करूगी," वह फुसफुसायी।

ओलेग ने फिर उसे चूमा और उससे दूर हट गया।

कुछ कदम चल चुकने के वाद नीना और ओल्या ने लडको की ओर देखते हुए फिर हाथ हिलाये। उसके वाद वे आखो से ओझल हो गयी, और उनकी आवाज तक आनी वन्द हो गयी। हिम की पतली-सी पर्त वर्फ पर चल रही थी।

"और अव तुम दोनो क्या करोगे?" वाल्या और सेर्गेई की ओर मुडते हुए ओलेग ने पूछा।

"हम मिलकर मोर्चा पार करने की कोशिश तो जरूर करेगे," अपराधी की तरह सेर्गेई वोला। "हम मोर्चे के समानान्तर चलते जायेगे और हो सकता है कि हम किसी जगह उसे पार कर ले। और तुम?"

"मै तो यही कही आजमाइश करूंगा। यहां कम से कम मुझे पास-पड़ोस की जानकारी तो है," ओलेग ने जवाव दिया।

एक वार फिर सन्नाटा, अवसादपूर्ण मौन छा गया।

"अरे प्यारे दोस्त, यो मुह न वनाओ। इस मे शर्माने की कोई वात

नही . . त-तो ?" ओलेग वोला। सेर्गेई के दिमाग मे कौन-से विचार घूम रहे थे, यह वह अच्छी तरह जानता था।

वाल्या ने ओलेग को सीने से लगाया। सेर्गेई भावुकता का प्रदर्शन करना नही चाहता था। उसने ओलेग से हाथ मिलाया, उसका कधा हल्के-से दवाया और इधर-उधर देखे विना, आगे वढ गया। वाल्या उसके साथ हो जाने के लिए दौड पडी।

यह सात जनवरी की वात है!

उन्हे भी पता चल गया कि वे मोर्चे को पार करने मे असमर्थ है। वे गांव गाव चलते रहे और आखिर कामेस्क पहुच गये। वे लोगो को यही वताते कि वे भाई-वहन है और मध्य दोन के पास होनेवाले युद्ध-क्षेत्र मे अपने परिवार से विछुड गये है। लोगो को उनके लिए अफसोस होता और उन्हे मिट्टी के ठंडे फर्श पर एक कोने में एक खाट मिल जाती। और दोनो, दुर्भाग्य पीडित भाई-वहन की भाति एक दूसरे की वगल मे सो जाते। सुवह उठकर वे फिर चल पडते। वाल्या किसी भी जगह मोर्चा पार कर लेना चाहती थी, किन्तु सेर्गेई यथार्थवादी था और मोर्चा पार करने के विलकुल खिलाफ था।

आखिर उस लडकी ने समझ लिया कि जव तक वह अपने साथी के साथ रहेगी तव तक वह दुश्मनो की पक्ति पार न करेगा – वेशक अकेला सेर्गेई तो कही भी मोर्चा पार कर सकता है, पर शायद वह उसे खतरे मे नही डालना चाहता।

"जानते हो यदि मै अकेली होती तो मुझे किसी न किसी गांव मे सिर छिपाने की जगह मिल गयी होती और जब तक वहा से मोर्चा न टूट जाता तव तक मै वही इन्तजार करती," आखिर वह उससे वोली।

पर वह कुछ भी सुनने को तैयार न था।

फिर भी लड़की ने उसपर विजय पायी। अभी तक दोनो ने मिलकर

जितने भी काम किये थे, सभी मे वह अगुआ रहा था और वह उसकी मातहती में रही थी। किन्तु निजी मामलो मे उसी की चलती थी। सेर्गेई ने कभी इस वात पर गौर न किया था कि वह उसके कितने अधिक कहने मे था! इस समय वाल्या ने उसे समझाया कि वह लाल सेना की किसी टुकडी मे शामिल हो जाय, उन्हे वताये कि क्रास्नोदोन मे 'तरुण गार्ड' के सदस्यो पर कितने जुल्म हो रहे है, और टुकडी के साथ मिलकर साथियो को वचाय और स्वय उसकी भी सहायता करे।

"मै कही पडोस में ही तुम्हारा इन्तजार करूगी," वह वोली।

दिन मे वे दोनो वहुत थक गये थे। अत वाल्या रात मे गहरी नीद सोयी। पर जव वाल्या भोर से कुछ पहले ही जगी तो सेर्गेई जा चुका था। वह उससे आखिरी विदा लेने के लिए भी उसे जगाना न चाहता था।

इस प्रकार वाल्या अकेली रह गयी।

येलेना निकोलायेव्ना ११ जनवरी की वह सर्द रात जिन्दगी भर न भूली। सडक की ओर खुलनेवाली खिडकी पर किसी ने धीरे-से दस्तक दी। उस समय सारा परिवार सो रहा था। येलेना निकोलायेव्ना ने तत्काल सुन लिया और एक क्षण मे समझ गयी कि उसका वेटा घर आया है।

ओलेग एक कुर्सी पर धम्म से वैठ गया। उसके गाल पाले से सुन्न हो चुके थे और वह इतना थक गया था कि अपनी टोपी तक न उतार सकता था। इस समय तक सभी जग चुके थे। नानी ने एक मोमवत्ती जलायी और मेज के नीचे रख दी ताकि सडक पर से उसकी रोशनी न दिखाई दे। प्रतिदिन कई कई वार उसके यहा पुलिस वाले चक्कर लगाया करते थे। ओलेग पाले से जमी टोपी लगाये था। उसके चेहरे पर रोशनी पड़ रही थी। उसके गाल की हड्डियो पर काले काले दाग पड गये थे। वह सूखकर काटा हो गया था।

उसने मोर्चा पार कर लेने के कई असफल प्रयास किये थे किन्तु वह शस्त्रास्त्रो, टुकडियो और दस्तो की स्थिति की आन्तरिक गतिविधि से परिचित न था। इसके अलावा, वह इतना बड़ा था और उसके कपड़े भी इतने वडे और गहरे रग के थे कि विना किसी की निगाह पड़े, उसका बर्फ़ पर रेगकर निकल जाना असम्भव था। नगर मे उसके साथियो पर जो तलवार लटक रही थी उसकी कल्पनामात्र से वह व्यथित हो उठता था। अन्तत उसने विचार किया कि अब काफी समय बीत चुका है, और वापस नगर को लौटने मे कोई खतरा न होगा इस समय किसी का भी ध्यान उसपर न जायेगा।

"जेम्नुखोव की कोई खबर है?" उसने पूछा।

"वही, पहले जैसा..." मा ने उसकी आखे बचाते हुए जवाब दिया।

मा ने उसका कोट उतारने मे उसकी सहायता की और टोपी उतार दी। घर मे जलावन तक न था कि वह उसके लिए थोडी चाय ही बना देती। परिवार वाले एक दूसरे को देख रहे थे और डर रहे थे कि किसी भी क्षण, ओलेग को वही घर मे गिरफ्तार किया जा सकता है।

"ऊल्या कैसी है?" उसने पूछा।

तत्काल उसे कोई उत्तर न मिला।

"ऊल्या गिरफ्तार हो गयी," उसकी मा ने धीमी आवाज में कहा।

"और ल्यूबा?"

"ल्यूबा भी..."

उसके चेहरे का भाव तुरत वदल गया। वह कुछ देर तक चुप बैठा रहा, फिर बोला—

"क्रास्नोदोन वस्ती का क्या हाल है?"

इस यन्त्रण को और लम्बा नही किया जा सकता था।

"कौन गिरफ्तार नही हुआ, तुम्हे यह बताना अधिक आसान होगा," मामा कोल्या बोला।

उसने केन्द्रीय कारखाने मे मजदूरो के एक बडे दल की गिरफ्तारी की खबर सुनायी और बताया कि ल्यूतिकोव और बराकोव भी गिरफ्तार हो चुके है। क्रास्नोदोन मे किसी को भी इस बात मे सन्देह न था कि ल्यूतिकोव और बराकोव विश्वसनीय साथी थे, जिन्हे विशेष काम करने के लिए ही जर्मनो के बीच छोडा गया था।

ओलेग ने सिर लटका लिया और आगे कोई प्रश्न न किया।

परिस्थिति पर विचार कर चुकने के बाद ओलेग को तुरत, उसी रात, देहात में मरीना के रिश्तेदारो के पास भेज देने का निर्णय कर लिया गया। मामा कोल्या उसके साथ साथ जाने को भी तैयार हो गया।

वे सुनसान स्तेपी से होते हुए रोवेन्की सडक पर चलते रहे। तारे बर्फ पर हल्का नीला प्रकाश बिखेर रहे थे और वे उस विशाल भूप्रदेश पर दूर तक देख सकते थे।

कई दिनो तक, प्राय. बिना खाये-पिये और आराम किये, ओलेग मारा मारा फिरता रहा था। उसे आराम करना जैसे नसीब ही न था। इसके अलावा, वह घर पर, दिल हिला देनेवाली खबरे भी सुन चुका था। यह सब होते हुए भी, वह अपने ऊपर नियन्त्रण रखे रहा। रास्ते मे उसने मामा कोल्या से 'तरुण गार्ड' दल के समाप्त होने और ल्यूतिकोव तथा बराकोव की गिरफ्तारी के सबध मे सभी विवरण मालूम किये। उसने अपनी विपत्तिया भी मामा कोल्या को सुनायी।

उन्हे पता ही नही चला कि यहा सडक हमवार नही थी, ऊची होती जा रही थी। वे ढलान के ऊपरी सिरे पर पहुच गये थे। यही से सडक सहसा नीचे उतरती थी। उनके कोई पचास गज आगे एक बडे-से गाव की धूमिल हद दिखाई पड़ रही थी।

"हम सीधे गाव की ओर बढ रहे हैं। हमें कुछ घूमकर चलना चाहिए," मामा कोल्या ने कहा।

वे सड़क से उतर आये और गाव के वायी ओर का चक्कर लगाते हुए चलने लगे। वे सबसे पास के मकानो से कोई पचास गज की दूरी पर चल रहे थे। सामान्यतया वर्फ गहरी नही थी, केवल कही कही वर्फ के ढेर लगे थे।

वे गाव को जानेवाली एक सडक पार ही करनेवाले थे कि सबसे पास के मकान से कुछ भूरी भूरी आकृतियां, उनका रास्ता काटती हुई, उनकी ओर दौड पड़ी। वे दौडती जाती और फटी आवाज मे जर्मन मे चिल्लाती जाती।

मामा कोल्या और ओलेग घूम गये और सडक पर पीछे की ओर भागने लगे।

कमजोरी के कारण ओलेग दौडने मे असमर्थ था। उसने समझ लिया था कि उसका पीछा किया जा रहा है। उसने अपनी सारी शक्ति बटोरी और भागा, किन्तु फिसलकर गिर पडा। आदमी उसपर टूट पडे और उसकी पीठ पीछे उसके हाथ मरोडने लगे। उनमे से दो मामा कोल्या के पीछे भी भागे और रिवाल्वर से कई गोलियां भी चलायी। पर कुछ ही मिनट वाद वे हसते हुए लौटे और उसे न पकड सकने पर गालिया वकने लगे।

ओलेग को एक वडे-से मकान मे ले जाया गया, जहा कभी शायद ग्राम सोवियत का कार्यालय हुआ करता था, किन्तु अव वहा गाव के एल्डर का दफ्तर था। फर्श पर पुआल डाले सशस्त्र पुलिस के कुछेक सिपाही पड़े सो रहे थे। अव ओलेग को पता चला कि वह और निकोलाई निकोलायेविच चलते हुए सीधे जर्मन पुलिस थाने के पास चले आये थे। वहा मेज पर, चमडे के गहरे रग के एक केस मे फील्ड-टेलीफोन रखा था।

एक कारपोरल ने लालटेन की वत्ती बढायी और गुस्से से चिल्ला

चिल्लाकर ओलेग की तलाशी लेने लगा। सन्देह की कोई भी चीज न पाकर उसने ओलेग की जैकेट उतारी, और उसे जगह जगह टटोलने लगा। उसकी वडी वड़ी चम्मच के आकार जैसी उगलिया अपना काम वड़ी ही दक्षता और क़ायदे से कर रही थी। उन्हे ओलेग का कोमसोमोल कार्ड मिल गया और इसके साथ ही ओलेग ने समझ लिया कि अव उसकी घडी भी आ पहुंची।

कारपोरल ने हाथ से उसके कोमसोमोल कार्ड और सदस्यता के ख़ाली अस्थायी कार्डो को ढका और टेलीफोन पर फटे लहजे मे कुछ कहा, फिर चोगा रखा और ओलेग को पकड़कर लानेवाले सैनिक को कुछ आज्ञा-सी दी।

दूसरे दिन शाम के समय कारपोरल और एक सिपाही की रक्षा मे ओलेग को एक स्लेज मे विठाकर रोवेन्की ले जाया गया। यही सिपाही ड्राइवर का काम भी कर रहा था। रोवेन्की पुलिस तथा सशस्त्र पुलिस के हेडक्वार्टर मे ओलेग को ड्यूटी वाले सिपाही के हवाले कर दिया गया।

ओलेग, कोठरी के अभेद्य अधकार मे घुटनो के चारो ओर वाहे डाले अकेला वैठा था। यदि उस समय कोई आदमी उसका चेहरा देख पाता तो उसपर उसे शान्ति तथा दृढता का भाव मिलता। वह नीना, अपनी मा, या अपनी गिरफ्तारी के मूर्खतापूर्ण ढग की वात नही सोच रहा था। गाव के एल्डर के दफ्तर मे और स्लेज गाड़ी पर यात्रा करते समय उसने ये सारी वाते काफी समय तक सोची थी। आगे क्या होना था इसपर भी वह सोच-विचार नही कर रहा था—वह इसे अच्छी तरह जानता था। वह शान्त और दृढ था, क्योकि वह जानता था कि दुनिया मे उसकी छोटी-सी जिन्दगी के दिन पूरे हो चुके है।

"अच्छी वात है, मै सोलह का ही सही, पर इसमे मेरा क्या दोष कि मेरी जिन्दगी का रास्ता इतना छोटा निकला . . भय काहे का? मौत

का ? जुल्म का ? मै उनका सामना कर सकता हूं। वेशक, मै इस ढग से मरना पसन्द करता कि लोगो के दिलो मे मेरी याद बनी रहती। पर मान लो मै दुनिया की नजरो से दूर अधेरे मे मारा जाऊं—इस समय लाखो लोग ऐसे ही मर रहे है, मेरी तरह के लोग, जिनमे शक्ति है, जीवन के लिए प्रेम है। क्या मैने कभी कोई ऐसा काम किया है जिसकी भर्त्सना की जा सके ? मैने कभी झूठ नही बोला, आसान रास्ता नही चुना। हां, कभी कभी मैने क्षुद्रता दिखायी है,—शायद कमजोरी भी, लेकिन यह हृदय की दयालुता के कारण। लेकिन, ओलेग, सोलह वर्ष की उम्र मे यदि मैने ऐसा किया है तो इसे अपराध तो नही कहा जा सकता! जिस सुख का मै अधिकारी था वह भी मुझे नसीब न हुआ। फिर भी मै खुश हू। खुश हू इसलिए कि मैने किसी के आगे घुटने नही टेके, गिडगिडाया नही, उल्टे मैने मोर्चा ही लिया है। मा मुझे हमेशा अपना 'उडता हुआ उकाव' कहा करती थी। उसे अथवा मेरे साथियो को मुझपर जितना विश्वास था वह मै बनाये रखूगा। मै उस विश्वास के साथ गद्दारी न करूंगा। मेरी मृत्यु उतनी ही पवित्र हो जितना मेरा जीवन था—मुझे अपने आप से यह कहते शर्म नही आती। ओलेग, तुम इज्जत के साथ मरोगे, इज्जत के साथ "

उसके चेहरे की रेखाए समतल हो गयी। वह उसी ठढे और लसलसे फर्श पर पड रहा। उसकी टोपी उसके सिर के नीचे थी। वह खर्राटे भरने लगा।

वह उस समय जगा जब उसे लगा कि कोई उसके पास खडा है। सवेरा हो चुका था।

गठीले वदन का एक वूढा उसके सामने खड़ा था। चेहरे पर दाग, बड़ी वैंगनी-सी नाक, शरीर पर कज्जाकी ओवरकोट, सिर पर पोलिश टोपी जो उसके बडे और खिचडी बालोवाले सिर के लिए बहुत छोटी थी।

वह अपनी कीचडभरी आखो से ओलेग को घूर रहा था। कोठरी का दरवाजा उसके पीछे छिप-सा गया था।

ओलेग फर्श पर बैठ गया और साश्चर्य उसकी ओर देखने लगा।

"मै सोच रहा था—यह कोशेवोई भी कैसा आदमी होगा? तो यह है वह आदमी—साप का बच्चा! बदमाश! मुझे अफसोस है कि गेस्टापो तुम्हे सीख देगा—हमारे साथ रहते तो आराम से कटती। मै केवल खास खास लोगो को ही पीटता हू। तो तुम ऐसे दीखते हो! तुम तो दुब्रोव्स्की की तरह मशहूर हो। बेशक तुमने अपने पूश्किन को तो पढ़ा ही होगा। अरे, सांप के बच्चे! अफसोस कि तुम मेरे पजे मे नही फसे!" बूढा उसके ऊपर झुका और एक लसलसी आख नचाते तथा वोद्का से भरी सास ओलेग के चेहरे पर छोडते हुए बडे रहस्यपूर्ण ढग से बुदबुदाया—"तुम आश्चर्य कर रहे होगे कि मै इतनी जल्दी क्यो आ गया! आश्चर्य कर रहे हो न?" उसने बड़ी घनिष्ठता तथा विश्वास के साथ आख मारी, "आज मैं एक जत्था वहा, ऊपर, रवाना कर रहा हू!" उसने अपनी एक सूजी हुई उगली आकाश की ओर उठायी। "मै अपने साथ एक नाई लाया हू, उनकी हजामत बनाने के लिए, क्योकि मै हमेशा ऐसे लोगो की पहले हजामत बनवाता हू," वह फुसफुसाया। फिर वह सीधा खडा हुआ, एक गहरी सास ली और अगूठा उठाता हुआ बोला, "हम सभ्य है। लेकिन तुम गेस्टापो के हाथ मे हो और मै तुमसे ईर्ष्या नही करता। Au revoir!"* उसने अपनी सूजी हुई पुरानी उगली से अपनी टोपी की नोक छुयी और बाहर निकल गया। दरवाजा फटाक से बन्द हो गया।

जब ओलेग को एक ऐसी कोठरी मे तब्दील किया गया जहा दूर

---

*खुदा हाफिज।

दूर के और बिलकुल अपरिचित लोग भरे थे, तब कही उसे पता चला कि वह बूढा, रोवेन्की पुलिस का चीफ, ओर्लोव था, जो पहले एक देनीकिन अफसर हुआ करता था और अब एक बेरहम जल्लाद और कसाई था।

दो तीन घटो के बाद उसे पूछ-ताछ के लिए ले जाया गया। केवल गेस्टापो के अधिकारी ही उससे पूछ-ताछ करते थे। उनका दुभाषिया था एक जर्मन कारपोरल।

जिस कमरे मे उसे ले जाया गया था वहा जर्मन सशस्त्र पुलिस के कई अफसर मौजूद थे। सभी उसे बडे कौतूहल और आश्चर्य से देख रहे थे। कुछ ने तो उसे एसे घूरकर देखा मानो वे किसी बहुत बडे आदमी को देख रहे हो। बहुत-से मामलो मे ओलेग का ससार विषयक दृष्टिकोण अभी तक बाल-सुलभ था। इसी लिए सम्भवत॰ वह इस बात की कल्पना भी न कर सका था कि 'तरुण गार्ड' की प्रसिद्धि कितनी दूर दूर तक फैल चुकी थी। और वह स्वय भी पौराणिक नायक की भाति बन गया था। और इसके दो कारण थे—एक तो स्तखोविच का विश्वासघात और दूसरी यह बात कि जर्मन इतने समय तक उसे पकड़ने मे असमर्थ रहे थे। एक लचीला जर्मन उससे सवाल करता था। लगता था उसके बदन मे एक भी हड्डी नही। उसके चेहरे पर गहरे नीले रग के भयानक घेरे-से पडे थे जो उसकी प्राय काली काली पलको के कोनों से शुरू होकर, आखो के नीचे नीचे और गालो की हड्डियो तक होते हुए, धब्बो के रूप मे उसके धसे हुए कपोलो पर फैल गये थे। उसे देखकर आदमी पर बडा अस्वाभाविक प्रभाव पड़ता था। वह ऐसा भयानक लगता था मानो किसी दु स्वप्न मे उसे देख रहे हो।

ओलेग से कहा गया था कि वह 'तरुण गार्ड' दल के कार्यो के बारे मे बताये और उसके सदस्यो और समर्थको के नाम गिनाये। इसपर उसने जवाब दिया था—

"अकेला मैं ही 'तरुण गार्ड' का नेता हू और मेरे आदेशो से उसके सदस्यो ने जो कुछ किया है उसके लिए अकेला मै ही जिम्मेदार हू। अगर मुझपर किसी सार्वजनिक अदालत मे मुकद्दमा चलाया गया होता तो मैंने 'तरुण गार्ड' के कार्यों के विवरण दिये होते। किन्तु उन लोगो के सामने अपने दल के कार्यों की चर्चा करना बिलकुल बेकार समझता हूं जो निरपराधियो तक को मौत के घाट उतारते है," वह कुछ रुका, फिर चुपचाप अफसरो पर एक निगाह डाली, और बोला—"और फिर तुम सब भी तो मुर्दों ही की तरह हो, बिलकुल मुर्दों की तरह।"

बेशक वह जर्मन लाश जैसा ही लग रहा था। उसने दूसरा सवाल किया।

"मुझे जो भी कहना था यह तुम लोग सुन ही चुके हो," ओलेग ने कहा और पलके नीची कर ली।

इसके बाद ओलेग को उस कोठरी मे डाला गया जहा गेस्टापो तरह तरह के जुल्म करते थे। और वहा उसपर ऐसे ऐसे भयानक जुल्म हुए जो न सिर्फ आदमी की बरदाश्त के बाहर ही थे, बल्कि जिनके बारे मे दिल रखनेवाला कोई भी व्यक्ति कुछ नही लिख सकता।

ओलेग यह भयानक अत्याचार महीने के अन्त तक सहता रहा। उसे मौत के हवाले इसलिए नही किया गया था क्योकि इलाके के फेल्डकमाडाटुर मेजर-जनरल क्लेर का इन्तजार किया जा रहा था। मेजर-जनरल दल के लीडरो से स्वय पूछ-ताछ करने के बाद ही उनकी किस्मत का फैसला करना चाहता था।

ओलेग को यह न मालूम था कि फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव को भी, फेल्डकमाडाटुर द्वारा पूछ-ताछ किये जाने के लिए, रोवेन्की गेस्टापो के पास भेजा गया था। बेशक दुश्मन यह पता न चला सका था कि ल्यूतिकोव

क्रास्नोदोन खुफिया कम्युनिस्ट सघटन का भी लीडर है किन्तु उन्होंने यह समझ लिया था और अपनी आखो से देख भी लिया था कि उनके हाथो मे जितने लोग भी पडे थे उन सभी मे ल्यूतिकोव ही सबसे महत्वपूर्ण आदमी था।

## अध्याय २७

त्रिकोण के कोनो की तरह तीन ओर से मशीनगने पहाड़ियो के बीच के गड्ढे को छलनी कर रही थी। यह गढा दो कूवडोवाले ऊट की जीन जैसा दिखाई पड रहा था। गोलिया लसलसी वर्फ और कीच मे धसती हुई "ए यू . ए यू" जैसी आवाज करती-सी लग रही थी। किन्तु सेर्गेई जीन के दूर किनारे तक पहुच चुका था और उसकी वाहे पकडे हुए मजवूत हाथ उसे खाइयो मे घसीट रहे थे।

"तुम क्या करने जा रहे हो?" गोल आखोवाले एक नाटे से सर्जेंट ने शुद्ध कुर्स्क उच्चारण मे कहा—"तुम्हे शर्म नही आती। तुम रूसी लडके हो.. वे तुम्हे धमकिया देते रहे है, या फिर कुछ देने का वादा किया है उन्होने?"

"मै एक दोस्त हू, आप ही मे से एक," घवराकर हसते हुए सेर्गेई वोला, "मेरी जैकेट मे कागजात सिले हुए है। मुझे अपने कमाडर अफसर के पास ले चलो। मेरे पास वहुत जरूरी खवर है।"

डिवीजनल चीफ आफ स्टाफ के साथ सेर्गेई रेलवे लाइन के निकट की एक छोटी-सी खेतिहर वस्ती के एक छोटे-से मकान मे डिवीजनल कमाडर के सामने खडा था। इस वस्ती मे अकेला यही मकान वमो से अछूता वच रहा था। एक समय था जव यह वस्ती ववूल के पेडो की छाया मे पडती थी किन्तु वमो और गोलो ने उन्हे धराशायी कर दिया था। यह डिवीजनल हेडक्वार्टर था, इधर से कोई टुकडिया न गुजरती थी

और मोटर यातायात रोक दिया गया था। पहाडियो के पीछे होनेवाले युद्ध की गोलावारी की निरन्तर सुनाई पडनेवाली आवाज को छोड़कर, इस बस्ती और मकान के भीतर प्राय. शान्ति थी।

"मै केवल उसके कागजात से ही नही इसकी बातो से भी अपनी धारणा वना रहा हूं, यह लडका तो सभी कुछ जानता हे–स्थानीय भूगोल, भारी भारी तोपो की स्थिति, और २७, २८, १७ नवर के चौकोर क्षेत्रो मे रखी हुई तोपे तक. ." चीफ आफ स्टाफ वोला और कुछ नम्बर और गिना डाले। "इस लड़के से मिली वहुत-सी सूचना हमारे खुफिया लोगो से प्राप्त सूचना से मेल खाती है। कुछ मामलो मे तो उसने और भी अधिक ठीक ठीक सूचना दी है। और हा, दुश्मनो ने नदी के तटो पर टैंकमार सीधी ढाल वना ली है। याद है?" चीफ वोला। वह युवा अफसर था, वाल घुघराले और कधो पर तीन पट्टियोवाला विल्ला लगा था। समय समय पर उसके माथे पर वल पडते रहे और वह मुह के एक ओर से हवा निकालता रहा। उसका एक दात दर्द कर रहा था।

डिवीजनल कमाडर ने सेर्गेई के कोमसोमोल कार्ड तथा भद्दे ढंग से छपे हुए एक कागज की जाच की जिसमे 'तरुण गार्ड' के कमाडर तुर्केनिच और कमीसार कशूक के हस्ताक्षरो सहित कुछ अन्दराज थे जिन्हे हाथ से भरा गया था। कागज इस वात का प्रमाण-पत्र था कि सेर्गेई त्युलेनिन क्रास्नोदोन नगर मे 'तरुण गार्ड' खुफिया सघटन के हेडक्वार्टर का एक सदस्य है। उस कार्ड और कागज़ की जाच कर चुकने पर डिवीजनल कमाडर ने ये दोनो चीजे चीफ आफ स्टाफ को नही, जिससे वे चीजे उसे प्राप्त हुई थी, वल्कि, खुद सेर्गेई को लौटा दी और उसे सिर से पैर तक वडी दिलचस्पी के साथ देखने लगा।

"हूं," डिवीजनल कमाडर बोला।

चीफ आफ स्टाफ दर्द से तड़प रहा था और मुह के एक ओर से हवा निकाल रहा था।

"इसके पास कुछ जरूरी सूचना है जो वह केवल आपको देना चाहता है," वह बोला।

इसपर सेर्गेई ने उसे 'तरुण गार्ड' दल के बारे मे बताया और कहा कि मेरा ख्याल है कि जेल मे सडते हुए तरुणो की रक्षा के लिए डिवीजन तुरन्त आगे बढेगा।

डिवीजन को क्रास्नोदोन तक बढाने की इस सामरिक योजना को सुनकर चीफ आफ स्टाफ मुस्कराया। पर तभी दर्द से कराहा और अपना एक हाथ अपने गाल पर रख लिया। किन्तु डिवीजनल कमाडर जरा भी न मुस्कराया क्योकि वह डिवीजन को क्रास्नोदोन तक बढाने के प्रस्ताव को महज हवाई नही समझ रहा था।

"तुम कामेन्स्क से परिचित हो?" उसने पूछा।

"परिचित हू। किन्तु इस ओर से नही, दूसरी ओर से। मै उधर से ही होकर यहा तक आया हू ..."

"फ़ेदोरेंको!" कमाडर इतनी तेज आवाज मे चीखा कि वह कमरे के बाहर रखे हुए कुछ सैनिक बरतनो तक मे प्रतिध्वनित हो उठी।

उपर्युक्त तीन व्यक्तियो के अलावा प्रत्यक्षत: कमरे मे और कोई न था, फिर भी सहसा, एडिया चटकाता हुआ फेदोरेंको, जैसे सीधे आसमान से उतरकर कमाडर के सामने खड़ा हो गया।

"यह रहा!" वह बोला।

"पहले इस लडके को बूट दो, फिर कुछ खाना, फिर किसी गर्म जगह मे तब तक सोने दो जब तक मै उसे न बुलाऊ!"

"बूट, खाना, सोना, जब तक आप न बुलाये।"

"किसी गर्म जगह मे " चेतावनी की उगली दिखाते हुए कमांडर ने हुक्म दिया। "गुस्लखाना तैयार है?"

"जल्दी तैयार हो जायेगा कामरेड जनरल!"

"तो फिर जाओ!"

सर्जेंट फेदोरेंको ने सेर्गेई के कधे मे दोस्ताना ढग से हाथ डाला और दोनो घर से वाहर निकल आये।

"कमाडर-इन-चीफ आ रहे है," मुस्कराते हुए कमाडर वोला।

"यह भी अच्छा ही है!" स्टाफ-चीफ खुश हो गया और क्षण भर के लिए दात का दर्द भूल गया।

"अव हमे किलावन्दी मे जाना होगा। उन्हे गर्म कराने का कोई इन्तज़ाम ज़रूर कर लेना। वरना कोलोवोक* तुम्हे उल्टा टाग देगा," हंसते हुए डिवीजनल कमाडर वोला।

इस वीच कमाडर-इन-चीफ सो रहा था। डिवीजनल कमाडर ने उसे सैनिको द्वारा दिये गये उपनाम 'कोलोवोक' से सवोधित किया था। कमाडर-इन-चीफ अपनी कमान-चौकी पर था जो किसी मकान या वस्ती मे न होकर पेडो के एक झुरमुट मे किसी पुरानी जर्मन किलावन्दी मे वना ली गयी थी। यद्यपि सेना वहुत तेज़ी से आगे वढ रही थी, फिर भी कमाडर-इन-चीफ अपने इसी नियम को निभाये जा रहा था कि कमान-चौकी कभी वस्ती मे न हो। वह हर नयी जगह कमान-चौकी उन्ही किलावन्दियो मे वनाता था जिन्हे छोड छोडकर जर्मन भाग जाते थे। और यदि ऐसी सारी किलावन्दिया नष्ट हो चुकी होती तो वह अपने और

---

*कोलोवोक – छोटी, गोल-मटोल डवल-रोटी। एक लोक-कथा मे कोलोवोक वडी फुर्ती से, सभी कठिनाइया पार करती हुई, और तरह तरह के हिंसक पशुओ को चकमा देती हुई, पहाडो और मैदानो को पार करती जाती है।

अपने कर्मचारियो के लिए नयी खन्दके खुदवाता था, उसी तरह जिस तरह लडाई के शुरू के दिनो मे किया करता था। वह इस सिद्धान्त पर बड़ी दृढता से अमल करता था, क्योकि वह जानता था कि लडाई के आरभिक दिनो मे उसके बहुत-से प्रमुख सैनिक साथी इसी लिए हवाई हमलो मे मारे गये थे कि उन्होने अपने लिए खन्दके खुदवाना बेकार समझा था।

सेर्गेई त्युलेनिन इस समय जिस डिवीजन में मिल गया था इस डिवीजन की कमान, कमाडर-इन-चीफ के हाथो मे आये बहुत समय न गुजरा था। यह वही डिवीजन था, जिसे ठीक छ महीने पहले अपने कार्यों को इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको के छापामार दस्ते के साथ समन्वय स्थापित करके मिलकर कार्रवाइया करनी थी। और जो जनरल इस समय कमाडर-इन-चीफ था, वह वही जनरल था, जिसने छ महीने पूर्व, डिवीजनल कमाडर के नाते, क्रास्नोदोन जिला पार्टी कमिटी के दफ्तर मे प्रोत्सेको के साथ व्यक्तिगत रूप से सभी कुछ तय किया था। इसके बाद उस जनरल ने पहले वोरोशीलोवग्राद की रक्षा मे, फिर कामेंस्क की रक्षा मे और अन्तत जुलाई और अगस्त १९४२ के स्मरणीय पलायन के समय, एक कुशल 'रियरगार्ड' कार्रवाई मे नाम कमाया था।

कमाडर-इन-चीफ का एक सीधा-सादा और किसानी नाम था जो उसके बाप-दादा से चला आ रहा था। उपर्युक्त युद्धो के बाद यह नाम अन्य सैनिक नेताओ के साथ बडा मशहूर हो गया और उत्तरी दोनत्स और मध्य दोन के लोगो की जबान पर चढ गया। और अब, दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे पर दो महीनो की लडाइयो के बाद उस नाम ने भी, स्तालिनग्राद के महान युद्ध मे नाम कमानेवाले सैनिक नेताओ के साथ साथ, राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त कर ली थी। 'कोलोबोक' उसका नया उपनाम था, किन्तु वह स्वय इस नाम से बिलकुल अनभिज्ञ था।

कुछ मामलो मे यह नाम उसके अनुरूप भी था। नाटा-सा कद,

चौडे कंधे, चौडी छाती और गोल मजबूत, सरल रूसी चेहरा। उसकी वनावट से जरूर भारीपन नजर आता, किन्तु उसमे फुर्ती कट कूटकर भरी थी। उसकी छोटी छोटी आखें खुशी और मस्ती से छलकती रहती थी। उसकी प्रत्येक गति मे सफाई और फुर्ती थी। किन्तु 'कोलोवोक' नाम उसे उसकी वाहरी सूरत-शक्ल के कारण नही दिया गया था।

परिस्थितियो की शृखला से निकलकर अव वह उसी जमीन पर आगे वढ़ रहा था, जिसपर होकर वह जुलाई-अगस्त के महीनो मे पीछे भागा था। उन दिनो वडा भयंकर युद्ध चल रहा था, फिर भी वह वड़ी आसानी के साथ दुश्मनो के चगुल से छूटकर ऐसी दिशा मे निकल गया था जहां शत्रु उसकी परछाई भी नही देख सकता था।

इसके वाद वह उन सैनिक टुकड़ियो मे शामिल हुआ, जिन्होने वाद मे दक्षिण-पश्चिमी मोर्चा कायम किया था। तत्पश्चात् वह और उसके दूसरे साथी उस समय तक खाई-खन्दको मे रहते रहे जव तक कि उनकी अदम्य दृढता ने दुश्मन का कोप न तोड दिया। जव मौका आया तो वह और उसके साथी खन्दको से वाहर निकले। उसने पहले तो इस डिविजन की कमान हाथ में ली फिर उस सेना की, जिसने भागती हुई दुश्मन सेना का पहाडियो, और घाटियो सभी जगह पीछा किया था। उन्होने दोन से चीर तक और फिर चीर से और आगे दोनेत्स तक वढने के समय हजारो कैदियो को गिरफ्तार किया था और सैकडो तोपो पर कब्जा किया था। उसने दुश्मन की खास टुकडियो को जमीन चटायी थी और शत्रु के छितरे हुए दस्तो को इसलिए छोड दिया था कि दूसरी टुकडिया उनकी खवर ले।

ठीक ऐसे ही समय 'कोलोवोक' का परीकथा वाला नाम उसके सिपाहियो के दिलो से निकलकर उसपर चसपां हो गया। और वह परीकथा वाली डवल-रोटी की ही भाति वरावर आगे वढता रहा।

सेर्गेई ने जनवरी के मध्य में सोवियत सेना के साथ सम्पर्क स्थापित किया। इस समय जो परिवर्त्तन हुआ वह सोवियत सेना के पक्ष मे था। सोवियत सेना ने वोरोनेज, दक्षिण-पश्चिमी, दोन, दक्षिणी, उत्तरी काकेशिया तथा वोलखोव और लेनिनग्राद मोर्चो पर जवरदस्त हमले किये थे। तदनन्तर जर्मनो की फासिस्ट सेना को अन्तिम रूप से खदेड़ा और दुश्मन की टुकडियो को स्तालिनग्राद की ओर जानेवाले मार्गो पर घेरकर गिरफ्तार करने लगी। दो वर्षो से भी अधिक पुराना लेनिनग्राद का घेरा तोड डाला; और कोई छ सप्ताह के भीतर वोरोनेज, कुर्स्क, खार्कोव, क्रास्नोदोन, रोस्तोव, नोवोचेर्कास्क और वोरोशीलोवग्राद नगर आजाद कर लिये थे। सेर्गेई सोवियत सेना मे तव पहुचा जव, देर्कूल, ऐदार और ओस्कोल—दोनेत्स की तीन उत्तरी सहायक नदियो के साथ साथ, जर्मनो की रक्षा-पक्तियो पर टैको से जवरदस्त हमला किया जा रहा था, जव कामेस्क-कन्तेमीरोव्का रेलवे पर मील्लेरोवो के इर्द-गिर्द घेरा डालकर जर्मन सेना का मोर्चा तोडा जा चुका था और दो दिन पहले ग्लुवोकाया स्टेशन पर कब्जा कर चुकने के वाद सोवियत सेना उत्तरी दोनेत्स को पार करने की तैयारी कर रही थी।

डिवीजनल कमाडर सेर्गेई से वातचीत कर रहा था। इस वीच कमाडर-इन-चीफ सो रहा था। सभी कमाडिग-अफसरो की भाति वह भी आदतन, सभी जरूरी तैयारिया तथा काम रात ही मे कर लेता था जब ऐसी कार्रवाइयो से असवद्ध कोई भी व्यक्ति वाधक न हो सकता था और वह स्वय सेना के कार्यो की व्यस्तता से मुक्त रहता था। इस समय सर्जेट-मेजर मीशिन अपनी कलाई पर लगी घडी पर, जो उसे विजयोपहार मिली थी, निगाह डालता हुआ सोच रहा था—जनरल को जगाने का वक्त हो गया। (सर्जेट-मेजर मीशिन पीटर महान की तरह ही भारी-भरकम आदमी था, जिसका, सेना के कमाडर-इन-चीफ जनरल के

प्रति वही स्थान था जो सर्जेंट फेदोरेको का डिवीजन के जनरल के प्रति था )।

कमांडर-इन-चीफ को कभी पूरी नीद नसीव न होती। इस दिन तो उसे रोज से पहले ही जाग जाना था। यह एक सयोग की ही वात है– और ऐसे सयोग युद्धकाल मे प्राय देखने को मिलते है–कि जो डिवीजन जुलाई मे उसकी कमान मे कामेस्क की रक्षा के लिए लडा था अव उसी को फिर से नगर पर अधिकार करना था। 'पुराने सैनिको' मे से वहुत कम अव डिवीजन मे रह गये थे। उसका कमाडिंग अफसर, जो अभी हाल ही मे एक जनरल वन गया था, उस समय एक रेजीमेन्टल कमाडर था। वेशक अफसरों के वीच उसके जैसे कुछ 'पुराने सैनिक' अव भी मिल सकते थे किन्तु साधारण सैनिको मे उनकी सख्या वहुत कम थी। डिवीजन के ९/१० सैनिक ऐसे थे जो मध्य दोन के किनारे किनारे के हमले से पहले उसके डिवीजन में वदली करके रखे गये थे।

सर्जेंट-मेजर मीशिन ने अन्तिम वार अपनी घडी पर निगाह डाली और उस तख्ते की ओर वढा जिसपर जनरल सो रहा था। यह सावारण-सा तख्ता था। जनरल को हमेशा नमीं से डर लगता था अत. वह हमेशा अपना विस्तर रेल के डिव्वे मे ऊपरी वर्थ की भाति, दूसरी मजिल पर ही लगवाता था।

जनरल एक करवट सो रहा था। उसके चेहरे पर उस स्वस्थ व्यक्ति जैसा वाल-सुलभ भाव था जिसकी आत्मा निर्दोप, निष्कपट होती है। मीशिन ने जनरल को जगाने के लिए उसे जोर से झकझोरा। किन्तु इससे उसकी योद्धाओ जैसी नीद न टूटी। यह तो पहला कदम था। इसके वाद मीशिन हमेशा दूसरा कदम उठाता था। उसने एक हाथ जनरल की कमर मे और दूसरा कधो के इर्द-गिर्द डाला और उसे वैसे ही सीधा वैठा दिया जैसे वच्चे को विठाया जाता है।

जनरल चोगा पहने सो रहा था। वह पलक मारते जग गया और मीशिन की ओर ताकती हुई उसकी आखे इतनी साफ थी मानो वह अभी अभी सोकर उठा ही न हो।

"धन्यवाद," वह बोला। वह बडी फुर्ती से बिस्तर से कदा, अपने वालो पर हाथ फेरा, एक स्टूल पर बैठा और इधर-उधर नाई को देखने लगा। मीशिन ने उसके पैरो के पास एक जोडी स्लीपर रख दिये।

नाई, चमडे के बडे बड़े बूट और अपने फ़ौजी कोट पर वर्फ जैसा सफेद पेशबन्द पहने हुए, खदक के रसोईघर वाले भाग मे खडा खड़ा साबुन का फेन तैयार कर रहा था। तब वह प्रेत की तरह चुपचाप कमाडर की बगल मे आया, एक तौलिया उसके चोगे के कालर मे खोसा, और हल्के हल्के उसकी दाढी पर ब्रश से फेन लगाने लगा। रात भर मे ही उसके चेहरे पर ठूठ जैसे काले, सख्त बाल उग आये थे।

कोई पन्द्रह मिनट के भीतर ही जनरल, पूरी वर्दी पहने और अपनी इकहरी जैकेट के गले तक बटन लगाये अपनी मेज पर बैठ गया। उसका नाश्ता मेज पर लगाया जा रहा था और उसका ऐडजुटेट लाल अस्तर वाले चमडे के एक बैग मे से कुछ कागजात निकाल निकालकर उसके सामने रख रहा था। जनरल एक एक कर इन कागजो पर निगाह दौड़ाये जा रहा था। पहले कागज मे अभी अभी प्राप्त एक रिपोर्ट थी जिसमे मील्लेरोवो पर अधिकार कर लिये जाने की सूचना दी गयी थी, किन्तु वस्तुत: जनरल के लिए यह कोई खबर न थी। वह जानता था कि निश्चय ही मील्लेरोवो पर रात में या सुबह कब्जा हो जायेगा। फिर दैनिक मामलो की बारी आयी।

"इसका तो शैतान भी पता नही लगा सकता और अगर उन्होने चीनी पर कब्जा कर लिया है तो वे उसे अपने पास रखे रहे!.. सफ्रोनोव को 'साहस के लिए' जो तमगा मिला है उसके स्थान पर उसे

'लाल सैनिक ध्वज' पदक दिया जाये। डिवीजनल स्टाफ के लोग शायद समझते है कि साधारण सैनिको के लिए केवल तमगों की सिफारिश की जा सकती है, और अफसरो के लिए पदको की! अभी तक उन्होने उसे गोली से नही उडाया? यह तो फौजी अदालत न हुई, बल्कि 'खुली वातचीत'* के सपादक-मण्डल जैसी कोई चीज लग रही है। उसे तुरन्त गोली मार दी जानी चाहिए वरना वे सभी फौजी अदालत के सामने आयेगे। हुह! शैतान उसको सभाले 'मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे तबादले का निमंत्रण दे ..' मै खुद एक साधारण सैनिक रहा हू, पर मुझे यह विश्वास है कि रूसी मे ऐसी वात इस प्रकार नही कही जाती। क्लेपिकोव ने बिना पढे हुए ही इन कागजो पर दस्तखत मार दिये है। उससे कहो इसे अच्छी तरह पढे, उसकी गल्तिया नीली या लाल पेसिल से ठीक करे और खुद यह कागज मेरे सामने रखे! नही, नही, आज तुम मेरे सामने ढेरो कूड़ा-करकट ले आये हो। यह सब काम रुक सकता है," जनरल वोला और नाश्ते पर जुट गया।

कमाडर-इन-चीफ अभी कॉफी पी रहा था कि वैग लिये हुए एक जनरल उससे मिलने अन्दर आया। वह नाटे कद का आदमी था—गभीर, चुस्त, उसकी प्रत्येक हरकत से सयम तथा यथार्थता का भास होता था। पीला-सा पड़ा हुआ उसका माथा कुछ ऊचा उठा-सा, शायद इसलिए कि सामने उसका सिर गजा था और वाल कनपटी पर महीन कटे थे। वह सैनिक अफसर कम, प्रोफेसर अधिक लग रहा था।

"वैठिये," कमाडर-इन-चीफ वोला।

स्टाफ-चीफ, ऐडजुटेट द्वारा कमाडर-इन-चीफ के समक्ष रखे हुए कामो से अधिक जरूरी काम से आया था। किन्तु, ऐसे किसी भी काम को उठाने

---

*क्रान्तिपूर्व काल मे बच्चो की एक पत्रिका।

से पहले उसने, मुस्कराते हुए, मास्को के एक अखबार का सबसे नया सस्करण उसके हाथो मे थमा दिया। यह अखबार हवाई जहाज द्वारा मोर्चे पर लाया गया था और उसी दिन सुबह सेना के भिन्न भिन्न हेड्क्वार्टरों को बाट दिया गया था।

इस पत्र मे उन अफसरो और जनरलो के नाम थे जिन्हे अभी सम्मानित और पदोन्नत किया गया था। इनमे से कई लोग स्वय उसी की सेना के थे।

सेना के लोगो की ही तरह की उत्कट अभिरुचि दिखाते हुए कमाडर-इन-चीफ ने इन लोगो के नाम शीघ्रता से और जोर जोर से पढे। और जब कभी उसके सामने किसी ऐसे व्यक्ति का नाम आ जाता था जिसे वह सैन्य अकादमी से ही जानता था या जिसे युद्ध के दौरान मे जानने लगा था, तो वह स्टाफ-चीफ पर भी एक नजर डाल लेता था। उसकी यह नजर कभी कभी बड़ी सारगर्भित, कभी आश्चर्यचकित और कभी सदेहभरी-सी लगती थी। कभी कभी उसका चेहरा बच्चो की तरह खिल उठता खासकर जब इसका सम्बन्ध उसकी अपनी सेना से होता था।

उस सूची मे उस डिवीजन के कमाडिग अफसर का नाम भी था, जो डिवीजन कभी 'कोलोवोक' के अधीन रहा था। कभी उपर्युक्त स्टाफ-चीफ भी उस डिवीजन मे रहा था। उस डिवीजनल कमाडर को पहले भी कई बार सम्मानित किया जा चुका था। इस बार भी उसे उसकी पिछली सेवाओ के लिए सम्मानित किया गया था। हा, सम्बन्धित सिफारिश को सामान्य प्राधिकारियो से होकर गुजरने मे कुछ समय जरूर लग गया था। समाचारपत्रो मे तो यह खबर अब छपी थी। "यह कौन-सा मौका है उसे खबर देने का—ठीक जब उसे कामेस्क पर अधिकार करना है!" कमाडर-इन-चीफ बोला, "इस से वह घबरा जायेगा।"

"नही, बल्कि उसका उत्साह बढेगा," मुस्कराते हुए स्टाफ-चीफ़ ने कहा।

"मै जानता हू, मै तुम्हारी सारी कमजोरिया जानता हू! . आज मै उससे मिलकर उसे वधाई दूगा। चुवीरिन और खारचेको को भी बधाई के तार भेज दो। और कूकोलेव को भी तार मे कोई मैत्रीपूर्ण बात लिख देना। किन्तु उसमे औपचारिकता जरा भी न हो, वस दोस्ताना बात हो। मुझे सचमुच उसके लिए वडी खुशी है। मै तो सोच रहा था कि व्याज्मा कार्रवाई के वाद वह फिर कभी सतुलित हो भी सकेगा या नही," कमाडर-इन-चीफ वोला और सहसा उसके चेहरे पर एक चतुरतापूर्ण मुस्कान विखर गयी। "कधे की पट्टिया कव तक आ रही है?"

"वे भेजी जा चुकी है," स्टाफ-चीफ ने कहा और फिर मुस्करा दिया।

अभी कुछ ही पहले इस आशय का एक आदेग छपा था कि सैनिको, अफसरो और जनरलो को कधे की पट्टियो के विल्ले दिये जायेगे और इस आदेश मे सारी सेना की दिलचस्पी थी।

डिवीजनल कमांडर ने तो केवल अपने स्टाफ-चीफ से कहा ही था कि कमाडर-इन-चीफ आनेवाले है लेकिन यह खबर बिजली की गति से सारे डिवीजन मे फैल गयी और उन लोगो के कानो मे भी पडी जो दोनेत्स के समतल किनारे पर वर्फ और कीचड मे लेटे हुए अपनी आखे नदी के दाहिने किनारे और कामेस्क की इमारतो पर गडाये हुए थे। इमारतो से धुएं के काले काले वादल उठ रहे थे। नगर के ऊपर सोवियत वमवर्षक विमान वम वरसा रहे थे।

कमाडर-इन-चीफ अपनी कार मे डिवीजन के दूसरे व्यूह की ओर वढा और वहा उसकी मुलाकात खुद कमाडर से हुई। इसके वाद दोनो पैदल ही डिवीजनल हेडक्वार्टर की ओर वढे। रास्ते मे उन्हे अलग अलग, या छोटी छोटी टोलियो मे, सैनिक और अफसर दिखाई पडते और प्रत्येक यही चाहता कि न स्वय वे ही अपने जनरल को देखे वल्कि वह भी उन्हे

देखे। उसे देखते ही वे वडी चुस्ती से एटेंशन खडे हो जाते और उनके चेहरो पर उत्सुकता और मुस्कान झलकने लगती।

"स्वीकार करो कि अभी एक ही घंटा पहले तुम किलाबन्दी मे आये हो। शैतान तुम्हे ले जाये। अजी इसकी दीवालो तक से पसीना नही वह रहा है," कमाडर-इन-चीफ वोला। उसने डिवीजनल कमाडर की चाल समझ ली थी।

"ठीक, ठीक कहू तो दो घटे पहले। और जव तक हम कामेस्क नही ले लेते इसे नही छोड़ेगे," डिवीजनल कमाडर ने कहा। वह वडे आदर के साथ कमाडर-इन-चीफ के सामने खडा हो गया। उसकी आखो मे चतुराईभरी मुस्कराहट झलक उठी और उसके मुख का शांत भाव मानो यह कहता सा लग रहा था, "मै अपने डिवीजन का सर्वेसर्वा हू और आप मुझे पूरी गभीरता के साथ किस वात के लिए फटकार वता सकते है, यह मै जानता हूं, पर यह वडी मामूली वात है।"

कमाडर-इन-चीफ ने उसे उसके सम्मानित किये जाने पर वधाई दी। तभी एक उपयुक्त अवसर मिलने पर डिवीजनल कमाडर ने वातो वातो मे कहा—

"महत्त्वपूर्ण मामलो पर वात करने से पहले . यहां से कुछ दूर एक देहाती गुसलखाना है जो सही-सलामत है। हम पानी गर्म कर रहे है। मेरा ख्याल है कि आप वहुत समय से नहा नही पाये होगे, कामरेड जनरल।"

"क्या सचमुच गुसलखाना है?" जनरल ने वडी गभीरता से कहा, "पर क्या पानी तैयार है?"

"फेदोरेको।"

तभी पता चला कि गुसलखाना कोई शाम तक तैयार होगा। डिवीजनल कमांडर ने फेदोरेको पर एक निगाह डाली जिसका निश्चित अर्थ यह था कि वह वाद मे उसकी अच्छी तरह से खवर लेगा।

"आज शाम तक .." कमांडर-इन-चीफ सोच रहा था कि शायद कोई चीज स्थगित की जा सकती है, या शायद बिलकुल रद्द की जा सकती है। तभी उसे कुछ याद आया कि चलते चलते उसने एक और काम करने का भी निश्चय किया था। "मै यह काम किसी दूसरे वक्त के लिए स्थगित कर दूगा," वह बोला।

सेना का स्टाफ-चीफ सेना भर मे एक ऐसा सैनिक समझा जाता था जो गलती नही करता। उसके परामर्श से डिवीजनल कमाडर ने कामेस्क पर कब्जा करने की अपनी योजना बनायी थी, जिसे इस समय वह कमाडर-इन-चीफ को समझा रहा था। कमाडर-इन-चीफ ने सब कुछ सुना, फिर असतोष प्रगट करने लगा।

"यह कैसा त्रिकोण है: नदी, रेलवे, नगर के बाहर की सीमाए— सभी पर किलाबन्दी है।"

"मुझे भी वही सन्देह हुआ था किन्तु इवान इवानोविच ने ठीक ही यह बताया कि ..."

इवान इवानोविच, सेना का स्टाफ-चीफ था।

"तुम वहा आगे बढते जाओगे और तुम्हे पीछे से फैलने की कोई जगह न मिलेगी। जितना ही तुम आगे बढते जाओगे, वे तुम्हारी तादाद कम करते जायेगे," कमाडर-इन-चीफ ने इवान इवानोविच के सवाल को सामने न लाते हुए कहा।

किन्तु डिवीजनल कमाडर जानता था कि इवान इवानोविच के विशेष अनुभव की सहायता से उसकी अपनी स्थिति मजबूत होती थी। इसलिए उसने फिर कहा—

"इवान इवानोविच की राय है कि दुश्मन सभवत इस बात की आशा नही करता कि उसपर इस दिशा से कोई सामने का आक्रमण किया जायेगा। वह यही समझेगा कि यह उसका ध्यान बटाने के लिए की गयी

एक कार्रवाई है। फिर हमारी गुप्त रिपोर्टें भी इसी की पुष्टि करती है।"

"तुम जैसे ही यहा से नगर मे घुसोगे कि वे लोग सडको से और स्टेशन से नदी की बाढ़ की तरह तुमपर टूट पड़ेंगे, यहा ..."

"इवान इवानोविच ..."

कमाडर-इन-चीफ को लगा कि जब तक इवान इवानोविच नामक वाधा दूर नही की जाती तव तक वे किसी निष्कर्ष पर न पहुच सकेंगे।

"इवान इवानोविच गलती पर है," वह बोला।

कमाडर-इन-चीफ ने अपना विचार, अपने चौड़े हाथ और छोटी छोटी उगलियो के छोटे छोटे सारपूर्ण इशारो से समझाना शुरू किया। वह नक्शे पर किसी काल्पनिक स्थल को लेकर बताने लगा कि चक्कर काटकर नगर को घेरना और एक बिलकुल ही भिन्न दिशा से उसपर सामने से हमला वोलकर उसपर कब्जा करना ठीक होगा।

डिवीजनल कमाडर को उस लड़के की याद आयी जो उसी दिन सुवह नगर की वाहरी सीमा से मोर्चा पार कर उस दिशा से आया था, जहा से कमाडर-इन-चीफ प्रधान आक्रमण करना चाहता था। सहसा, विना किसी प्रयास के, उसके मस्तिष्क मे नगर पर आक्रमण करने की सारी योजना स्पष्ट हो गयी।

रात होते होते डिवीजनल हेडक्वार्टर मे सभी प्रमुख और निश्चयात्मक मामले तय हुए और रेजीमेंटो को उनकी सूचना दे दी गयी। कमाडर अव गुसलखाने मे गये। यह सचमुच वडी विचित्र वात थी कि जहा कभी कोई छोटा-सा गाव रहा था, वहां का गुसलखाना अछूता छूट गया था।

पाच वजे सुवह डिवीजनल कमाडर और राजनीति विभाग का

उसका सहायक रेजीमेंटो की तैयारियो की जांच-पड़ताल करने के लिए दौरे पर निकले।

रेजीमेन्टल कमाडर, मेजर कोनोनेको की किलाबन्दी मे रात भर कोई भी सोया न था। सारी रात, सीनियर अफसरो से लेकर जूनियर कमांडर तक सभी को आगामी आक्रमण के छोटे-से छोटे यहा तक कि व्यक्तिगत पहलू तक के सम्वन्ध मे आज्ञाए दी जाती रही। निश्चय ही ये सारे ब्योरे वहुत ही आवश्यक और निर्णयात्मक थे।

यद्यपि सारी आज्ञाए और व्याख्याए स्पप्ट की जा चुकी थी, फिर भी डिवीजनल कमाडर ने अपनी कार्यपद्धति के अनुसार वह सभी कुछ एक वार फिर दुहराया जो पिछले दिन कहा जा चुका था और मेजर कोनोनेको ने जो जो कार्रवाइया की थी उन सभी की जाच-पडताल की।

मेजर एक जवान आदमी था। मजदूर किस्म का एक विशिष्ट सैनिक। उसका चेहरा दुवला-पतला किन्तु साहसी और फुर्तीला था। स्वेटर के ऊपर फौजी कमीज और कमीज के ऊपर रूईदार जैकेट और पतलून पहने हुए था। उसने अपना फौजी ओवरकोट निकाल फेंका था क्योकि उससे उसके चलने-फिरने और काम करने मे बाधा पडती थी। इस समय वह सयम के साथ डिवीजनल कमाडर की वाते सुन रहा था, हालाकि उसका सारा ध्यान उन्ही वातो की ओर न था क्योकि जो कुछ भी कमाडर को कहना था वह सभी कुछ जवानी जानता था। इसके वाद उसने स्वय जो कुछ भी किया था उसकी रिपोर्ट दी।

सेर्गेई को इसी रेजीमेंट मे रखा गया था। उसने भी डिवीजनल हेडक्वार्टर से लेकर कम्पनी कमाडर तक सभी से वाते की थी। उसे एक टामी-गन और दो हथगोले दिये गये थे और उस आक्रमणकारी दल में रखा गया था जिसे कामेस्क के पास के चौराहो से होकर सवसे पहले नगर मे घुसना था।

पिछले कुछ दिनों से मामली-सा बर्फीला तूफान उस खुले और ऊर्मिल क्षेत्र मे उठ रहा था। इस क्षेत्र मे कामेस्क के आसपास झाडिया थी। दक्षिणी वायु के कारण कुहरा बढ गया था। खुली जमीन पर जहा वर्फ गहरी न थी वह अब पिघलने लगी थी और सड़कों और मैदानो मे कीचड़ और पानी बहने लगा था।

बमो और गोलो ने दोनेत्स के दोनो किनारो पर बसे हुए समस्त गावो और खेतिहर बस्तियो को गहरा नुक्सान पहुचाया था। सैनिक टुकडिया पुरानी खदको, खाइयो और खेमो मे या खुले आकाश के नीचे पडी थी, जहा वे आग तक न जला सकती थी।

आक्रमण के पहले सारे दिन नदी के उस पार के धुधलके मे सारा नगर दिखाई पडता रहा—नगर काफी बडा था, वीरान सडको का जाल, मकानो की छतो से ऊपर उठी हुई स्टेशन की पानी-टकी, गिरजो की ध्वस्त मीनारे, और कारखानो की कुछेक चिमनिया जो अभी तक सही-सलामत खडी थी। नगर के सीमा-क्षेत्रो और बाहर की पहाडियो पर जर्मनो के छोटे छोटे दुर्गनुमा मकान आसानी से देखे जा सकते थे।

यह नगर अच्छी-खासी आबादी वाला था जिसे आजाद कराने के लिए युद्ध शुरू होनेवाला था। युद्ध के कुछ ही पहले फौजी ओवरकोट पहने हुए सोवियत नागरिक को एक विचित्र-सी अनुभूति होती है। वह अपने को नैतिक रूप से बहुत उत्साहित महसूस करता है क्योकि वह, याने फौजी ओवरकोट पहने हुए वह आदमी, यह महसूस करता है कि उसे किसी ऐसी चीज को आजाद कराने के लिए निकल पडना है जो उसे बहुत प्रिय है। नगर के प्रति तथा सर्द तहखानो और नम खदको मे छिपे हुए उसके नागरिको के प्रति, माताओ और नन्हे नन्हे बच्चो के प्रति उसकी सहानुभूति उमडती है और उसे अपने दुश्मनो पर क्रोध आता है क्योंकि वह अपने अनुभव से जानता है कि उसका शत्रु दूनी

और तिगुनी ताकत से उसका सामना करेगा इसलिए कि वह, अपने अपराधो और उनके लिए उसे भविष्य मे मिलनेवाले दड से पूर्णत. अवगत है। उसका मस्तिष्क इस विचार से कुछ कुछ व्यथित रहता है कि उसके आगे मौत का खतरा है और काम कठिन है। और ऐसे कितने ही दिल होगे जो भय की स्वाभाविक अनुभूति से दहल उठते है!

किन्तु ऐसी अनुभूतिया कोई भी सैनिक प्रकट नही कर रहा था। सभी खुश थे, चहक रहे थे, हसी-मजाक कर रहे थे।

"एक वार जब 'कोलोबोक' काम अपने हाथ मे ले लेता है तो वह लुढकता-पुढकता ठीक जगह पर पहुच जरूर जाता है," उन्होने कहा, मानो स्वय वे नही, वल्कि खुद परी-कथा का प्रसिद्ध कोलोबोक ही लुढकता-पुढकता नगर मे पहुचने को था।

सेर्गेई जिस आक्रामक दल मे था वह उसी सर्जेंट की कमान मे था जिससे वह मोर्चा पार करने के बाद पहले-पहल मिला था। वह नाटा, खुशमिजाज और फुर्तीला था। उसके पूरे चेहरे पर बारीक झुर्रिया थी और आखे नीली और वडी वडी। आखो मे इतनी चमक थी कि वे जव तव रग वदलती-सी लगती थी। उसका नाम था कयूत्किन।

"तो तुम क्रास्नोदोन के रहनेवाले हो?" उसने सेर्गेई से पूछा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता, पर कुछ कुछ अविश्वास का भाव झलक रहा था।

"शायद आप वहा हो आये है?" सेर्गेई ने पूछा।

मै वहा के रहनेवाले एक मित्र से मिला था—एक लडकी से," कयूत्किन ने कुछ उदास होकर कहा, "वह नगर से वाहर रहने जा रही थी। मैने उसे सडक पर देखा और हम दोनो दोस्त वन गये. वह सचमुच वडी खूबसूरत थी मै क्रास्नोदोन से होकर गुजर रहा था।" वह कुछ रुका और फिर कहने लगा, "कामेस्क की रक्षा मे भी मैने भाग लिया था। नगर की रक्षा करनेवाले सभी लोग या तो

मार डाले गये थे या वन्दी वना लिये गये थे। सिवा मेरे... और आखिर मैं यहा लौट आया। तुमने ये पक्तिया सुनी है?" उसने वडी गभीरता से कविता-पाठ शुरू कर दिया—

हमले हुए, हुआ हू घायल—
लेकिन, अव तक सही-सलामत हू—
न एक है दाग वदन पर;
तीन वार घिर गया—कि वोला, शत्रु
'फस गया—फास लिया है।'
पर, तीनो ही वार निकल भागा हू वचकर।
विकट समय भी देख चुका हूं—
हवा रही है आग उगलती
दाये-वाये, नीचे-ऊपर—
वाड़ो मे भी उलझ गया हू,
पर, वेदाग सदा निकला हू चक्रव्यूह से।
अकसर चिर-पहिचाने पथ पर
फौजो के कदमो से उडती धूल कि वादल-घटा वनी है
और कि इस वादल ने मुझको ढाक लिया है—
दुश्मन फतवा देने लगे—'उखाडा पैर कि हमने।'—
प्राय वोले—'अरे, नेस्तनावूद कर दिया—
उसका नाम-निशान मिट गया।'

"यह कविता मेरे जैसे लोगो के लिए लिखी गयी है," वह दात दिखाते हुए वोला और मेर्गेई को आख मारने लगा।

दिन वीता। रात आयी। इधर डिवीजनल कमाडर मेजर

कोनोनेको को सुपुर्द किये हुए कार्यो को उसके आगे फिर एक वार दुहरा रहा था, उधर वे सैनिक सो रहे थे जिन्हे हमले मे भाग लेना था। सेर्गेई भी सो रहा था।

सुवह छ वजे उन्हे अर्दलियो ने जगाया। उन्हे एक एक जाम वोद्का, एक एक कटोरा गोश्त का शोरवा और वाजरे का ढेर-सा दलिया दिया गया। फिर कोहरे, झाडियो और घास मे लुकते-छिपते वे अपने आक्रमण-स्थलो की ओर वढने लगे।

उनके पैरो के नीचे की जमीन वर्फ और कीचड से लसलसी हो रही थी। दो सौ गज के परे कुछ भी नही दिखाई पड़ता था। जैसे ही आखिरी दल दोनेत्स के किनारे पहुचे और लसलसी भूमि पर लेटे कि भारी तोपे गरज उठी।

गोलावारी वड़े क्रम से हो रही थी, किन्तु तोपे इतनी अधिक थी कि गोलावारी और विस्फोटो की ध्वनिया मिलकर एक भयानक गर्जन पैदा कर रही थी।

क्यूत्किन की वगल मे लेटे लेटे, सेर्गेई ने आग के लाल लाल गोले सिर के ऊपर से जाते हुए और दाहिनी ओर का कोहरा चीरते हुए नदी को पार करते देखे। कुछ गोले एकदम गोल थे तो कुछ दुमदार। उसने गुजरते हुए गोलो की सनसनाहट, दूसरे किनारे पर होता हुआ उनका विस्फोट और नगर मे और दूर पर होनेवाले विस्फोटो की ध्वनिया सुनी। इन सभी ध्वनियो से वह और उसके साथी उत्साहित हो उठे थे।

जर्मन अपने गोले केवल उन्ही स्थानो पर फेक रहे थे जहां, उनके ख्याल से फौजी टुकड़िया जमी हुई थी। उन्हे जव-तव नगर की ओर से छ नलियोवाले-मार्टर के दगने की आवाज सुनाई पडती थी जिसे सुनकर प्राय. क्यूत्किन कुछ भय से कह उठता था "ओई ओई . वह चला गोला!"

सहसा सेर्गेई के पीछे कही दूर से, भयानक गरज सुनाई पडी जो वढती वढती सारे क्षितिज तक फैल गयी। किनारे पर पडी हुई टुकडियों के सिरो के ऊपर एक भनभनाती हुई सी आवाज सुनाई दी और दूसरे किनारे पर, गोलो के विस्फोट के साथ ही साथ, घना काला धुआ फैल गया।

"कत्यूशा के मुह खुल गये है," कयूत्किन बोला। वह तनाव की स्थिति मे पडा था। उसका झुर्रीदार चेहरा सख्त और निर्मम दिखाई पड रहा था। "अब एक ऐसा गोला और, और "

भनभनाहट की आवाज अभी दवी भी न थी और दूर पर कही विस्फोट अभी तक हो ही रहे थे कि सेर्गेई अपनी कम गहरी खाई मे से उछलकर नदी पर जमी बर्फ पर दौडने लगा था। कोई आज्ञा दी गयी थी या नही यह उसने न सुना था। उसने तो कयूत्किन को उछलते और भागते हुए देखा था और खुद भी भागने लगा था।

उसे लगा कि सैनिक बिलकुल नि शब्द, बर्फ पर से होकर दौड़ रहे है। वस्तुत. दूर के किनारे से उनपर गोलावारी हो रही थी और लोग बर्फ पर गिर रहे थे। काला काला धुआ और गन्धक की महक, कुहरे मे से होती हुई, भागती हुई सेना की ओर बढ रही थी। किन्तु सैनिको ने पहले ही समझ लिया था कि सभी कुछ ठीक ठीक किया गया है और उसका परिणाम भी सुखद ही होगा।

सहसा खामोशी छा गयी जिससे स्तंभित होकर जैसे सेर्गेई एक गोले से बने हुए एक गड्ढे मे कयूत्किन की बगल मे लेट गया वहा उसे होश आया। कयूत्किन भयानक तरह से मुह वनाता हुआ, ठीक अपने सामने अपनी टामी-गन किसी निशाने पर चला रहा था। सेर्गेई ने कोई पचास फुट दूर एक अधपटी खाई मे से एक मशीनगन की हिलती हुई नली देखी और वह स्वय भी खाई मे गोली चलाने लगा। मशीनगन

चलानेवाले ने न तो सेर्गेई को ही देखा और न कयूत्किन को ही, वह तो किसी दूर की चीज को निशाना बना रहा था। दोनो ने उसे फौरन मौत के घाट उतार दिया।

नगर उनकी दाहिनी ओर काफी दूरी पर था। उनके रास्ते पर प्राय. कोई गोलाबारी नही हो रही थी। वे नदी तट से दूर, और दूर, स्तेपी मे बढ़ते चले जा रहे थे। पर कुछ देर बाद, नगर से चलाये जानेवाले गोले स्तेपी में, उनकी प्रगति के सारे रास्ते पर पडने लगे।

तब कुहरे से दिखाई न पडनेवाली छोटी छोटी खेतिहर बस्तियो से, जिन्हे सेर्गेई अच्छी तरह जानता था, उन्होने मशीनगनो और आटोमेटिक बन्दूको से होनेवाली गोलाबारी की आवाजे सुनी। वे एक गड्ढे मे उस समय तक पडे रहे जब तक उनका हल्का तोपखाना नही पहुच गया और खेतिहर बस्तियो पर सीधी गोलाबारी शुरू नही कर दी। अन्तत सैनिको के दल, अपनी अपनी हल्की तोपे लेकर बस्तियो मे घुस गये। सभी तोपची जैसे मतवाले हो रहे थे। तभी बटालियन कमाडर आया और सिगनलर एक गिरे हुए पक्के मकान के तहखाने मे टेलीफोन के तार दौड़ाने लगे।

इस समय तक उन्हे नगर के चौराहे की ओर बढने मे पूरी सफलता मिल चुकी थी। यही चौराहा उनकी इस साधारण कार्रवाई की मजिल था। यदि उनके पास टैंक होते तो वे न जाने कब इस चौराहे पर पहुंच गये होते किन्तु इस बार टैंको का प्रयोग नही किया गया था, क्योकि दोनेत्स पर जमी बर्फ उनका भार सभालने मे असमर्थ थी।

जिस समय सेना ने फिर आगे बढना शुरू किया, उस समय पूरी तरह अधेरा छा चुका था। फिर, जैसे ही दुश्मन ने गोलाबारी शुरू की कि बटालियन कमाडर को, जिसने आक्रमण-सम्बन्धी कार्रवाइयो का सारा भार अपने ऊपर ले लिया था, अपनी टुकडियो की सहायता से हमला

करने के लिए मजबूर होना पडा, क्योंकि प्रधान टुकड़िया अभी तक बढ रही थी। सैनिक गाव मे घुस गये और कमांडिंग की टुकडी, मध्य मार्ग पर मोर्चा लेती हुई, स्कूल की इमारत पर कब्जा करने के लिए युद्ध करती रही।

स्कूल की ओर से इतनी जबरदस्त जवाबी गोलियां चल रही थी कि सेर्गेई ने गोलिया चलाना बन्द कर दिया और मुह पिघलती बर्फ में लटका लिया। बाये हाथ की कोहनी के ऊपर एक गोली उसे छूकर निकल गयी थी किन्तु हड्डी पर जख्म नही आयी थी। युद्ध की उत्तेजना मे उसे पीडा तक का अनुभव न हो रहा था। आखिर जब उसने सिर उठाया तो देखा कि वह बिलकुल अकेला रह गया है।

बेशक, ऐसी परिस्थिति मे यही एक बात सोची जा सकती थी कि उसके साथी, गोलाबारी के दबाव के कारण, नगर की सरहद की ओर जाकर मुख्य सेना से मिल गये है। किन्तु अनुभवहीनता के कारण सेर्गेई उस निष्कर्ष पर पहुचा था कि उसके साथी मारे गये है। वह डर से कांप उठा और रेगता हुआ एक मकान के पीछे पहुंचा और सुनने लगा। दो जर्मन उसके पास से भागते हुए निकल गये। उसे अपने दाहिने, बाये और पीछे जर्मनो की आवाजे सुनाई दे रही थी। पास मे होनेवाली गोलाबारी बन्द हो चुकी थी और अब गाव की चौहद्दी पर हो रही थी। अन्तत वह वहा भी ठडी पड गयी।

नगर के ऊपर, बहुत दूर, लाल रोशनी झिलमिला रही थी जो आसमान को तो नही, लेकिन निरन्तर सघन होते हुए काले काले धुए को प्रकाशित कर रही थी। उसी दिशा से भयानक बमबारी हो रही थी।

सेर्गेई जर्मनो द्वारा अधिकृत एक खेतिहर बस्ती के बीचोबीच पिघलती हुई बर्फ के ढेर पर अकेला पडा था—आहत, घायल।

# अध्याय २८

मेरे दोस्त! मेरे दोस्त! अब मै अपनी कहानी के सबसे दुखद पृष्ठो पर आ रहा हू और वरवस मुझे तुम्हारी याद आ जाती है ...

काश कि तुम जानते होते कि जब मै और तुम नगर के स्कूल में पढने गये थे, उन दिनो, यानी अपने वचपन के दिनो मे, मेरे दिमाग मे कितनी उथल-पुथल रहती थी। मेरा घर तुम्हारे घर से कोई पैतीस मील दूर था और जब मै घर से निकला था तो मुझे इस वात का डर वरावर वना रहा था कि तुम मुझे न मिलोगे, कि तुम पहले ही घर से निकल गये होगे – वेशक हम एक दूसरे से गर्मी का सारा मौसम न मिल पाये थे! इस डर से कि शायद तुम न मिलो, मै वेकरार हो रहा था। रात मे देर से मेरे पिता की गाडी ने तुम्हारे गाव मे प्रवेश किया और थका हुआ घोडा सड़क पर धीरे धीरे चलता रहा। तुम्हारा घर आने से वहुत ही पहले मै गाडी से कूद पडा था। मै जानता था कि तुम हमेशा भूसे वाली अटारी मे सोते हो, और यदि मै तुमसे न मिला तो इसके माने थे कि तुम जा चुके हो . पर क्या तुम मेरा इन्तजार किये विना कभी गये भी हो? मै जानता हू कि तुम्हे स्कूल मे देर से पहुचना मजूर था, पर मुझे अकेले छोडना मजूर नही हमने रात भर आखे वन्द नही की, भूसे की अटारी मे वैठे वैठे अपने नगे पैर वाहर लटकाये रहे और वरावर वाते करते रहे और जब हसी न रुकती तो मुह पर हाथ रखकर उसे दवाने की चेष्टा करते। मुर्गिया अपने पख फडफडाती रही। सूखी घास से मीठी मीठी वास आ रही थी और शरद के प्रात. कालीन सूर्य ने वनो के पीछे से उदय होकर सहसा हमारे चेहरो को प्रकाशित

किया। सिर्फ तभी हमारा ध्यान इस बात पर गया कि गर्मी के महीनो मे हम कितने वदल गये है...

मुझे एक अवसर की याद अभी तक वनी है। हम नदी मे, घुटनो घुटनो तक पानी मे खडे थे। तुमने मेरे सामने यह स्वीकार किया था कि तुम . से प्रेम करते हो . सच पूछो तो वह लडकी मुझे पसन्द न थी, किन्तु मैंने तुमसे कहा था—

"प्रेम तुम करते हो, मैं नही! तुम सुखी रहो..."

और तुमने हसकर कहा था—

"सचमुच किसी को गलत रास्ते से हटाने के लिए आदमी को दोस्ती से भी हाथ धोना पडता है, किन्तु फिर भी क्या कोई दिल के मामलो मे सलाह दे सकता है? कितनी वार गहरे से गहरे दोस्त भी, सद्भावना से, मुहब्वत के मामलो मे दखल देते है, दो प्राणियो को परस्पर मिलाते है, अलग करते हैं, अथवा जिसे तुम प्यार करते हो उसके सवध मे कहनी-अनकहनी कहते है... काग वे जानते होते कि इस प्रकार वे स्वय कितनी हानि पहुचाते है, कितने कीमती क्षणो मे ज़हर घोल देते है, ऐसे क्षणो मे जो एक वार जाकर फिर लौटकर नही आते।"

और फिर मुझे उस व्यक्ति 'न०' की याद आती है। मै उसका नाम न लूगा। वह एक दिन मेरे पास आया और मुह वना वनाकर अपने दोस्तो के बारे मे, वडी लापरवाही के साथ, ऐसी वैसी बाते वकने लगा— "फला फला, लडका फलां फला लडकी की मुहव्वत मे इतना चूर है कि उसके पैर चाटता है। और हा, यह वात तुम्हारे और मेरे बीच की है— उस लड़की की उगलियो के नाखून बड़े गन्दे रहते है। और जानते हो, फ़ला लड़का पिछली रात एक दावत मे इतनी पी गया कि उलटियां करने लगा—पर यह वात कही बाहर न जाने पाये। और फला लडका पुराने खरीदे हुए कपड़े पहनता है, वह गरीव वनता है पर सचमुच

है मक्खीचूस। और मैं अच्छी तरह जानता हू कि उसे दूसरो के जेब से वियर पीने मे भी शर्म नही आती . किन्तु कही यह वात दूसरो से न कह देना "

और तुम उसकी ओर देखकर कहने लगते हो—
"सुनो जी . यहा से निकलो तो, फौरन!"

"क्या माने . निकलो तो?" आश्चर्यचकित 'न०' ने कहा।

"यही कि निकलो यहा से . जिस आदमी को अपने साथियो की केवल पीठ ही नजर आती है, कभी चेहरा नजर नही आता, उससे ज्यादा घृणित कोई नही हो सकता। और फिर जो आदमी गप्पे हाकता है उससे वुरा हो भी कौन सकता है?"

इस सवके लिए मैंने तुम्हारी कितनी सराहना की थी! मुझे स्वय इसके वारे मे वैसा ही लग रहा था। किन्तु मै शायद इतनी खरी खरी न सुना सकता ..

किन्तु सवसे अधिक मुझे गर्मी के उन दिनो की याद आती है, जव यह समझ लिया था कि सिवा कोमसोमोल मे भरती होने के मेरे पास और कोई चारा नही है। उन दिनो भी तुमसे वहुत दूर रह रहा था।

और तव हम शरद मे, फिर हमेशा की तरह, उसी अटारी मे मिले। उस समय मुझे लगा जैसे मेरे प्रति तुम्हारे रुख मे कुछ अलगाव-सा आ गया है। साथ ही तुम्हारे प्रति अपने रुख मे भी मुझे कुछ कुछ ऐसा ही लगा। हम वहा, अपने वचपन की ही तरह, अपने नगे पैर झुलाते हुए चुपचाप वैठे रहे। उस समय पहले तुम्ही वोले थे।

"शायद तुम मुझे न समझ सको, सभव है तुम इस वात के लिए मेरी भर्त्सना भी करो कि मैंने विना तुमसे परामर्श किये कोई निश्चय कर लिया था, किन्तु जव मै उस गर्मी मे बिलकुल अकेला था उस समय मैंने

समझ लिया था कि मेरे लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं। जानते हो, मैंने कोमसोमोल मे भरती होने का निश्चय कर लिया है।"

"पर इसके माने होंगे—नये नये उत्तरदायित्व, नये नये दोस्त! फिर, मेरा क्या होगा?" मैंने अपनी मित्रता को कसौटी पर कसने की दृष्टि से कहा था।

"हा," तुमने उदास होकर जवाब दिया था। "निश्चय ही बात यही होगी। हा, यह बात अपने अपने मन की जरूर है किन्तु अच्छा तो यही होगा कि तुम भी उसी मे भरती हो जाओ।"

मै तुम्हे अधिक परेशान न कर सका। हमने एक दूसरे की ओर देखा और ठहाका मारकर हस पड़े।

फिर इसके बाद अटारी मे बैठे बैठे हमने ऐसी अच्छी अच्छी बाते की थी जो मुझे कभी न भूलेगी। अटारी मे हमारी यह आखिरी मुलाकात थी। वही अटारी थी, वही मुर्गिया, जब हम यह शपथ ले रहे थे कि हमने जो रास्ता चुना है उससे हम पीछे न हटेगे और हमेशा एक दूसरे के गहरे दोस्त बने रहेगे तो ऐन उसी वक्त एस्प वृक्षो के पीछे से सूर्य ने अपनी झलक दी थी।

दोस्ती! इस ससार मे कितने लोग इस शब्द का उच्चारण करते है और उससे उनका अर्थ होता है शराब की चुस्किया लेते हुए कुछ मीठी मीठी बाते करना तथा एक दूसरे की कमजोरियो के प्रति सहानुभूति रखना। इसका दोस्ती से क्या मतलब?

हम बार बार लडे-झगडे थे, हमने एक दूसरे के गौरव पर भी चोट की थी और एक दूसरे से सहमत न होने पर एक दूसरे की भावनाओ पर भी आघात किया था। पर हमारी दोस्ती पर जरा भी आच न आयी थी, वह तो आग मे तपकर सोने जैसी खरी और इस्पात जैसी मजबूत निकली थी।

मैंने प्राय तुम्हारे साथ अनुचित व्यवहार किया था, पर जब मुझे अपनी गलती मालूम होती थी तो मैं उसे तुम्हारे आगे स्वीकार भी कर लेता था। बेशक मै केवल इतना ही कह पाता कि मै गलती पर था और तुम कहने लगते थे–

"परेशान मत हो, इसमे कुछ हाथ न लगेगा। अब जब तुमने अपनी गलती मान ली है तो उसे भूल जाओ। ऐसी बाते होती ही रहती है। यह तो सघर्ष का एक अग है।"

और फिर तुमने मेरी परिचर्या अस्पताल की सदय नर्स की भाति की, शायद मेरी अपनी मा से भी अधिक अच्छी तरह, क्योकि तुम रूखे से और भावुकताहीन थे।

और अब मै यह बताऊगा कि मैंने तुम्हे किस प्रकार खोया। यह बात बहुत समय पहले की है, किन्तु न जाने क्यो मुझे लगता है कि यह बात पिछली लड़ाई की नही इसी लड़ाई की है। मैं तुम्हे, झील से दूर, नरकलो की झाड़ियो मे से खीचता हुआ लाया था। तुम्हारा खून मेरे हाथों पर ढरक रहा था। सूर्य निर्दयता के साथ जल रहा था। हमारे पीछे, नदी के किनारे शायद कोई जिन्दा न बचा था–तट की उस सकरी-सी, नरकलो से ढकी पट्टी पर बेहद गोलाबारी हुई थी। मैंने तुम्हे घसीटा क्योकि मै कल्पना भी न कर सकता था कि तुम बचोगे नही। तुम वहा, नरकटो की झाडियो के बिस्तर पर पडे थे, तुम होश मे थे किन्तु तुम्हारे ओठ बहुत सूख गये थे। तुमने कहा था–

"पानी! मुझे कुछ पानी दो!"

वहा पानी न था। फिर हमारे पास लोटा या गिलास जैसी भी कोई चीज न थी, वरना मै झील से पानी ले आया होता। तभी तुमने कहा था–

"मेरा एक बूट उतार लो, सावधानी से। वे कहीं से भी फटे नही है।"

मैंने तुम्हारी वात समझ ली थी। मैंने तुम्हारा वह सैनिक वूट उतारा। इसी वूट ने न जाने कितना रास्ता तय किया था। हम न जाने कितने दिनो तक लगातार चलते रहे थे किन्तु कभी मोजे वदलने की नौवत न आयी थी। मैंने वूट लिया और रेगता रेगता किनारे की ओर चला गया। मैं खुद प्यास से मर रहा था। वेशक, गोलावारी के इस तूफान मे मै स्वय पानी पीने के लिए वहा रुकने की कल्पना भी न कर सकता था। निश्चय ही यह एक चमत्कार रहा होगा कि मै वूट में पानी भर सका और रेगता रेगता लौट आया।

पर जव मै तुम्हारे पास पहुचा तो तुम्हारे प्राण पखेरु उड चुके थे। तुम्हारा चेहरा शान्त था। तुम्हारा कद कितना वडा था, यह मैंने उसी दिन पहली वार देखा था। अकारण ही लोग यह नही समझते थे कि हम दोनो वहुत मिलते-जुलते थे। मेरी आखो से आसू झरने लगे। मुझे इतनी प्यास लगी थी कि सहन से वाहर हो रही थी। मैंने अपने ओठ तुम्हारे वूट से लगा दिये। यह हमारी सैनिक मित्रता का रुक्ष और कटु जाम था, जिसे मै छलछलाती हुई आखो से पिये जा रहा था, पिये जा रहा था।

———— १

वाल्या मोर्चे के किनारे किनारे एक खेतिहर बस्ती से दूसरी की ओर चलती रही। उसे न सर्दी परेशान कर रही थी, न भय। वह थककर चूर हो चुकी थी, सर्दी से जकड़ चुकी थी और भेडिये की तरह भूखी थी। उसे प्राय· राते खुली स्तेपी मे वितानी पडती थी। जब मोर्चा और आगे वढ जाता, पीछे भागते हुए जर्मनो का रेला उसे उन जगहो के जाने को विवश कर देता, जिन्हे वह अपने बचपन से जानती समझती थी।

वह एक दिन, दो दिन, एक हफ्ता, वरावर मारी मारी फिरती रही। क्यो फिरती रही यह वह स्वय न जानती थी। शायद वह अभी

तक मोर्चा पार कर लेने की आशा कर रही थी, या शायद सेर्गेई को दिये अपने सुझाव मे स्वय विश्वास करने लगी थी, जो उसने सिर्फ सेर्गेई को धोखा देने के लिए दिया था। सेर्गेई लाल सेना की यूनिट के साथ क्यो नहीं लौटेगा? उसने वादा किया था–"डरो मत, मै अवश्य लौटूगा।" और वह अपना वचन हमेशा निभाता था।

जिस रात कामेस्क मे लडाई शुरू हुई और धुए के घने घने वादलो के वीच रोशनी की चमक मीलो दूर से दिखाई दी, उस रात वाल्या को नगर से कोई दस मील दूर एक खेतिहर वस्ती मे जगह मिल गयी थी। वहा कोई जर्मन नही थे, फिर भी अधिकाश ग्रामवासियो की भाति, वाल्या की भी रात भर पलके न लगी थी। वह तो आकाश मे उठनेवाली चमक देखती रही थी। कोई चीज थी जो उसे इन्तजार करने को विवश कर रही थी, इन्तजार करने को

दिन मे कोई ग्यारह वजे गाव मे खवर आयी कि लाल सेना की टुकडिया कामेस्क मे घुस आयी है, वहा जोरो की लडाई हो रही है और नगर के अधिकतर हिस्से से जर्मन भाग चुके है। अव किसी भी समय, लडाई मे हारा हुआ दुश्मन,–जो सव दुश्मनो से ज्यादा खूखार होता है– गाव से होकर गुजर सकता है। वाल्या ने फिर अपना थैला अपने कधे पर रखा और गाव छोडकर चली गयी। किसान महिला ने दया से द्रवित होकर उसके थैले मे रोटी का एक टुकडा रख दिया था।

वह निरुद्देश्य आगे वढती रही। वर्फ पिघल रही थी किन्तु हवा का रुख वदल जाने से सर्दी वढने लगी थी। धुन्ध छन गयी थी और वर्फ से लदे हुए भिन्न भिन्न आकार के वादल आकाश मे फैल गये थे। वाल्या सडक के वीचोवीच रुकी और वहा वडी देर तक खडी रही। वह एक दुवली-पतली आकृति-सी लग रही थी। कधे पर थैला और टोपी के नीचे से निकल निकलकर हवा मे लहराती हुई वालो की भीगी लटे।

गांव की एक गली में पिघली हुई बर्फ और कीचड़ जमी थी। वह धीरे धीरे उस गली मे घुसी और क्रास्नोदोन की ओर चल दी।

इस बीच, सेर्गेई उसी बस्ती के एक दूरस्थ कोने पर बने आखिरी मकान की खिडकी खटखटा रहा था। उसका बाजू खून से सनी आस्तीन मे से लटक रहा था। सेर्गेई के पास बन्दूक तक न थी।

नही, इस समय मरना उसकी किस्मत मे न लिखा था। वह उस गाव के बीचोबीच चौराहे के पास गीली और कीचड़भरी सडक पर तब तक पडा रहा जब तक जर्मन खामोश न हो गये। यह आशा नही की जा सकती थी कि सोवियत सेनाए उसी रात फिर उस गाव मे घुस आयेगी। उसे मोर्चे से दूर और दूर हट जाना था। वह वर्दी मे न था। उसने अपनी बन्दूक भी वही छोड़ दी थी जहा वह पडा था। दुश्मन के बीच से होकर निकलने का उसका यह कोई पहला मौका न था।

सुबह से कुछ ही पहले वातावरण मे मनहूसियत छा गयी थी और कोहरा लटक आया था। ऐसे समय वह जख्मी बाह लटकाये बडी कठिनाई से रेलवे लाइन के उस पार रेग गया। उस समय बहुधा किसान घरो की मालिकिने उठ जाती है और दिया जला देती है। किन्तु इस वक्त सभी सुगृहिणिया अपने अपने बच्चो के साथ तहखानो मे छिपी थी।

सेर्गेई रेलवे लाइन से कोई सौ गज दूर तक रेगता गया, फिर उठा और चलता हुआ खेतिहर बस्ती तक जा पहुचा।

सुनहरे लटोवाली एक लडकी ने एक पुराने कपड़े से पट्टी फाडी और उसकी बाह पर बाध दी। फिर अभी अभी कुए से लाये हुए पानी से उसकी जैकेट की आस्तीन का खून धोया और उसपर राख रगड दी। घर के लोग डर रहे थे कि कही सहसा जर्मन न घुस आये। इसी लिए उन्होने सेर्गेई को गर्म गम खाना न देकर रास्ते मे पेट मे डाल लेने को कुछ दे दिया।

सेर्गेई रात भर सोया न था, फिर भी मोर्चे के किनारे किनारे की वस्तियो मे वाल्या की तलाश मे निकल पड़ा।

जैसा दोनेत्स स्तेपी मे प्राय. होता है, मौसम एक वार फिर सर्द हो गया। घनी वर्फ फिर गिरने लगी जो पिघलने का नाम तक न ले रही थी। फिर वह जमनी शुरू हो गयी।

एक दिन जनवरी के अन्त मे सेर्गेई की विवाहिता वहन फेन्या वाज़ार से घर आयी। पर घर का दरवाजा वन्द था।

"अकेली हो क्या, मा?" सबसे वड़े वेटे ने दरवाजे के पीछे से पूछा।

सेर्गेई मेज पर वैठा था। उसकी एक वाह मेज पर सधी थी और दूसरी नीचे लटक रही थी। वह हमेशा दुवला-पतला रहा था, किन्तु इस समय उसका चेहरा फक पड रहा था और वह झुका हुआ वैठा था। हा, वहन पर लगी हुई उसकी आखो मे अभी तक पहले जैसी फुर्ती, पहले जैसी चमक दिखाई पड रही थी।

फेन्या ने उसे केन्द्रीय कारखानो मे हुई गिरफ्तारियो के वारे मे वताया और साथ ही यह सूचना दी कि 'तरुण गार्ड' के अधिकाश सदस्य जेल मे है। मरीना से उसने ओलेग कोशेवोई की गिरफ्तारी के वारे मे पहले ही सुन लिया था। सेर्गेई ने एक शव्द भी न कहा। उसकी आखो से आग वरस रही थी।

"मैं जा रहा हूं, डरो नही," आखिर वह वोला।

उसे लगा जैसे फेन्या उसके और अपने वच्चो के लिए वडी चिन्तित हो उठी है।

उसकी वहन ने उसकी वाह पर फिर से पट्टी वाधी और उसे औरतो के कपडे पहना दिये। फेन्या ने सेर्गेई के कपडो का एक वडल वनाया और धुधलका होते ही उसके साथ उसके घर की ओर चल दी।

उसके पिता को जेल की कोठरी मे जो यातनाए भुगतनी पडी

थी, उनके फलस्वरूप वे बिलकुल जर्जर हो चुके थे और अधिकतर बिस्तर पर ही पडे रहते थे। उसकी मा किसी प्रकार चल-फिरकर थोडा बहुत काम कर लेती थी। उसकी बहने घर पर नहीं थी। दोनो बहने, यानी दाशा और नाद्या—जिसे वह सब से अधिक चाहता था—मोर्चे की दिशा मे चली गयी थी।

सेर्गेई ने पूछा कि क्या वाल्या बोर्त्स के बारे मे कुछ पता चला। इस काल मे 'तरुण गार्ड' के सदस्यो के माता-पिता एक दूसरे के और भी निकट आ गये थे, किन्तु मरीया अन्द्रेयेव्ना ने अपनी बेटी के बारे मे सेर्गेई की मा से कुछ भी न कहा था।

"तो वाल्या दूसरो के साथ नही है?" सेर्गेई ने दुखी होकर पूछा।

नही, वह जेल मे न थी, यह बात वे लोग निश्चयपूर्वक जानते थे।

सेर्गेई ने कपडे उतारे और इस महीने मे पहली बार अपने साफ-सुथरे बिस्तर पर लेटा।

दिया मेज पर जल रहा था। हर चीज ठीक वैसी ही थी जैसी वह उसके बचपन से चली आ रही थी। किन्तु उसका दिमाग कही और था। बगल वाले कमरे मे लेटे हुए उसके पिता खास खासकर दीवाले हिलाये दे रहे थे। फिर भी, सेर्गेई के लिए कमरे मे हर चीज अस्वाभाविक रूप से शान्त लग रही थी। वहा अब उसकी बहनो की चहल-पहल न थी जो पहले सुनाई पडा करती थी। सिर्फ उसका छोटा भानजा अपने बाबा के कमरे मे, रेगता हुआ चल रहा था और तुतला तुतलाकर अपने आप से बाते कर रहा था।

सेर्गेई की मा अहाते मे चली गयी थी। सेर्गेई को बूढे के कमरे मे एक जवान औरत के जाने की आवाज सुनाई दी। यह औरत उन की पडोसिन थी। वह प्राय रोज़ आती थी, और सेर्गेई के माता-पिता इतने सीधे थे कि उन्होंने कभी यह तक न सोचा था कि आखिर उसके

रोज रोज आने का कारण क्या है। सेर्गेई ने उसे बूढे से बातचीत करते सुना।

कमरे मे रेंगते हुए बच्चे ने फ़र्श पर से कोई चीज उठायी और सेर्गेई के कमरे मे रेंग आया।

"मामा . मामा . ." वह तुतलाया।

उस औरत ने तुरन्त कमरे मे एक नजर डाली और सेर्गेई को देखते ही, उसकी आखे चमक उठी। फिर उसने बूढ़े से कुछ मिनटो तक और बाते की और आखिर घर से निकल गयी।

सेर्गेई ने करवट ली और सोने का प्रयत्न करने लगा।

आखिर उसके माता-पिता सो गये। घर मे अंधेरा और सन्नाटा छा गया। किन्तु सेर्गेई फिर भी जग रहा था, उसके हृदय मे न जाने कितनी इच्छाएं उमड-घुमड़ रही थी .

सहसा सामने के दरवाजे पर जोरो की दस्तक हुई।

"दरवाज़ा खोलो।"

अभी एक ही क्षण पहले जो अक्षय जीवनशक्ति उसे समस्त परीक्षाओ के बीच से होकर लिये जा रही थी वह जैसे उसका साथ छोड़ रही थी। अब वह असहाय हो गया था। उसकी हिम्मत टूट सी रही थी। पर जैसे ही उसने दरवाजे पर खटखट सुनी कि उसके शरीर मे फुर्ती-सी दौड़ गयी। वह चुपचाप बिस्तर से कूदा और खिडकी की ओर बढकर उसपर पड़े हुए काले परदे का एक कोना उठा दिया। सब कुछ चादनी मे नहाया लग रहा था। बर्फ की पृष्ठभूमि मे एक जर्मन सैनिक की आकृति और उसकी छाया साफ साफ झलक रही थी। सैनिक बन्दूक ताने खिड़की के पास खड़ा था।

माता-पिता जगकर, डरे हुए उनीदी आवाज मे फुसफुसाने लगे, फिर दरवाजे की खटखट सुनते हुए शान्त पड़े रहे। इस समय तक

सेर्गेई एक हाथ की ही सहायता से कपडे पहनने का आदी हो चुका था। उसने अपना पतलून, कमीज और बूट पहने, किन्तु डिवीजन से प्राप्त फौजी बूटो मे फीते न बाध सका। तब वह अपने माता-पिता के कमरे मे आ गया।

"कोई जाकर दरवाजा खोल दो, पर रोशनी न करना," उसने धीरे-से कहा।

किन्तु इस समय सारा मकान दरवाजे पर पड़ती हुई ठोकरो की चोट से जैसे भरभराकर गिरा जा रहा था।

मा कमरे में भागने-दौडने लगी। उसे कुछ भी सूझ नही रहा था।

पिता धीरे-से बिस्तर से उतरे और जिस ढग से चुपचाप लडखड़ाकर चले उससे सेर्गेई को पता चल गया कि उनके लिए चलना-फिरना, उठना-बैठना कितना कठिन था। उसके लिए स्थिति कितनी विकट हो उठी थी।

"कुछ नही हो सकता, हमे दरवाजा खोलना ही होगा," बूढे ने कुछ अजीब खनखनाती आवाज मे कहा। सेर्गेई जानता था कि उसके पिता रो रहे हैं।

तब बूढा बैसाखी पटपटाते हुए गलियारे तक आये और पुकारकर बोले—

"बस एक मिनट, अभी आ रहा हू।"

सेर्गेई चुपचाप अपने पिता के पीछे खिसक आया।

मां पाव घसीटती हुई गलियारे मे आयी, और लोहे की कुडी पर हाथ रखा। सर्द हवा का एक झोका-सा आया। पिता ने बाहरी दरवाजा खोला और एक पल्ला थामे हुए एक तरफ खडे हो गये।

तीन आकृतिया एक के बाद एक दरवाजे से होकर अधेरे गलियारे मे आयी। आखिरी व्यक्ति ने पीछे से दरवाजा बन्द कर लिया और एक शक्तिशाली टार्च की रोशनी ने सारा गलियारा रोशन कर दिया। प्रकाश

की किरण पहले मा पर पडी, जो सायवान मे खुलनेवाले दरवाजे पर खडी थी। सेर्गेई जिस जगह एक अंधेरे कोने मे खडा था, वही से उसने देख लिया कि दरवाजा आधा खुला है। उसने समझ लिया था कि यह काम उसके लिए उसकी मा ने किया था। किन्तु तभी टार्च की रोशनी पिता पर और उनके पीछे छिपे हुए उनके वेटे, सेर्गेई पर पडी। सेर्गेई ने यह आशा न की थी कि वे गलियारे मे टार्च का प्रयोग करेगे, फलत उसे विश्वास था कि जब वे पिछले कमरे से होकर गुजरेगे तो वह अहाते मे खिसक जायेगा।

दो व्यक्तियो ने सेर्गेई की बाहे पकडी। उसकी घायल बाह मे इतनी पीड़ा हुई कि वह जोरो से चीख उठा।

वे उसे कमरे मे घसीट लाये।

"वुत की तरह खडी मत रहो। रोशनी जलाओ।"

सोलिकोव्स्की मा पर भौंक पडा। पर मा के हाथ इतने जोरो से काप रहे थे कि वह वहुत समय तक दिया न जला सकी। सोलिकोव्स्की ने अपना लाइटर जलाया। एक एस० एस० सैनिक और फेनवोग सेर्गेई को पकडे हुए थे।

उन्हे देखते ही मा रोने लगी और उनके पैरो पर गिर गयी। अपने गोल, झुर्रीदार हाथो से मिट्टी का फर्श रगडने और उनकी ओर रेगने लगी। बूढा वैसाखी के वल झुका हुआ सिर से पैर तक कापता रहा।

सोलिकोव्स्की ने घर की तलाशी ली। त्युलेनिन के मकान की एक से अधिक वार तलाशी ली जा चुकी थी। सैनिक ने अपने पतलून की जेव से एक रस्सी निकाली और वह सेर्गेई के हाथ उसकी पीठ पर ले जाकर वाधने लगा।

"यह मेरा इकलौता वेटा है. उसे छोड दो. वाकी सव कुछ ले लो .. गाय, कपडे-लत्ते. "

भगवान जाने उसने और क्या क्या कहा.. सेर्गेई को उसके लिए इतना दुख हो रहा था कि वह रोने रोने को हो रहा था। वह इस डर से बोल भी न रहा था कि कही उसके आसू न ढुलक पडें।

"ले जाओ इसे," फेनबोग ने सैनिक को कहा।

मा ने फेनबोग को रोकने का प्रयत्न किया किन्तु उसने उसे बूट से ठुकरा दिया।

सैनिक ने सेर्गेई को धक्का देकर आगे किया और दरवाजे की ओर बढा। फेनबोग और सोलिकोव्स्की पीछे हो लिये।

"विदा मा, विदा पिताजी," सिर घुमाते हुए सेर्गेई बोला।

मां फेनबोग पर झपटी और अपने हाथो से, जो अब भी मजबूत थे, उसकी पीठ पटपटाने लगी।

"कसाइयो!" वह चीखी, "तुम्हारी सजा मौत नही है .. आने दो जरा हमारे सैनिको को!"

"अच्छा . तो तू फिर वही जाना चाहती है, अच्छी बात है!" सोलिकोव्स्की गरजा और, लडखड़ाती हुई आवाज मे बूढे की गिड़गिडाहट के बावजूद, उसे उसी हालत मे, अर्थात् जिस पुराने कपडे मे वह सोया करती थी उसी कपडे मे, घर से बाहर घसीट लाया। बूढे को उसके पास शॉल और कोट फेक देने का भी मुश्किल से ही मौका मिल सका।

## अध्याय २९

सेर्गेई को मारा-पीटा गया फिर भी वह चुप रहा। उसके घायल बाजू मे बेहद दर्द हो रहा था, फिर भी उसके मुह से उफ तक न निकली। हाथ पीछे बधे होने पर भी जब फेनबोग ने उसे ऊपर को

उठाया तो भी वह चुप ही रहा। और जब फेनबोग ने उसके घाव मे सलाख घुसेडा तो उसने दात भीच लिये।

उसकी सहनशक्ति बड़े गजब की थी। उसे काल-कोठरी में डाल दिया गया था, किन्तु वह यह जानने के लिए बराबर दीवालो को ठकठकाता रहा कि उसके पडोसी कौन कौन है। वह पजो पर खडा हुआ और यह देखने के लिए छत की एक दरार की जाच करने लगा कि वह उसे चौड़ा कर सकता है, उसका कोई तख्ता हटा सकता और बाहर कैदखाने के अहाते मे निकल सकता है या नही। यदि उसे कोठरी के बाहर निकल जाने का रास्ता मिल जाता तो वह पूरे विश्वास के साथ भाग सकता था। वह बैठा और उन कमरो की खिडकियो का क्रम याद करने की कोशिश करने लगा जिनमे उससे पूछ-ताछ की गयी थी, उसपर जुल्म किया गया था। वह यह याद करने की कोशिश करने लगा कि बरामदे से अहाते को जानेवाले दरवाजे मे ताला लगा था या नही। काश, उसकी बांह घायल न होती। उसे यह विश्वास नही हो रहा था कि उसकी सारी उम्मीदो पर पानी फिर चुका है। दोनेत्स पर तोपखाने की गरज साफ, पालाभरी रात मे स्वय कोठरियो तक मे सुनाई पड रही थी।

सुबह उसका सामना वीत्या लुक्याचेको से हुआ।

"नही मै यही जानता था कि यह कही पास ही मे रहता था, पर मैने उसे देखा कभी नही," वीत्या लुक्याचेको बोला और उसकी गहरी और विनम्र दृष्टि सेर्गेई पर पडी और हट गयी। अकेली उसकी आखे ही सजीव-सी लग रही थी। सेर्गेई कुछ न बोला।

सैनिक वीत्या लुक्याचेको को हटा ले गये और कुछ मिनटो बाद सोलिकोव्स्की सेर्गेई की मा को ले आया।

उन्होने ग्यारह बच्चो की मा, उस बूढी मां, के कपडे फाडे और उसे खून से सने हुए तख्त-पोश पर लिटाकर उसपर, बेटे की आंखो

के सामने ही, बिजली के तारो का हंटर बरसाने लगे। सेर्गेई ने मुंह नहीं फेरा। उसने मा पर हंटर गिरते हुए देखे और चुप रह गया।

इसके बाद मा के सामने उसपर मार पड़ी और वह कुछ न बोला। फेनबोग क्रोध से पागल हो उठा। उसने मेज पर से लोहे की एक सलाख उठायी और सेर्गेई के दूसरे बाजू की कोहनी तोड़ दी। सेर्गेई सफेद पड़ गया और उसके माथे पर पसीना निकल आया।

"लो, मेरी तो गत बन गयी," वह बोला।

उसी दिन वे उस सारे दल को भी कैदखाने मे ले आये जिसे क्रास्नोदोन की खनिक बस्ती मे गिरफ्तार किया गया था। उनमे से अधिकाश अब चलने-फिरने मे भी असमर्थ हो गये थे। उन्हे हाथ पकड़कर घसीटा गया और उन कोठरियो मे भर दिया गया जिनमे पहले ही लोग कीडे-मकोडो की तरह भरे हुए थे। कोल्या सुम्स्कोई अभी तक चल-फिर सकता था, किन्तु हटरो की चोट से उसकी एक आख निकाल दी गयी थी। जो तोस्या येलिसेयेको आकाश मे उडते हुए कबूतरो को देखते ही खुशी से चीख उठती थी, वही अब केवल पेट के बल लेट सकती थी। अन्दर लाने के पहले उसे लाल लाल अगीठी पर सेका गया था।

जैसे ही कैदी लाये गये कि एक सशस्त्र पुलिस का सिपाही लडकियोवाली कोठरी मे आया और ल्यूबा को ले गया। ल्यूबा तथा दूसरी सभी लडकियो को विश्वास था कि उसे मौत के घाट उतारने के लिए ले जाया जा रहा था। उसने अपनी सहेलियो से विदा ली और बाहर निकल गयी।

किन्तु उसे प्राणदड नही दिया जा रहा था। प्रादेशिक फेल्दकमाडाटुर मेजर-जनरल क्लेर के आदेशो से उसे रोवेन्की ले जाया जा रहा था। फेल्दकमाडाटुर स्वय उससे पूछ-ताछ करना चाहता था।

उस दिन कसकर पाला पड रहा था और खामोशी छायी थी।

कैदियो को पासल दिये जाने का दिन था। कुल्हाडी की खटखट, कुए मे वाल्टी की ठनठन, राहगीरो के पैरो की आहट, धूप और वर्फ से प्रकाशित शान्त वायुमंडल मे दूर दूर तक सुनाई पड़ती थी। येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला कैदखाने मे हमेशा साथ ही साथ पार्सल ले जाती थी। दोनों ने खाने का वडल वनाया, वोलोद्या द्वारा अपने अन्तिम पत्र मे मागा गया तकिया लिया और वर्फ पर वनी हुई पगडडी पर होकर एक वडे खुले मैदान से होती हुई कैदखाने की लम्वी इमारत की ओर चल दी। कैदखाने की इमारत की दीवाले सफेद थी और छत पर वर्फ जमी थी और इस तरह आस-पास के वातावरण से एकाकार हो उठी थी। इमारत का साये मे पड़नेवाला आधा भाग कुछ नीला पड गया था।

मां और वेटी इतनी दुवली हो गयी थी कि इस समय वे हमेशा से ही अधिक एक जैसी लग रही थी और उनके वहने होने का आसानी से भ्रम हो सकता था। मा जो इतनी मुह-फट्ट और तेज-तरार हुआ करती थी, इस समय वात वात पर घवरा रही थी।

कैदखाने के वाहर औरतो की भीड लगी हुई थी। उनके पार्सल अभी तक उनके हाथ मे थे और वे कैदखाने की ओर वढने का कोई प्रयत्न न कर रही थी। इससे और उनकी आवाज़ो से येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला को लगा कि मामला गभीर है। जर्मन सतरी औरतो की भीड पर कोई ध्यान न देता हुआ हमेशा की तरह ड्योढी के पास खडा था। भेड की खाल की पीली जैकेट पहने हुए एक पुलिस वाला ड्योढी की सीढियो की रेलिग पर वैठा था। वह किसी के भी पार्सल न ले रहा था।

कौन कौन-सी औरते वहा मौजूद थी, यह देखने के लिए येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला को अपने इर्द-गिर्द निगाह डालने की कोई आवश्यकता न रह गयी थी क्योकि वे सव रोज ही मिला करती थी।

जेम्नुखोव की मां नाटे कद की एक बूढी-सी औरत थी। वह अपने आगे एक बंडल और पार्सल थामे ड्योढी की सीढियो के सामने खडी थी।

"थोडा-सा खाना ही ले जाओ .." वह गिडगिड़ा रही थी।

"कोई जरूरत नही। उसे जितने खाने की जरूरत होगी हम देंगे," बिना उसकी ओर देखे पुलिस वाले ने कहा।

"उसने मुझसे एक चादर मांगी थी।"

"आज उसे बढिया बिस्तरा मिलेगा।"

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ड्योढी तक गयी और रुखाई से पूछने लगी—

"तुम हमारे पार्सल क्यो नही ले रहे हो?"

पुलिस वाले ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया।

"हमे कोई जल्दी नही। हम यहा तब तक रहेंगी जब तक कोई हमे जबाब देने नही आता," येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना ने औरतो की भीड़ पर निगाह डालते हुए कहा।

अत वे वही खड़ी रही। आखिर सहसा उन्हे अन्दर, कैदखाने के अहाते मे ढेरो लोगो के कदमो की आहट और किसी के फाटक खोलने की आवाज सुनाई दी। औरते ऐसे मौको पर कोठरियो के अहाते के सामने पडनेवाली खिडकियो पर निगाह डालने से न चूकती थी। कभी कभी उनकी निगाह कोठरियो मे अपने बेटे-बेटियो पर भी पड़ जाती थी। औरतो की भीड फाटक की बायी ओर दौड़ पडी। तभी सर्जेंट बोलमन और उसका एक दस्ता बाहर निकला और औरतो को तितर-बितर करने लगा।

औरते इधर-उधर हट गयी, पर फिर लौट आयी। बहुत-सी तो चिल्ला चिल्लाकर रोने भी लगी।

येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना और ल्युद्मीला कुछ दूर हटी और चुपचाप सब कुछ देखती रही।

"आज उन्हे मौत के घाट उतारा जायेगा," ल्युद्मीला वोली। "मै तो भगवान से यही मनाती हू कि वह अडिग रहे, इन कुत्तो के आगे कापे नही, उनके मुंह पर थूके," येलिजवेता अलेक्सेयेव्ना वोली। उसकी आवाज घुट रही थी और उसकी आखें भयानक रूप से चमक रही थी।

इस वीच उनके वच्चे अपने जीवन की सबसे अन्तिम और सव से संकटपूर्ण परीक्षा से होकर गुजर रहे थे।

वान्या जेम्नुखोव मिस्टर ब्रूक्नेर के आगे लडखडा रहा था। उसके चेहरे से खून टपक रहा था। उसका सिर असहायो की तरह एक ओर झुक गया था, किन्तु वह उसे ऊपर उठाये रखने की पूरी कोशिश कर रहा था और आखिर वह अपने इस प्रयत्न मे सफल हुआ, और चार हफ्तो की खामोशी के वाद पहली वार वोला—

"तुम नही कर सकते, नही कर सकते न?" वह वोला, "तुम नही कर सकते! तुमने कितने ही देशो को हथिया लिया है . तुमने इज्जत और सचाई को ताक पर रख दिया है . फिर भी तुम नही कर सकते . तुम इतने मजबूत नही हो!"

और वह उन्ही के सामने हस पडा।

उस दिन रात को देर से दो जर्मन सिपाही ऊल्या को उसकी कोठरी में लाये। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी लटे फर्श पर लुढक रही थी। उन्होने उसे दीवाल पर पटक दिया। वह कराह उठी और करवट लेकर पेट के वल लेट गयी।

"प्यारी लील्या," उसने वडी इवानीखिना से कहा, "मेरी पीठ पर से ब्लाउज उठा दो—वड़ी जलन है।"

लील्या स्वय मुश्किल से ही हिल सकती थी, पर उसने आखिर तक, नर्स की तरह, दूसरो की परिचर्या की। उसने खून से सना हुआ ब्लाउज

धीरे-से उलट दिया और तभी भय से सिहर उठी और रोने लगी – ऊल्या की पीठ पर खून से सना हुआ पाच कोनोवाला एक सितारा जगमगा रहा था।

क्रास्नोदोन के लोग उस रात को तब तक न भूलेगे जब तक कि इस पीढी का आखिरी नामलेवा कब्र मे नही पहुंच जाता। डूबता हुआ चाद तिरछा लटका हुआ था। वह असाधारण रूप से स्वच्छ था, जगमगा रहा था। कोई भी व्यक्ति खुली स्तेपी मे अपने इर्द-गिर्द मीलो दूर तक देख सकता था। पाला हड्डी मे चुभता-सा लग रहा था। उत्तर मे दोनेत्स नदी पर रोशनी की जगमगाहट दिखाई पड रही थी और युद्ध की गरज, कभी तेज और कभी मन्द पडती हुई, सुनाई पड रही थी।

कैदियो के हित-दोस्तो, सगे-सबधियो की उस रात पलके तक न लगी थी। वे लोग भी जग रहे थे जिनका उनसे कोई रिश्ता न था। सभी जानते थे कि उस रात 'तरुण गार्ड' के सदस्यो को प्राणदड दिया जायेगा। वे अपने दियो के आस-पास, अथवा घुप अधेरे मे, अपने सर्द कमरो मे बैठे हुए थे। किसी किसी वक्त उनमे से कोई बाहर निकल जाता और बडी देर तक बाहर खडा चीख-पुकार, लारियो की गडगडाहट या बन्दूके दगने की आवाजे सुना करता।

कोठरियो मे भी कोई न सोया था, सिवा उन लोगो के जिन्हे इतनी मार पडी थी कि बेहोश हो गये थे। आखिर मे जुल्म और सख्ती जिन 'तरुण गार्ड' के सदस्यो पर की गयी थी, उन्होने बुरगोमास्टर स्तात्सेको को कैदखाने मे आते हुए देख लिया था। सभी जानते थे कि कैदियो को मौत के घाट उतारने से पहले बुरगोमास्टर कैदखाने मे आता था क्योकि मौत के दड के लिए उसके हस्ताक्षर की जरूरत पडती थी।

दोनेत्स से होकर आती हुई युद्ध-ध्वनि कोठरियो मे प्रवेश कर रही थी। करवट के बल आधी लेटी हुई ऊल्या ने सिर दीवाल के सहारे रखे

हुए, बगल वाली कोठरी मे छोकरो को, दीवाल ठकठकाकर यह खबर दी—

"सुन रहे हो, लडको, सुन रहे हो न? हिम्मत रखो हमारे आदमी आ रहे है। जो होना हो, हो हमारे आदमी आ रहे हैं"

गलियारे मे फौजी बूटो की पटापट सुनाई दी। दरवाजे फटाक से खुल रहे थे। कैदियो को गलियारे मे निकाला गया और कैदखाने के अहाते के बजाय, मुख्य द्वारो से होकर सडक पर ले जाया गया। अपने अपने ओवरकोट या गर्म जैकेटे पहनकर बैठी हुई लडकिया गर्म टोपिया पहनने और शॉल बाधने मे एक दूसरे की मदद करने लगी। आन्ना सोपोवा फर्श पर निश्चेष्ट पडी थी। लील्या ने किसी प्रकार उसे कोट पहनाया। शूरा दुब्रोविना ने अपनी प्यारी सहेली माया की सहायता की। कुछ लडकियो ने अपनी अन्तिम टिप्पणिया घसीटी और अपने उतारे हुए कपडो मे खोस दी।

ऊल्या को आखिरी पार्सल मे अन्दर पहनने के नये कपडे भेजे गये थे। वह अपने मैले कपडो का बडल बनाने लगी कि सहसा उसकी आखो मे आसू भर आयें। वह उन्हे रोक न सकी और अपनी सिसकियो पर काबू पाने के लिए अपना मुह खून से सने हुए कपडो मे छिपाकर कई क्षणो तक निश्चेष्ट बैठी रही।

उन्हे चादनी मे नहाये खुले मैदान मे लाकर दो लारियो मे भरा जाने लगा। सबसे पहले वे स्तखोविच को लाये और उसे झटके से लारी मे धकेल दिया। इस समय वह पूरी तरह असहाय और बेसुध हो रहा था। 'तरुण गार्ड' के बहुत-से सदस्य तो चलने तक से मजबूर हो रहे थे। उन्होने अनातोली पोपोव को बाहर निकाला। उसका एक पैर काट डाला गया था। जेन्या शेपेल्योव और रगोजिन वीत्या पेत्रोव को साधे रहे। उसकी आखे निकाल दी गयी थी। वोलोद्या ओस्मूखिन का दाहिना हाथ काट डाला गया था, फिर भी वह बिना किसी की सहायता से चल-फिर सकता था। तोल्या ओर्लोव और वीत्या लुक्याचेको वान्या जेम्नुखोव को साधे रहे।

उनके पीछे घास के तिनके की तरह हिलता हुआ सेर्गेई त्युलेनिन चला आ रहा था।

लडकियो और लडको को अलग अलग लारियो मे भरा गया।

सैनिको ने लारियो के तख्ते चढा दिये और खुद भी उनके ऊपर से कूदकर ठसमठस भरी लारियो मे चढ़ गये। एन० सी० ओ० फेनबोग पहली लारी के ड्राइवर के पास बैठ गया। दोनो लारियां सडक से होती हुई खुले मैदान को पार करती चली गयी और बच्चो के अस्पताल और वोरोगीलोव स्कूल से होकर गुजर गयी। पहली लारी मे लडकिया भरी थी। ऊल्या, साशा बोन्दरेवा और लील्या गाने लगी

वेरहम हमलावरो ने किस तरह तुमको सताया,

अंत मे तुम ने वीर-गति पायी ..

दूसरी लड़कियो ने भी सुर मे सुर मिलाये। पीछे की लारी में बैठे हुए युवक भी गा उठे। उनके सुर शान्त, पालेदार हवा मे दूर तक गूजने लगे।

अपनी बायी ओर का अन्तिम मकान छोडती हुई, लारिया खान नं० ५ को जानेवाली सडक पर हो ली।

सेर्गेई लारी की पिछाडी से सटा हुआ, मानो पालेदार हवा को प्यासे की तरह पिये जा रहा था। वह सडक पीछे रह गयी जो नवनिर्मित गाव की ओर जाती थी। शीघ्र ही लारियां खड्ड को भी पार करनेवाली थी। नही, सेर्गेई जानता था कि वह अपनी योजना पूरी करने मे वडा कमजोर था। किन्तु अनातोली कोवल्योव के वदन मे अब भी ताकत थी। इसी लिए उसके हाथ पीठ पर बधे थे। वह सेर्गेई के सामने फर्श के तख्तो पर झुका हुआ था। सेर्गेई ने उसे सिर लगाकर कुरेदा। कोवल्योव ने अपने इर्द-गिर्द देखा।

"अनातोली, हम खड्ड पर पहुच ही रहे है," सेर्गेई ने फुसफुसाकर कहा और लारी की एक तरफ देखते हुए सिर हिला दिया।

अनातोली ने पीछे देखा और अपने वधे हुए हाथो को झकोरने लगा। सेर्गेई ने अपने दातो से गाठ खोलना शुरू किया। वह इतना कमजोर था कि लारी के सहारे दम लेने के लिए उसे कई वार रुकना पडा। उसके माथे से पसीना वहने लगा। किन्तु वह उसी तरह जुटा रहा मानो खुद अपनी ही आजादी के लिए सघर्ष कर रहा हो। आखिर गाठ खुल गयी। अनातोली अपने हाथ पीछे ही रखे रहा, हा उन्हे थोडा हिला-डुला जरूर लिया।

प्रतिशोधी उठ रहा कि ममता नही जानता,
शक्तिवान है वह तुमसे भी औ' मुझसे भी!

लड़के-लड़किया गा रहे थे।

लारिया खड्ड मे उतरने लगी थी। सामने की लारी दूसरी ओर चढने ही वाली थी। दूसरी भी घरघराती और फिसलती हुई चढने लगी थी। अनातोली लारी के पीछे तख्ते पर खड़ा हो गया। सहसा वह पलक मारते कूदा और वर्फ़ को रौदता हुआ खड्ड पार करता हुआ भागने लगा।

एक क्षण के लिए वहा खलवली-सी मच गयी किन्तु तव तक लारिया ढाल पर चढ चुकी थी। अनातोली निगाहो से दूर हो चुका था। सैनिक इस डर से लारी से न कूदे कि उन्हे दूसरो के भाग जाने का भय था। वे लारी मे से ही अलल-टप्पू गोलिया वरसाने लगे। फेनवोग ने गोलियो की आवाज सुनी, लारी रोकी और वाहर निकल पड़ा। दोनो ही लारिया एक दूसरे के पास आ गयी। फेनवोग अपनी जनानी आवाज मे कोसने लगा।

"भाग गया . भाग गया ." सेर्गेई जैसे विजय के उल्लास मे चिल्ला उठा। फिर वह क्रूर से क्रूर शव्दो मे गालिया देने लगा, किन्तु ऐसे मौके पर सेर्गेई के मुह से निकलती हुई गालिया भी पवित्र संकल्प जैसी लग रही थी।

खान न० ५ का इजनघर अब दिखाई पड़ने लगा था। एक विस्फोट ने उसे नीचे से नष्ट कर दिया था, फलतः वह एक ओर को तिरछा हो गया था।

तरुण लोग अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाने लगे।

लारियो मे से निकालकर उन्हे खानो के पास बने गुसलखाने की सर्द इमारत मे ले जाकर ब्रूक्नेर, बाल्डेर और स्तात्सेको के आने तक रखा गया। सिपाही उन लोगो के कपड़े और जूते उतारने लगे जिनके कपडे और जूते अच्छी हालत मे थे।

'तरुण गार्ड' के सदस्यो को अन्तिम रूप से विदाई अभिवादन करने का अवसर दिया गया। क्लावा कोवल्योवा वान्या के बगल मे बैठी हुई अपना हाथ बराबर उसके माथे पर रखे रही। वह अन्त तक उसके साथ रही।

उन्हे छोटे छोटे दलो मे ले जाकर, एक एक कर खान के गहरे गड्ढे मे ढकेल दिया गया। जो लोग बोलने मे समर्थ थे उनके पास दुनिया को वह पैगाम देने का समय मिल गया था, जो वह उसके लिए छोड जाना चाहते थे।

जर्मनो को भय था कि कई दर्जन लोगो के एक साथ गड्ढे मे ढकेले जाने की वजह से शायद सबके सब न मरे, अत. उन्होने उनपर कोयले के दो वैगन ऊपर से झोक दिये। किन्तु आहे-कराहे कई दिन बाद तक भी सुनाई पडती रही।

हाथो मे हथकडी पहने फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव और ओलेग कोशेवोई फेल्दकमाडाटुर क्लेर के सामने खडे थे। जब तक वे रोवेन्की मे गिरफ्तार रहे तब तक यह न जान सके कि वे एक ही कैदखाने मे है। किन्तु आज सुबह उन्हे साथ साथ लाया और बाधा गया और उनसे इस

आगा मे पूछ-ताछ की गयी कि वे सारे खुफिया सघटन का—अकेले जिले ही मे नही, वरन प्रदेश भर मे—पर्दाफाश करेगे।

उन्हे क्यो वाधा गया था? जव तक उन्हे वाधा न जाता था तव तक जर्मन उनसे डरा करते थे। दुश्मन भी यही दिखाना चाहता था कि इन दोनो ने खुफिया सघटन मे जो जो काम किया है वह उससे अवगत है।

ल्यूतिकोव के सिर के सफेद वाल खून से सने थे, खून जमकर सूख चुका था। उसके फटे हुए कपडे उसके विशाल शरीर के घावो मे चिपक गये थे और उसकी एक एक हरकत उसे असह्य पीड़ा पहुचा रही थी। किन्तु उसने किसी भी प्रकार इस पीडा का आभास न होने दिया। निर्मम अत्याचारो और भूख से उसका शरीर सूख गया था। उसके चेहरे की जो सुदृढ रेखाए उसकी जवानी मे इतनी स्पष्ट थी कि उसकी महान मानस-शक्तियो का परिचय देती थी वही इस समय वहुत अधिक गहरा गयी थी। उसकी आखे हमेशा की तरह शान्त और कठोर थी।

ओलेग की दाहिनी वाह तोड दी गयी थी। अव वह एक ओर लटक आयी थी। उसके चेहरे मे तो कोई खास तवदीली नही आयी थी, हा उसकी कनपटी के वाल जरूर सफेद पड़ गये थे। गहरी सुनहरी वरौनियो के नीचे की उसकी वडी वडी आखे पहले से अधिक स्वच्छ थी।

इस प्रकार वे फेल्दकमाड़ाटुर क्लेर के सामने खडे रहे। दोनो ही जनता के नेता थे—एक वूढा था दूसरा जवान।

फेल्दकमाडाटुर क्लेर लोगो की जाने ले लेकर वड़ा कठोर हो गया था। इसके अतिरिक्त कुछ करने की उस मे योग्यता भी नही थी। उसने उनपर वडे निर्मम अत्याचार किये, किन्तु उन्हे तो जैसे किसी चीज की भी अनुभूति न होती थी—उनकी आत्माए उन अनन्त ऊचाइयो तक पहुच चुकी थी, जहा तक मानव की महान सृजनशील आत्मा ही पहुच सकती है।

इसके बाद दोनो को अलग अलग किया गया और ल्यूनिकोव को क्रास्नोदोन जेल मे भेज दिया गया। केन्द्रीय कारखाने के मामले की जाँच अभी पूरी न हुई थी।

खुफिया रूप से काम करनेवाले साथी वन्दियो की मदद करने मे असमर्थ थे, कारण, जेल पर भारी पहरा रहता था और नगर मे दुश्मन की भागती हुई फौजो के सिपाही भरे पडे थे।

फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव, निकोलाई वराकोव और दूसरे साथियों का वही अजाम हुआ जो 'तरुण गार्ड' के सदस्यो का हुआ था—उन्हे भी खान न० ५ के गहरे गड्ढे मे ढकेला गया।

ओलेग कोशेवोई को ३१ जनवरी की दोपहर को रोवेन्की मे गोली मारी गयी। उसका शरीर, उसी दिन गोली से मौत के घाट उतारे गये अन्य साथियो की लाशो के साथ ही एक ही गड्ढे मे दफना दिया गया।

उन्होंने ७ फर्वरी तक ल्यूवा शेव्त्सोवा पर इस प्रयास मे अत्याचार किया कि किसी प्रकार उससे कोड और वायरलेस ट्रान्समिटर मिल जाय। गोली से मारे जाने के पहले किसी प्रकार उसने अपनी मा को यह पुर्जा भेज दिया था—

"प्रणाम मा, तुम्हारी वेटी ल्यूवा धरती-मा की गोद मे समाने जा रही है!"

जिस समय दुश्मन उसे गोली मारने के लिए जा रहे थे उस समय वह अपना एक प्रिय गाना गा रही थी—

'वहा मास्को के उन विस्तृत मैदानो मे .'

एस० एस० राटेनफ्यूरर उसे गोली से उडाने लिये जा रहा था। वह चाहता था कि ल्यूवा झुककर गोली गर्दन के पिछले भाग पर खाये। किन्तु उसने घुटनो पर झुकने से इनकार किया और गोली चेहरे पर खायी।

# अध्याय ३०

वान्या तुर्केनिच और ओलेग के इस्तेमाल के लिए पोलीना गेओर्गियेव्ना को पता देते समय ल्यूतिकोव ने उसे यह भी समझा दिया था कि वह यह बात उन लोगो को न बताये कि उस पते पर कौन रहता है। वह जानता था कि मार्फा कोर्नियेको, जिसके पास ल्यूतिकोव उन दोनो को भेज रहा था, प्रोत्सेको अथवा उसकी पत्नी को उनके आने की सूचना दे देगी। फिर वे अपने आप ही समझ लेगे कि इन 'तरुण गार्ड' के नेताओ का इस्तेमाल कैसे किया जाय।

इस सबसे अधिक गुप्त पते को ओलेग और तुर्केनिच को बता देने का ल्यूतिकोव का निश्चय इस बात का प्रमाण था कि उसे इन दोनो मे कितना विश्वास था, कि वह उनकी कितनी कद्र करता था, कि उसे उनकी कितनी चिन्ता थी।

यद्यपि पोलीना गेओर्गियेव्ना ने ओलेग को यह बात न बतायी थी कि ल्यूतिकोव उसे और वान्या तुर्केनिच को कहा भेज रहा है, फिर भी वान्या ने यह जरूर समझ लिया था, कि उन्हे छापामारो के पास भेजा जा रहा है।

'तरुण गार्ड' दल के सदस्यो मे सिर्फ वह और मोश्कोव ही प्रौढ थे। वान्या तुर्केनिच और उसके साथियो के लिए अपने मित्रो की गिरफ्तारी एक बहुत बड़ी चोट थी। उसकी सारी मानसिक शक्तिया अकेले इसी एक समस्या पर केंद्रित हो गयी कि उन लोगो को किस प्रकार आजाद कराया जाय। किन्तु, अपने साथियो से भिन्न, तुर्केनिच ने घटनाओ को वास्तविक दृष्टिकोण से देखा था। वह अपने दोस्तो की मदद करने के विचार को व्यावहारिक रूप से समझ रहा था।

अपने मित्रो को छुडाने का सबसे छोटा रास्ता छापामारो का रास्ता था। तुर्केनिच जानता था कि सोवियत सेनाए वोरोशीलोवग्राद प्रदेश में घुस गयी है और अब आगे बढ़ रही ह, कि क्रास्नोदोन मे सशस्त्र विद्रोह की तैयारिया हो रही है। उसे इस बात मे जरा भी सन्देह न था कि सैनिक अनुभव होने के नाते उसे भी एक दस्ता, अथवा दस्ता तैयार करने का मौका दिया जायेगा। उसने बिना किसी सकोच के उस पते का इस्तेमाल किया जो ओलेग ने उसे दे रखा था।

उसने यह समझ लिया था कि सम्भवतः समस्त सशस्त्र पुलिस प्रशासन और पुलिस के थाने उसके नाम से परिचित थे, इसी लिए उसने अपने साथ किसी प्रकार का परिचय-पत्र रखने का खतरा न उठाया। उसके पास ऐसे भी कोई कागजात न थे जिनमे उसका कुछ और-ही नाम टका होता, और ऐसे कागजात प्राप्त करने के लिए समय भी न था। वह अपने साथ किसी प्रकार के कागजात लिये बिना उत्तर की ओर चल पड़ा। बचपन से ही उसकी बायीं कलाई पर उसके नाम का प्रथमाक्षर गोदा हुआ था अतएव उसने उसी नाम से चलने का निश्चय किया था, पर उसने अपना उपनाम क्रपीविन रख लिया।

वह कठिन परिस्थिति मे पड गया था। अपनी सूरत-शक्ल अथवा उम्र से वह ऐसा आदमी भी न लगता था, जो जर्मन पक्तियो के पीछे पीछे, बिना किसी कागज-पत्र अथवा काम-धन्धे के और खास कर मोर्चे के बिलकुल निकट, घूमते रहते है। उसने सोचा था कि अगर वह गेस्टापो या पुलिस के हाथो मे पड़ जायेगा तो उनसे यही सफाई देगा कि वह रोस्तोव-प्रदेश स्थित ओल्खोव रोग से लाल सिपाहियो के डर से उस समय भागा था जब उनके टैंक उसकी खेतिहर बस्ती मे घुस आये थे। इसी लिए उसे अपने साथ कागज़-पत्र लाने का मौका न मिला था—ऐसी सफाई से उसकी जान बचने से अधिक कुछ भी न हो सकता था। लेकिन इसका

नतीजा यह होगा कि उसे जर्मन सेनाओ के पीछ पीछे काम करना पडेगा या फिर जर्मनी भेज दिया जायेगा।

वान्या, उन गांवो या पुरवो को छोडता हुआ, जहा उसे पुलिस के हाथो पड जाने का सन्देह रहता था, वरावर रात-दिन चलता रहा। वह सड़को पर, या स्तेपी को पार करता हुआ, हमेशा वही रास्ता पकडता जहा वह अपने को अधिक से अधिक सुरक्षित समझ सकता था। जव उसे यह सन्देह होता कि लोगो का ध्यान उसकी ओर जाने का डर है तो वह दिन मे कही पड जाता और रात भर चला करता। खास कर जव कभी वह पड़ा रहता और पेट खाली होता तो उसके पैर प्राय· जम जाया करते। मानसिक कप्टो ने उसकी आत्मा तक को फौलाद वना दिया था। शरीर से वह ऐसे किसी भी जवान रूसी कामगार की तरह कठोर लग रहा था जो देशभक्त युद्ध के अनुभवो से होकर गुजरा हो।

इस प्रकार वह मार्फ़ा कोर्नियेंको के घर पहुच गया।

गाव भर मे दुश्मनो की टुकडिया रह रही थी – उसके अपने मकान मे भी और दवीदोवो, मकारोव यार आदि पास-पडोस की खेतिहर वस्तियो मे भी। उत्तरी दोनेत्स के दोनो तटो के साथ साथ प्रतिरक्षा की मजवूत चौकिया वना दी गयी थी। ये चौकिया वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी और दक्षिणी भाग के वीच इतनी प्रभावकर विभाजन-रेखा की तरह थी कि मार्फा और प्रोत्सेको के वीच सम्पर्क स्थापित करना प्राय. असम्भव हो गया था। अगर सम्पर्क सम्भव भी होता तो भी अव उसकी कोई आवश्यकता न रह गयी थी। वोरोशीलोवग्राद प्रदेश के उत्तरी जिलो के छापामार दस्ते लाल सेना की यूनिटो के निकट सम्पर्क मे कार्य कर रहे थे और उन यूनिटो की कमान में लड़ रहे थे न कि प्रोत्सेको की मातहती मे। दक्षिणी जिलो के दस्ते फर्वरी के मध्य मे ही मोर्चे के प्रसार क्षेत्र के अन्दर आ सके थे। वे अव परिस्थिति के अनुसार कार्य कर रहे थे। प्रोत्सेको उनसे वीसियो मील

दूर था, अतएव उन परिस्थितियों को समझने-बूझने में असमर्थ था और इसी लिए छापामार दस्तों की कार्रवाइयों का संचालन नहीं कर सकता था।

प्रोत्सेको वेलोबोद्स्क दस्ते के साथ संबद्ध था। इस दस्ते ने गोरोदीश्ची गांव का अपना अड्डा त्याग दिया था क्योंकि गांव पर अब जर्मनों का अधिकार था। दस्ते का कोई स्थायी अड्डा न था और वह सोवियत कमान के निर्देशों के अनुसार जर्मन सेना के पृष्ठ भाग में काम कर रहा था। मार्फा का प्रोत्सेको अथवा उसके पति से कोई सम्पर्क न रह गया था। उसका कोर्नेई तीखोनोविच से या मित्याकिस्काया दस्ते के अन्य किसी भी व्यक्ति से कोई सम्पर्क न रह गया था। इस दस्ते ने स्वयं अपना अड्डा छोड़ दिया था—मित्याकिस्काया जिला जर्मनों के हाथ में था जो वहां किलेबन्दी कर रहे थे। येकतेरीना पाव्लोव्ना प्रोत्सेको पिछले कुछ समय से वोरोशीलोवग्राद में रह रही थी और उसके साथ किसी भी प्रकार का सम्पर्क संभव न था। ऐसे ही समय वान्या तुर्केनिच, मार्फा के घर पहुंचा।

वान्या और मार्फा का एक दूसरे से मिलना इसी लिए सम्भव हो सका कि वान्या ने पूरे साहस और सूझ-बूझ से काम लिया था। फिर यह भी खुशकिस्मती ही थी कि मार्फा ने उसपर, उसके शब्दों पर, विश्वास किया था, अगरचे उसके पास अपने कोई परिचय-पत्र न थे और जो कुछ वह कह रहा था उसकी सच्चाई का पता चलाने का मार्फा के पास कोई साधन भी न था। मार्फा ने शुरू में उसकी शान्त, गंभीर आंखों की ओर कृत्रिम उदासीनता के भाव से देखा। उसके थके हुए और झुर्रियों से भरे दुबले-पतले चेहरे को देखते ही बड़ी प्रभावित हो उठी थी। झुर्रियों से उसके चरित्र की दृढ़ता लक्षित होती थी। धीरे धीरे उसे वान्या की सैनिक चाल-ढाल और उसके विनम्र व्यवहार का भी परिचय मिला और उसने, तुरन्त और बिना गल्ती किये, उसपर उसी तरह विश्वास किया जैसे केवल स्लाव महिला ही कर सकती है। बेशक उसने

वान्या को तुरन्त ही यह नही मालूम होने दिया कि वह उसपर भरोसा करती है, लेकिन फिर एक और चमत्कारपूर्ण घटना घटी।

मार्फ़ा के यह स्वीकार कर लेने पर कि वही मार्फा कोर्नियेको है, वान्या को गोर्देई कोर्नियेको का नाम याद आ गया, जिसे युद्ध-वन्दी कैम्प से छुडाने से सवधित सारी दास्तान उसे वान्या जेम्नुखोव और उन दूसरे लोगो ने वतायी थी जिन्होने उस कार्रवाई मे भाग लिया था। उसने मार्फा से पूछा, "क्या गोर्देई आपका कोई रिश्तेदार है?"

"मान लो है तो क्या?" वह वोली और सहसा उसकी युवा आंखों में एक चमक दौड गयी।

"उसे हमारे ही 'तरुण गार्ड' के छोकरों ने छुडाया था।" और उसने उसे सारी दास्तान सुना दी।

उसके पति ने उसे यह कहानी कई वार सुनायी थी। जिन छोकरों ने उसके पति को मुक्त कराया था उनके प्रति वह नारी-सुलभ और ममताभरा आभार कभी न प्रकट कर सकी थी, अव वही आभार उसने अकेले वान्या तुर्केनिच के आगे प्रदर्शित किया–शव्दो या मुद्राओ से नही, वल्कि उसे गोरोदीश्ची के अपने संवधियो का पता देकर।

"वहा से मोर्चा विलकुल निकट है। वे लोग तुम्हे पक्तिया पार करने के लिए सारी जरूरी मदद देगे," उसने वान्या से कहा।

वान्या ने हामी भरी। वह पक्तिया नही पार करना चाहता था किन्तु उन छापामारो से मिलना चाहता था जो सोवियत सेनाओ की मदद से अपनी कार्रवाइयो मे लगे थे। मार्फा उसे जिस क्षेत्र मे भेज रही थी वहा वह उन छापामारो से शीघ्रता से मिल सकता था।

उन्होने ये सारी वाते गाव मे नही, एक पहाडी के पीछे खुले हुए स्तेपी मे की। धुधलका वढ रहा था। मार्फा ने वादा किया कि वह किसी ऐसे आदमी को भेज देगी, जो उसे रात मे दोनेत्स के पार ले जायेगा। वान्या

के सकोच और आत्म-गौरव ने उसे खाने के लिए मार्फा के आगे हाथ न फैलाने दिया। किन्तु मार्फा ऐसी चीजे भूलनेवाली औरत न थी। नाटे कद का एक बूढा – वही जिसने इवान प्रोत्सेको से कपडे वदल लिये थे – अपनी टोपी मे सुअर की कुछ चर्बी और कुछ सूखी हुई रोटिया ले आया था। उस बूढे बातूनी ने फुसफुसाते हुए वान्या को समझाया: "मै तुम्हे दोनेत्स के पास न ले जाऊंगा, क्योकि इस समय नदी पार कर सकने की हिम्मत रखनेवाला व्यक्ति अभी पैदा नही हुआ, और वह भी ऐसा जो अपने साथ किसी छापामार को ले जाये। पर मै तुम्हे वह रास्ता जरूर दिखा दूगा जहा नदी पार करना सवसे आसान है और जहां से उसे कम से कम समय मे पार किया जा सकता है।"

वान्या तुर्केनिच ने दोनेत्स पार की। कुछ दिनो वाद वह चूगिंका गाव पहुंचा जो गोरोदीञ्ची के दक्षिण मे कोई बीस मील दूर अलग-थलग कस्वा था।

अव वह एक ऐसे क्षेत्र मे था, जहा जगह जगह दुश्मन की किलेबन्दिया थी। उसने वहा वडे पैमाने पर जर्मन सेनाओ का आना-जाना देखा वहा के रहने-वसनेवालो से उसने पता चला लिया था कि चूगिका मे एक छोटी-सी पुलिस चौकी थी और जर्मन और रूमानियाई दस्ते प्राय. गाव से होकर गुजरा करते थे। उसे यह भी बताया गया था कि चूगिका, देर्कूल और कमीश्नाया नदियो के सगम के समीप, बसे हुए वोलोशिनो गाव से सवसे नजदीक था। सोवियत सेनाओ ने वोलोशिनो पर अधिकार कर लिया था। फलत. वान्या ने किसी भी दशा मे चूगिका पहुचने का निश्चय किया क्योकि उसका ख्याल था कि वहा के कुछ-न कुछ ग्रामवासी तो सोवियत सेनाओ के सम्पर्क मे होगे ही।

किन्तु इस मामले मे वह वदकिस्मत साबित हुआ – उसे गाव के ठीक वाहर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसे ग्राम परिषद के भवन मे ले

जाया गया। वहा जर्मनो के लिए पुलिस वालो का काम करनेवाले रूसी नशे मे चूर इतना बुरा व्यवहार कर रहे थे कि उसे बयान नही किया जा सकता।

वान्या के सारे कपडे उतार डाले गये, उसके हाथ-पैर बाधे गये और उसे एक तहखाने मे डाल दिया गया जिसकी दीवाले सर्दी से बेहद ठण्डी हो रही थी। वह अपनी यात्रा, तरह तरह की यन्त्रणाओ और इस अन्तिम घटना से बुरी तरह पस्त हो चुका था और सर्दी से काप रहा था। उस दुर्गन्धपूर्ण तहखाने के मिट्टी के फर्श पर रेग रेगकर उसे एक जगह गन्दा सूखा कचरा पड़ा मिला और वह उसी पर पडकर सो गया।

उसकी नींद एक कार की आवाज से टूटी जो पीछे से बैक-फाइर कर रही थी। उसे नीद मे ऐसा लग रहा था मानो बन्दूक से गोलिया छूट रही हो। इसके ठीक बाद उसे कई भारी भारी कारो के इजनो की आवाजे सुनाई दी। कारे बाहर सडक पर खड़ी हो गयी। तुरन्त ही तहखाने की छत हिलने लगी, दरवाजा खुला और सर्दी की सुबह के प्रकाश मे वान्या ने देखा कि सोवियत सैनिक गहरे रग की मोटी जैकेटे पहने हुए, हाथो मे टामी-गने उठाये, कोठरी मे प्रवेश कर रहे है। आगे आगे एक सर्जेंट था। उसने अपनी टार्च की रोशनी वान्या पर फेकी।

वान्या को उस सोवियत गश्ती टुकडी ने मुक्त किया, जो जर्मनो की तीन अधिकृत, सशस्त्र कारो पर, गाव मे घुस आयी थी। उसने वहा के सभी पुलिस वालो को गिरफ्तार कर उन्हे बाध लिया, इनके अलावा गाव मे तैनात जर्मन सैनिको की भी एक कम्पनी थी—एक अफसर, एक रसोइया, और पाच सैनिक। रसोइये ने खाना बनाना शुरू ही किया था कि जर्मन कारे आ गयी। वह जरा भी न घबराया बल्कि एटेंशन होकर खडा हो गया, उसके ख्याल से कि शायद कारो मे चीफ अफसर आये हो। उसके गिरफ्तार होने के कुछ मिनट बाद उसने बडी खुशी से वह जगह

दिखायी जहा कम्पनी कमांडर सो रहा था। उसके पीछे पीछे सोवियत टामी-गनर थे और वह, सीको के बने बनावटी फेल्ट के वड़े वड़े बूटो मे, आगे वढ़ रहा था। हा कभी कभी चतुरता से आख मारता और ओठो पर उंगली रखता हुआ कहता "श-श-श ..."

गश्ती यूनिट को पेट्रोल की कमी के कारण अपनी मुख्य यूनिट में लौटना था। इस यूनिट के कमाडर, सीनियर लेफ्टिनेंट ने यह सुझाव रखा कि तुर्केनिच उन्ही के साथ जाय। किन्तु वान्या ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। स्थानीय लोग कार को घेरे खडे थे और लाल सेना को धन्यवाद देते हुए उनसे यह अनुरोध कर रहे थे कि वे गाव छोडकर न जाय। यही उनकी और तुर्केनिच की बातचीत चल रही थी।

और इधर यह अजीब आदमी था कि इस जगह को छोडकर कही नही जाना चाहता था .. लोग? यहा वहुत लोग है। उसे जिन लोगो की जरूरत है, वे सब उसे यही मिल जायेगे और हथियार? बस, शुरू शुरू मे उन्हे जर्मन कम्पनी से मिली हुई बन्दूके भर दे दो, बाकी का वे स्वय इन्तजाम कर लेगे। केवल कमीश्नाया मे काम करनेवाली सोवियत यूनिटो से उनका सम्पर्क स्थापित करवा दो ...

यह इवान क्रपीविन के उस छापामार दस्ते का आरंभ मात्र था जिस ने बाद मे सारे इलाके मे वड़ा नाम पाया था। एक सप्ताह बाद इस दस्ते मे कोई चालीस व्यक्ति हो गये। उनके पास तोपखाने को छोड़कर बाकी सभी किस्म के आधुनिकतम हथियार थे। उसने अपना अड्डा उस जगह बनाया था जो कभी अलेक्सान्द्रोवो गांव का डेरी फार्म हुआ करता था और उस जिले की रक्षा करता था जिसके अन्तर्गत जर्मन मोर्चे के निकटतम पृष्ठभाग मे, कई गाव आते थे। जर्मन उस इलाके से इवान क्रपीविन के दस्ते को कभी नष्ट न कर सके। अन्तत. सोवियत सेनाए भी वही आ गयी।

फिर भी वान्या 'तरुण गार्ड' को न मुक्त कर सका। इस भाग का

मोर्चा २० जनवरी तक निश्चेष्ट-सा बना रहा। सोवियत सेनाए कही फर्वरी मे उत्तरी दोनेत्स को पार कर सकी और उसके किनारे के एक बडे-से क्षेत्र पर फैल गयी। किन्तु सबसे पहले उन यूनिटो ने नदी पार की थी, जो नदी के ऊपरी दूरस्थ क्षेत्रों—क्रास्नी लिमान, इज्यूम और वलक्लेया मे कार्य कर रही थी।

वान्या के अधिकाश 'तरुण गार्ड' के साथियो को कितनी निर्ममता के साथ मौत के घाट उतारा गया था, इसके सबध मे वान्या कुछ भी न जानता था। क्रास्नोदोन की ओर सेनाए बढने मे जितना विलम्ब होता गया उसके हृदय की पीडा और व्यथा उतनी ही अधिक बढती गयी और उसकी कल्पना के सामने उसके साथियो का उतना ही स्वच्छ, उतना ही निष्कलुष चित्र उभरता गया। आखिर इन्ही साथियो के साथ ही तो कन्धे से कन्धा मिलाकर उसने वे महान कार्य किये थे। उन साथियो से वह हृदय से प्रेम करता था।

एक अवसर पर डेरी फार्म पर दूध देने का काम करनेवाली कुछ लड़कियो ने उसके एक आदेश का पालन करने मे कुछ आनाकानी की थी और साफ साफ यह स्वीकार किया था कि उन्हे जर्मन फासिस्टो से डर लगता है। पर क्रपीविन ने—जो कभी वान्या तुर्केनिच था—उनपर क्रोध न करके सिर्फ यही कहा था—

"अरे लडकियो! तुम्हारा यह व्यवहार क्या सोवियत लडकियो की तरह है?"

फिर सब कुछ भूलकर उसने उन्हे ऊल्या ग्रोमोवा, ल्यूबा शेव्त्सोवा तथा उनकी अन्य सहेलियो के बारे मे बहुत कुछ बताया। उन लडकियो पर इन सबका बडा अच्छा असर पडा। उन्हे अपने ऊपर शर्म आयी, पर साथ ही वान्या की आखो मे सहसा खुशी की चमक देखकर वे चकित रह गयी। वान्या ने बात जहा की तहा रोक दी, विषय समाप्त करने के लिए हाथ

झटकारा और जो कुछ कहना था उसे विना कहे हुए ही वहा से चला गया।

फर्वरी मे, कही वान्या तुकनिच के दस्ते ने लाल सेना की एक यूनिट के साथ मिलकर उत्तरी दोनेत्स की लडाई लडते लड़ते, अन्तत. क्रास्नोदोन मे प्रवेश किया।

इस वीच भागती हुई जर्मन सेना जो भी दुष्टता और अत्याचार कर सकती थी उन सबका सामना क्रास्नोदोन के लोगो ने किया। भागती हुई एस० एस० यूनिटो ने नगर निवासियो को लूटा, उन्हे उनके घर से निकाल बाहर किया और नगर तथा जिले की सभी बड़ी वडी इमारते, खाने और फ़ैक्ट्रिया उडा दी।

लाल सेना के क्रास्नोदोन और वोरोशीलोवग्राद मे प्रवेश करने से कोई एक सप्ताह पहले ही ल्यूबा शेव्त्सोवा की मृत्यु हुई थी। १५ फर्वरी को सोवियत टैंको ने दुश्मन का मोर्चा तोडकर क्रास्नोदोन मे प्रवेश किया और उसके तुरन्त ही बाद नगर मे सोवियत शासन की पुन स्थापना हुई।

खानो मे काम करनेवाले कई कई दिनों तक, खान न० ५ मे से खुफिया लड़ाकुओ और 'तरुण गार्ड' के सदस्यो की लाशे निकालकर, नगर निवासियो की निगाहो के सामने धरती पर रखते रहे। लोगो की वहुत वडी भीड वहा खड़ी रहती। इन दिनो मृत सपूतो की माताएं और पत्निया गड्ढे के पास वरावर इस आशा मे खड़ी रही कि उन्हे अपने लाड़लो और पतियो की विकृत लाशे ही मिल जाय।

ओलेग अभी तक जीवित ही था कि येलेना निकोलायेव्ना रोवेन्की पहुंची। पर वह वेटे के लिए कुछ भी न कर सकी। ओलेग को तो यह भी न मालूम हो सका कि उसकी मा उससे इतनी निकट है।

और अव ओलेग की मा और उसके परिवार की आखो के सामने रोवेन्की के लोगो ने गड्ढो मे से ओलेग और ल्यूबा की लाशे निकाली।

येलेना निकोलायेव्ना कोशेवाया को तो पहचानना तक मुश्किल हो

गया था। वह दुवली और वूढी लगने लगी थी। उसके धसे हुए गाल और आंखे उन वडे वड़े कष्टो की प्रतीक थी जो दृढस्वभाव लोगो को विशेपतया झझोडकर रख देते है। वह पिछले कुछ महीनो से अपने वेटे के कामो मे हाथ वटाती रही थी। उसके वेटे की दर्दनाक मौत ने उसे मार्मिक पीड़ा पहुचायी थी। किन्तु इन्ही व्यथाओ ने, उसकी आध्यात्मिक शक्तियो को जगा दिया था और, उसे अपने व्यक्तिगत दुख से, वहुत ऊपर उठा दिया था। ऐसा लग रहा था कि उसकी आखो के सामने से तुच्छ दैनिक जीवन का वह परदा उठ चुका था, जिसने उसकी आत्मा से मानव प्रयास, सघर्प, उत्साह और उत्तेजना के ससार को छिपा रखा था। अब वह अपने वेटे के चरण-चिह्नो पर चलकर इस ससार मे प्रवेश कर चुकी थी और उसके सामने जन-सेवा का विशाल पथ प्रशस्त था।

इन्ही दिनो जर्मनो का एक और अपराध प्रकाश मे आया—पार्क मे खान-कर्मचारियो की कब्र खोदी गयी। उनमे सभी लाशे खडी हुई दशा मे मिली—पहले सिर दिखाई दिये, फिर कधे, फिर धड और अन्तत हाथ-पैर। इनमे वाल्को, शुल्गा, पेत्रोव और उस औरत की भी लाशे थी, जिसके हाथ मे वच्चा था।

खान न० ५ से निकाली गयी 'तरुण गार्ड' के सदस्यो और उनके वुजुर्ग साथियो की लाशो को दो कब्रो मे रखा गया, जो पारस्परिक वन्धुत्व की परिचायक थी।

लाशे दफनाने के समय क्रास्नोदोन खुफिया सघटन और 'तरुण गार्ड' के सभी जीवित सदस्य उपस्थित थे—इवान तुर्केनिच, वाल्या वोर्त्स, जोरा अरुत्युन्यान्त्स, ओल्या और नीना इवान्त्सोवा, रादिक यूर्किन आदि।

तुर्केनिच की यूनिट क्रास्नोदोन के वाहर मिऊस नदी की ओर वढ़ गयी थी किन्तु उसे कुछ समय के लिए छुट्टी दे दी गयी थी ताकि वह मौत को गले लगानेवाले अपने अभिन्न मित्रो को अन्तिम अलविदा कह सके।

वाल्या वोर्त्स, कामेंस्क के निकट जहां थी, वहीं से वह अपने घर लौट आयी। इसके वाद उसकी मां ने उसे वोरोशीलोवग्राद में उसकी सहेलियों के साथ रहने के लिये भेज दिया। जब लाल सेना ने नगर में प्रवेश किया तो वाल्या वहीं पर थी।

सेर्गेई लेवाशोव भी जीवितों के ससार मे न बचा था। उसे उस समय मार डाला गया था जव वह मोर्चा पार करने का प्रयत्न कर रहा था।

स्त्योपा सफोनोव भी मौत को गले लगा चुका था। वह कामेंस्क के उस भाग मे था जिसपर आक्रमण की पहली ही रात को लाल सेना का कब्जा हो चुका था। वह लाल सेना के एक दस्ते मे शामिल हो गया था और लडते लडते मारा गया था।

लारी से कूदने के वाद अनातोली कोवल्योव को कुछ समय तक नवनिर्मित गाव के एक मजदूर ने अपने घर छिपाये रखा। उसका शक्तिशाली शरीर इतनी वुरी तरह कट-फट गया था कि सारा शरीर ही एक वड़ा-सा घाव लग रहा था। उसके घावों पर मरहम पट्टी किये जाने की कोई सम्भावना न थी। उसे केवल गर्म पानी से धोकर एक चादर मे लपेट दिया गया था। वह कई दिनो तक छिपा रहा किन्तु उसे अधिक समय तक छिपाये रखना भी तो खतरे से खाली न था। वह अपने उन सवंधियो के यहां रहने चला गया जो दोनवास के एक भाग मे रह रहे थे। यह भाग अभी तक आजाद न हुआ था।

इवान प्रोत्सेंको और उसका दस्ता भागते हुए जर्मनो के आगे आगे वढ़ता उनसे उस समय तक मोर्चा लेता रहा जव तक कि लाल सेना ने वोरोशीलोवग्राद पर अधिकार न कर लिया। यहां प्रोत्सेंको की भेंट अपनी पत्नी कात्या से हुई—गोरोदीश्ची के वाहर उनके विछुडने के वाद पहली वार।

प्रोत्सेंको के आदेश से कोर्नेई तीखोनोविच के निर्देशन मे, छापामारो के एक दस्ते ने मित्याकिस्काया के निकट पत्थरो की एक खान के गढ़े

मे से वह प्रसिद्ध 'गाजिक' कार खोद निकाली। कार ठीक दशा मे थी। उसकी पेट्रोल की टकी भरी थी वल्कि पेट्रोल का एक फालतू टीन भी उसी मे रखा था। यह कार उसी युग की तरह अमर लग रही थी जिसने उसे जन्म दिया था।

इवान प्रोत्सेको और कात्या 'गाजिक' पर क्रास्नोदोन आये। रास्ते मे उन्होने गोर्देई कोर्नियेको को कार मे बिठाकर उसे उसकी पत्नी मार्फा के पास छोड दिया। वहा उन्हे मार्फा से, गाव मे जर्मनो के आखिरी दिनो की कहानी सुनने को मिली थी।

गाव पर सोवियत सेनाओ का कब्जा होने से एक दिन पहले मार्फा और वही बूढा देहाती, जो कभी कोशेवोई दम्पति को अपनी गाडी मे ले गया था और जिसने प्रोत्सेंको से अपने कपडे वदले थे, ग्राम्य परिपद की इमारत मे गये थे। इसी इमारत मे पुलिस वाले और दोनेत्स के उस पार से भागकर आनेवाले जर्मन सशस्त्र पुलिस के सिपाही अस्थायी रूप से बस गये थे। वहा गाव वालो की भीड़ की भीड इस आशा मे खडी हो जाती कि शायद उन्हे किसी सैनिक के मुह से इत्तिफाक से निकल जानेवाली यही खबर सुनने को मिल जाय कि लाल सेना कितनी दूर या कितनी निकट है। या शायद उन्हे भगोड़े फासिस्टो की दशा देखने मे मजा आता था।

मार्फा और बूढा देहाती वही खडे थे कि एक पुलिस अधिकारी वर्फ पर चलनेवाली एक घोडा गाडी पर वहा आया। उसने कूदकर, वहशियाना ढंग से इधर उधर देखते हुए बूढे से पूछा—

"हर चीफ कहा है?"

बूढे ने उसकी आखो मे आखे डालकर कहा—

"हर चीफ! लगता है कामरेड आ रहे है!"

पुलिस अधिकारी गालिया देने लगा था किन्तु इतनी जल्दी मे था कि बूढे को मार भी न सका।

जर्मन, मुह मे ग्रास चवाते हुए, जैसे के तैसे इमारत से निकले और ऐक ही क्षण मे वर्फ पर चलनेवाली गाडियो पर वैठकर अपने पीछे वर्फ के वादल उडाते हुए भाग गये।

दूसरे दिन गाव मे लाल सेना ने प्रवेश किया।

इवान फ्योदोरोविच प्रोत्सेको और कात्या उन खुफिया लडाकुओ और 'तरुण गार्ड' के सदस्यो की समाधि पर सिर झुकाने आये जिन्होने अपना जीवन होम किया था।

प्रोत्सेंको को वहा एक और काम भी था—उसे क्रास्नोदोन कोयला-ट्रस्ट तथा खानों की व्यवस्था ठीक करनी थी। इसके अलावा वह प्रौढ खुफिया कारिन्दो और 'तरुण गार्ड' के सदस्यो की मौत के भी सारे ब्योरे जानना चाहता था, और यह भी कि हत्यारे दुश्मनो का क्या हुआ।

स्तात्सेको और सोलिकोव्स्की किसी प्रकार अपने मालिको के साथ भाग गये थे, किन्तु परीक्षण-जज कुलेशोव को लोगो ने पहचान लिया था। उसे रोककर सोवियत न्याय अधिकारियो के हवाले कर दिया गया था। उसी से यह पता चला था कि 'तरुण गार्ड' के साथ गद्दारी करने में वीरिकोवा और ल्याद्स्काया का कितना हाथ था और स्तखोविच के बयान ने कितना काम किया था।

मृत कम्युनिस्टो और 'तरुण गार्ड' के सदस्यो की कब्रो पर उनके वचे हुए साथियो ने उनका वदला लेने का प्रण किया। उनकी कब्रो पर लकडी के अस्थायी स्तूप खडे कर दिये गये। प्रौढ खुफिया लडाकुओ की कब्र के स्तूप पर इन सभी वीरों के नाम अंकित थे, जिनमे से सवसे ऊपर फिलीप्प पेत्रोविच ल्यूतिकोव और वराकोव के नाम थे। 'तरुण गार्ड' वाले स्तूप पर उन सभी वीरो के नाम थे जिन्होने दल के निर्देशन मे लडते हुए मातृभूमि के लिए अपने प्राण निछावर किये थे। उनके नाम इस प्रकार है—

ओलेग कोशेवोई, इवान जेम्नुखोव, उल्याना ग्रोमोवा, सेर्गेई त्युलेनिन,

ल्युबोव शेव्त्सोवा, अनातोली पोपोव, निकोलाई सुम्स्कोई, व्लदीमिर ओस्मूखिन, अनातोली ओर्लोव, सेर्गेई लेवाशोव, स्तेपान सफोनोव, वीक्तोर पेत्रोव, अन्तोनीना येलिसेयेंको, वीक्तोर लुक्याचेंको, क्लाव्दिया कोवल्योवा, माया पेग्लिवानोवा, अलेक्सान्द्रा बोन्दरेवा, वसीली बोन्दरेव, अलेक्सान्द्रा दुब्रोविना, लीदिया अन्द्रोसोवा, अन्तोनीना माश्चेंको, येव्गेनी मोश्कोव, लीदया इवानीखिना, अन्तोनीना इवानीखिना, बोरीस ग्लावान, व्लदीमिर ज़ागोरूइको, येव्गेनी शेपेल्योव, आन्ना सोपोवा, व्लदीमिर ज्दानोव, वसीली पिरोज़्होक, सेम्योन ओस्तापेंको, गेन्नादी लुकाशेव, अगेलीना समोशिना, नीना मिनायेवा, लेओनीद दाद्शेव, अलेक्सान्द्र शीश्चेंको, अनातोली निकोलायेव, देम्यान फोमीन, नीना गेरासिमोवा, गेओर्गी श्चेरबकोव, नीना स्तार्त्सेवा, नदेज्दा पेत्लया, व्लादीमिर कुलिकोव, येव्गेनिया कीइकोवा, निकोलाई ज़ूकोव, व्लदीमिर जगोरूइको, यूरी वित्सेनोव्स्की, मिखाईल ग्रिगोर्येव, वसीली बोरीसोव, नीना केज़ीकोवा, अन्तोनीना द्याचेंको, निकोलाई मिरोनोव, वसीली त्काचोव, पावेल पलागूता, दिमीत्री ओगुर्त्सोव, वीक्तोर सुब्बोतिन।

१९४३ – १९४५ – १९५१

## पाठको से

विदेशी भापा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमे बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:


२१, जूबोव्स्की बुलवार,<br>
मास्को, सोवियत सघ।